1 ०३ ११ १९८५

... क्या हे मानव! तू मृत्यु से पार हो, मानो तू मृत्युञ्जय बनने चाहता है, तो तू दर्शनों की गोद में चल, और अपने मानवीय दर्शन को विचारने वाला बन, जैसे

बेटा! एक माता अपने पुत्र के वियोग में व्याकुल हो रही है, संसार वृत्तियों में बन गई है पुत्र नही रहा परन्तु वह शरीर तेरा पुत्र है, या आत्मा तेरा पुत्र है यह दर्शन का विचार माता यदि कहती है कि शरीर मेरा पुत्र है, तो शरीर तो ज्यों का त्यों है, और यदि कहती है तो आत्मा तो वह सदैव किसी भी का काल में वह मुक्त नही होता वह अव्वय है, तो मेरे पुत्रों! देखो, माता मौन हो जाती है, और मुनिवरों! देखो, दुखद क्या है एक मानव का मिलन हुआ है, और मिलन के पश्चात, उसका विच्छेद हो गया है। तो मुनिवरों! देखो, यह तो विच्छेद हुआ है, वही दुखद का एक मूल कारण बनता है, क्योंकि अपने में ही, अपने को ही दृष्टिपात करने तो मानवीयता उसकी महानता में रत्त होने लगता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार हमारा क्या कह रहा है वेदमन्त्र कहता है कि हे मानव! तू मृत्युञ्जय बन, क्योंकि तेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। मृत्यु कहां होती है? अज्ञानता में। तेरे द्वारा अज्ञान नही आना चाहिए। यदि अज्ञान आ गया है तो तेरी मृत्यु हो गई है। तो मेरे प्यारे! देखो, ज्ञान की दृष्टि से जब हम विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करते हैं, तो हमारा विज्ञान, ज्ञान दोनों ही सार्थक बन करके मानव के जीवन को उद्बुद्ध कर देते हैं अथवा पवित्रता में परणित होने लगता है, आओ, मेरे प्यारे! आज मैं आत्म विज्ञान के ऊपर अपना कोई विचार देना नही चाहता हूँ, आज का हमारा विचार यह है कि मानव जब तपस्वी बन जाता है, तपों में रत्त होने लगता है, तो मानवीय जीवन पवित्र और महान बन करके बेटा! मृत्युञ्जय बनने की कल्पना करता है। आज मैं बेटा! मैंने बहुत पुरातन काल में बारम्बार मैं बेटा! साहित्य की चर्चा करता रहता हूँ, नाना साहित्य हमारे जब स्मरण आया है, तो साहित्य में ऐसी ऐसी वार्ता प्रायः हमारे समीप आई है, जिसके ऊपर हम बहुत गम्भीरता से अध्ययन करते रहते हैं। प्रायः हमारे

वह साहित्य अपने में सार्थक बन करके मानो उसके जीवन की पवित्र उपलब्धियों का एक मूल कारण बन जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं कहीं तुम्हें ले जाना चाहता हूँ, आज मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ, जिन वाक्यों की टिप्पणियां मैंने बेटा! तुम्हारे समीप कई काल में की हैं, त्रेता काल की वार्त्ताएं मुझे स्मरण आती रहती है, जब मैं मानो देखो, उस काल में प्रवेश करने लगता हूँ। तो यह संसार मुझे एक आश्चर्य में दृष्टिपात आता रहता है, क्योंकि उस काल में जब हम प्रवेश करते हैं, तो अतीत का काल जो हमारे समीप आता है। हम उसे उद्बुद्ध करने लगते हैं, तो प्रायः हमारे हृदय में एक महानता की ज्योति जागरूक हो जाती है। क्या ऋषि मुनि अपने में कितने मानो पवित्रतम् रहे हैं, ऋषि मुनि अपने में कितनी ऊर्ध्वा में वार्ता को प्रगट करने वाले रहे हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ, जैसे मैंने यह वाक कई कालों में प्रगट किया है, आज भी मुझे यह वाक्य वह विचार मानो हमें स्मरण आ रहे हैं, बेटा! राजा रावण के यहां जहां देखो, राजा अपने में राष्ट्रीयता का पालन करते थे वहां विज्ञान अपने में मानो अद्वितीय कहलाता है। मैं उस ज्ञान और विज्ञान में तो तुम्हें ले जाना चाहता हूँ, परन्तु केवल यह वाक प्रगट करना है, क्या राजा रावण अपने में बेटा! निमटारा करते रहते थे, कोई विज्ञान की वार्ता हो, किसी भी प्रकार की हो, उनकी अध्यक्षता में सभा होती रहती। एक समय बेटा! राजा रावण के यहां मानो एक सभा का आयोजन हुआ, वह वैज्ञानिकों का एक समूह विद्यमान हो करके मेरे पुत्रों! वह राजा रावण के यहां कक्ष में एक भवन में वह सभा हुई, उस भवन का नाम कुबेर भवन कहलाता है, बेटा! उस कुबेर भवन

में वह सभा हुई तो बेटा! देखो, वैज्ञानिकों ने गुरूतव परमाणु के ऊपर अपना विचार विनिमय प्रारम्भ किया। यह गुरूतव परमाणु क्या क्या करता है, क्योंकि संसार में परमाणु तीन प्रकार के होते हैं, मानो एक परमाणु वह होता है, जिसमें गुरूतव होता है, एक परमाणु वह होता है, जो एक दूसरे की प्रतिभा का निरोध करता है, एक मानो अग्नि का परमाणु है, यह जल परमाणु अग्नि परमाणु और पार्थिव परमाणु कहलाते हैं। परन्तु इन परमाणुओं के ऊपर विचार विनिमय होने लगा क्या यह गुरूतव परमाणु एक दूसरे में कैसे संघर्ष करते हैं। तो बेटा! इस वाक के ऊपर विचार विनिमय होने लगा परन्तु उस सभा में अपने में अद्वितीय प्रश्नों उत्तरों की आभा में रत्त रही परन्तु सांयकाल का जब समय हो गया, सांयकाल को बेटा! वह अपने में सभा निर्णय नही कर सकी राजा रावण की अध्यक्षता में वह समाज एकत्रित हुआ, जो अपनी अध्यक्षता में भी उस वाक का निर्णय नही कर सके, जब निर्णय नही दे सके तो निर्णय के न देने से ही मेरे प्यारे! देखो, इसमें एक अभ्योदय की उत्पति हुई और वैज्ञानिक अपने अपने कक्ष में जा पंहुचे। राजा रावण के हृदय में यह वाक हुआ क्या तुम इन वाक्यों का तू निराकरण नही कर सका है, यह तेरी बड़ी सूक्ष्मता है। मेरे प्यारे! देखो, इनके हृदय में एक विवेक जागा क्या मेरा आत्मा तो अशान्त हो गया है, यहां आत्मा को मानो पुनः से जागरूक करने के लिए, मैं किसी महापुरूष के दर्शन करूं।

तो मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता रहता है कि राजा रावण रात्रि समय चिन्तन में लगे रहे, मनन करते रहे, कि मैं किसी महापुरूष के द्वारा जाऊंगा, तो आत्म शान्ति स्थापित होगी। तो मेरे प्यारे! देखो, वह प्रातःकालीन चिन्तन करते करते प्रातःकालीन हो गया। अब मुनिवरों! देखो, महामन्त्री एकत्रित करके जागरूक

हो करके कहा हे महामन्त्रियों! मेरी इच्छा ऐसी है क्या मैं भयंकर वनों में जा रहा हूँ, और किसी महापुरूष के दर्शन करके मैं अपने आत्म शान्ति चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, मन्त्रियों ने कहा प्रभु! जैसे आपकी इच्छा हो, वैसे कीजिए। तो मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण अपने वाहन में और मन्त्रियों को राष्ट्र दे कर, अपने वाहन में विद्यमान हो करके, वहां से उन्होंने गमन किया, और भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रों! देखो, वह वैशम्पायन ऋषि का एक आसन था, उस आसन पर वह गएं वैशम्पायन ने ऋषि होने के नाते, अपने ऋषितव का उसमें एक रूप अपने रूप में धारण किया और राजा को दृष्टिपात करके कहा आईए भगवन! अमृतो ब्रह्मा सो सम्भवा लोकं हिरण्यं रथाः उन्होंने कहा हे भगवन! आपका कैसे आगमन हो रहा है उन्होंने कहा ऋषिवर! मैं आत्म शान्ति चाहता हूँ, मैं आत्मा के स्वरूप के लिए मैं अपने को ऋषि को अर्पित करने के लिए आया हूँ। परन्तु वैशम्पायन ऋषि बेटा! कुछ चर्चा होने के पश्चात, उन्हें आत्म शान्ति का भान नही हुआ, वहां से राजा रावण ने अपने वाहन में विद्यमान हो करके बेटा! वहां से गमन किया, और भ्रमण करते हुए, वह महर्षि मुनिवरों! देखो, महर्षि पारेत्वर ऋषि के द्वार पर पंहुचे, महर्षि पारेत्वर ऋषि महाराज ने, उनका स्वागत किया और कहा कहो राजन! आज कहां भ्रमण कर रहे हो? राजा रावण ने कहा प्रभु! मैं आत्म शान्ति के लिए गमन कर रहा हूँ, उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। मेरे प्यारे! आत्मा परमात्मा की कुछ चर्चाएं हुईं, परन्तु आत्म शान्ति का भान नही हुआ, वहां से भी उन्होंने प्रस्थान किया। मेरे प्यारे! और भी ऋषियों के समीप पंहुचे, परन्तु अन्त में वह महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज के द्वार पर पंहुचे। महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने राजा रावण को, सांयकाल में जब वह दृष्टिपात किया, तो मुनिवरों! देखो, ऋषि ने, नाना कन्दमूल फलों का उन्होंने प्रदान

किया। आईए भगवन! कुछ मानो आप पान कीजिए। आप अपने में शान्ति की प्रतीति में विराजमान हो जाईएं, राजा रावण को बेटा! उन्होंने कुछ कन्दमूल दिए और वह मानो उन्होंने पान करने लगे। वह तृप्त हो करके, जब तृप्त हो गएं, तो ऋषि ने कहा कहो राजन्! आज सांयकालीन तुम्हारा आगमन हुआ है, इसके मूल में क्या है? राजा रावण ने कहा प्रभु! मैं आपके समीप इसीलिए आया हूँ, मैं अपने में आत्म शान्ति चाहता हूँ, मैं आत्म शान्ति प्रदान कीजिए मुझे भगवन! आत्म शान्ति का मुझे दान दीजिए। मेरे पुत्रों! महात्मा कुक्कुट ने कहा रावण! यह कैसे तुम वाक प्रगट कर रहे हो, तुम कैसा आत्म शान्ति चाहते हो? उन्होंने कहा प्रभु! मैं मानो देखो, यह जो दिवस चला गया है, इस दिवस में मैं मानो वैज्ञानिकों के मध्य में विद्यमान हो करके, कुछ विज्ञान की चर्चाएं हो रही थी, और गुरूतव परमाणु के ऊपर विवेचना हो रही थी, मैं अपने में निमटारा नही कर सका हूँ, मैं आत्मा उसी समय से अशान्त हो रहा है, तो प्रभु! मुझे आत्म शान्ति कराईए। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम राजन्! तुम विराजो मेरे प्यारे! वह विराजमान हो गएं उन्होंने कहा कहो राजन! तुम्हारे आचार्यों ने आत्मा के सम्बन्ध में क्या कुछ उच्चारण किया है? उन्होंने कहा प्रभु! आत्मा के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार की विचारधारा मेरे समीप आई है। मानो देखो, मेरे पूज्यपाद ब्रह्मा जी मुझे अध्ययन कराते थे, तो मानो उन्होंने आत्मा के सम्बन्ध में चार प्रकार की अवस्थाओं का मानो एक समय वर्णन किया उन्होंने यह कहा है कि जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति ये मानो तीन अवस्थाएं होती है, और चतुष अवस्था तुरीया कहलाता है। तो हे प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ, मुझे वर्णन कराया तो उन्होंने कहा तो उद्गीत कराओ, उच्चारण करो। उन्होंने कहा प्रभु! मुझे यह तो कहा प्रभु! जैसे जाग्रत है, यही आत्मा का बाह्य स्वरूप होता है, आत्मा का

बाह्य प्रकाश होता है, नेत्र उसके प्रकाश में प्रकाशित हो करके ही संसार का द्दष्टा बन जाते हैं, संसार को द्दष्टिपात करने लगते हैं, तो यही मानो देखो, जब जागरूक से यही आत्मा जब मानो स्वप्नवत में भी मानो देखो, मन देखो, आत्मा के प्रकाश में संसार को द्दष्टिपात करता है मानो देखो, इन शरीरों में नद नदियां नही होती, नद नदियों के निर्माण हो जाते हैं। मानो उस शरीर में पत्नी नही होती, पत्नीयों का निर्माण हो जाता है। पति नही होते, पतियों का निर्माण हो जाता है। मानो यह कैसा एक विचित्र जगत है, राष्ट्र नही होते राष्ट्र का निर्माण हो जाता है। यह मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया था विद्यालय काल में परन्तु मैं आपको यह जानना चाहता हूँ तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा कुक्कुट ने कहा, हे राजन! यह यथार्थ है। मानो आत्मा के प्रकाश में ही नेत्र गोलक बन करके सब कार्य को द्दष्टिपात करते हैं, और स्वप्न अवस्था में यही मन है, प्रकृति का मानो देखो, जो अपने में मानो देखो, संसार को आत्मा के प्रकाश में द्दष्टिपात करता है, क्योंकि जितना भी यह जगत है बाह्य जगत और आन्तरिक जगत उसका साक्षात प्रतिनिधित्व तब करने वाला, यह मानो मनस्तव कहलाता है। बेटा! यही मनस्तव है, जो मानव इसको अपने में धारण करता हुआ, अपने में परणित कराता रहता है, मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि मुनि अप्रतं राजा ने यह राजा ने यह धारण कर लिया और यह कहा कि उन्होंने कहा हे राजन! तुम्हें प्रतीत होगा, कि यही आत्मा जाग्रत है, यही आत्मा सुषुप्ति है ओर यही आत्मा मानो स्वप्न कहलाता है। यह जो स्वप्नवत में मानो क्रियाकलापों में क्रियाकलाप करता रहता है, यह चित्त के मण्डल में सूक्ष्म सूक्ष्म विद्यमान होते हैं, आत्मा का प्रकाश हुआ यह मन ही मानो देखो, यह रचना हो गई, रचना के मानो देखो, अन्तःकरण में चित्त के मण्डल में निहित हैं, वह तन्तु,

आत्मा के प्रकाश में मन एक साकार रूप में भोगने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा कुक्कुट ने एक समय कहा क्या मेरे जो महापिता थे, मेरे चतुर्थ जो महापिता थे, रेणकेतु मुनि महाराज, वह एक समय भयंकर वनों में अध्ययन करने लगे, तो साधना कर रहे थे तो वह इसी को मुनिवरों! यह जानने के लिए इसकी साधना की मानो चित्त के मण्डल को जानना चाहता हूँ, तो चित्त के मण्डल को जानते जानते उन्होंने पिचासी वर्षों तक मानो तप किया, और पिचासी वर्ष के पश्चात मानो उनके जन्म जन्मान्तरों के मानो कोई पिचासी के एक सौ पिचासी जन्मों के संस्कार उनके समीप उन्हें साक्षात्कार उन्हें दृष्टिपात आने लगे मेरे प्यारे! देखो, यह कैसा अनुपम, यह चित्त का मण्डल है, मुनिवरों! इसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, अन्वेषण और अनुसन्धान करता रहा है। और अपनी आभा में निहित रहा है। राजा रावण ने कहा यह जो सुषुप्ति है, हे राजन्! यह सुषुप्ति क्या है? यह नाना मानो मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार मानो उसकी साम्यावस्था में परणित जब हो जाते हैं तो उसको सुषुप्ति कहते हैं। तब यह मन का व्यापार, क्रियाकलाप इसका समाप्त हो जाता है, उस समय आत्मा प्राणों के सहित मेरे प्यारे! देखो, अन्त में जागरूक हो जाती है, आत्मा यह जानता है प्राण शरीर से ले करके गतिवान होता रहता है। परन्तु मन अपने व्यापार समाप्त कर देता है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह वर्णन कराया तो व्याख्या करते करते राजा ऋषि को विचार विनिमय करते करते बेटा! रात्रि समाप्त हो गई। मेरे प्यारे! राजा रावण का हृदय शान्त हो गया, उन्होंने कहा प्रभु! वास्तव में आपके उपदेशा अमृतों से मेरा अन्तरात्मा पवित्र हो गया है, अब मेरी इच्छा यह है भगवन! अब प्रातःकाल होने वाला है मेरी इच्छा यह है कि आप मेरी लंका का भ्रमण करें, मैं लंका को दिग्दर्शन कराना

चाहता हूँ, बहुत समय हो गएं जब लंका में आपका पदार्पण हुआ था, उन्होंने कहा हे राजन! मुझे इतना समय आज्ञा नही दे रहा है, जो मैं तुम्हारे राष्ट्र में भ्रमण करूं, मैं प्रभु के आनन्द में रहता हूँ, प्रभु के आनन्द में ही विभोर रहता हूँ, मेरे प्यारे! देखो, कुक्कुट मुनि महाराज ने तो ऐसा मुझे स्मरण है मेरे पुत्रों! क्या राजा रावण देखो, नाना मानो देखो, जब राजा रावण ने नम्रता से प्रार्थना की तो ऋषि बेटा! नम्र हो गएं। प्रातःकाल होते ही मेरे पुत्रों! देखो, राजा रावण अपने वाहन में ले करके बेटा! वहां से गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, वह ऋषि मुनियों के अपना मिलान करते हुए मेरे प्यारे! देखो, लंका में उनका प्रवेश हुआ, जब लंका में प्रवेश हुआ तो सबसे प्रथम राजा रावण ने बेटा! अपने गृह राजलक्ष्मी के गृह में प्रवेश कराया, मानो देखो, गृह में उनकी पत्नी, अपनी देवी से कहा कि तुम ऋषि के सेवा करो, मैं मन्त्री मण्डल में वार्ता प्रगट करके आता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण तो मन्त्री मण्डल में चले गए और ऋषि को महारानी मन्दोदरी ने नाना प्रकार के पदार्थों का, ऋषि को पान कराया। नाना प्रकार के रसों का पान करा करके, मेरे पुत्रों! मन्दोदरी बोली कि हे प्रभु! मेरी इच्छा ऐसी है, कि आप जब लंका से अपना प्रस्थान करोगे, तो मेरे पति को ऊँची शिक्षा दे देना, हे प्रभु! संसार में कोई पत्नी यह नही चाहती कि मेरे पति में किसी प्रकार का अवगुण हो सदैव पत्नी की एक ही कामना होती है कि मेरे पति में सर्वत्र गुण होने चाहिए मेरा पति महान भी हो सदाचारी भी हो, योगेश्वर भी हो, मेरे पुत्रों! नाना प्रकार की और इच्छा प्रगट करती है। कि मेरे पति में सर्वत्र गुण होने चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक ऋषि से कहा तो ऋषि ने कहा कि देवी! मैं प्रयत्न करूंगा। इतनें में राजा रावण आ गएं उन्होंने कहा कि आओ, भगवन! अब

आप मेरी लंका का भ्रमण करो, मेरे प्यारे! देखो, ऋषि और राजा दोनों ने भ्रमण किया, और भ्रमण करते करते वह कुबेर भवन चले गएं राजा रावण ने कहा प्रभु! इस भवन का निर्माण महाराज कुबेर ने किया था। मेरे पुत्रों! देखो, कुबेर का नामोच्चारण श्रवण करके, उन्होंने कहा भगवन! बहुत प्रिय। मेरे प्यारे! राजा रावण ने कहा प्रभु! मानो देखो, मेरे से पूर्व लंका का स्वामी महाराजा कुबेर थे, और कुबेर से पूर्व लंका का स्वामी, महाराजा महिदन्त था और महाराजा महिदन्त से पूर्व इस लंका का स्वामी महाराजा शिव था, महाराजा शिव से पूर्व लंका का स्वामी महाराजा दुष्यन्त था महाराजा दुष्यन्त से पूर्व लंका का स्वामी रेणकेतु था, रेणकेतु से पूर्व लंका का स्वामी वेणकृति, वेणकृति से पूर्व लंका का स्वामी मान्धाता था मान्धाता से पूर्व लंका का स्वामी कृतिभानु था, कृतिभानु से पूर्व लंका का स्वामी कृति केतु था, कृतिकेतु से पूर्व लंका का स्वामी यज्ञदत्त था यज्ञदत्त से पूर्व लंका का स्वामी काचकानी था मांचकानी से पूर्व लंका का स्वामी श्वेतभानु था और श्वेतभानु से पूर्व लंका का स्वामी यज्ञवृति था, और वृत्ति से पूर्व लंका का स्वामी मानकेतु था और मानकेतु से पूर्व लंका का स्वामी सुधन्वा था और सुधन्वा से पूर्व मानो देखो, लंका का स्वामी सोमकेतु था, और सोमवृत्ति से पूर्व लंका का स्वामी सोमभानु था और सोमभानु से पूर्व लंका का स्वामी बेटा! त्रेतकेतु था बेटा! मैं लंका की प्रणाली का वर्णन नही करने आया हूँ, यह तो मानो देखो, बड़ा विचित्र साहित्य है, जो मानो देखो, नाना राजा रमण करते रहे हैं तो मानो देखो, राजा रावण ने कहा प्रभु! यह लंका मानो मैंने कुबेर से विजय की और मैंने मानो महाराजा महिदन्त से कहा प्रभु! मैंने यह लंका को विजय कर लिया है मानो लंका को अपनी ग्रहण करो। तो उन्होंने कहा कि मानो देखो, यह लंका उन्होंने मुझे प्रदान की, मेरे पिता

पुलस्त्य ने आपके प्रति मेरे प्यारे! देखो, आपको प्रतीत है कि मानो देखो, जब यह वाक राजा रावण ने कहा उन्होंने कहा कि आईए भगवन! भ्रमण कराया तो मेरा राष्ट्र महाराजा शिव ने किया यह स्वर्ण का भवन है तो मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के संग्रहालयों को दृष्टिपात करने लगे उनका हृदय बड़ा प्रसन्न हो गया नोटः २१.२० मिनट तक लिखा है आगे गुणवता ठीक नही है। ०४ ११ १९८५।

2 **१७ ११ १९८५**

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व भान्ति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव जो यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है, मानो जिसका याग ही आयतन माना गया है, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का हम गुणगान गाते चले जा रहे थे, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप मानो याग उसका आयतन माना गया है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा जो इस संसार रूपी यज्ञ का निर्माण करने वाला है, जो मानवीय याग की धारणा की धरे सव्रतां मानो इसको धारयामि बना रहा है, जिसका निर्माण मानो उस परमपिता परमात्मा ने किया है, जिस भी काल में मानव इन यागों के ऊपर अपनी उड़ान उड़ना प्रारम्भ करता है, तो दोनों प्रकार के यागों की मानव कल्पना करने लगता है, एक हमारा याग वह कहलाता है। जिसे हम यह संसार रूपी जो याग है, मानो जिसमें सर्वत्र देवता अपना अपना हूत कर रहे हैं, उन्हीं देवताओं का सूक्ष्म रूप, यह मानवीय शरीर रूपी ब्रह्माण्ड की हम कल्पना करते रहते हैं, परन्तु दोनों रूपों में, हमारा यह याग प्रारम्भ रहता है, मेरे

प्यारे! महानन्द जी! मुझे नाना प्रकार की हमें प्रेरणा देते रहते हैं। और इनकी जो प्रेरणा का स्रोत है, वह बड़ा अदभुत, जिसके ऊपर हमारे यहां, परम्परागतों से ही, अन्वेषण, और अनुसन्धान होता रहा है, प्रत्येक मेरी प्यारी माता, इस संसार रूपी जो याग है, और मानवीय जो हूत हो रहा है, उसके ऊपर प्रायः वह अपने में गम्भीर मुद्रित हो करके, और उसके ऊपर प्रायः वह अनुसन्धान करती रही है।

मुझे माता मल्दालसा का जीवन स्मरण आता है तो बेटा! हृदय गद् गद् हो जाता है। यहां जब माता मल्दलासा अपने में याग करने लगती तो मुनिवरों! देखो, हृदय ओर बाह्य जगत दोनों का समन्वय होता रहा है, और जब दोनों का समन्वय होता है, तो यह जो परमात्मा का अमूल्य यज्ञशाला रूपी जो संसार है, यह भली भान्ति हमारे समीप, एक मानो देखो, विज्ञान की धारा बन करके हमारे समीप आती है, मानो यही दो रूपों में हमारे यहां परणित हो जाता है, आध्यात्मिक याग और भौतिक विज्ञान कहो या भौतिक याग कहो परन्तु दोनों का स्वरूप एक ही बना रहता है। यहां कोई भी मानव यह चाहता है, कि मैं मृत्युञ्जय बनना चाहता हूँ। तो मृत्युञ्जय बनने के लिए मानव याग करता है, क्या मैं मृत्यु से पार हो जाऊं। प्रत्येक मानव की यह आकांक्षा लगी रहती है, कि मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए, माता भी यह चाहती है कि मेरा पुत्र चला गया, मृत्यु को प्राप्त हो गया। मानो विरहन में व्याकुल हो रहा है, माता व्याकुल हो रही है, जब मैं माता के समीप जा करके यह कहता हूँ, हे माता! तू रूधन क्यों कर रही है? कि मेरा पुत्र था वह नही रहा, मैं व्याकुल हूँ मेरे पुत्रों! देखो, उस समय एक दार्शनिक, आख्यिका एक स्मरण आने लगती है हे माता! यह आत्मा तेरा पुत्र है या शरीर तेरा पुत्र है। अब मुनिवरों! देखो, माता यदि यह कहती है कि मैं आत्मा को पुत्र स्वीकार करती हूँ,

तो आत्मा का विनाश नही होता, आत्मा तो मानो सदैव एक रस चेतना बनी रहती है, और यदि यह कहती है कि शरीर मेरा पुत्र है, तो शरीर का शव ज्यों का त्यों निहित है। तो माता निरूतर हो जाती है।

तो विचार विनिमय क्या, मेरे प्यारे! जो मानव मृत्यु से पार होना चाहता है, तो अपने में ज्ञान और विज्ञान की दृष्टि से मानो देखो, उसका साकल्य बना करके, ज्ञान रूपी हृदय में जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है, उसमें याग करना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, उसमें याग हो जाता है। आज मैं विशेष चर्चा नही दूंगा, क्योंकि मेरे प्यारे! महानन्द जी! यह कहते हैं कि मुझे बहुत समय हुआ, मुझे भी दो शब्द उद्गीत गाने के लिए, समय दिया जाएं। परन्तु आज का हमारा वाक क्या कहता है, क्या यहां संसार में जो भी प्राणी आया है। वह याग करने के लिए आया है, अब याग का अभिप्राय क्या है? जितना भी संसार का, सुहृदय का कर्म है वह सर्वत्र याग कहलाता है। मानो देखो, किसी प्रकार का क्रियाकलाप है, और वह मानवीय हृदय से जिसका समन्वय होता है, जैसे माता मल्दालसा अपना याग कर रही है, माता के गर्भस्थल में शिशु आ रहा है, माता मुनिवरों! देखो, उस आत्मा से अपने हृदय में, ज्ञान के द्वारा उस आत्मा से अपनी वार्ता प्रगट कर रही है, और उससे वार्ता कर रही है जिससे शुद्धम्, बुद्धम्, निरञ्जन ब्रीहि वृताः मेरे प्यारे! देखो, माता मल्दालसा कहती है, कि हे आत्मा! तू शुद्ध, बुद्ध, निरञ्जन है मेरे प्यारे! देखो, माता इन्हीं विचारों की आहुति दे रही है, और वह जो माता के गर्भस्थल में, शिशु पनप रहा है, बाल्य हम जैसे पुत्र पनप रहे हैं, मेरे पुत्रों! देखो, जब वह बाह्य जगत में आते हैं, तो लोरियों का पान कराती है विचारो में दार्शनिकवाद है। तो वह बालक मुनिवरों! देखो, ब्रह्मवेत्ता बन जाता है। तो ब्रह्म को पान करना भी एक याग सबसे महान कहलाया जाता है मेरे पुत्रों! देखो,

माता पांच वर्ष की आयु में अपने पुत्र को जब ब्रह्मवेत्ता बना लेती है, तो वह कहती है कस्मा ब्रहे व्रतम् ब्रह्माः हे ब्रह्मवेत्ताओं! जाओ तुम विचारों में बन गएं हो अब तुम तपस्या के लिए चले जाओ तो माता जब इस प्रकार का याग करती है तो उस माता को धन्य है तो मेरे पुत्रों! देखो, हमारे यहां यागां भवि व्रतप्पव्हे स्वस्ता मेरे प्यारे! याग कर्म में मानव की निष्ठा होनी चाहिए। माता अपने गर्भ में, बालक का निर्माण कर रही है, वह याग कर रही है, मानो अपने में विचारों को शोधन कर रहा है, वह याग कर रहा है। मेरे प्यारे! अग्नि में हूत करना ही, वायु मण्डल का शोधन करना है ज्ञान रूपी साकल्य को एकत्रित करके, इन्द्रियों के विषय को, हृदय रूपी यज्ञशाला में जो याग करता है, बेटा! वह आत्मिक याग कर रहा है मुनिवरों! देखो, हृदयं ब्रह्मा वह परमात्मा के हृदय से अपना मिलान करना चाहता है। तो वह मृत्युञ्जय बनने के लिए बेटा! प्रत्येक मानव, याग करता है हमारे यहां पञ्च यागों का, परम्परागतों से बेटा! एक मानो क्रियाकलाप चला आ रहा है। इसे हम ब्रह्मयाग कहते हैं, देव पूजा कहते हैं, मानो उसी की आभा में ब्रह्मा व्रतो अतिथि है मुनिवरों! बलि वैश्व इत्यादि यह पञ्च यज्ञों में मानो देखो, यह भूतां ब्रह्मे व्रताः यह याग मुनिवरों! देखो, पञ्च याग माने गएं हैं, इसको हमारे यहां सृष्टि के आदि में, ऋषि मुनियों ने बहुत अनुसन्धान किया। तो मैं आज इन विचारो में न जाता हुआ, अब मेरे प्यारे! महानन्द जी! दो शब्द उद्गीत रूप में गाएगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् यशो सर्वं ब्रह्मा वाचन्नमाः ब्रह्मणो गताः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, एक ऐसी आध्यात्मिक चर्चा कर रहे थे, जिस आध्यात्मिक चर्चा को श्रवण करने के लिए, दार्शनिक जन अपनी अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके और इन विचारों के ऊपर अनुसन्धान करते रहे हैं, आज मैं इन विचारों

के ऊपर टिप्पणी करना, केवल सूर्य और जुगनु की वार्ता मुझे स्मरण आने लगती है। इस सम्बन्ध में, तो मैं कोई चर्चा नही करूंगा। यह जो हमारी आकाशवाणी जिस स्थली पर जा रही है, उस स्थली पर एक याग का आयोजन हुआ। साम मंगलं वृहि तस्ताः साम गान के द्वारा, मेरा हृदय बड़ा प्रसन्न और मानो देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा करता हूँ, क्या यह जो काल चल रहा है, जो वर्तमान का काल है, यह बड़ा विचित्र काल चल रहा है, ऐसे वाममार्ग के युग में, मानो देखो, यज्ञमान अपने द्रव्य का सदैव सदुपयोग कर रहा है। इसमें मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न है क्योंकि यह जो आधुनिक युग है, आधुनिक जो काल है, यह वाममार्ग का काल कहलाता है। वाममार्ग उस काल को कहते हैं, जिस काल में भक्ष्य और अभक्ष्य पदार्थों का ज्ञान नही रहता। न तो उसको यह ज्ञान है कि तू क्या भक्ष्य कर रहा है, और क्या अभक्ष्य पदार्थ तेरे समीप।

क्योंकि बहुत काल हुआ, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से निर्णय कराया था, क्या बहुत समय हुआ महाभारत के काल का जो काल है वह बड़ा भयंकर काल रहा है, उस काल में धर्म और मर्यादा के विचारों को सन्तुलना नही दी गई, उन विचारों में किस काल में नाना प्रकार के सम्प्रदायों का जन्म हुआ, महाभारत काल के पश्चात नाना सम्प्रदायों का जन्म हुआ और उन सम्प्रदायों में सर्वांग अङ्ग वैदिकता को न अपना करके, अपने ही विचारों से इस संसार की कल्पना करने से भी मानव धर्म और मानवीय मर्यादा का ह्रास हो जाता है मानवीय मर्यादा का ह्रास उस काल में होता है जब नाना प्रकार की रूढ़ियां होती है धर्म के ऊपर, और उसके पश्चात याग का तिरस्कार किया जाता है, याग का तिरस्कार इस महाभारत के काल के पश्चात, महात्मा बुद्ध ने किया। बुद्ध से पूर्व काल में भी मानो ह्रास होता

रहा है और वह ह्रास किस काल में रहा है कि यागों को स्वीकार नही किया। महाभारत के काल के पश्चात, वाममार्ग समाज की उत्पति हुई, अज्ञानता में उन्होंने मानो याग में मांसों की आहुति देना प्रारम्भ कर दिया जब मांसों की आहुति देना किस रूप में दिया क्या हमारे यहां भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहा है, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो पैंसठ प्रकार के यागों का कर्मकाण्ड जानते हैं। पैंसठ प्रकार के याग हमारे यहां इस प्रकार के हैं, जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने भी कई काल में हमें प्रगट कराया जैसे अग्निष्टोम याग है, वाजपेयी याग है, और अश्वेमध याग है, और अजामेध याग है, नाना प्रकार के यागों का चयन है, परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ, क्या महाभारत काल के पश्चात जब अज्ञान आया, तो यागों के उन शब्दों को भ्रष्ट करने का प्रयास किया उस वाममार्ग समाज ने अजामेध में तो मानो देखो, बकरी को लिया अजामेध से बकरी को लिया उसके अङ्गों की आहुति देना, याग में प्रारम्भ किया। जो मानव उसको प्रसाद रूप में पान करने लगा, इसी प्रकार देखो, जब यहां अश्वमेध याग का वर्णन आया अश्व के हमारे यहां दो अर्थ माने गएं हैं, एक अश्व कहते हैं, राजा को और मेध कहते हैं, प्रजा को शाब्दिक अर्थ तो यह बनता है, परन्तु वाममार्ग समाज ने जब मूर्खों ने मानो देखो, इस पामरों के अर्थ को इस रूप में लिया की अश्व नाम घोड़े का है, और मेध नाम मानो देखो, याग में आहुति देने का है, तो इस प्रकार देखो, घोड़ें के अङ्गों की आहुति देना महाभारत काल के पश्चात वाममार्ग ने प्रारम्भ किया इसी प्रकार जब ब्रहे यहां देखो, अजामेध ओर देखो, नरमेध याग होते रहे। मानव की आहुति देना भी उसमें प्रारम्भ किया, और उसको प्रसाद रूप से पान करने का प्रयास किया। मानो देखो, प्रसाद रूप में पान किया मैंने ब्राह्मण समाज से कहा क्या तुम, यह जो पान कर

रहे हो यह रसों का आनन्द है, या यागों का कोई क्रियाकलाप है। तो उत्तर कुछ नही प्राप्त हुआ, उसके पश्चात यहां यागों में दो वेदी का निर्माण हुआ, द्वि वेदी बनी मानो एक वेदी हिंसा से रहित और एक हिंसा से युक्त हो गई। परिणाम यह हुआ कि अग्नि में मासों की आहुति देना, अब यह वाक जब महात्मा बुद्ध के समीप आया महात्मा बुद्ध ने यह स्वीकार किया कि देखो, यहां यज्ञों में राजाओं के यहां मांसों की आहुति दी जाती है। अश्वमेध याग में नर मेध याग में, अजामेध याग में, गो मेध याग में, वाजपेयी यागों में बैल की बलि का वर्णन में देखो, उसमें वर्णित किया। जब यह वाक देखो, आए तो महात्मा बुद्ध ने वेद का अध्ययन नही किया यह सूक्ष्मता थी, उन्होंने देखो, व्याकरण की दृष्टि से, वेद का अध्ययन न करके, उन्होंने देखो, याग और वेद का बहिष्कार कर दिया, और यह कहा मैं इसको स्वीकार नही करूंगा। क्योंकि इसमें हिंसा हैं, इसमें बलि दी जाती है, मैं इसको स्वीकार नही कर सकूंगा। जब महात्मा बुद्ध ने यह याग का बहिष्कार किया तो याग के बहिष्कार का परिणाम यह हुआ, क्या यह समाज सब मानो देखो, सब हिंसक बन गया, वाममार्ग का काल बन गया देखो, यहां मोहम्मद के मानने वालों ने, याग का तिरस्कार कर दिया ईसा के मानने वालों ने याग का तिरस्कार किया, सुगन्धि तो अपने समीप लाने का प्रयास किया, कि सुगन्धि तो होनी चाहिए। परन्तु याग का कर्मकाण्ड न जान करके, उसका मानो बहिष्कार करने के पश्चात अब्रतं ब्रह्मा देखो, उसका परिणाम यह हुआ कि यह समाज सब मानो देखो, नाना प्रकार के मांस के भक्षण करने वाला बन गया। तो आधुनिक काल उस आभा में निहित हो रहा है, जहां प्रत्येक मानव मांस को पान करता है, कुछ मानव को त्याग करके कुछ ही मानव को त्याग करके पान कर

रहा है, यह कैसा दुर्भाग्य है।

मानो देखो, इसमें सम्पदा वैदिक सम्पदा में ऐसा नही आया वैदिक सम्पदा यह कहती है कि हे मानव! तू अपने विचारों को ऊँचा बना, तू अपनी वाणी से भी हिंसा प्रारम्भ न कर, और यह प्राणियों को हिंसा मानो उन्हें बलि करके उन्हें पान कर रहा है, यह क्या है ऐसा क्यों हुआ है? इसका परिणाम यह है क्या देखो, याग का बहिष्कार करने से, याग को अपने से दूरी करने से, हमारे यहां पुरातन काल में जो, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया वह वर्णन शैली इस प्रकार की मैंने वर्णित की थी, क्या यह संसार मानो कितनी अधोगति को प्राप्त हो गया, मैं राजा से यह कहता हूँ आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है, वह राष्ट्रवाद यह घोषणा करता है, कि मांस का पान करना चाहिए, मानो देखो, उनका उदघाटन कर रहा है, मैं यह कहा करता हूँ, कि राष्ट्र ने चिन्तन नही किया राजाओं ने चिन्तन नही किया है, आधुनिक काल का राष्ट्र यदि वह भगवान मनु के सिद्धान्त को और मनु जी के विचारों का पान कर लेते या वेद की पोथी को अपने यहां लाने का प्रयास करते, उसका अध्ययन करते, तो मानो देखो, राजा अहिंसा परमोधर्मी बन करके पुनः यह राष्ट्र ऊँचा बन जाता। परन्तु देखो, मुझे दुःखित और मैं अपने अवृतों से उद्गीत गाता रहता हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराता रहता हूँ क्या आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है वह अपने आसन को प्रातःकालीन जब त्यागने का प्रयास करता है, जबकि वह नाना प्रकार के प्राणियों के रसों को अपने उदर में प्रवेश कर लेता है। तो यह मैं आज ब्रहे मुझे जब मैं दृष्टिपात करता हूँ, आधुनिक काल के राष्ट्रवाद की तो मैं यह कहता हूँ कि वेद की परम्परा जब राष्ट्र त्याग देता है तो राजा वाममार्ग हो जाता है। यह राष्ट्रवाद वाममार्ग की एक मानो देखो, प्रतिभा कहलाती है। जब मैं यह विचारता हूँ कि यह

वार्म मार्ग इस प्रकार बना ब्रहे, सम्भूति ब्रह्म लोकां यहां बैल की बलि का वर्णन वाजपेयी यागों में होता रहा है, परन्तु हमारे यहां बैल की बलि को संसार में जाना नही।

एक आख्यिका महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने निर्णय की है, जो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे प्रगट कराई उनमें एक गाथा आती है, एक अलंकार आता है अलंकृत करते मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है क्या याग के धुंए को याग को मानो देखो, काला हिरण ले गया और उस हिरण ने उस याग को वत्रासुर को प्रदान कर दिया तो वत्रासुर का इन्द्र को दोनों का संग्राम हुआ और संग्राम हो करके उसमें वृष्टि कर दी और वहां बैल की बलि का वर्णन आया है यह महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वर्णन किया, परन्तु इसकी आख्यिका करते हुए आचार्यों ने कहा है, क्या याग देखो, याग कहते हैं तरंगों को, जो सुगन्ध की तरंगें हैं, वेद की ध्वनि के सहित है, और मुनिवरों! देखो, वह हिरण क्या वह याग का जो धुम्र है, याग को उसको हम देखो, हिरण कहते हैं, और उन्होंने कहा वत्रासुर नाम मेघों का है उन मेघों को मानो देखो, वह याग प्रदान कर दिया, और देवता जब प्रसन्न हुए, तो उन्होंने उनकी वृष्टि कर दी। जब वह वृष्टि बन गई, तो यहां बैल की बलि का देखो, वृख की बलि का वर्णन आया, बेटा! वृख नाम गऊ के बछड़े को कहते हैं, वृख नाम गऊ के बछड़े का नाम है, मानो देखो, वह पृथ्वी की चमड़ी को उधेड़ करके, उसके मांस में बीज की स्थापना कर देता है। वह उसकी बलि स्वीकार की जाती है। बुद्धिमानो ने कहा कि परिश्रम का नाम बलि कहा जाता है। जो बलि करता है, अपने को हूत करके, बलि कर्म करता है उसका नाम बलि है न की प्राणी को नष्ट करने का नाम बलि नही हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, मरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वर्णन कराया, क्या बलि के अर्थों को न जान करके,

नाना सम्प्रदाय और वाममार्ग ने मानो देखो, यज्ञों का अपने से बहिस्कार कर दिया। आज मैं इस विचारों में जाना नही चाहता हूँ, मेरा तो हृदय यह कहता है, मैं तो यज्ञमान के साथ रहता हूँ, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, क्योंकि जो मानव अपने द्रव्य का सदुपयोग करके देवतओं को हूत कर देता है, मानो वह यज्ञमान, अपने में सौभाग्यशाली बना रहे, यह मेरी सदैव कामना रहती है। आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से, जब मैं मानो इन बलियों के सम्बन्ध में देखो, अजा नाम बकरी को कहा जाता है, जब अजामेध याग होता है, अजामेध याग का अभिप्राय यह है, क्या हम अपने मानवतव को इतना आगे बना लें कि जिस इस हमारे मानवीय विचारों को कोई भी विजय न कर सके। अर्थ तो इसका यह बना परन्तु देखो, वाममार्ग समाज ने, अजामेध का अर्थ केवल बकरी लिया, और उसके मांस की आहुति देना प्रारम्भ किया। यह अनर्थ है यह पामरों का क्रियाकलाप है परन्तु देखो, यह पामर प्रवृत्ति मानव की समाप्त हो जानी चाहिए।

मेरा तो हृदय यह कहता है कि हे भगवन! तू इस राष्ट्रवाद को और राजा को सुमति दे, जो अपने गृह में याग का पथिक बन जाएं, क्योंकि भगवान राम ने जैसे घोषणा की थी, कि मेरे प्रत्येक गृह में, राष्ट्र में याग होना चाहिए। यह राम की घोषणा थी रावण की चर्चाएं, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कर रहे थे रावण के राष्ट्र में भी, याग की घोषणा थी, क्या देखो, विचारों में याग होना चाहिए, परन्तु देखो, भगवान राम के यहां जो प्रायः क्रियात्मक प्रत्येक गृह में सुगन्धि ओर वेद की ध्वनि आती रहती थी। आज देखो, जिस गृह में से, जिस राजा के राष्ट्र में, वेदज्ञ ध्वनि, प्रत्येक गृह में से नही आएगी, तो नाना सम्प्रदाय वाला राष्ट्र बन करके राष्ट्र रक्तभरी क्रान्ति का मूल बनता रहेगा। परन्तु देखो,

मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा कि आधुनिक जो काल है, वह मानो देखो, सम्प्रदायों की आभा में नियुक्त हो रहा है, और वह सम्प्रदाय इसीलिए कि एक दूसरे प्राणी के रक्त को बहाने के लिए तत्पर है, क्योंकि अज्ञान है, यदि ज्ञान हो जाएं ज्ञान हो जाएं, तो अज्ञान समाप्त हो जाएं, और प्रकाश हो जाएं और जहां अज्ञान है, अज्ञान में अन्धकार है, अन्धकार में तो मानव मानव का भक्षण बनने के लिए तत्पर हो जाता है। आज मैं इस विचारों में नही जाना चाहता हूँ, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह निर्णय कराना चाहता हूँ, क्या यह आधुनिक काल कैसा विचित्र है? मैं यह कहता हूँ हे राजन! यदि तू अपने राष्ट्र को महान बनाना चाहता है, राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है, तो तू याज्ञिक बन। तू याग कर्म करने के लिए तत्पर रह, मानो देखो, आज का राष्ट्रवाद यह कहता है कि राष्ट्र का कोई निवारण नही हो रहा है, परन्तु निवारण तो जब हो जब निवारण की वार्ता को जानने वाला हो, या उसके ऊपर अन्वेषण करने वाला हो, निवारण उस काल में होता है, जहां से जिस वस्तु का प्रारम्भ होता हैं, वही उस वस्तु का समापन हो जाएं। तो निवारण हो जाएगा जैसे मानव देखो, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय कराया, कि भिन्न भिन्न सम्प्रदाय वाले आचार्यों की एक सभा होनी चाहिए गोष्ठियां होनी चाहिए, और उन सभाओं में राजा को देखो, वेदों का अध्ययन करके दर्शनों का अध्ययन करके और उसकी मध्यस्थता करनी चाहिए और मध्यस्थत बन करके बुद्धिमानो की एक सभा होनी चाहिए। और वह नाना मत मतान्तरों के जो आचार्य है उसका शास्त्रार्थ हो उनका विचार विनिमय हो और जो ज्ञान और विज्ञान और दर्शन पर जो वार्ता देखो, स्थिर होती है, उसको स्वीकार करने में किसी प्रकार का विरोध नही होना चाहिए। परन्तु देखो, ऐसा मैंने बहुत

पुरातन काल में यह वाक कहा था कि कोई भी मानव राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में विचारना नही चाहता है, वह तो अपने उदर की पूर्ति में लगा हुआ है, मेरी पुत्रियों के श्रृंगारों के हनन करने में लगा हुआ है, परन्तु जब इस प्रकार की प्रवृत्ति बन जाती है, तो यह राष्ट्र मानो देखो, रक्तभरी क्रान्ति का बना ही रहता है, इसको कोई भी शान्त नही कर सकता।

तो आज मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने यह विचार दिया किसी का प्रतीक मानो आधुनिक काल का विज्ञान है, वह विज्ञान भी त्रास देता है, वह विज्ञान भी मानो समाज को भयभीत करता रहता है, कोई वैज्ञानिक कहता है, कि द्वितीय पातालपुरी के राष्ट्र में ऐसा एक यन्त्र का निर्माण किया, कि वायु में त्यागने से प्राणी समाप्त हो जाएगा, कोई कुछ कह रहा है, परन्तु यन्त्रों का निर्माण भी होता रहता है, यह तो विज्ञान की उपलब्धियां, प्रकृति के गर्भ में से होती रहती हैं। परन्तु वैज्ञानिकों को समाज को त्रास नही देना चाहिए मानो देखो, जो होगा वह भविष्य काल कोई ऐसा वैज्ञानिक हो जाएगा, जो मानो देखो, इसका उत्तरदायित्व ले करके, इस परमाणु शक्ति के निगलने वाले परमाणुओं को जन्म दे सकता है, यह भी तो मानव को विचारना चाहिए, परन्तु देखो, आधुनिक जगत में, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से निर्णय कराया, समुद्र के तट पर, वैज्ञानिकों की सभाएं होती रहती हैं, आधुनिक काल में वर्तमान काल में भी इससे कल का जो काल गया है, इससे कुछ काल हुआ सभा होती रहती है समुद्र के ऊपर देखो, एक ऐसे यन्त्र की छाया आती है, जो उस छाया के अन्तर्गत जो यान चला जाता है, चाहे वह जल यान हो, चाहे वह वायु यान हो, उसका भस्माभूत हो जाता है। उसका एक अङ्कुर भी आधुनिक काल के वैज्ञानिकों को प्राप्त नही होता, तो वैज्ञानिक उस छाया को, कोई तो मानो प्रेता योनि कह

करके शान्त हो जाता है, कोई देवा छाया कह करके शान्त हो जाता है। परन्तु इसके ऊपर अन्वेषण, अनुसन्धान नही किया जा रहा है। क्योंकि अनुसन्धान कैसे हो जबकि वहां तक विज्ञान नही पहुचा। जब विज्ञान वहां तक नही पहुचा क्योंकि मैंने बहुत पुरातन काल में, यह वर्णन मैंने पूज्यपाद गुरुदेव को कहा था क्या महाभारत के काल मे घटोत्कच्छ और नील और देखो, यहां देखो, यह मंगलं ब्रहे सम्भवा लोकां देखो, वह सुषुस्ति वाचा सम्भवं लोकां मानो देखो, एक संत्तानि ही देवो मानो देखो, एक वैज्ञानिकता था इन तीनों वैज्ञानिकों ने विराजमान हो करके, अर्जुन ने और कृष्ण ने इन एक वैज्ञानिक यन्त्र का निर्माण किया था, जो चन्द्रमा और पृथ्वी के मध्य के कक्ष में वह यान भ्रमण कर रहा है और उस यान की छाया देखो, जब भी यन्त्र की छाया आती है। वह यहां से उस भयंकर अग्नि से उसको भस्म करके, उसके सूक्ष्म परमाणु को अपने में सिंचन कर लेता है। तो मानो देखो, वह यन्त्र इस प्रकार का, जो महाभारत काल में जिसका निर्माण हुआ था, यहां मानो देखो, महाभारत के काल में, एक सुकेशु नाम का वैज्ञानिक चन्द्रमा से पृथ्वी मण्डल पर आया था। मानो देखो, महाभारत के काल में उसने, उस यन्त्र की युक्तियां देखो, इन्हें नियुक्त की थी, और देखो, घटोत्कच्छ ओर भगवान कृष्ण को इन्होंने सब युक्तियां दे करके उस यन्त्र का निर्माण हुआ था। आज मैं विशेष चर्चा, इस सम्बन्ध में करना नही चाहता हूँ। विचार विनिमय क्या मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह परिचय देना चाहता हूँ, क्या आधुनिक काल का जो समाज है, वर्तमान काल का समाज एक दूसरे प्राणी को भयभीत करता रहता है, एक दूसरे प्राणी को विज्ञान की त्रासता देता रहता है आधुनिक काल का विज्ञान, पुरातन काल के विज्ञान से अब तक ईकाई में भ्रमण कर रहा है। जब मैं यह विचारता रहता हूँ, क्या ईकाई

ही, एक अब तक और यह अभिमान कर रहा है यह व्यर्थ ही अभिमान कर रहा है कि मुझे दुखद होता है। मैं आधुनिक काल के विज्ञान को भी वाममार्गी प्रथा में स्वीकार करता रहता हूँ। क्योंकि वह अपने में मांस को भक्षण करने वाले हैं, वह साधना करने वाले जब ऊर्ध्वा विज्ञान की कल्पना करेंगें, तो ऊर्ध्वा में गति करेंगें। भारद्वाज मुनि महाराज ने, एक सौ बीस वर्ष तप किया देखो, परमाणुवाद को जानने के लिए देखो, वायु का और तन्दुलों का वह पान करते रहते थे उनका विज्ञान महान बन गया। महाभारत के काल में महाराजा कृष्ण मानो वह कणक को पान करके देखो, अपना रस बना करके, पान करते थे उनका विज्ञान सार्थक बना घटोत्कच्छ देखो, कन्दमूल फल का पान करते थे, वह मांस का भक्षण नही करते थे, उनका विज्ञान सार्थक बन करके रहा तो आज जब मैं इन विचारों को अपने पूज्यपाद गुरुदेव को प्रगट कराता रहता हूँ।

तो पूज्यपाद तो उन वाक्यों को जानते ही हैं, मैं तो यह विचार इस संसार के लिए विचारित कर रहा हूँ, क्या यह हमारी आकाशवाणी मानो देखो, इस पृथ्वी मण्डल पर जा रही है, विचार विनिमय क्या है? क्या मानो देखो, जब तक मानव, इस मांस देखो, आहार और व्यवहार को दोनों को पवित्र नही बनाएंगा, न तो राष्ट्र ऊँचा बनेगा, न समाज ऊँचा बनेगा, मानो जब तक विद्यालयों में महात्मा तपस्वी आचार्य नही रहेंगें, तो विद्यालय भी पवित्र नही बन सकेगा। इसीलिए आज का हमारा वाक्, मैं विशेष चर्चा तो प्रगट करने नही आया हूँ, मैं तो पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ प्रगट कराने के लिए, मेरे हृदय में यह वेदना रहती है, कि राष्ट्रवाद ऊँचा बनना चाहिए। नाना प्रकार के सम्प्रदाय नही रहने चाहिए, जब सम्प्रदाय रहेंगें, एक दूसरा प्राणी देखो, रक्त का पिपासी बना रहेगा, यह मैंने बहुत

पुरातन काल में कहा, और राष्ट्र वाममार्ग होने से वह अपने आहार में लगा हुआ है, वह अपने मानो देखो, अधर्म में लगा हुआ है। अरे, राजन! यदि तेरे राष्ट्र में धर्म नही रहेगा, तो तू धर्म निरपेक्ष कैसा अपने को, तो तू पालन किसका कर रहा है? तेरे में क्या महत्व है जो तू इससे मानो निष्पक्ष हो करके तू इस राष्ट्र को चला सकेगा, क्योंकि जब तू परमात्मा को अपने से दूरी कर रहा है, और कर्तव्यवाद का पालन नही हो रहा है, तो तू पालन किसका राष्ट्र पर शासन किसका है? हमारे यहां मनु जी ने कहा है कि मानव जब कर्तव्य से विहिन हो जाता है तो उस समय राष्ट्र की आवश्यकता होती है जब राष्ट्र जब होती है अन्यथा जो मानव अपने अपने कर्तव्य का पालन कर रहा है उसको राष्ट्र की आवश्यकता क्या है तो इसीलिए राजा को चाहिए, क्या वह धर्म कहां रहता है? धर्म तो राष्ट्र जानता नही, केवल मोहम्मद के मानने वालों का धर्म स्वीकार कर लिया, ईसा के मानने वालों का धर्म स्वीकार कर लिया, नानक के मानने वालों का स्वीकार कर लिया, और नाना प्रकार के मत मतान्तर हैं। परन्तु देखो, मैं यह कहता हूँ यह सम्प्रदाय हैं, इन सम्प्रदायों से राष्ट्र और समाज का कल्याण होना नही हैं। राष्ट्र और समाज का कल्याण जब होगा, जबकि देखो, धर्म, जो मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है, जब तक वह धर्म का पालन नही कराएगा तो राष्ट्र का कल्याण नही हो सकेगा। क्योंकि मानव की इन्द्रियों में धर्म है, मानव सुदृष्टिपान कर रहा है, तो मानो देखो, उसका पूजन हो रहा है, कुदृष्टिपान करता है, तो उसका अन्तरात्मा धिक्कार रहा है। मानो देखो, जब श्रोत्रों से अशुद्ध शब्दों को ग्रहण कर रहा है, तो आत्मा धिक्कार रहा है, परन्तु जब सु शब्दों को ग्रहण करता है, दर्शनों के शब्दों को अपने में ला रहा है तो उसके हृदय में मग्मनता हो रही है, वह मन मग्न हो रहा है और परमात्मा को प्राप्त करने के लिए, अपने

लिए वह कर्तव्यवाद में निहित हो रहा है। तो हे मानव! हे राजन! तेरे राष्ट्र तुझे अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है, तो पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं इन ज्ञानेन्द्रियों के ऊपर तेरे राष्ट्र का मानो अनुसरण होना चाहिए, और उनमें जो धर्म है, उस धर्म को अपना करके तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बना।

तो मानो देखो, इसके साथ ही मैं आज कोई विचार देना नही चाहता हूँ, विचार क्या है मेरा, हे यज्ञमान! पुनः से, हे यज्ञमान! मेरा हृदय यज्ञमान के साथ रहता है इस वाममार्ग के काल में मानो देखो, जो मानव द्रव्य का सदुपयोग कर रहा है। देवताओं को हूत कर रहा है, जिससे देवता पवित्र हो करके वायुमण्डल को पवित्र बना रहे हैं, क्योंकि विज्ञान का मानव कहता है, अब की कुछ समय के पश्चात श्वांस लेने से ही मानव की मृत्यु हो सकती है। मानो देखो, जब मानव याग करने लगेगा, गो घृत साकल्य के द्वारा देखो, वायुमण्डल को विचारों से पवित्र बनेगा, तो वह अशुद्ध परमाणुओं को निगलते रहेंगें, शुद्ध परमाणुओं का वातावरण छा जाएगा, यह समाज यह वायुमण्डल मानो पुनः से पवित्र बन सकता है। तो यह आज का वाक अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा, आज के विचार का अभिप्राय हमारा यह क्या हम हमारे हृदय में यह वेदना है, क्या मानो देखो, राष्ट्रवाद को ऊँचा बनाया जाएं, नाना प्रकार की रूढ़ियों को समाप्त किया जाएं, नाना प्रकार की रूढ़ि जो हैं, यह अज्ञानता में परणित होती हैं, वेद और जो मानवीय दर्शन है, उसके यह विपरीत हैं, वह विपरीतवाद रहता है। तो इसीलिए नाना प्रकार की आभाओं को मानव को त्याग देना चाहिए, और अपने हृदयग्राही इन्द्रियों में जो समाहित रहने वाला यौगिकवाद है, या दार्शनिक वाद है, या मानो यह मानवीयतव को ऊँचा बनाने वाला उसको अपना लेना चाहिए यह आज का वाक हमारा

समाप्त अब मैं अपने वाक्यों को विराम दे रहा हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने अपने उद्गार प्रगट किए प्रायः इनके विचारों में एक वेदना रहती है, राष्ट्रवाद की और यह वेदना बनी रहती है कि राष्ट्र पवित्र होना चाहिए। प्रायः जैसा मेरे पुत्र ने वर्णन किया है, महाभारत काल के पश्चात का जो वाक इन्होंने कहा प्रायः यदि ऐसा रहा है, तो बड़ा अन्धकार रहा है, तो इसीलिए राष्ट्र मैं प्रभु से यह प्रार्थना करता हूँ कि महानन्द जी की इच्छा किसी न किसी काल में पूर्ण अवश्य होगी। क्योंकि ऐसा राष्ट्र भी अवश्य आयेगा, जो नाना प्रकार की रूढ़ियों के ऊपर विचार विनिमय करने वाला हो, क्योंकि अभी तो रूढ़ियों की बलवती महानन्द जी कथानुसार मुझे दृष्टिपात आ रही हैं। रूढ़ियों में रक्त बहाया जा रहा है, तो इस प्रकार के जो विचार है, वह राष्ट्र को प्रायः अपना लेने ही चाहिए, और ऐसी रूढ़ियों को समाप्त करने के लिए तो राष्ट्र का निर्माण होता है, और यदि वह अज्ञानता को नष्ट नही कर सकता तो राष्ट्र का कोई समाज को और अपने को कोई लाभप्रद नही होता। क्योंकि मैंने बहुत पुरातन काल हुआ, भगवान राम के राष्ट्र में यह घोषणा और नित्यप्रति भगवान राम याग करते थे, गृह में याग भिन्न भिन्न, एक सामूहिक प्रातःकालीन एक याग होता था, तो राम का उस काल में उपदेश होता था, तो वह यह कहते है अपने कर्मचारियों से कि मेरे राष्ट्र में प्रत्येक गृह से वेद की ध्वनि, वेद की सुगन्धि और वेद के शब्दों की यागों की सुगन्धि और वेद की ध्वनियों का प्रसार होना चाहिए। तो भगवान राम के यहां, यह परम्परा थी, राम, राम से पूर्व अयोध्या का राजा दशरथ था, उनके यहां भी प्रायः ऐसा हुआ महाराज अज भी ऐसा ही करते थे, और महाराजा रघु तो अपने सर्वत्र, जितना कोष में द्रव्य होता था, उसको प्रति वर्ष वह याग में परणित कर देते

थे। और महाराजा दिलीप गऊओं की सेवा करके और वह गऊओं के घृत ओर दुग्ध के द्वारा मानो गृह में याग होते थे, प्रत्येक गृह में यागों की सुगन्धि, महाराज सगर से ले करके और भगवान राम उसके पश्चात तक भी यह परम्परा हमारे प्रायः मानवीय, मानवीय क्षेत्र में रही है। अश्वमेध याग करना, अजामेध याग करना, भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन, क्योंकि राष्ट्र जिस परम्परा को अपनाता है, समाज उसी को शीघ्रता से धारण करता है। यह नियम है प्रकृति का, क्योंकि बुद्धिजीवी प्राणी राजा के राष्ट्र में होने चाहिएं, शङ्ख ध्वनि होनी चाहिए। शङ्ख कहते हैं वैदिक ध्वनि को क्योंकि वेद के मन्त्रों का उद्गीत गाने वाला जटा पाठ, घन पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त अनुदात्त नाना प्रकार के स्वर से वेदों का गान गाए ओर वह जो गान की परम्परा है, वह वैदिक साहित्य की जिससे वायुमण्डल पवित्र बनता है। वायुमण्डल जब भी पवित्र बनेगा, मानवीय सत्यवादी बनने से बनेगा, जब गृह में दर्शनों का अध्ययन होता है, एक गृह में दर्शनों का अध्ययन होता है, एक गृह में वही कलह रहता है, एक दूसरा विरोधाभास करता रहता है तो जहां दर्शनों का अध्ययन होता है उस गृह का परमाणुवाद महापुरूष ग्रहण करके यह कहता है, यह गृह तो बड़ा पवित्र है, और जहां कलह रहता है, वह कहता है यह गृह तो नारकिक है, तो इसीलिए देखो, गृहों में भी अन्तर्द्वन्द्व वृत्तियां आ जाती है। तो इसीलिए हमें यह विचारना चाहिए कि हम अपने गृहों को ऊँचा बनाना चाहते हैं। तो विचारों को पवित्र बनायें हमारे गृह के विचार वायुमण्डल में जाएंगें। वायुमण्डल पवित्र ... शेष अनुपलब्ध, दिनांक १७ ११ १९८५।

3 १४ १२ १९८५

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा

रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह महिमावादी हैं यह सर्वत्र जगत मानो उसी की आभा में निहित हो रहा है हमारे यहां प्रत्येक वेदमन्त्रों की यह जो पवित्र ध्वनियां होती रहती हैं मानो उस ध्वनि के गर्भस्थल में वह परमपिता परमात्मा निहित हैं जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह किसी भी रुप में हो वह अपने में ध्वनित होता रहता है प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही उस ध्वनि में ध्वनित होता रहा है जिस ध्वनि का सम्बन्ध हमारे मानवीयतव से माना गया है बहुत पुरातन काल हुआ हमारे यहां वेदमन्त्रों की ध्वनियों के ऊपर भिन्न भिन्न प्रकार का विचार विनिमय होता रहा है बेटा! हमारे यहां प्रायः यागों के सम्बन्ध में बहुत ऊंची उड़ाने वेदमन्त्र का अध्ययन करने वालो ने बहुत ऊंची ऊंची उड़ाने उड़ी हैं। जिस उड़ान के सम्बन्ध में हमारे यहां कुछ वेदमन्त्रों की ध्वनियां इस प्रकार की आती रही है हमारे यहां परम्परागतों से ही वेद का अध्ययन करने वालो ने मानो यह अध्ययन किया है यागां भवि रुद्र वाचप्प्रव्हा लोकाः मानो यह जो याग है यह हमारा एक मानवतव जीवन माना गया है जिसके सम्बन्ध में हमारे ऋषि मुनि मानो अध्ययन करते रहे हैं अध्ययन वेत्ताओं ने अपने में ध्वनित होते हुए नाना प्रकार की साधनाएं भी की हैं आज मैं उस साधना के सम्बन्ध में तो कोई विचार देना नही चाहता हूं हमारा वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में ऋषि मुनि एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो करके और बहुत ऊंची ऊंची उड़ाने उड़ते रहते हैं, एक समय बेटा! मुझे स्मरण है

महाराजा सोमकेतु मुनि महाराज अपने में अध्ययन कर रहे थे और अध्ययन भी उनका याग के ऊपर अध्ययन हो रहा था। परन्तु बहुत समय हो गया वह अपने में निपटारा नही कर सके सोमकेतु ऋषि महाराज भ्रमण करते हुए बेटा! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वार पर पंहुचें महाराजा वशिष्ठ मुनि महाराज ने मुनि ने बेटा! उनका स्वागत किया और यह कहा कहो ऋषिवर कैसे आगमन हुआ मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि प्रभु मैं इसीलिए आया हूं क्या मैं प्रातःकालीन कुछ वेदमन्त्रों का अध्ययन कर रहा था और वेदमन्त्रों पर याग के ऊपर बड़ी बड़ी ऊंची ऊंची उड़ाने अथवा मनन करने योग्य शब्दों की प्रतिभा माला बन करके हमारे समीप आ रही थी तो मुनिवरों! उन्होंने कहा तो तुम क्या चाहते हो सोमकेतु मुनि ने कहा प्रभु मैंने वेदमन्त्रों में यह अध्ययन किया है कि यज्ञशाला में जब मानो अध्वर्यु उद्गाता विद्यमान हो करके और अध्वर्यु तीन प्रकार के साकल्य को एकत्रित करता है और वह तीन प्रकार का साकल्य सबसे प्रथम सुगन्धि युक्त कहलाता है और द्वितीय रोगनाशक है और तृतीय मुनिवरों! देखो पुष्टिकारक कहलाता है यह तीन प्रकार का साकल्य ऋषि मुनि परम्परागतों से अध्ययन करते रहे हैं परन्तु महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज से यह सोमकेतु ने कहा प्रभु! यह सुगन्ध और रोग नाशक और जो पुष्टिकारक थे इसमें क्या क्या अन्तर्द्वन्द्व है मैं उसको जानना चाहता हूं सोमकेतु मुनि के शब्दों को पान करने वाले आचार्यों ने कहा कि हे ऋषिवर! मैं इसीलिए उच्चारणं ब्रव्हे व्रत्प प्रव्हा सबसे प्रथम सुगन्धि युक्त होता है प्रत्येक मानव संसार में सुगन्धि चाहता है कोई भी प्राणी ऐसा नही है जो सुगन्धि न चाहता हो उसके हृदय की यह पुकार है उसके हृदय की यह वेदना है कि मैं सुगन्धि में सुगन्धित हो जाऊं मानो जैसे पौधे पर पुष्प रहता है और वह पुष्प मानो सुगन्धि युक्त है तो मानव के हृदय की यह

वेदना कहती है कि मैं भी पुष्प की मानो भान्ति मेरी सुगन्धि मेरे में ही निहित रहे और मैं उसको शनै शनै त्यागने का प्रयास करूं। मुनिवरों! देखो इसी सुगन्ध को ले करके मानव ने बहुत अनुसन्धान किया मेरे प्यारे! वेद में एक मन्त्र भी आता है वेदमन्त्र सुगन्ध के सम्बन्ध में बहुत ऊर्ध्वा में अपने को ले जाता है मुनिवरों! देखो वह सुगन्ध क्या है मानव के जीवन में दो प्रकार की सुगन्धि हुआ करती है एक सुगन्धि बाह्य जीवन में होती है और एक सुगन्ध आन्तरिक जीवन में होती है जो बाह्य जीवन वाला सुगन्धियुक्त बन करके अपने को सुसज्जित बना लेता है अपने को महान बना लेता है वह बाह्य सुगन्धियुक्त हो करके अपने को धन्य स्वीकार करता है इसी प्रकार याग में जो सुगन्ध औषधियों का मानो परमाणु गति करता है वह वायुमण्डल में प्रवेश कर जाता है वायुमण्डल में जो दुर्गन्ध वायु मानव गमन कर गई है मानो परमाणु हैं वह सम्ब्रहा सुगन्ध परमाणु से बेटा! उसका ह्रास हो जाता है। अथवा वह मृतक बन जाते हैं कहीं कहीं मुनिवरों! देखो वह अभ्योदय भी बन जाते हैं परन्तु देखो वह तो एक सुगन्धि यह रही परन्तु एक सुगन्ध वह कहलाती है जिसे सुगन्ध को हम आन्तरिक जगत में ले जाते हैं आन्तरिक जगत क्या है बेटा! मानव तपस्या कर रहा है अथवा साधना कर रहा है वह साधना कर रहा है उसे कोई भी प्राणी नही जान रहा है क्या यह प्राणी कौन है जो एकान्त स्थली पर विद्यमान है कुछ समय के पश्चात मेरे प्यारे! उसके हृदय की तरंगे मानो एक परमाणु कर रुप में उद्धबुध होने लगती हैं और वह उद्धबुध होते हुए आन्तरिक जगत की जो सुगन्धि है वह बाह्य में प्रवेश हो करके मानो नित्य प्राणियों के अन्तकरण में स्पर्श करने लगती है और वह जो स्पर्श प्रवृत्ति है वही मुनिवरों! देखो यह जानकारी करा देती है कि यह मानव तो महान है मानव यह सुगन्धित हो रहा है मानो वह सुगन्धि मेरे हृदय में

प्रवेश हो गई है तो मुनिवरों! देखो वह बाह्य जगत वह सुगन्ध कौन सी है प्रत्येक इन्द्रियों का संयम करता हुआ मानो अपने अन्तःकरण में बेटा! वह अपने में भरण करता हुआ सुगन्धित हो रहा है तो मुनिवरों! देखो वह सुगन्ध कहां तक जाती है मानव के एक मोक्ष की पगडण्डी तक ले जाती है मानो वही सुगन्धित हो करके जब प्राणी आत्मा मुनिवरों! देखो वह गमन करता हुआ प्रभु के उस अनन्यमयी मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। और वह मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करता हुआ अपने में सुगन्धित हो जाता है तो मुनिवरों! देखो वह सुगन्ध क्या है जो सुगन्ध मुनिवरों! देखो समिधाओं के द्वारा अथवा साकल्य के द्वारा यज्ञशाला में प्रवेश हो गई है। मुनिवरों! देखो वह सुगन्धि वायुमण्डल को पवित्र ही नही बना रही है गृह को भी पवित्र बना रही है मानव के विचारों को भी पवित्रतं बना रही है तो मेरे प्यारे! वह जो सुगन्ध है वही तो मानव का जीवन है बेटा! मैं सुगन्ध की एक वार्ता तुम्हे प्रगट कराने के लिए बेटा! मैं सदैव तत्पर रहता हूं। मुनिवरों! देखो एक ऋषि हमारे यहां एक ऋषि हुए हैं जिनका नाम मुनिवरों! देखो महर्षि गौतम कहलाता था मानो देखो गौतम के महापिता थे सोमवृतिका मुनि महाराज सोमवृतिका मुनि महाराज बेटा! एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके वेद का अध्ययन कर रहे थे वेद में मन्त्र आ रहा था हिरण्यं ब्रह्मा व्रत्यं देवाः क्या वह जो परमपिता परमात्मा हिरण्यगर्भ है मेरे प्यारे! देखो हम भी हिरण्यगर्भ हैं सुगन्धं ब्रह्मा वर्णसुते मानो देखो उस परमात्मा के गर्भस्थल में प्रवेश हो करके हम सुगन्ध को अपने में लाना चाहते हैं तो मुनिवरों! देखो सुगन्ध अपने में सुगन्धित होती रहती है एक मानव सत्यवादी बना हुआ है और वह सत्यवादी बन करके चित्त के मण्डल में प्रवेश कर गया है और चित्त के मण्डल में से मानो वह साकल्य की सुगन्ध को लाने का प्रयास कर

रहा है मानो उसकी इन्द्रियों में इतनी तपायमान इन्द्रिय बन गई है। क्या मुनिवरों! देखो वह सुगन्ध बाह्य जगत में प्रवेश कर गई हैं और वह सुगन्ध अपने में सुगन्धित होती हुई मुनिवरों! देखो वह मानव को पवित्र बनाती चली जाती है तो मुनिवरों! देखो वह ऋषिवर बेटा! देखो तपस्या कर रहे थे तपस्या करके अपने अन्तःकरण में वह जो बाह्य जगत बना हुआ है वह जो मानो देखो बाह्य जगत में भी जो चित्त का मण्डल बना हुआ है उसमें से सुगन्ध को लाना चाहते हैं मेरे प्यारे! देखो वह प्राण के द्वारा खेंचरी मुद्रा में परिणत करके उन साकल्यों और तरंगों को अपने में लाना चाहते हैं जिन तरंगों के द्वारा मानव तरंगित हो करके अपने को धन्य स्वीकार करता है तो मुनिवरों! देखो ऋषि अपने अन्तःकरण को जानने का प्रयास किया अन्तःकरण में मानव जो चित्त का मण्डल है जन्म जन्मान्तरों के जो संस्कार हैं उन संस्कारों को वह उद्बुध कर रहा है भयंकर वनों में बेटा! वह उद्बुध कर रहा है और साकल्य को एकत्रित करता हुआ वे तरंगों में तरंगित कर रहा है तो मानो बेटा! देखो वह विचारों की सुगन्धि कितनी विशाल बन जाती है मानो वह बाह्य जगत में नही आन्तरिक जगत में नही मानो एक साकल्य के रुप में मानव के समीप आ जाती है आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हे विशेष चर्चा करने नही आया हूं विचार केवल यह उद्गीत गा रहे थे क्या महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज की चर्चा आ रही थी महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज बेटा! अपने में वेदों का अध्ययन कर रहे थे अध्ययन करते करते मानो देखो वह अब्रोवर्णा सम्भवा लोकां हिरण्यं रथं ब्रहा वाचन्नमं ब्रह्मे देवाः मेरे प्यारे! देखो वह वेदों की आभा को ले करके मानो देखो सुगन्ध के ऊपर विचार विनिमय करने लगे जब वह सुगन्ध के ऊपर क्या यह सुगन्ध मानव को कहां ले जाती है एक ब्रह्मचारी मानो बाल्यकाल में वेदों का अध्ययन कर रहा है अथवा वह अपनी शिक्षा में

पूर्णता को प्राप्त होने जा रहा है मानो उनके विचारों में एक सुगन्धि उत्पन्न हो गई है। क्या मैं अध्ययनशील हूं मानो मैं परमपिता परमात्मा के द्वार पर जाना चाहता हूं मेरे प्यारे! वह विद्यार्थी अपने में मानो देखो महान सुगन्धित हो करके तो मुनिवरों! देखो वह अपने में पार हो जाता है विचार क्या मेरे प्यारे! यहां तीन प्रकार के साकल्यों की चर्चा प्रायः हमारे यहां होती रही है सबसे प्रथम सुगन्धियुक्त पदार्थ जो मानव को सुगन्धित बना देता है मेरे यज्ञमान को सुगन्धित बना देता है मेरे प्यारे! हमारे यहां मुझे स्मरण आता रहा है एक समय बेटा! देखो महर्षि महात्मा ब्रह्मो व्रतो मेरे प्यारे! देखो कौन राह सम्भोतो ब्रह्मे व्रताः मेरे पुत्रों महाराज ज्ञानश्रुति एक समय बेटा! भ्रमण करते हुए महारजा क्रोत केतु राजा के यहां एक याग हो रहा था वह अश्वमेध याग था चाक्राण ऋषि उस यज्ञ के ब्रह्मा थे मेरे प्यारे! देखो महाराजा ज्ञानश्रुति ने जा करके महाराज चाक्राण से यह कहा कि महाराज यह क्या कर रहे हो उन्होंने कहा प्रभु मैं तीन प्रकार के साकल्य को वायुमण्डल में भरण करना चाहता हूं क्योंकि मेरा वायुमण्डल मानो देखो सुगन्धि से रहित हो गया है मुनिवरों! देखो वह उन्होंने कहा बहुत प्रियतम तो महात्मा चाक्राण ने जब यह कहा तो मुनिवरों! देखो उन्होंने कहा सोहो ब्रहा ब्रणे कृतां देवाः मेरे प्यारे! देखो सोमकेतु मुनि महाराज वशिष्ठ मुनि आश्रम से गमन करते हुए मुनिवरों! देखो वह सम्भूति ब्रह्म वाचो देवाः राजा के समीप पंहुचें जहां राजा के यहां मुनिवरों! देखो एक विचित्र याग हो रहा था उस याग को दृष्टिपात करके पुनः मुनिवरों! देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वार पर पंहुचें उन्होंने कहा कि महाराज मैंने चाक्राण ऋषि को याग करते को दृष्टिपात किया है परन्तु वह तीन प्रकार के पदार्थ मानो देखो साकल्य की आभा में परिणत कर रहे हैं वह अग्नि में हूत कर रहे हैं उन्होंने कहा बहुत प्रियतम मेरे प्यारे!

देखो वह सुगन्धि देखो रोगनाशम् ब्रह्मा मुनिवरों! देखो वह जब सुगन्धि पदार्थों में वह परिणत हो गए हैं तो सुगन्धि के सम्बन्ध में उन्होंने क्या कहा है महर्षि चाक्राण के शब्दों में देखो साकल्य देखो सोमकेतु मुनि महाराज ने अपने उद्गार प्रगट किए उन्होंने कहा वह यह कहते हैं क्या यह संसार सर्वत्र ही तो सुगन्धि है एक मानव चरित्रवान रहता है परन्तु वह किसी को उद्घोष नही कर रहा है उसके जीवन में कुछ समय के पश्चात शनै शनै सुगन्धि आनी प्रारम्भ हो जाती है वह सुगन्धि मानो उसकी तरंगों की मानो देखो वह तरंगे व्यापक बन गई है इसी प्रकार वह कोई उससे उद्गीत गाने नही आया है वह किसी से उद्घोष नही कर रहा है। क्या मैं तपस्वी हूं उसका जो क्रियाकलाप है उसकी जो वाणी का भाव है नेत्रों की त्राह है मानो देखो वह उसको उद्घोषित कर रही है तो विचार विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो वह क्या है आज मैं बेटा! तुम्हे एक बहुत गम्भीरतम रहस्य में ले गया हूं और वह रहस्य क्या है कि मानव अपने जीवन में सुगन्धि सुगन्धि लाना चाहता है बेटा! जब कृषक की अनुपम माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! बीज की स्थापना होती है तो वह बीज में जब अमकुरित होता है तो वह सुगन्धि ले करके आता है वह सगुन्धि मानो कहां से उत्पन्न होती है बेटा! यह जो पञ्च महाभूत हैं पञ्च महाभूतों में जब ये पञ्च महाभूतों का अपने रुप में मन्थन होता है तो मन्थन होते हुए मानो उसका जो परिणाम है उसका नाम सुगन्ध कहलाता है जैसे मानो देखो हमारे यहां एक सुगन्ध युक्त पौधा है और उस पौधे में मानो जैसे मृचिका नामक वृक्ष है या पौधा है उस पौधे में मुनिवरों! देखो जब अङ्कुर को बीज रुप में प्रवेश कर दिया वह बीज ही अङ्कुरित बन करके मानो देखो वह बाह्य जगत में आ गया वह मानो कौन उसे अङ्कुरित कर रहा है मेरे प्यारे! वही पञ्चमहाभूत हैं क्योंकि अवकाश के बिना

वह पृथ्वी को अभ्योदय करके नही आ सकता है पार्थिव तत्त्व नही होगा तो उसमें गुरुतव भी नही होगा मानो देखो उसमें रस है वह जल का गुण है मेरे प्यारे! वह आपो का गुण कहलाता है मुनिवरों! देखो वही तेजोमयी वराह है मुनिवरों! देखो अग्नि का गुण है वह जो घटना है ऊर्ध्वा में गति कर रहा है वह प्राण का गुण है मेरे प्यारे! देखो जहां वह अपने को ग्रोहोत बना रहा है व्यापक बना रहा है वह अन्तरिक्ष का गुण कहलाता है मेरे प्यारे! पञ्च महाभूतों को ले करके यह पौधा मुनिवरों! देखो अपने स्वरुप में प्रवेश कर जाता है जब यह अपने स्वरुप में आता है तो इन्ही पञ्च महाभूतों का जब मन्थन होता है तो उस पौधे पर मानो एक पुष्प आता है एक मानो जब पुष्पाञ्जलि आती है उसमें सुगन्धि होती है मुनिवरों! देखो कहां से उसका उद्घोष हुआ है यह तुमने जान लिया होगा पञ्च महाभूतों की प्रतिभा कहलाती है मानो जैसे एक मानो रुग्ण है और वह रुग्णों व्रहा वृतियों में परिणत हो रहा है परन्तु जब वह अपने वास्तविक स्वरुप में प्रवेश होता है तो मानो देखो वह एक पुष्पाञ्जलि बन करके रहता है वह सुगन्धित हो करके मानो देखो ज्यों ज्यों सूर्य की किरण उसे प्रभावित करती हैं मानो वह उस वृक्ष से दूरी हो जाता है जब दूरी हो जाता है तो मानो वह सुगन्ध उसमें उसकी पत्तियों में प्रवेश कर गई हैं परन्तु वही सुगन्धि जब पत्तियां मानो उष्ण बन करके अग्नि के द्वार पर जाती हैं यज्ञशाला में बेटा! देखो अग्नि के मुख में प्रवेश कर देता है यज्ञमान तो यज्ञमान कहता है हे देवी! हे अग्ने! तू मेरा प्रकाश है तू मेरा ही प्रकाश नही है तू संसार का प्रकाश है तू आ इसमें से इसका भेदन कर तो मानो जो पुष्प पंखुड़ियों में जो सुगन्ध उसमें ओझल हो गई है वह अग्नि मानो देखो अपने विराट रुप को ले करके उसे जब भस्म करती है तो उसका अपना अपना रुप पृथक हो जाता है वह सुगन्धि विशेष बन करके

अन्तरिक्ष में प्रवेश कर गई है मेरे प्यारे! देखो वह मेरे प्यारे! प्रभु का कैसा ऊर्ध्वा में मानो देखो नृत्त हो रहा है जिस नृत्त के ऊपर हम सभी प्राणी नृत्तिका में नृत्त कर रहे हैं तो मेरे प्यारे! देखो शाकल्य मुनि महाराज ने जब यह वाक श्रवण किया तो वह बड़े प्रसन्न हुए शाकल्य मुनि महाराज ब्रह्मा व्रणब्रहे व्रातो मेरे प्यारे! देखो सोमकेतु के समीप विद्यमान थे सोमकेतु भी इन वाक्यों को पान करके बड़े प्रसन्न हुए और वह बोले तो धन्य है तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के आश्रम में नाना ऋषिवर अपने में बेटा! अध्ययन कर रहे थे अपने में अध्ययन करके अपनी आभा में नियुक्त होते हुए रुद्र रुप अपने को बनाना चाहते थे तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या है मैं यह उद्गीत गा रहा हूं कि बेटा! हमारा प्रत्येक पदार्थ मानो सुगन्धित होना चाहिए हमारे यहां द्वितीय जो साकल्य है उसे कहते हैं रोगनाशक मानो रोगनाशक कैसे मुझे स्मरण आता रहा है मुझे परमपिता परमात्मा की अनुपम कृपा से बेटा! मानो देखो आयुर्वेद के ऊपर बहुत सा अध्ययन किया है। बेटा! यह निर्णय दिया कि जो पदार्थ तुम साकल्य परिणत करना चाहते हो वह मानो देखो रोगनाशक होने चाहिए तो मुनिवरों! देखो उसमें बहुत से पदार्थ मानो देखो बहुत सी साकल्य औषधियों को एकत्रित किया जाता है एक मुझे स्मरण आता रहता है जब मुनिवरों! देखो महाराजा अश्वपित के यहां बेटा! जब अध्ययन चलता रहता था तो मानो देखो उनके यहां एक मानो विज्ञानशाला थी उस विज्ञानशाला में एक मानो देखो व्रेत नाम का वैज्ञानिक था व्रेत नाम का वैज्ञानिक जब अन्वेषण कर रहा था कहीं अग्नि में तपायमान होता था परमाणुओं को जानने की इच्छा प्रगट कर रहा था तो मानो देखो वह यक्ष्मा में परिणत हो गया जब मानो देखो उसको यक्ष्मा रुग्ण हो गया तो मुनिवरों! देखो वह रुग्ण होते हुए विद्यालय में पंहुचा विद्यालय में जा करके

कहा की प्रभु! मैं रुग्ण हो गया हूं और मैंने मानो अग्नि के परमाणुओं के मानो एक एक श्वांस की गृतियों में लाने का प्रयास किया तो मानो मेरे हृदय पर मेरी कृति पर मानो उसका प्रभाव हुआ है तो मुझे यक्ष्मा रुग्ण हो गया है अब मैं उसको दूरी करना चाहता हूं तो आप कीजिए या मुझे आज्ञा दीजिए मैं उसको दूरी करूं तो मेरे प्यारे! देखो जब यह वाक आया तो मुनिवरों! देखो सब ऋषि मुनि अपने में एकत्रित हो करके विराजमान हुए निश्चय होने लगा क्या ऐसा कौन सा औषध है तो मुनिवरों! देखो इतने में ही देखो स्वाति ब्रहे वाचकेतु ऋषि ने कहा क्या ऐसा औषध है याग मानो देखो याग में गो का घृत हो और गो के घृत को मानो देखो वह साकल्य की रुद्रियों में परिणत हो मानो देखो जैसे हमारे यहां एक मृचिका नामक एक औषध होती है मृचिका नामक औषध उसमें लोंगावृणी होती है और व्रेकेतु होती है और मंगो एक औषध कहलाती है मानो देखो उसमें जावा जावित्री जनोतु कञ्चतु वाचो ब्रह्मा मानो देखो ब्रह्म एक नाशकेतु एक वृत्तिका एक बुटि होती है मानो इनको सबको एकत्रित किया जाता है और मानो देखो एक दूबां क्रुति एक औषध होती है। जो कई प्रकार के रुपों में मानो वह पृथ्वी मण्डल पर रहती है तो उसको एकत्रित करके हमारे यहां मानो देखो पीपल के वृक्ष के समिधा ले करके और वह यक्ष्मा के रुग्णों में मानो देखो नित्यप्रति यदि याग करे तो एक वर्ष के पश्चात मानो उसका ज्यों का त्यों क्षमा समाप्त हो जाएगा परिणाम क्या मानो देखो मैं यह उद्गीत गा रहा हूं क्या संसार में मानो जब भी कोई याग करता है तो वह रोगनाशक औषधियों को एकत्रित करता है मुनिवरों! देखो औषध केवल यागाम् ब्रह्मा जब वह वृष्टि याग करता है तो वृष्टि याग में भी कुछ ऐसे साकल्य एकत्रित किए जाते हैं तो मानो देखो जो रोगनाशक हों रोगनाशक मुनिवरों! देखो नाना प्रकार के रुग्ण होते हैं

नाना प्रकार कर रुग्णों में मानो देखो यही तो औषध अपने में क्रियाकलाप करती रहती है आज मैं बेटा! तुम्हे यह उच्चारण करने आया हूं कि हे यज्ञमान! जब तू याग करने के लिए तत्पर हो तो मानो रोगनाशक औषधियों को एकत्रित कर और उन औषधियों के द्वारा तू याग कर महाराजा अश्वपति प्रातःकालीन नित्यप्रति याग करते थे मानो देखो याग के भिन्न भिन्न प्रकार होते हैं मानो उन यागों में वह पञ्च कोणों में याग नित्यप्रति किया करते थे मानो सप्त कोणों में भी प्रायः याग होते रहे हैं तो महाराजा अश्वपित उनकी पत्नी नित्यप्रति याग करते थे उस याग का परिणाम यह हुआ क्या उनके प्रत्येक राष्ट्र में प्रत्येक मानव मानो यागिक बनने के लिए तत्पर हो गया मुनिवरों! देखो एक समय महाराजा अश्वपति की जो धर्मदेवी थी उनको मानो रुग्ण हुआ तो वह याग करने लगे तो याग करते करते उन्होंने मानो दुदकी का एक औषध को ले करके उन्होंने पीपल के पाञ्चाङ्ग को बना करके मानो देखो उसका अमृत रुप बना करके और वह कामधेनु गऊ के घृत के द्वारा वह जब याग करने लगे तो मानो देखो उनका रुग्ण समाप्त हो गया तो परिणाम क्या मैं आज तुम्हे यह उच्चारण इसीलिए कर रहा हूं क्योंकि आज के वेद के पठन पाठन में मानो देखो यागों का चलन आया तो महाराजा सोमकेतु मुनि महाराज मेरे पुत्रों देखो उसमें महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वारा जो प्रायः यागो का चलन होता महाराजा अश्वपति की वार्ता भी वह वहीं श्रवण करते रहते थे तो मेरे पुत्रों विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो इसको रोगनाशक जो औषध होती हैं उनको मानो उनकी भस्मी बनाई जाती है और उनको मानो देखो मधु माह में प्रवेश करके उसका आपस में मानो उसका खरल बना करक उसको पान भी किया जाता है कुछ औषधियों को तपा करके पान करने से उन्ही के द्वारा याग करने से मानो देखो वह सुसज्जित हो जाती हैं वह

अपने में रुग्णहीन हो जाते हैं तो मुनिवरों! देखो विचार विनिमय क्या मैं उच्चारण कर रहा था की याग में तीन प्रकार के साकल्य होते हैं एक साकल्य होता है पुष्टिकारक मानो देखो जो मानव पौष्टिक बनना चाहता है मुनिवरों! देखो पौष्टिक बनने के लिए जैसे हमारे यहां पुत्रेष्टि याग होते हैं पुत्रेष्टि याग में वह साकल्य एकत्रित किए जाते हैं जिनके याग करने से मानो देखो याग की तरंगें उनकी नासिका के द्वारा अन्तर्हृदय में जब प्रवेश करती हैं तो वह इन परमाणुओं का जन्म हो जाता है जिनसे मानो देखो पुत्र इत्यादियों की उत्पति का एक मूल बनता है मानो देखो उन औषधियों को एकत्रित करके हमारे यहां मुझे स्मरण है मुनिवरों! देखो जब राजा दशरथ के यहां पुत्रेष्टि याग का विधान किया गया या इसके पूर्व वंशलज में चले जाओ महाराजा दिलीप ने मानो कामधेनु दुग्ध का आहार कराया और आहार करके वह उन साकल्यों को ले करके प्रातःकालीन याग करते थे याग करने के पश्चात देखो गो घृत के द्वारा गो दुग्ध के द्वारा भी याग किया जाता है मानो देखो वह वह इतनी प्रचण्ड होनी चाहिए जिससे दुग्ध की आहुति को वह मानो देखो अपने में निगल जाए अपने में निगल जाए घृत भी उसमें प्रवेश हो जाए तो मानो देखो वह साकल्य सम्भेतु कहलाता है तो मुनिवरों! देखो मुझे स्मरण है जब पुत्रेष्टि याग हुआ तो महाराजा दशरथ को छह माह तक गो के मानो दुग्ध और घृत के द्वारा उन्होंने अग्नि प्रचण्ड करके मानो उसमें आहुति का व्रेत किया और वह मानो देखो वह मानो एक सुम्भेतु नामक एक वृक्ष होता है उसकी समिधा बना करके मानो देखो उसको अग्नि में तपाया गया और तपा करके मानो देखो दुग्ध की आहति देने से मेरे प्यारे! देखो उनका शरीर पौष्टिक बनने लगा वैसे वास्तव में आहार भी पान करते थे अन्नाद को भी पान करते थे परन्तु वह याग जो प्रारम्भ हुआ उस याग से मानो वह तरंगें परमाणु मात्र

को देखो जागरुक करने में तत्पर हो गए। वह प्राणं ब्रहे मुनिवरों! देखो उसमें बहुत सी औषधियां होती हैं मानो देखो जो पुष्टिकारक जितने अन्न हैं उन अन्नों में जो सृष्टि के प्रारम्भ में जिस पौधे का मेरे प्यारे! प्रभु ने निर्माण किया माता के गर्भस्थल में मानो उपज करके बाह्य रुप में आया मेरे प्यारे! उस अन्नाद को ले करके उसको पान कराया जाता है अथवा उसी के द्वारा याग किया जाता है तो वह पौष्टिक मानो देखो वट वृक्ष की मानो समिधा ले करके जब उसमें याग किया जाता है तो मेरे पुत्रों देखो मानव पौष्टिक बन जाता है और वह पुष्टिकारक औषधियों को ले करके अन्नादों को ले करके जब वह याग करता है तो अन्तरिक्ष में बेटा! देखो मानो वह जो चिकने पदार्थों की जो घृत है वह मानो देखो घृत के रुप में अन्तरिक्ष में छा जाता है और वह अन्तरिक्ष में वह तरल परमाणुओं को मानो देखो जीवन सत्ता प्रदान करके उन्हे जीवित बनाता है नाशदायक

प्रा में मानो देखो उनका ह्रास होता रहता है तो परिणाम क्या मेरे पुत्रों देखो मुझे कई समय हो गया यागों के सम्बन्ध में अपने उद्गीत गाते हुए मेरे प्यारे! महानन्द जी मुझे प्रेरित करते रहते हैं परन्तु मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष वाक नही प्रगट कर सका हूं विचार विनिमय क्या है मुनिवरों! देखो वह जो पौष्टिक पदार्थ है उसे पान करना है पौष्टिक पदार्थ के द्वारा याग करना है उसमें मुनिवरों! देखो जितने भी मानो अन्न हैं उन अन्नों को एकत्रित करके जिसमें मानो देखो चिकने पदार्थों की उपलब्धियां होती हो ऐसे अन्नों को एकत्रित किया जाता है और एकत्रित करके उन अन्नों के द्वारा मानो देखो उनका खरल बनाया जाता है वह अग्नि में मानो देखो साकल्य के रुप में परिणित किया जाता है मानो देखो वह मानव पौष्टिक बनता रहता है छह माह तक याग करने से शुद्ध आहार करने से मानव का जीवन मुनिवरों! देखो पौष्टिक बन जाता है वह बलिष्ठ हो जाता

है मेरे प्यारे! देखो वह गज के द्वारा भी अपना संग्राम करने के लिए तत्पर हो जाता है तो मेरे प्यारे! विचार मैं विशेष देना नही चाहता हूं विचार यह देने के लिए आया हूं क्या हमारे यहां तीन प्रकार के पदार्थ होते हैं बेटा! सुगन्धित, रोगनाशक, और मुनिवरों! देखो वहीम्ब्रहा व्रती देवाः मुनिवरों! देखो वह पौष्टिक यह तीन प्रकार के मानो पदार्थ होते हैं तीन प्रकार की समिधाएं होती हैं संसार में मानो देखो जो प्रत्येक साकल्य के साथ में अपने अपने विशेष गुणों का वर्णन करती रहती हैं। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! आज मैं विशेष चर्चा तुम्हे प्रगट करने नही आया हूं यह तो तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज मैं तुम्हे यह उच्चारण करने आया हूं क्या महर्षि सोमकेतु मुनि महाराज बेटा! देखो वशिष्ठ मुनि के आश्रम में यह साकल्य के सम्बन्ध में वह मानो देखो अपना निर्णय कराना चाहते थे उनका निर्णय हुआ क्या संसार में तीन प्रकार के पदार्थों के द्वारा याग किया जाता है मानो देखो वह हिंसा से रहित हो और प्रकाशां ब्रहे प्रकाश को देने वाला हो ऊर्ध्वा में तरंगों को उत्पन्न करने वाला हो तो मेरे प्यारे! देखो वह मानव पौष्टिक बन जाता है और पौष्टिक आहार करने से और पौष्टिक पदार्थों के द्वारा याग करने से मुनिवरों! देखो मानव का जीवन महान और पवित्र बन जाता है तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों यह तीन प्रकार के साकल्य के द्वारा मानव यज्ञन कर रहा है परम्परागतों से ही जब माता यह विचार लेती है क्या मैं भी याग करने जा रही हूं तो मानो देखो जब माता के गर्भस्थल में एक मानो एक वेदी है उस वेदी पर एक शिशु आया है और वह शिशु मानो देखो अपने में मग्न हो रहा है वह अपने में मानो प्रबल बन करके संसार में बाह्य जगत में आना चाहता है आयेगा परन्तु माता तू मानो देखो जब तेरे हृदय में यह विचार बन जाता है कि तू यागिक है तू कैसा प्रिय याग कर रही है तू अपने में

अपने का याग कर रही है अपने को अपने में ही शोधन कर रही है मानो देखो माता के गर्भस्थल में शिशु है वह अपने में उसे कुछ ज्ञान देना प्रारम्भ करती है उन्ही साकल्यों को उन्हीं औषधियों को एकत्रित करके मानो उसी का पान करती है नौ माह में नौ प्रकार की औषधियों को एकत्रित करके जब माता पान करती है तो माता का पुत्र अथवा पुत्री सन्ताने पवित्र बनती हैं और माता याग करती है माता मानो देखो अग्नि होत्र कर रही है प्रातःकालीन वह उन्ही साकल्यों के द्वारा उन्ही पदार्थों के द्वारा हिंसा से रहित हो करके वह अहिंसा परमोधर्म में परिणत हो करके मानो देखो वह माता याग कर रही है मां तू कैसी पवित्र है तू कैसी महान बन सकती है मानो देखो तेरा जीवन इतना महान होना चाहिए पुरातन काल मुझे स्मरण है मुझे स्मरण है महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में मानो देखो यह घोषणा हो गई थी वैज्ञानिको ने यह घोषणा की क्या प्रत्येक गृह में मेरी प्यारी माता याग करने वाली हो तो मानो देखो राजस्थलियों से यह घोषणा हुई और प्रत्येक गृह में मेरी पुत्री मानो देखो माता याग करने लगी जब याग में परिणत हो गई तो मानो देखो राजा का राष्ट्र सुगन्धित हो गया वैज्ञानिक जन अपने में दुर्गन्ध को कितना भी परोव्रतां प्रोत्साहन दें परन्तु देखो वह अपने में ज्यों का त्यों सुगन्धित बन करके रहा तो मानो देखो ऐसा स्मरण आता रहता है मुनिवरों! देखो मेरी पुत्रियों को मानव के जीवन में पवित्र बनना है मुनिवरों! देखो यह क्रियाकलाप हमारे यहां परम्परागतों से चला आ रहा है जिस परम्परागतों से जो क्रियाकलाप एक मानवीय जीवन में मानो जो सार्थक बन करके जीवन को ऊंचा बनाता है माता को यह घोषणा की जाती है क्योंकि यह चर्चा तो मैं कल ही रुपों में प्रगट कर सकता हूं क्या माता जब याग करती है उसकी तरंगे नस नाड़ियों के द्वारा स्वाहा के साथ में वह तरंगे माता के गर्भस्थल

में जो जरायु होता है वहां तक प्रवेश करती है और मानो देखो माता धन्य हो जाती है जो इस प्रकार की माताए होती हैं उनका मानो देखो माता पिता से मानो देखो प्रथम पुत्र का पुत्री का निधन नही होता क्योंकि वह अपनी पूर्ण आयु को प्राप्त हो करके और मानवीयतव की छाया में रत्त हो जाते हैं तो मुनिवरों! देखो विचार मैं यह देने जा रहा हूं क्या संसार में यह तीन प्रकार के पदार्थ हैं मुनिवरों! देखो सबसे प्रथम सुगन्धित है और देखो उसके रुग्ण नाशक और देखो पौष्टिक कहलाते हैं यह तीन प्रकार के पदार्थ प्रत्येक प्राणी अपने में ऋतु के अनुसार पान करता रहता है तो बेटा! उनका जीवन पवित्र बन जाता है। तो आगे की शेष चर्चा तो बेटा! मैं कल ही प्रगट करुंगा आज का विचार तो हमारा यह कह रहा है क्या मुनिवरों! सोमकेतु मुनि महाराज की और वशिष्ठ मुनि महाराज की कुछ चर्चाएं हो रही थी वह चर्चा अपना विराट रुप बना करके कहां कहां चली गई मेरे प्यारे! मैं उच्चारण कर रहा था क्या परमपिता परमात्मा की हम महती को अनुपमता को उसके ज्ञानमयी विज्ञान को हम जान करके सागर से हम पार हो जाएं तो बेटा! आज का वाक अब हमारा समाप्त हो गया है कल मुझे समय मिलेगा तो मैं नीचे आ करके मानो नीचे आ करके चर्चा करुंगा आज का वाक अब यह समाप्त होने जा रहा है आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कितना शक्तिशाली और महान बन करके रहा है यह है बेटा! आज का वाक अब समय मिलेगा तो मैं बेटा! शेष चर्चाएं कल प्रगट करुंगा आज का वाक अब समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा ओ३म् ब्रह्म भू रथं ... शेष अनुपलब्ध। दिनांक १४ १२ १९८५।

4 १६ १२ १९८५

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा

रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना यज्ञोमयी का वर्णन जाता है। क्योंकि हमारे यहां परम्परागतों से ही हमारे वैदिक साहित्य में भी मानो उस यागों की प्रतिभा का वर्णन होता रहा है क्योंकि प्रत्येक मानव के हृदय में एक अग्नि प्रदीप्त हो रही है जिस अग्नि का मुख्य उद्देश्य केवल याग का ही एक परिणत होता रहता है जिसके ऊपर हम यह विचार विनिमय करते रहते हैं कि याग अपने में अनूठा एक क्रियाकलाप है जहां हमारे वैदिक साहित्य में वेद का बड़ा विशेषण परन्तु रहे क्योंकि याग अपने में अनूठा एक क्रियाकलाप है जिसके ऊपर परम्परागतों से ही मानव अपने में अनुसन्धान करता रहा है और लेखनीबद्ध करने वालों ने यहां तक वर्णन किया कि परमात्मा मानो यागिक है परमपिता परमात्मा का याग एक आयतन माना गया है मानो देखो वह उसका गृह है उसकी स्थली है जहां मानो वह परमपिता परमात्मा यागों में परिणत रहते हैं परन्तु वेद का मन्त्र हमे बारम्बार कुछ न कुछ प्रेरित करता रहता है हमे उस प्रेरणा में मानो सदैव रत्त रहना चाहिए। संसार का जितना प्राणी मात्र है वह मानो प्रेरणा एक स्रोत्र माना गया है मानव, मानव से प्रेरणा होती है उस प्रेरणा के सूत्र में कटिबद्ध हो करके मानव ऊंची ऊंची उड़ाने उड़ता रहता कहीं मानव बेटा! विज्ञान में रत्त होता है एक पक्षी मानो जो अन्तरिक्ष में उड़ान उड़ रहा है वैज्ञानिक अपने में प्रेरित हो करके उस पक्षी से नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता है तो मानो देखो एक मानो जलाशय में देखो एक प्राणी अपने में गमन कर रहा है गमन करता हुआ जैसे मछली इत्यादि और प्राणी हैं परन्तु उनसे प्रेरणा ले करके परन्तु उनसे प्रेरणा ले करके मानव जल तलं

ब्रहे व्रतां देवाः जलों के गर्भ स्थल में निर्माण करने लगता है बेटा! मानव एक दूसरे से प्रेरणा को प्राप्त करके वे स्वतः प्रेरणा का स्रोत्र बन करके मुनिवरों! देखो उस ब्राह्मण्ड में ऊंची ऊंची उड़ाने उड़ने लगता है आज मैं उस उड़ान में तो जाना नही चाहता हूं विचार केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरुप को मानो स्वीकार करते हैं मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हे प्रगट किया था मुनिवरों! देखो हमारे में इन्द्रप्रस्थ की मैं चर्चा कर रहा था महाराजा कृष्ण का एक निर्वाचन की चर्चा कर रहा था जो राजेश्वरी याग में निर्वाचन हुआ और उनके मानो सपरिवर्ण ब्रहे कृता मानो देखो वहां विराजमान होने वालो ने राजाओं ने अपने अपने वाक प्रगट किए। परन्तु देखो जब सर्वत्र देखो वक्ता अपने व्यकतव्य दे करके शान्त हो गए। भगवान कृष्ण ने भी मानो अपना व्यक्तव्य प्रारम्भ किया वह भी सम्पन्न हो गया परन्तु देखो महर्षि वेद व्यास जो अपने में मानो अनूठे एक लेखनी बद्ध करने वाले रहे हैं उनका मानो वेदों के ऊपर वह अनुसन्धान और निर्णायात्मक अपने विचारों को देते रहे हैं तो महर्षि वेदव्यास मुनिवरों! देखो वह भगवान कृष्ण के चन्दन का लेपन करने के लिए उपस्थित हुए। और उन्होंने भीष्म इत्यादि से मानो आज्ञा ले करके महाराजा इन्द्र कि आज्ञा ली उन्होंने कहा विचार लो मैं इनका मानो लेपन कर रहा हूं अन्तिम मानो वह यज्ञशाला में विराजमान होने वाला जो ब्राह्मण है। जो मानव ब्रह्म का बखान करता रहा है वह अब राजेश्वरी याग को चुनौती प्रदान कर रहा है अन्तिम किसी वाक नही होगा तो मुनिवरों! देखो वह सभी ने राजाओं ने हृदय से कहा कि भगवन आप लेपन कीजिए। और अपना विचार व्यक्त कीजिए लेपन का क्या अभिप्राय है तो इसको हम लेखनी ब्रहास्तं कहते हैं जिसको हमारे यहां वैदिक साहित्य में मानो तिलक भी कहते हैं जैसे मानो देखो विधाता के अपनी भोजई

मानो तिलकारुप करती है इसी प्रकार पति पत्नी मानो उसकी शुभ कामन के लिए वह तिलकाञ्जलि करने लगती है इसी प्रकार ब्रह्मा यज्ञशाला में विद्यमान हो करके मुनिवरों! देखो वह यज्ञमान हो करके यज्ञं ब्रह्मा उनको हृदय की एक कामना प्रगट करता है मेरे पुत्रों वह जो हृदय है वह एक अपने में अनूठा माना गया है हृदय ही इस संसार का पुञ्ज कहलाता है हृदय से ही मानो यज्ञमान याग करता है हृदय से ब्रह्मा मानो उनको एक स्वागार्थ मानो वह तिलकां और चन्दन का वह लेपन करता है मेरे पुत्रों वह अपने में आभायित रहता है। तो उस समय वेदव्यास मुनि महाराज अपना उपदेश प्रारम्भ करते हैं वे कहते हैं क्या मेरा अन्तर्हृदय तो मानो बड़ा एक अनूठा रहा है क्योंकि मैं इस हस्तिनापुर की मानो मैं एक इनका एक पुरोहित के रुप में देखो बारम्बार देखो इनको चेतावनी देता रहता हूं और प्रेरणा देता रहता हूं मानो देखो उसी आभा में नियुक्त हो करके आज मुझे यज्ञ के ब्रह्मा पद के लिए मानो इन्होने नियुक्त किया है मानो मैं ब्रह्मा होने के नाते मानो देखो मैं महाराजा युधिष्ठिर और उनकी जो पत्नी है शुम्भा मानो मैं उनको एक अपने हृदय से एक वाक प्रगट करने वाला हूं क्या उनका जीवन सदैव इसी प्रकार अखण्डता में परिणत रहे क्योंकि अखण्डमयी ज्योति ही अपने में ज्योति जागरुक होती रहती है परन्तु यह जो राजेश्वरी याग हुआ है इसका अभिप्राय यह है कि राष्ट्र अपने में अनूठा बन करके ही मानो देखो राष्ट्र अपने में महान बन जाए राजा के राष्ट्र में मनु के सिद्धान्त से ले करके वर्तमान का जो सिद्धान्त है उस तक मानो यह माना गया है क्या राजा के राष्ट्र में हिंसक प्राणी नही रहना चाहिए प्रजा में हिंसकवादी प्राणी नही रहना चाहिए जो हिंसक प्राणी होते हैं वह अपने मानवीयतव मानो अपनी प्रतिभा को नष्ट करते रहते हैं मानो देखो महर्षि वेदव्यास ने कहा है क्या हमारे राष्ट्र

में मानो देखो राजेश्वरी याग समय समय पर होते रहे हैं समय समय पर राजेश्वरी यागों में एक प्रतिभा अपने में अनूठी बन करके रहे तप उस समय वेदव्यास ने कहा क्या मैंने इस याग में अपने को ब्रह्मवत्त को प्राप्त किया है मेरा अन्तर्हृदय तो यह कहता है क्या मानो अपने में महान बन जाऊं अपने में विजयी बन करके और देखो इन्द्रप्रस्थ को ऊंचा बनाएं आज मैं विशेषता में क्या यह महर्षि वेदव्यास ने अपने में मानो देखो अपने वाक्यों को नियुक्त करते हुए कहा क्या यह जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है यह अग्नि ऊर्ध्वा में रहने वाली है क्योंकि इसका सखा ऊर्ध्वा में रहता है वह सूर्य कहलाता है वह द्यौ कहलाता है मानो अग्नि का समन्वय उन देखो सूर्य और द्यौ से होता है इसी प्रकार जब हम यह विचारते रहते हैं हम यह अनुसन्धान करते रहते हैं कि हमारा वास्तव में जीवन अपने में अनूठा बन करके रहे अपने में महान बन करके रहे तो मानो देखो प्रत्येक राजा और प्रजा में याग की प्रतिभा होनी चाहिए। मानो देखो यह महर्षि वेदव्यास ने यह सदैव अपने वाक प्रगट करते हुए कहा है क्या हमारे यहां पूर्वजों ने भी मानो देखो नाना याग किए हैं नाना रुपों में मानो देखो ऋषि मुनियों का यह उपदेश है ऋषि मुनियों की प्रतिभा रही है देखो माता पुत्र को उत्पन्न करने वाली मानो वह सदैव याग में परिणत रही है तो मैं आज इसीलिए प्रत्येक राष्ट्र के कर्मचारी से राष्ट्रीय वेत्ताओं से और प्रजाओं से यह उच्चारण करने उद्घोष कराने वाले के लिए मैं सदैव की प्रत्येक स्थलियों में याग होना चाहिए। वैज्ञानिक अपनी विज्ञानशाला में नाना प्रकार के परीक्षण करता रहता है और वह परीक्षण मानो याग रुप कहलाते हैं इसी प्रकार आज यह यज्ञशाला की अग्नि प्रदीप्त है। काष्ठ में रहने वाली जो अग्नि है केवल सन्निधान मात्र से ही वह प्रकाश देने लगती है जब अग्नि देखो उसके अन्तर्हृदय में अग्नि विद्यमान है वह अग्नि मानो देखो बाह्य स्वरुपों

को धारण कर लेती है क्या आज का वाक यह क्या कह रहा है मुनिवरों! देखो महर्षि वेद व्यास ने यागों की बड़ी प्रशंसा की और वेदमन्त्रों को उद्धृत करते हुए उन्होंने वेद के आशय के आधार पर अपने मानो देखो उद्गीत प्रगट किए हैं अब मैं अपने विचारों को यहां विराम देने जा रहा हूं क्योंकि महर्षि वेदव्यास ने यही कहा है क्या याग अपने में अनूठा और विज्ञान अपने में अनूठा दोनों का समन्वय हो जाना चाहिए। अब मैं अपने पुत्र महानन्द जी की बड़ी प्रेरणा मानो इनकी बड़ी इच्छा रहती है मुझे भी प्रेरणा हमे भी देते रहते हैं क्या मैं याग के सम्बन्ध में अपने कुछ विचार व्यक्त किए जाएं। तो अब मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने विचारों को व्यक्त करना चाहते हैं।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् सदुमां धेनु गताः यम सर्वाणि दक्षं ब्रह्ममणाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव याग के सम्बन्ध में अपने उद्गीत गा रहे थे आज मुझे तो ऐसा अनुभव होता रहता है। क्या पूज्यपाद गुरुदेव अपने वाक उच्चारण करते रहें और मैं श्रोता बन करके उनको श्रवण करता ही रहूं मेरा हृदय तो सदैव गद गद रहता है परन्तु आज का जो यह मेरे पूज्यपाद गुरुदेव याग के सम्बन्ध में महाभारत के काल में जो इन्द्रप्रस्थ में याग हुआ था वह अश्वमेध याग कहलाता था मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को कई समय हो गए हैं मानो उसी के उद्गीत गाते हुए और वह वाक प्रगट करते हुए। परन्तु आज का मैं तो उस वाक्यों में जाना नही चाहता हूं आज मैं इसीलिए अपने वाक्यं ब्रह्मे यज्ञो व्रताः मानो देखो एक याग का आयोजन हो रहा था मृत्यु व्रहं मैं अपने सूक्ष्म शरीर के द्वारा दृष्टिपात करता रहता हूं परन्तु मेरा अन्तर्हृदय सदैव गद गद रहता है और मैं यह कहता रहता हूं हे यज्ञमान! मेरा हृदय तो तेरे हृदय के साथ होता है परन्तु देखो किसी कार्य को करने से पूर्व उसकी

निष्ठा पवित्र होनी चाहिए परन्तु केवल ऐसा नही क्या मानव अपने जीवन को रुढ़िवाद में ले जाए रुढ़िवादी वह प्राणी होता है मानो जो यह स्वीकार करता है क्या यह रुढ़ि है मानो देखो यह तो करना है परन्तु ऐसा नही उसको कर्तव्यवाद की दृष्टि से करना चाहिए। परन्तु कर्तव्यवाद एक निष्ठावानी एक आभा कहलाती है परन्तु देखो जिस कर्तव्य को तुम करना चाहते हो उस कर्तव्य में तुम्हारे हृदय की निष्ठा होनी चाहिए। परन्तु यह संसार तो परम्परागतों से इसी प्रकार चला आ रहा है रहा यह कि हमारे यहां बहुत से महापुरुष इस प्रकार के हुए हैं क्या वह महापुरुष बने हैं और उनके गृह में जो गृह स्वामिनी है परन्तु देखो वह उनका सहयोग नही दे सकी ऐसे बहुत से ऋषि मुनियों के जीवन मुझे स्मरण आते रहते हैं मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से भी कई काल में यह प्रगट कराए हैं क्योंकि जो हृदय से मानो गृह स्वामिनी अपने मानो कर्तव्यवाद में रत्त नही रहना चाहती तो हमारे जन्म जन्मान्तरों के मानो संस्कारों में कोई न कोई मानो इस प्रकार की विडम्बना रही है परन्तु रहा यह क्या यह मैं उच्चारण कर रहा हूं हे यज्ञमान! मेरे जीवन का मानो देखो प्रतिभा और आहां मेरा जो विचार है वह तेरे जीवन के मानो साथ रहता है मैं अपने हृदय से यह कहता रहता हूं हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य मानो अखण्ड बना रहे। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को प्रगट कराया कई काल में यह कहा है क्या वह मानव कितना सौभाग्यशाली है जो मानो देखो ऐसे द्रव्यवाद के युग में जो द्रव्य को एकत्रित करना चाहता है और उसे शुभ क्रियाओं में लाना नही चाहता परन्तु ऐसे काल में जहां प्रत्येक प्राणी चिन्तित हो रहा है वह अपनी हवि को प्रदीप्त करके देवताओं को हूत दे रहा है यह कितना उसका सौभाग्य है परन्तु मुझे तो इस संसार को दृष्टिपात करते हुए बहुत समय व्यतीत हो गया है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से

सदैव कुछ न कुछ प्रेरणा ले करके उनके वाक्यों को उद्धृत करता रहता हूं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में नाना वाक प्रगट कराए हैं परन्तु मैं भी अपने पूज्यपाद गुरुदेव को प्रेरणा देता रहता हूं परन्तु मैंने बहुत पुरातन काल में यह वाक प्रगट करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव को परिचय देते हुए कहा था कि आधुनिक काल इस प्रकार का है क्या मानो देखो याग का समय समय पर तिरस्कार हुआ है और समय समय पर उसका तिरस्कार होने से मानो उस तिरस्कार का यह रहा है क्या मानव अपनी रसना का इतना स्वादन करने लगा है और रसना का समन्वय अपनी विकृतियों से रहता है इसीलिए मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव से कहा क्या इसके मूल में याग का तिरस्कार है यागां भविते लोकां मानो देखो ब्राह्मणा स्वार्थी प्राणियों ने मानो देखो जो ऊर्ध्वा अकृति मार्ग पर गमन करने वाले हैं आज के प्राणी मात्र ने अपने को अपने उदर को केवल भक्ष्य और अभक्ष्य के ऊपर विचार विनिमय नही कर रहा है वह भक्ष्य अभक्ष्य पदार्थों को पान करके अपने जीवन को विलासता का एक क्षेत्र बनाता चला जा रहा है मैंने कई काल में यह प्रगट कराया मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जिस कृष्ण की चर्चा कर रहे हैं जिस युधिष्ठिर की चर्चा कर रहे हैं जो मानो देखो वह बहुत सात्विक आहार का पान करते थे। भगवान कृष्ण के जीवन में मानो ऐसी विकृतियां रही हैं उनका जीवन ऐसा रहा है जो वायु का छह छह माह तो वह जब योगाभ्यास में परिणत होते थे तो छह छह माह तक वायु का सेवन करते रहते थे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव देखो महर्षि पतञ्जलि की चर्चा कर रहे थे इससे पूर्व काल में पतञ्जलि जी का जीवन ऐसा रहा है क्या मानो उन्होंने अपने चित्त मण्डल में सूक्ष्म संस्कारों को जागरुक बनाने के लिए वायु का सेवन किया आपो जल का सेवन किया नदियों के तटों पर रह करके मानो शीतली

प्राणायाम करके अपनी पिपासा को दूरी करते थे। खेचरी मुद्रा में परिणत हो करके मानो देखो वह अपने में देखो अन्न की पूर्ति कर लेते थे तो विचार विनिमय क्या मैं यह उच्चारण कर रहा हूं। जिस कृष्ण का जिस स्थली पर मानो राज्यभिषेक हुआ था इन्द्रप्रस्थ में आज वह भूमि पुनः से कृष्ण जैसे महापुरुषों को पुनः से पुकार रही है और यह कहती है क्या ऐसा महापुरुष पुनः से आ जाए जिससे पुनः से राजेश्वरी याग हो जाए यहां याग नही है यहां मानो देखो मैंने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन करते हुए कहा था क्या भगवान कृष्ण का जीवन इतना अनूठा रहा है युधिष्ठिर का जीवन इतना अनूठा रहा है पाञ्चों विधाता अपने में अनूठे बन करके रहे हैं। परन्तु देखो जब समय समय पर आ करके मानव अपने जीवन को विकृत बना लेता है मुझे स्मरण आता रहता है मैंने पूज्यपाद गुरुदेव को प्रगट कराया क्या महाभारत के काल के पश्चात इन्द्रप्रस्थ में क्या क्या हुआ है मेरी पुत्री के सतीतव को भी हनन किया गया जो मोहम्मद के मानने वाले थे मानो देखो और भी नाना प्रकार की विकृतियां हुई हैं आज जहां देखो राजेश्वरी याग हो वहां मेरी पुत्रियों के सतीतव के हनन करने की भी मुझे ऐसी मानो तरंगे मेरे हृदय को स्पर्श करती रहती हैं। रहा ये क्या मानो देखो उसी स्थली पर यह हमारी आकाशवाणी जा रही है वहां याग का आयोजन हुआ है मानो देखो समय समय पर राजा आए हैं। देखो राजेश्वरी याग भी हुआ उसी स्थली को समय पर आ करके भ्रष्ट किया जहां देवियों का पूजन होता रहा वहां देवियों के सतीतव का हनन हुआ परन्तु देखो यवनं ब्रह्मे देखो मोहम्मद के मानने वालो ने यहां राष्ट्र की स्थापना की और राष्ट्रीयता में उन्होंने मानो देखो नाना प्रकार के रुप में देखो मेरी पुत्रियों के सतीतव को हनन किया है परन्तु रहा यह कि समय समय पर परिवर्तन होता रहता है उसके पश्चात पुनः परिवर्तन

हुआ और यह परिवर्तन तो यह प्रकृति का स्वभाव बना हुआ है एक मानव स्थूल रुप में है कल वही मानव परमाणु रुप में हो जाएगा वही परमाणु पुनः से एकत्रित हो करके संस्कारों का समूह बना करके पुनः वह किसी योनी को प्राप्त कर लेते हैं यह तो परिवर्तन परम्परागतों से सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके पुनः पुनः मानो देखो परिवर्तन होता रहता है आज मैं इस संसार की इतनी विकृतियों में नही जा रहा हूं विचार केवल यह कि मेरा विचार मानो मेरा जो अन्तर्हृदय है वह यज्ञमान के साथ रहता है हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे परन्तु मैं सदैव यह प्रेरणा परम्परागतों से देता रहता हूं हे यज्ञमान! तू मानो देखो संस्कारों को ले करके आया है। उस संस्कारों की प्रतिभा में याग निहित रहता है परन्तु देखो जिस याग में तुम अपने में देवदत्त बनना चाहते हो मानो देखो उसको हृदय से हृदयग्राही बन करके उस क्रियाकलाप को करना चाहिए द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। मैंने इससे पूर्व काल में प्रगट करते हुए कहा था क्या यह संसार अपने में अनूठा और यागिक बन करके रहा है यागाम् भविते लोकाम् पूज्यपाद गुरुदेव यह कहा करते हैं क्या ब्राह्मण जब उद्गीत गाता है उद्गान गाता रहता है उस उद्गान में तपा करके रस बना करके उसको पान करते हैं उनका हृदय अभी यागिक नही बना है वह बनने में कुरुतियां बन रही हैं परन्तु देखो मैं यह कहता हूं हे राजन्! हे प्रजाओं! हे राजा! तू अश्वमेध यागी बन करके प्रजा का नेतृत्व करने वाला बन आज मैं जो संसार को दृष्टिपात कर रहा हूं आज मुझे कोई राष्ट्र का नेतृत्व करने वाला दृष्टिपात नही आ रहा है मैं केवल उसमें दुःखित क्या अपने विचार मैं व्यक्त करता रहता हूं क्योंकि जहां मेरी पुत्री मानो देखो अपने श्रृंगार को मुनिवरों! देखो वह समर्पित करके अपने उदर की पूर्ति करने वाली हो वह कोई राष्ट्र नही होता है वह कोई राष्ट्र नही होता है राष्ट्र

वह होता है जहां मानव अपने में देखो स्वतन्त्र रुप में जहां अपने में देखो महान और देखो उसके उदर की प्रतिभा ऊंची बनी रहे परन्तु यह राष्ट्र का कर्तव्य है पुनः पूज्यपाद गुरुदेव जिस युधिष्टर की चर्चा कर रहे हैं जब वह इन्द्रप्रस्थ में राज करते थे तो रात्रि समय मानो देखो वह गृह गृह में वह भ्रमण करते थे और राजा यह दृष्टिपात करते थे क्या मेरी प्रजा में कोई दुःखित तो नही है कोई अन्न जल से पीड़ीत तो नही है मानो देखो वह राजा भ्रमण करके जिसको दुःखित दृष्टिपात करते उसको प्रातःकालीन राज्य सभा होती और उनमें उनको निमन्त्रित करके और उनसे कहा जाता हे प्रजाओं! तुम्हे क्या दुःखित है तुम मानो देखो रात्रि के काल में अपने गृह में चर्चा कर रहे थे वह चर्चा मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो अपने दुखद अपने विचारों से व्यक्त करते और राजा से पुकार होती जिस अङ्ग को पूर्ण करने के लिए तत्पर होते मुझे कुछ ऐसा स्मरण है क्या हमारे यहां इस प्रकार का जो राज्यभिषेक राज्यसभा है राजा बनना है प्रजा के लिए मानो देखो वही महानता वाला है और जब मानो देखो आधुनिका काल में जो राष्ट्र में हो रहा है वह क्या है दूसरों के रस को पान करना अपने मानो देखो उदर को प्राणियों का एक समूह रक्त पान करना उनमें से अशुद्ध तरंगों का जन्म होना रसना को स्वादिष्ट बना करके विलासता की एक सामग्री उपलब्ध करना परन्तु देखो राष्ट्र भी यही कर रहा है प्रजा में भी इसी प्रकार का क्रियाकलाप आ रहा है मानो देखो मैं इस इन्द्रप्रस्थ में जहां युधिष्ठिर की भूमि का पञ्ची जहां भगवान कृष्ण जैसों का राज्यभिषेक मानो देखो यज्ञभिषेक होता हो वह महान प्रधानता में परिणत होते हों आज मैं जब इन वाक्यों को दृष्टिपात करता हूं कि आधुनिक काल का जो राष्ट्रनायक है वह क्या कर रहा है परन्तु वह इसीलिए लगा हुआ है क्या मैं दूसरो के श्रृंगार को हनन करके मानो मैं ऊर्ध्वा में गति कर रहा

हूं परन्तु और नही तो द्रव्य को एकत्रित कर रहा है दूसरे के द्रव्य को ले करके अपने उदर की पूर्ति करना चाहता है परन्तु उससे पूर्व के काल में हम जाना चाहते हैं तो और ही कुछ दृष्टिपात होता है आधुनिक काल श्रृंगारित में लगा हुआ है मेरी प्यारी माता जहां मानो देखो कुन्ती जैसी पवित्र माता युधिष्टर जैसो को जन्म दे करके और वह तपों में परिणीत रह करके जन्म देती हो परन्तु देखो आधुनिक काल की जो मेरी प्यारी माता है वास्तव में तो माता माता नही रही वह और ही कुछ बन गई हैं परन्तु देखो श्रृंगार में श्रृंगरित हैं और देखो विलासता की सामग्री अपने में धारण कराना चाहती हैं पुत्रों को ऐसा मानो धृष्ट बना देती हैं क्या वह मानो देखो अपने उदर को मानो देखो वह दूसरे के प्राणियों के रक्त को पान करने वाला क्षेत्र बना लेते हैं विचार क्या मानो देखो वह उनके श्रृंगार में इतनी रत्त हो गई हैं कि दूसरा प्राणी उनको भोजाई माता की दृष्टि से दृष्टिपात करने में संकोच कर रहा है आधुनिक काल का यह जो जगत है यह मुझे बड़ा एक दृष्टिपात आ रहा है परन्तु इसके मूल में क्या है इसके मूल में माताओं का तिरस्कार है इसके मूल में याग का तिरस्कार है जब भी जो मानव याग का और माता का तिरस्कार करता है वह संसार में दुर्भागी है वह संसार में मानो दुर्भागीशाली है वह अपने में महानता की ज्योति में तत्पर नही हो रहा है आज मैं विशेष चर्चा देने नही आया हूं मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को आधुनिक जगत की मानो चर्चाएं कुछ मानो संक्षेप में परिचय देने आता हूं और वह परिचय क्या है क्या हे राजन्! तू अपने राष्ट्र को ऊंचा बना और रुढ़िवाद से इस राष्ट्र को ऊर्ध्वा में ले चल क्योंकि मैं रुढ़ि की चर्चा कहता हूं समय समय पर रुढ़ि की चर्चा करता रहता हूं यहां नाना प्रकार के रुढ़िवादी हैं और ईश्वर के नाम पर जो रुढ़ि बनती हैं वह राष्ट्र के लिए घातक हुआ करती हैं हे राजन्! तेरा कर्तव्य है क्या

तू देखो रुढ़ियों को नष्ट करने में अपने जीवन को समापन कर यदि रुढ़ि नही रहेगी तो राष्ट्र ऊंचा बनेगा धर्म के ऊपर जो रुढ़ि बनती हैं धर्म एकोकी वचन है धर्म बहुवचन नही है इसीलिए एकोकी वचन को ले करके तू अपने राष्ट्र की पतिका को ऊंचा बना मानो देखो इसके साथ ही हे यज्ञमान! मेरा तो हृदय मानो देखो यज्ञमान के साथ रहता है हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे जीवन की प्रतिभा महान बनी रहे जिससे मानो तेरे द्रव्य का सदुपयोग हो करके तेरा द्रव्य ऊंचा बनता रहे तेरे द्रव्य की वृद्धि होती रहे परन्तु देखो उन्ही के द्रव्यों की वृद्धि होती है जो द्रव्य का सदैव सदुपयोग करते हैं दुरुपयोग नही करते हैं दुरुपयोग तेरे गृह में होना नही चाहिए होता भी है तो वह होना नही चाहिए क्योंकि होता है तो यह भी तेरा दुर्भाग्य है एक मानो सौभाग्य है क्या तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग हो एक ही मानो देखो वह यदि द्रव्य का दुरुपयोग होता है तो वह तेरा दुर्भाग्य है तो मानो देखो दोनों आभाओं का चिन्तन करता हुआ तू मानो देखो अपने प्रभु को स्मरण करता हुआ और जन्म जन्मान्तरों के जो चित्त मण्डल में संस्कार विद्यमान है उन संस्कारों के आधार पर अपने जीवन की प्रतिभा को बनाता चल तो इसके साथ अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा क्योंकि मैं विशेष चर्चा तो देता नही हूं एक अङ्कुर रुपों से अपनी वेदना प्रगट करता रहता हूं।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! आज मेरे प्यारे! महानन्द जी ने अपने विचार व्यक्त किए इन विचारों में बड़ी सार्गर्भितता मुझे प्रतीत हो रही है इनका विचार एक परिचय रुप में ही नही इनका विचार एक शिक्षा प्रद है इनका विचार एक अपने में विचार ही नही मानो देखो एक उनकी घोषणा है उनका सदैव यह मनन रहता है और की अपने में मानव को वृत्तियों में महान बनना चाहिए और द्रव्य का सदुपयोग मेरी

पुत्रियों को मानो महान बन करके और देखो बालक को शिक्षार्थी बन करके क्योंकि मैं जैसा महानन्द जी से प्राप्त किया है मुझे तो परम्परागतों का साहित्य और राष्ट्रीयता सब स्मरण आ रही है मानो हमारे यहां महान इस प्रजा को बनाने में पुत्र और पुत्रियों को बनाने में माता का बड़ा सहयोग रहा है माताएं अपने में महान बनती रहती हैं माता और पितरों की मानो अनुकम्पा रही है और वह उस आभा में मानो देखो माता सहयोगी बन करके अपने गृह को ऊंचा बनाए। इसके साथ आज कोई विशेष चर्चा नही मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे इनका विचार बहुत प्रिय लगा शिक्षाप्रद इनका विचार है राष्ट्र के लिए घोषणा है क्या राजा को भी ऊंचा बनना चाहिए। आज का विचार अब यह समाप्त होने जा रहा है आज मैं पुनः से कि यज्ञमान जैसा महानन्द जी ने कहा कि यज्ञमान के गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे। अपने क्रियाकलापों में सदैव महान बना रहे यह आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः मां गतौ सर्वाः आभ्यां दधि ब्रह्माः वायु गताहं मनु ब्रह्मणश्चमा रेवं भद्राः३म्। पूज्य महानन्द जी अच्छा भगवन आज्ञा!। आनन्द मंगलं भवति। दिनांक १६ १२ १९८५।

5 २४ १२ १९८५ मृत्यु का अभिप्राय

......जब तक हम मानो देखो, परमपिता परमात्मा की जो वाणी है, पवित्र है, जब इसका उद्गान मानो गान गाता है, भयंकर वनों में, गान गा रहा है, वीरांगना बन करके मेरी पुत्री गान गा रही है, मानो ब्रह्मवर्चोसि गान गा रहा है, मेरे प्यारे! देखो, सिंह, मृगराज, सर्पराज, एक पंक्ति में विद्यमान हो करके मुनिवरों! देखो, जब उन वाक्यों को श्रवण करने लगते हैं, जानो कि हमारा मानवीय, हमारा मनस्तव पवित्रतव में, परिणित हो गया है, तो मेरे प्यारे! मैं आज इस सम्बन्ध में भी, कोई विशेष विचार नही तुम्हें देना नही

चाहता हूं, विचार क्या कि वेद का मन्त्र इस प्रकार का आ रहा है हम बेटा! उत्तरायण और दक्षिणायन की चर्चा कर रहे थे। वे चर्चा क्या, मेरे पुत्रों! देखो, मानव का मनस्तव, इतना विचित्र बन जाए, इतना महान बन जाए जैसे देखो, मृगराज किसी भी प्राणी से हम मानो देखो, आत्मभाव की हमारे हृदय में एक हृदय ग्राहिता बन जाए, तो मानो कि हमारा हृदय बेटा! पवित्रतम् बन गया है।

आज मैं तुम्हें बेटा! गम्भीर क्षेत्रों में ले जाना नही चाहता हूं। विचार विनिमय क्या मैंने बहुत पुरातन काल में, ये चर्चाएं की है, परन्तु मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय बेटा! देखो, गार्हपथ्य ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी कवन्धि, और सुकेता मुनिवरों! देखो, भयंकर वनों में, कजली वनों में एक समय बेटा! विद्यालय से आ करके एक मानो वट वृक्ष के नीचे विराजमान हो करके, ये चिन्तन करने लगे, ये विचार विनिमय करने लगे, आचार्य ने उन्हें कुछ पठन पाठन की, मानो पद्धतियां नियुक्त की, तो तीनों अपने में ये विचारने लगे, ब्रह्मचारी, कवन्धि ने सुकेता से ये कहा क्या प्रभु! हे ब्रह्मवर्चोसि! हम मानो एक वेद के पठन पाठन में मानो देखो, संसार के ज्ञान और विज्ञान को मापते रहते हैं और विज्ञान को मापते हुए अपने को प्रकाश में पंहुचाने का प्रयास करते रहते हैं। परन्तु हमारे विचार में अब तक ये वाक नही आया क्या हम जिस भी काल में वैज्ञानिकों का युग है तो उन्होंने पार्थिव तत्त्व के ऊपर, गुरुतव के ऊपर सबसे प्रथम अन्वेषण किया है, और गुरुतव से ही मानो देखो, विज्ञान की भौतिकवाद की उपलब्धियां होती रही हैं, और वही उपलब्धियां मानव का जीवन बन करके और ज्ञान और विज्ञान में रत्त रह करके अपने जीवन को उन्होंने मानो देखो, उत्तरायण बनाया है। तो आज हमे भी विचारना चाहिए, ये वट वृक्ष है, इसी वट वृक्ष के नीचे मानव विराजमान हो

करके अपनी आयु को दीर्घ बनाता है। क्योंकि ये वट वृक्ष अपनी आयु में बड़ा दीर्घ माना गया है।

तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा कि विचार विनिमय में किया जाए। क्या विचार होना चाहिए। आत्मज्ञान बिना मानव का जीवन उत्तरायण नही बन पाता। तो उत्तरायण कैसे बनता है? मेरे प्यारे! देखो, जब तक मानो देखो, आध्यात्मिकवाद की चर्चा नही करता और देखो, मृत्यु को नही जान लेता, कि मृत्यु क्या है। मेरे प्यारे! जब तक मानव के जीवन में प्रतिभा का जन्म नही होता।

तो मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा कि हे प्रभु! एक समय हम किसी काल में भ्रमण करते हुए देखो, एक समय हम मंगलं ब्रहे वृतां देवाः हम भ्रमण करते हुए देखो, वह प्रेरित मानो वशिष्ठों ब्रव्हे हम मुद्गल गोत्र में पंहुचें। एक समय जब मुद्गल गोत्र में पंहुचें तो मुद्गल गोत्रीय ऋषि, अपनी मानो देखो, पत्नी को ये शिक्षा दे रहे थे। मानो देखो, पत्नी अपने में खिन्न हो रही थी, क्योंकि उसके पुत्र की मृत्यु हो गई थी और मृत्यु होने पर वह अपने में खिन्न हो करके ये उच्चारण कर रही थी कि मेरी भी मृत्यु हो जानी चाहिए, परन्तु देखो, उनके ऋषिवर, उनके पतिदेव, ये शिक्षा दे रहे थे, कि हे देवी! तुम इतनी खिन्न क्यों हो रही हो? मानो देखो, संसार में मृत्यु अपने में कोई वस्तु नहीं होती। मृत्यु अपने में कोई वस्तु नही होती। मृत्यु तो अज्ञान है, तुम अज्ञानता में क्यों परिणत हो रही हो।

मानो देखो, ये वाक केवल ब्रह्मणे शकुन्तका ने यह अपने पति से कहा कि प्रभु! ये मैंने जान लिया, क्या मृत्यु कोई वस्तु नही है, इसको मैं अच्छी प्रकार जानती हूं, परन्तु मैं ये जानना चाहती हूं प्रभु! क्या मेरा एक पुत्र था उसके न रहने से मेरा शरीर खिन्न बन गया है। मैं मानो देखो, खिन्नता में परिणत हो गई हूं। तो प्रभु! ये भी मैंने त्याग दिया, आपके कथनानुसार, परन्तु

मैं ये जानना चाहती हूं, कि ये जो मेरा शरीर है, ये क्या है भगवन! जब मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नही होती, तो ये मेरा शरीर क्या है। तो मुनिवरों! देखो, महर्षि पिप्लाद मुनि ने दद्दड़ीय गोत्र ने मानो देखो, मुद्गल गोत्र की जो वृत्तियां कहलाती थी वे मुद्गलीय गोत्रीय ऋषि ने ये कहा कि हे प्रभु! ब्रह्मे हे देवी! ये जो तुम्हारा शरीर है, ये परमाणुओं का संघात है, परमाणु मानो, अपनी अपनी स्थिति में स्थिर रहने से मानो वे बलवती होने से, ये परमाणुओं का समूह बन जाता है, यही परमाणुवाद तुम्हें ये प्रतीत है, यही परमाणुवाद तो चारों प्रकार की सृष्टि को मानो उद्बुद्ध करने वाले है, चार प्रकार की जो सृष्टि है, जिन्हें हमारे यहां मानो सबसे प्रथम स्थावर, जंगम, उद्भिज और देखो, अण्डज ये चार प्रकार की सृष्टियां कहलाती हैं। ये चारों प्रकार की सृष्टि, केवल एक परमाणुवाद है, इसी परमाणुवाद की प्रतिभा से मानो देखो, हम सब जंगम कहलाते हैं, वे जंगम ब्रह्मा वृत्तो देवाः वो जंगम सृष्टि मानो अपने में देखो, प्रतिभाषित हो रही है, तो क्या हे देवी! ये परमाणुओं का संघात है, और परमाणुओं का जब संघात होता है, तो मानो देखो, ये मानव स्थूलतव को प्राप्त होता है, परन्तु जब परमाणुवाद अपने अपने मानो देखो, अपनी अपनी स्थलियों में परिणत हो जाते हैं, मानो यह परमाणु विकृत हो जाते हैं तो ये तुम्हारा शरीर विकृत्त हो गया है मानो शरीर का अपना कोई तुम्हारा अस्तित्व नही रहा है। अपने में अस्ति ब्रह्मे मानो नास्ति तुम्हारा शरीर मानो अस्ति बन गया है। नास्ति बन गया है।

तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि पिप्लाद ने शकुन्तका को अपनी धर्म देवी को ये निर्णय कराया कि संसार में मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नही है। ये परमाणुवाद है, यह परमाणु अपने में मानो वृत्तियों में रत्त हो रहा है, मेरे प्यारे! ये अपने में मानो देखो, ये

तो मैंने स्वीकार कर लिया है, क्या मृत्यु कोई वस्तु नही है। परन्तु मैं ये जानना चाहती हूं प्रभु! क्या, ये ब्रह्मे जब मेरा शरीर इस रूप में नही था, तो ये जो परमाणु ये जो परमाणु, यह जो परमाणुवाद है ये कहां चला गया है? ये परमाणुवाद कहां रहता है? मेरे प्यारे! महर्षि बोले कि हे देवी! ये तुम्हें प्रतीत है, क्या यही परमाणुवाद है मानो देखो, जो माता के गर्भ स्थल में, इन्ही परमाणुवाद से मानव के शरीर का निर्माण होता है, मानो यही तो परमाणुवाद है, जो माता के गर्भ स्थल में, एक बिन्दु और बिन्दु में शिशु अपनी आभा में नियुक्त होता रहता है, और सर्वत्र देवता अपना अपना मानो सहयोग दे करके परमाणु की प्रतिभा को जन्म दे देते हैं। मानो देखो, उसमें ओत प्रोत हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह जो विश्वकर्मा है, जो निर्माण करने वाला है, जो निर्माणवेत्ता है। मेरे प्यारे! देखो, वह निर्माणवेत्ता जो विश्वकर्मा, वह निर्माण कर रहा है। मेरी भोली माता को ये ज्ञान नही हो रहा है, कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है मानो देखो, कोई न कोई निर्माणवेत्ता है।

मेरे प्यारे! माता नही जानती तेरे गर्भ से पुत्र का जन्म होगा या पुत्री का, जन्म होगा, ये नही जानती है, इसको कौन ब्रह्मा निर्माण करने वाला है, किन परमाणुओं से निर्माण हो रहा है। बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख, दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण होता है। मेरे प्यारे! वो निर्माणवेत्ता कितना विचित्र है, कितना महान है। तो मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या, वेद का ऋषि कहता हे देवी! आज हमे देखो, निर्माणवेत्ता के ऊपर विचार विनिमय करना चाहिए, वह जो हमारे शरीरों का निर्माण कर रहा है, वह मानो देखो, वह मानव में परमाणुवाद मुनिवरों! देखो, अप्रव्हा इन परमाणुवाद से ही हमारे शरीर का निर्माण हो रहा है।

मेरे प्यारे! जब मानो देखो, देवी ने शकुन्तका ने

जब ये प्राप्त किया, इस ज्ञान को प्राप्त करने के पश्चात, वे बोली कि प्रभु! मैं ये जानना चाहती हूं, जब मानो देखो, जब ये माता का गर्भाश्य नही था, तो ये परमाणुवाद कहां रहता था? भगवन! तो मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा देवी! यही परमाणुवाद, मानो देखो, वीरतव, वीरांगना के रूप में विद्यमान था मानो देखो, उन परमाणुओं की रक्षा करने वाला मानो ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है वह ब्रह्मचारी कहलाता है इन्ही परमाणुओं की रक्षा करने वाली मेरी पुत्री वीरांगना बन जाती है। इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाली वीरांगना बनती है तो गान गाने लगती है।

मुझे स्मरण आता रहता है जब मुनिवरों! देखो, हमारे यहां मुनिवरों! देखो, चाक्राणी गार्गी जब भयंकर वनों में मुनिवरों! देखो, वेदों का उद्गीत गाती रहती थी सामगान गाती रहती थी मानो देखो, वेदों की मानो बैखरी वाणी में अपनी वाणी को उद्घोष करती रहती थी तो मेरे प्यारे! देखो, जब ये उद्घोष करने लगी, तो मुनिवरों! देखो, सर्पराज, मृगराज और देखो, सिंहराज आ करके एक पंक्ति में विद्यमान हो करके वेदों की ध्वनि को अपने में श्रवण करने लगे जब श्रवण करने लगे, तो उन्होंने बेटा! अपने में ये स्वीकार कर लिया क्या मैं अपने में अन्तःकरण में पवित्र बन गई हूं। क्योंकि मुग्ध होकर के वेदों का जब गान गाया जाता है ज्ञान की प्रतिभा, मानव के समीप आ जाती है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है, इन परमाणुओं को रक्षा करने वाली मेरी पुत्री वीरांगना बन जाती है और ब्रह्मचारी इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला, मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है। ब्रह्मचारी जो देवताओं की सभा में, सुशोभनीय बन जाता है इन्ही परमाणुओं की रक्षा करने वाला मानव, पितर यागी बनता है, इन्ही परमाणुओं की रक्षा करने वाला बेटा! देवता बन जाता है। देवता

कौन? जो ब्रह्मवर्चोसि कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, जो ब्रह्मचारी है। वह देवता कहलाता है, मानो देखो, वह उद्गीत गा रहा है देवताओं की सभा में वह सुशोभनीय हो रहा है तो वेद का आचार्य कहता है ब्रह्मवर्चं ब्रहे लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, यहां नाना प्रकार के प्रश्न उत्पन्न होते हैं कि ब्रह्मचारी कौन है? बेटा! ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो ब्रह्म और चरी दोनों को जानता है बेटा! ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो ब्रह्म और चरी दोनों को जानता है, बेटा! ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो ब्रह्म और चरी दोनों को जानता है, बेटा! ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को, और चरी कहते हैं प्रकृति को जो दोनों को अङ्गों और उपांगों से सहित जानता है, वो ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा ब्राह्मणा ब्रव्हे लोकाम् बृहि व्रताम् मानो वह ब्राह्मण कौन है? वेद का आचार्य कहता है ब्राह्मण वो जो जानाति ब्रह्मा व्रतम् देवों ब्रव्हा मेरे प्यारे! देखो, जो परमपिता परमात्मा को, मुनिवरों! देखो, कण कण में दृष्टिपात करता है, वह ब्राह्मण कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मवर्चोसी ब्रह्मा सुतम् ब्रीहि लोकाम् ब्रह्मचारी अकृतो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी वह है जो एक एक श्वांस की प्रतिभा को बेटा! ब्रह्म में पिरोने वाला है, ब्रह्म में जो पिरोने वाला है वही तो ब्रह्मचरिष्यामि बनता है, तो वेद का आचार्य कहता है, हे देवी! संसार में मानो देखो, जिसको देवता बनना है, संसार में मानो देखो, जिसको देवता बनना है ब्रह्मवर्चोसी इन परमाणुओं की रक्षा करने वाला ब्रह्मचारी बनता है। इनकी रक्षा करने वाला ब्राह्मण है, इनकी रक्षा करने वाला जो ब्रह्म की चरी को चरने वाला है मानो देखो, ये तीन मनके हैं, एक ही सूत्र के तीनों मनके कहलाते हैं। परन्तु जब विचार आता है कि ब्रह्मवर्चो ब्रह्मा मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्मचारी वीरतव के रूप में ही मेरे प्यारे! ये परमाणु अपने में मानो गति

करते रहते हैं। ये ओज ब्रहा ये परमाणु अपने में गति वस्तुतो सम्भवा लोकाम् मेरे प्यारे! जब ये विवेचना ऋषि ने प्रकट की, संक्षिप्त मैंने तुम्हें परिचय दिया है मैं कोई व्याख्याता नही हूं केवल तुम्हे परिचय देने के लिए आया हूं और वह परिचय क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, मैं बहुत गम्भीरतम रहस्य में तुम्हे ले गया हूं, परन्तु वेद का वाक यही कहता है, क्या मुनिवरों! देखो, मानव को अपने जीवन को उत्तरायण में बनाना है, उत्तरायण कौन होता है, जो ब्रह्मवर्चोसी कहलाता है, जो ब्रह्म की चरी को चरने वाला है, मानो देखो, अपने श्वांस को ब्रह्म में, ब्रह्म सूत्र में पिरोने वाला है, वही तो बेटा! देखो, उत्तरायण कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, इस आभा में भी मानव अमृतं ब्रहे देवी ने कहा प्रभु! ये भी मैंने जान लिया। पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा जब मैं बाल्यकाल में अध्ययन करती थी, तो ये मुझे शिक्षा देते रहते थे, मैं जानना चाहती हूं, जब मानो देखो, ये परमाणुवाद देखो, वीरतव वीरांगना के रूप में नही होता, तो उससे पूर्व कहां रहता है भगवन!

तो मेरे प्यारे! देखो, देवी ने जब ये प्रश्न किया तो पिप्लाद मुनि कहते हैं क्या ब्रह्मे व्रता देवाः हे देवी! यही परमाणुवाद मानो देखो, अन्न में विद्यमान रहता है, अन्नादां भूतं ब्रह्मा अन्न उसे कहते हैं, जिससे मानव का हृदय और आत्मा की दोनों की तृप्ति होती हो। मुनिवरों! देखो, सबसे प्रथम जो अन्नाद है, उस प्रभु की कितनी महत, कितनी महत्तता है, मेरे प्यारे! देखो, एक पौधा उस पर दो प्रकार का अन्न है, एक अन्न को मानव पान कर रहा है, एक अन्न को पशु पान कर रहा है बेटा! वह मेरा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है। मेरे प्यारे! मानव पान करता है और ओज और तेज की उत्पति कर रहा है, पशु पान कर रहा है, तो बेटा! दुग्ध पय दे रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है, आज मैं तेरे विज्ञान की कोई सीमा नही पा रहा हूं। मेरे प्यारे! देखो, कितना

विज्ञानवेत्ता है, एक ही पौधे पर दो प्रकार का अन्नाद है। वह सबका साझा अन्न है, बेटा! परन्तु देखो, तृतीय जो अन्न है वो प्रहूत, हूत कहलाता है। हूत किसे कहते हैं? यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है, और विद्यमान होकर के साकल्य की आहुति दे रहा है। श्रद्धामयी घृत्त की आहुति दे रहा है। वो हूत कर रहा है, वो देवताओं को भोज दे रहा है। वही परमाणु बन करके बेटा! वृष्टि के रूप में यज्ञमान की मानो प्रतिभा को महान बना रहे हैं। वही तो हूत कहलाता है, बेटा! वो भी अन्न है उससे मानव का अन्तरात्मा तृप्त होता है, अन्तर्हृदय तृप्त होता रहता है। मेरे प्यारे! अग्नि देवताओं का मुख कहलाता है। अग्नि के मुख में बेटा! हूत कर रहा है। मानो अपने में वेदों की ध्वनियों को, अग्नि को समर्पित कर देता है। जिससे बेटा! वो सबके साथ में साकल्य की तरंगें बेटा! द्यौ लोक में प्रवेश हो जाए। द्यौ लोक में प्रवेश हो जाए, द्यौ से ही तो सूर्य प्रकाश लेता है, और वही प्रकाश मेरे प्यारे! देखो, वह अमृतं ब्रह्मा वह समुद्रों में जा करके किरणों का जब प्राकृटय होता है तो बेटा! वहां से जलों के परमाणुओं का उत्थान होता है। वही मानो देखो, वत्रासुर बनता है, और वत्रासुर बन करके, मेघों की वृत्तियों में आ करके बेटा! धीमी धीमी वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है।

तो मेरे प्यारे! ये मानो देखो, हूत कहलाता है। इसीलिए हमें देवताओं के मानो देखो, अग्नि, देवताओं के मुख में हूत करना है। वही हमारे को प्राप्त होना है। मेरे प्यारे! देखो, जिस प्रकार ऋषि ने अपने वाक प्रकट किए उन्होंने कहा देवी! ये मानो देखो, हूत, प्रहूत कहलाता है। जो पुरोहित जन होते हैं। मानो पुरोहित कैसे हों? जो मानो देखो, विवेकी पुरूष हो और पुरोहित को जो प्रदान करता है वो राष्ट्र और समाज के सम्बन्ध में अपनी विचार धारा को नियुक्त करता है, उससे भी मानव के मानवता हृदय तृप्त होता है। तो वह भी अन्नाद

कहलाया गया है, मेरे प्यारे! देखो, मन, वाणी और मुनिवरों! देखो, प्राणं ब्रह्मे ये भी हूत कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जिससे मानव मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करता है।

आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में तुम्हें कोई विशेषता में तुम्हें नही ले जा रहा है, विचार विनिमय केवल क्या मुनिवरों! देखो, ये तीन प्रकार का अन्न ऐसा है जो मन के द्वारा वाणी अप्रतं देखो, प्राण प्रहे व्रोताः अस्सुतं ब्रह्मे लोकाम् मेरे प्यारे! जो उनके द्वारा पान किया जाता है। जो मुनिवरों! देखो, जो इन पांचों ज्ञानेन्द्रियां का साकल्य एकत्रित करके बेटा! जो अपने हृदय रूपी यज्ञशाला में, हृदय रूपी मानो अग्नि प्रदीप्त हो रही है, ज्ञान रूपी अग्नि, जब उसमें हूत करता है, तो बेटा! ये मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हे देने नही आया हूं। विचार क्या, मुनिवरों! देखो, सृष्टि के पिता ने परमपिता परमात्मा ने, ये सात प्रकार का अन्न बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न किया, जिनसे बेटा! ये ब्रह्माण्ड अपने में मानो देखो, गतिशील हो रहा है। अपने में हूत हो रहा है तो मानो देखो, जब ऋषि ने, ये विवेचना की, तो उनकी पत्नी ने कहा प्रभु! जब ये अन्नाद नही होता, उससे पूर्व ये परमाणुवाद कहां रहता है? उन्होंने कहा हे देवी! जब मानो ये अन्नाद नही होता, यही परमाणु मानो देखो, पञ्च महाभूतों के परमाणु अपनी अपनी गतियों में गति करते रहते हैं। मानो देखो, जब मानव के शरीर से जब ये आत्मा निकल जाता है तो मानो मानव का शरीर शव रह जाता है और जब ये अग्नि में मानो देखो, इस मानव शरीर का दाह कर दिया जाता है, तो उस समय मानो देखो, परमाणुवाद अपने, परमाणु में रत्त हो गया है, आत्मा मानो देखो, अपने संस्कारों को ले करके, वो चित्त के मण्डल में गति कर रहा है। वो चित्त के मण्डल में मानो

अपनी प्रतिभा में रत्त हो रहा है। हे देवी! तुम्हे ये प्रतीत है, क्या मानो देखो, वह चित्त के मण्डल में चला गया, उसका विनाश नही हुआ। आत्मा का विनाश नही होता, और देखो, वह परमाणुवाद जब मानव के शरीर का दाह कर देते हैं, तो अग्नि के परमाणु अग्नि में प्रवेश हो गए, जल के परमाणु जल में प्रवेश कर गए, और देखो, ये पार्थिव परमाणु पार्थिकतव में प्रवेश कर गए और वायु, वायु में प्रवेश हो गया है। और अवकाश में अन्तरिक्ष में चला गया है। तो देवी! मैं जानना चाहता हूं, क्या वे मानो देखो, ब्रह्मे व्रतामं देखो, आत्मा का जब विनाश नही हुआ, तो ये क्या है? इसी का नाम तो ज्ञान कहलाता है, इसको जब पृथक पृथक जान लिया जाता है। मानो मैं जानना चाहता हूं कि मृत्यु क्या है? जब परमाणु का विनाश नही हुआ, आत्मा का विनाश नही होता, तो यह मृत्यु है क्या, जिसके ऊपर तुम इतना रुदन कर रही हो। मानो अपने में खिन्न हो रही हो, मैं यह नही जान पाया हूं। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने ये वर्णन कराया, तो पत्नी मौन होने लगी, उन्होंने कहा देवी! हां मृत्यु भी है, क्या तुम्हे यह प्रतीत है, जब मैं राजा जनक की सभा की चर्चा करता हूं जैसे महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से अर्द्धभाग ने ये कहा था कि महाराज! मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो उन्होंने कहा क्या मत कहो कि मृत्यु की मृत्यु नही होती, मृत्यु की मृत्यु ब्रह्मे व्रताम् मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो मुनिवरों! याज्ञवल्क्य ने कहा कि मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है, क्योंकि ब्रह्म को जानने वाले की मृत्यु नही होती, उसे अज्ञान नही होता, इसीलिए मुनिवरों! देखो, मानव को अपने जीवन को उत्तरायण में ले जाना चाहिए। तो मुनिवरों! देखो, उसी को उत्तरायण कहते हैं। जब मानव को आत्मा का और परमाणुओं का बोधक बन जाए मुनिवरों! देखो, वही तो मानव का पवित्र ज्ञान है, जिसके ऊपर मानव अपने जीवन को महान बना लेता

है।

मेरे प्यारे! देखो, मैं उच्चारण कर रहा था मुनिवरों! देखो, जब पितामह भीष्म महाभारत के काल में जब वह मुनिवरों! देखो, उत्तरायण कम्ब्रह्मा जब उनका जीवन, ज्ञान उत्तरायण में चला गया, बेटा! उस समय उन्होंने छह माह उत्तरायण में अपने शरीर को त्यागने का प्रयास किया। मेरे प्यारे! देखो, छह दर्शन हैं, छहों दर्शनों का अध्ययन करने से, मेरे पुत्रों! देखो, उनका ज्ञान आत्म चिन्तन वही तो प्रकाश में ले जाता है। तो बेटा! विचार विनिमय क्या, आज मैं बेटा! अपने विचारों को बहुत गम्भीर मुद्रा में ले गया हूं, मुझे विशेष चर्चा में मानो देखो, जाना नही था, विचार विनिमय केवल क्या कि हमारे यहां बेटा! दो प्रकार का ज्ञान मानो देखो, दो प्रकार का ज्ञान और विज्ञान लोकाम् दो प्रकार का विज्ञान की उपलब्धि मानो वेद के उद्गीत गाने से प्रारम्भ होती है, एक परमाणुवाद है, तो एक आध्यात्मिकवादी है। आध्यात्मिकवादी वह होता है जो आत्मा को जान लेता है, मेरे प्यारे! भौतिक विज्ञान, जो परमाणुवाद में लगा रहता है मेरे पुत्रों! आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता ये जानता है, क्या परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है, और ये ज्ञान विज्ञानवेत्ता उस परमपिता परमात्मा का आयतन है, मानो जितना जितना भी ये जड़ जगत और चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आता है, उस सर्वत्र ब्राह्माण्ड के मूल में, वो मेरा देव दृष्टिपात आता है ये है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय ये क्या मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा की आराधना करना, उस देव की महिमा का गुणगान गाना, अपने को उसमें रत्त हो जाना यही बेटा! हमारा आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूं आज का वाक समाप्त अब वेदों

का पठन पाठन। दिनांक २४ १२ १९८५, बुढ़ाना।

6 ## २५ १२ १९८५

देखो, मुनिवरों! आज तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने गए हैं। जो भी मानव उसको अपना वरण बना लेता है, अथवा उसे वर लेता है, वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। इसीलिए हमें उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना लेना चाहिए। क्योंकि वे वरणीय योग्य है। जो स्वामीत्व है, वो चेतना का मानो अधिपति कहलाया गया है। इसीलिए हम, उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बनाएं अथवा वरने वाले बनें, क्योंकि जो भी मानव उसको अपना अधिपति बना लेता है, प्रायः वो मानव उसी आभा में रत्त हो जाता है और अपने में ये अनुभव करने लगता है। शेष.....अश्रोव्य।

प्रेरणा

तो वह परमपिता परमात्मा मानो ब्रह्मा बन करके, इस संसार को क्रियाशील बना रहा है। यहां प्रत्येक मानव, उस परमपिता परमात्मा के रचाए हुए अमूल्य, यज्ञशाला में सर्वत्र मानो विद्यमान है, यहां नाना प्रकार की कल्पनाएं होती रहती हैं। आज मैं, उस कल्पनाओं में तो जाना नही चाहता हूं, केवल यह कि हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की महत्ती का महती में रत्त होते अपने मानवीय जीवन को पवित्र बनाएं और अपने में ये स्वीकार करें, जैसे मेरे प्यारे! महानन्द जी! मुझे नाना

प्रकार की प्रेरणा देते रहते हैं, उसी प्रकार ये संसार का जितना भी मानव समाज है, अथवा प्राणी मात्र है, ये एक दूसरे के सहयोग, एक दूसरे से प्रेरणा पा करके, वह प्रेरणादायक बन जाता है। नाना प्रकार की जो उड़ाने हैं, वो केवल प्रेरणा ये, मानो एक स्रोत माना गया है।

याग की तीन प्रतिभाएं

इसीलिए हम मानो उस प्रेरणामयी मेरे प्यारे! महानन्द जी! की जो अनुपम, एक प्रेरणा है कि याग के सम्बन्ध में कुछ विचार विनिमय दिया जाए। तो बेटा! याग, हमारे यहां, याग मैंने यागों के सम्बन्ध में कई काल में अपनी चर्चाएं दी हैं। मानो याग में बेटा! तीन प्रकार की प्रतिभा कहलाती है। मेरे प्यारे! सबसे प्रथम मुनिवरों! देखो, इसमें संगतिकरण आता है, सबसे प्रथम तो दानेषु आता है, उसके पश्चात संगतिकरण मुनिवरों! देखो, उसके पश्चात देव पूजा का प्रसंग आता है। तो हमारे यहां दानेषु बनना चाहिए। क्योंकि ये मानव, सदैव अपनी अन्तरात्मा से प्रेरणा क्या उसके हृदय के भाव उत्पन्न होते रहते हैं, उन भावों के आधार पर, उन्हीं तरंगों के आधार पर, वो तरंगित होता रहता है, परन्तु उसके पश्चात वह मुनिवरों! देखो, संगतिकरण की बड़ी विचित्र विवेचना है। प्रत्येक साकल्य को, कहां कितना मानो कितनी मात्रा में उसकी उप्प्रहे वात करना है उन्होंने देखो, उसी के आधार पर वह साकल्य उसका संगतिकरण होता है, नाना प्रकार के साकल्य को एकत्रित करके और उसका संगतिकरण करना, और उसके पश्चात मुनिवरों! देखो, हम देव पूजा करने के अधिकारी बन जाते हैं।

देव पूजा

देव पूजा किसे कहते हैं? देवता कौन हैं? मैंने कई काल में तुम्हे चर्चाएं की हैं, अपने पुत्र को हमने वर्णन कराया, क्या ये संसार में मानो देखो, जड़वत,

चैतन्यवत देवता माने गए हैं। चैतन्य देवताओं का इतना भाव, इतना मानो विशेषता नही, जितनी हमारे यहां जड़ देवताओं की विशेषता मानी गई हैं। हमारे यहां पञ्चमहाभूतों को, मानो देखो, ये पितर ब्रहे, ये जड़ पितर कहलाते हैं। मानो देखो, मातृः, पितृः आचार्य जनाः ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मवर्त्ती व्रताः ये सर्वत्र मानो देखो, एक चैतन्य देवता कहलाते हैं। हम दोनों प्रकार के, देवताओं का अन्वेषण करते हुए, दोनों प्रकार के देवताओं के ऊपर हम अपने में मानो उन देवताओं की पूजा करने वाले बनें। पूजा का अभिप्राय क्या है? प्रत्येक मानव के हृदय में पूजा के सम्बन्ध में, भिन्न भिन्न प्रकार के भावातित मानो होता रहता है परन्तु देखो, ये जो पूजा का अभिप्राय हैं, पूजा का जो रूप है, वो उनकी आज्ञा का पालन करना, सदुपयोग करना, मानो उनको हम देव पूजा कहते हैं। आज हमें जड़ की पूजा करनी है अग्नि की पूजा करनी है। पूजा का अभिप्राय ये है कि जो हमारे अन्तर्हृदय में, जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है उसका मानवीय स्वरूप बनाना है और वाह्य से आन्तरिक जगत में ले जाना है और वह जो मानो देखो, आपो बनकर के अग्नि को अपने में धारयामि बना रही है। इसी प्रकार देखो, वायु अपने वेग में रत्त हो रही है अवकाश में, मानो देखो, वह रत्त हो करके, प्रत्येक धारा को, गमन करा रही है। तो वह मुनिवरों! देखो, एक पञ्चीकरण हो रहा है। आतप्य तत्त्व अपने में मानो देखो, गुरुतव की प्रतिभा में रत्त होते है।

अग्नि के प्रकार

तो विचार विनिमय मैं क्या? मेरे पुत्रों! ये देवपूजा कहलाती है। उन देवता जैसे हमें जल की पूजा करनी है, तो जल की पूजा मानो जल का उपयोग करना है। जल का उपयोग करने का नाम उसकी पूजा है। अग्नि की पूजा करनी है तो अग्नि का सदुपयोग करना उसमें तपना है, जैसे अग्नि मानो अपने स्वरूप में साकल्य को

भस्म करके, वही साकल्य मानो देखो, सर्वत्र ओत प्रोत करण के रूप में परणित कर लेती है। इसी प्रकार हमारे आन्तरिक जगत में अग्नि प्रदीप्त हो रही है। मानो देखो, आन्तरिक जगत में अग्नि है, उस अग्नि को हम मानो देखो, अन्वेषण करते हुए, उस अग्नि के ऊपर विचार विनिमय करते हुए बेटा! कहीं वह अग्नि ब्रह्माग्नि बन करके रहती है, कहीं वैश्वानर नाम की अग्नि बन करके रहती है। कहीं गार्हपथ्य नाम की अग्नि बन करके रहती है। परन्तु हमारे शरीर में वो वाणी के स्वरूप में ओत प्रोत होती हुई, नेत्रों के स्वरूप में ओत प्रोत होती हुई प्राण की पुट लग करके, मानो देखो, वह गतिशील है, वह रूपों में रत्त हो रही है।

गृहपथ्य अग्नि

तो ऐसा मुझे बेटा! प्रतीत होता है, क्या ये जो अग्नि है इसका मुझे ध्यान करना चाहिए। अग्नि का हमें पूजन करना है, मानो जो अग्नि काष्ठ में रहने वाली है, वाणी रूप बन करके, माता पिता, हृदय में एक आकांक्षा रहती है, प्रत्येक मानव के हृदय में रहती है, आत्म ये चाहता है कि मेरा राष्ट्र मानो पवित्र बन जाए, मेरा राष्ट्र स्वर्ग बन जाए। माता पिता भी ये चाहते हैं कि हमारा मानो गृह पवित्र बन जाए तो मानो देखो, गृहपथ्य नाम की अग्नि का वो पूजन करता है गृहपथ्य नाम की अग्नि कौन सी है। बेटा! माता पिता प्रातःकालीन अपने गृह में अग्न्याधान करते हुए उस मानो गृहपथ्य नाम को, गृह को उद्बुद्ध करते हैं और बाल्य मानो माता पिता के अनुसार अपने जीवन को वरतते रहते हैं। जैसा माता पिता का जीवन होता है, अग्निमयी जीवन होता है इसी प्रकार बाल्य का हो जाता है, बालिकाओं का हो जाता है तो मुनिवरों! देखो, वह गृह स्वर्ग बन जाता है। इसी प्रकार राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो राजा के राष्ट्र में भी मानो पवित्रता होनी चाहिए राजा जब प्रातःकालीन याज्ञिक बनता है, याग

करता है, शब्द उद्घोष करता है, शब्दमयी अपने जीवन को बनाता है तो उसका अनुसरण करने वाली मानो ये प्रजा होती है। तो प्रजा और राजा दोनों एक समन्वय हो करके बेटा! इस अग्नि का पूजन करे। जिस अग्नि से, ये संसार क्या हमारा राष्ट्र पवित्रतम् बन जाए।

तो आज मैं मुनिवरों! विशेष विवेचना तो देने नही आया हूं, विचार केवल ये कि आज हम देवताओं का पूजन करना चाहते हैं, पूजन का अभिप्राय उसके तुल्य हमें बनना है, उसी के आधार पर हमें अपनी वाणी को पवित्र बनाना है। जो मानव संसार में वाणी का दुरूपयोग करता है। अप्रियता में उद्घोष करता है, उस मानव की वाणी ही उस मानव को नारकिक क्षेत्र में पंहुचा देती है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार विनिमय क्या, हमें वाणी का सदुपयोग करना है, हमारे जो पूर्वज हैं जैसे हमारे पितर हैं, मातृ है, आचार्य जन है मानो देखो, वह उनकी जो आज्ञा है उसका पालन करना क्योंकि वाणी से जब यथार्थवत बन जाए और अपनी मानो एक वाणी को मौन बनाकर के, हम अपने में रत्त हो करके प्रभु का चिन्तन करें।

द्यौ में वाणी

तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार हमें देव पूजा करनी है। देव पूजा का अभिप्राय तो बड़ा विस्तृत है। मैं कई काल में इनकी चर्चाएं मानो पूर्वकाल में भी की हैं। आज तो केवल इतना ही वाक है क्या, हम मुनिवरों! देखो, अपने को देवपूजा में ले जाएं। संगतिकरण के पश्चात, दानेषु के पश्चात संगतिकरण है, संगतिकरण के पश्चात देवपूजा है, देव पूजा मानो देखो, याग करना देवपूजा है और वायुमण्डल को पवित्र बनाना है। भूः, भुवः, स्वः मानो इनमें जब तरंगे याग की परिणत हो जाती है, वेदोद्घोष होता है, वाणी की तरंगें मानो देखो, वायुमण्डल में प्रवेश करती हैं, तो द्यौ को प्राप्त हो जाती हैं। द्यौ में प्रवेश होती हुई पुत्रों! मैं

विशेष विवेचना तो आज देने नही आया हूं क्योंकि मेरे तो मेरे प्यारे! महानन्द जी! की उत्कट इच्छा रहती है कि क्या वे भी दो शब्द उद्गीत रूप में गान गाने वाले बनूं। परन्तु देखो, परन्तु देखो, ये तो राष्ट्र की वेदना में अपनी वेदना को वेदनित करते रहते हैं। परन्तु आज का हमारा विचार क्या, क्या हम मानो देखो, याग में जैसे महानन्द जी ने प्रेरणा दी, कि याग के सम्बन्ध में कुछ उद्गीत गाया जाए, उच्चारण किया जाए, तो मानो देखो, याग के तीन स्वरूप माने गए हैं। संसार की कोई वस्तु ऐसी नही है जो याग से मानो देखो, ऊपरी हो, वह सदैव देखो, अब्रहा हो। वह सदैव देखो, याग के अन्तर्गत उसकी प्रतिभा गतिवान होती रहती है। जैसे मुनिवरों! हमारे यहां सम्भवा देखो, सबसे प्रथम याग का नाम दानेषु है, ये आत्मा से प्रेरणा उत्पन्न होती है, क्या हमें सुक्रियाओं में यागां ब्रह्मे लोकां द्रव्य प्रदान करना चाहिए। उसके पश्चात ये साकल्य एकत्रित करके उसका मानो देखो, संगतिकरण है संसार की प्रत्येक वस्तु संगतिकरण है जिसका पिण्ड बनेगा, वो भी संगतिकरण है, मानो देखो, माता पिता के हृदय में ये एक इच्छा प्रबल हुई, क्या हम मानो पुत्र यागी बनना चाहते है, तो पुत्र याग में भी संगतिकरण का ही मानो ब्रहे स्वत्वप्रव्हा लोकां संगतिकरण की ही प्रतिभा आती है, परमाणुओं का मिलान होना, वैज्ञानिक जन एक परमाणु को एक दूसरे में मिलान करते रहते हैं एक दूसरे परमाणु की पुट लगाते रहते हैं मानो उसमें ऊर्ज्वा का जन्म हो जाता है। तो सब संगतिकरण कहलाता है। मानो देखो, वही तो संगतिकरण है इसके पश्चात देवपूजा आती है, देवपूजा का अभिप्राय यही है कि जो देवता हमारे अन्तर्हृदय में बाह्य जगत में जो क्रियाकलाप है उनका हमे सदुपयोग करना है, तो इससे ये संसार की प्रत्येक वस्तु इसमें भरण हो जाती है मेरे आचार्यों ने वेद के मन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा ने

बेटा! गागर और सागर की एक मानो कल्पना की है। विचित्र कल्पनाएं हैं बेटा! आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विचार विशेष देना नही चाहता हूं अब मेरे प्यारे! महानन्द जी! अपने दो शब्द उच्चारण करेंगें, क्योंकि ये राष्ट्रवाद के ऊपर अपना विचार देते रहते हैं।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् शन्ना रथं ब्रह्मा वाचन्न गतप्रजाः वायु गा ताः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी कुछ याग के सम्बन्ध में अपनी विवेचना दे रहे थे। क्योंकि वेदमन्त्र जो कहता है, वह यथार्थ कहता है। वेदमन्त्र में जो शब्द हैं, वे यथार्थतम कहलाते हैं। परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी राष्ट्र की चर्चा कर रहे थे, और उच्चारण कर रहे थे कि राजा के राष्ट्र में याग होना चाहिए। मेरे पूज्यपाद गुरूदेव तो जो वेद की वाणी है वेद का जो उद्घोष है, उसको मानो घोषित करते रहते हैं। परन्तु जब ये विचार आता है कि जो वर्तमान का काल है वो कैसा विचित्र बन गया है, इसके सम्बन्ध में मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को समय समय पर उसको अवगत कराता रहता हूं। और अपने विचार देता रहता हूं, आधुनिक काल का जो विज्ञान है, उसके सम्बन्ध में भी प्रायः पूज्यपाद गुरुदेव को अपना विचार देता रहता हूं। परन्तु जब मुझे ये वाक स्मरण आते हैं कि आधुनिक काल का राष्ट्र, आधुनिक काल का जो समाज है, वर्तमान का वो बड़ा विचित्र, परन्तु देखो, अपने में ही अपने पन को दृष्टिपात नही कर रहा है। मानो देखो, आज मैं मेरा जो अन्तर्हृदय है, यज्ञमान के साथ रहता है मैं अपने हृदय से ये कहा करता हूं कि ये यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। क्योंकि ये जो वर्तमान का काल चल रहा है ये बड़ा विचित्र है और मैं ये कहता हूं कि ये यज्ञमान! तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। द्रव्य का दुरुपयोग होना ही मानो गृह की मृत्यु मानी गई है द्रव्य का दुरूपयोग होना

ही मानव की मृत्यु मानी गई है। इस तरह देखो, वह गृह का द्रव्य का दुरूपयोग होना ही राष्ट्र की मृत्यु मानी गई है। तो इसीलिए देखो, गृह में, द्रव्य का सदुपयोग बना रहे, मेरी यह कामना रहती है।

भगवान राम का काल

परन्तु देखो, आधुनिक काल का जो समाज है ये नाना प्रकार की रूढ़ियों में मानो देखो, परिणत हो रहा है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये कहा करता हूं, क्या जो नाना प्रकार का जो रूढ़िवाद है, ये राष्ट्र को नही पनपने देगा, किसी भी काल में, जब तक ये रूढ़िवाद, मानो देखो, अपने में रूढ़िवत बना रहेगा। वो काल तो है नही राम ये घोषणा कर रहे हैं, क्या मेरे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में मानो देखो, याग होना चाहिए तो आज्ञा दी कि प्रत्येक गृह में याग हो रहा है, प्रातःकालीन जब भ्रमण करते तो मानो देखो, प्रत्येक गृह में से वेद ध्वनि, ध्वनि उनके श्रोत्रों में ध्वनि होती रही, और वेदमन्त्रों की प्रतिभा का नाम देखो, सुगन्धि और जब ये दोनों ध्वनि ध्वनित होती रहेगी, तो विचारों की सुगन्धि तो मानव को ही प्रायः ऊँचा बनाती ही रहती है।

प्रदूषित वायुमण्डल

परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव राष्ट्र की भिन्न भिन्न प्रकार की चर्चाएं भी करते रहते हैं। परन्तु आज का हमारा जो वाक है, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को जो परिचय देने आया हूं वह परिचय केवल ये है कि आज के राष्ट्रवाद, आज मैं ये उच्चारण करने लगूं कि आधुनिक काल का जो राष्ट्र है, ये मानो देखो, याज्ञिक बन जाए, प्रातःकालीन याग नही, ये नाना प्रकार के प्राणियों को अग्नि में तपा करके, रसों के पान करने वाला राष्ट्र है। परन्तु देखो, जहां ये मानव नाना, प्राणियों का भक्षण हो रहा है, हिंसक समाज बन गया है, मैं नही जानता, इसका परिणाम, आगे मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में ये प्रकट करते हुए

कहा है, क्या ये आधुनिक काल, अग्नि का काण्ड बनने वाला है। क्योंकि अग्नि जब प्रदीप्त होती है वो जो हिंसक प्राणियों की आह होती है। वो वायुमण्डल में प्रसारित हो जाती है। वायुमण्डल में, क्योंकि आधुनिक काल का विज्ञानवेत्ता ये कहता है, क्या वायुमण्डल दूषित हो गया है। कुछ समय के पश्चात, ये वायुमण्डल इतना दूषित हो जाएगा, क्या मानो श्वांस लेने मात्र से मानव समाप्त हो सकता है। मैं वैज्ञानिकों से ऐसा कहता हूं, हे वैज्ञानिकों! तू समाज को इस प्रकार मानो देखो, त्रास ने देने वाला बन, तू समाज को त्रास न दे, तू समाज को मानो देखो, अपनी प्रतिभा महानतावादी देने का प्रयास कर। जब तू समाज का त्रास देता रहेगा, तो समाज ये मृतक बन जाएगा। ये समाज मृत्यु के मुख में परिणत हो जाएगा। इसीलिए वैज्ञानिक जनों को मैं ये कहता हूं कि आध्यात्मिकवाद की पुट लगा करके विज्ञान अपने में पनपता रहेगा तो ये समाज का हृदय बलिष्ठ बनता हुआ, मानो देखो, ये वायुमण्डल पुनः से पवित्र बन सकता है।

आज मैं विशेष तो ये चर्चा देने नही आया हूं, केवल पूज्यपाद गुरुदेव को ये वर्णन कराने आया हूं आधुनिक काल में भिन्न भिन्न प्रकार के जो सम्प्रदाय है, अपना रूढ़ियां हैं ये राष्ट्र के लिए मानो ये विनाश के मार्ग पर राष्ट्र को ले जा रहे हैं। हे मानव! हे राजन्! यदि तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है वास्तव में तो तेरे हृदय में अभी ऐसी कामना नही जागी है कि मैं राष्ट्र को ऊँचा बनाऊं, मैं प्रजा को कर्तव्यवादी, कर्तव्यवाद की वेदी पर ले जाऊं। ऐसा मेरे हृदय में तो कोई विचार मानो तेरे हृदय में तो ऐसा नही आ पाया है जो ये तू अपने में स्वीकार करने वाला, जब तू मानो देखो, अपने विज्ञान की चित्रावलियों में नाना प्रकार के मांस भक्षण की चर्चा करता है, तो ये समाज मानो

देखो, दूरिता बनता चला जा रहा है।

स्वार्थ में निर्वाचन

आज मैं इस वाक को न देता हुआ केवल विचार ये है कि हे राजन्! यदि तू अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाना चाहता है तो यह जो भिन्न भिन्न प्रकार की रूढ़ियां है ये समाप्त होनी चाहिए। मुनिवरों! देखो, इनका निराकरण करने के लिए राजा को चाहिए कि राष्ट्र अपने में मानो देखो, सम्प्रदायों के आचार्यों को एकत्रित करता रहे और प्रत्येक सम्प्रदाय के विचारों को मानो उनको श्रवण करना वाला बने, प्रत्येक आचार्यों का शास्त्रार्थ होना चाहिए, मानो देखो, जो भी विज्ञान से और जो भी देखो, मानवीय धर्म पर निहित हो जाए, उसका अपनाना तेरा कर्तव्य है। जब यदि देखो, राष्ट्र उसी काल में तेरा पवित्र बनता चला जाएगा, परन्तु देखो, जब मैं ये विचारता हूं कि आधुनिक काल का मानो देखो, जो निर्वाचन क्षेत्र है, वह बड़ा विचित्र है ये वैदिक पद्धति महानता में नही मानी गई है परन्तु यहां पर मैं विचारता रहता हूं जब निर्वाचन होता है तो देखो, प्रजा उसको निर्वाचित्त करती है, वह निर्वाचन मानो देखो, जो साधारण, अपठित, समाज का चुनौती देने वाला है जो निर्वाचन होता है, वह केवल मूर्खों का समाज, मूर्ख ही अपने निर्वाचन को निर्वाचित्त करता रहता है। क्योंकि वह जिस भी काल में उच्चारण करेगा, तो वह स्वार्थ की प्रतिभा में आ जाएगा। अब वह जो स्वार्थ है, वह राष्ट्र के लिए हानिप्रद है। वही मानो देखो, राष्ट्र के लिए घातक कहलाता है। आज जब मैं ये विचारता रहता हूं। यहां नाना प्रकार के सम्प्रदाय है और उन सम्प्रदायों में मानो दर्शन नही है मानो दर्शन आना चाहिए।

जब मानो दर्शन आ जाता है तो सम्प्रदाय समाप्त हो जाती है हे राजन्! हे प्रजाओं! यदि तुम अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हो तो दर्शन शास्त्रों को, दर्शनों

को मानो दर्शन को लेकर राष्ट्र का निर्वाचन होना चाहिए। और राष्ट्र का निर्वाचन मानो देखो, समाज को ऊँचा बनाता है। जब मैं अश्वमेध याग की और नाना प्रकार के यागो की चर्चाएं, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव करते रहते हैं तो मैं ऐसा अपने में स्वीकार करने लगता हूं, क्या वह समय बहुत दूर चला गया, परन्तु जब मैं विचारता रहता हूं कि यागां भविते ये जो देवपूजा है यही तो मानव को ऊँचा बनाती है। इसीलिए मानव में देवपूजा की प्रवृत्ति होनी चाहिए, देवतव होना चाहिए, हे राजन्! तू राष्ट्रवाद को ऊँचा बनाना चाहता है। तो प्रातःकालीन तू याज्ञिक बन, मानो जब तू प्रातःकालीन याज्ञिक बनेगा, तो तेरा समाज तेरा अनुसरण करता हुआ, जैसा पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी प्रगट कर रहे थे, और मैं राम की चर्चा कर रहा था, परन्तु देखो, उनकी घोषणाएं, स्मरण आती रहती है, पुरातन काल की भी क्या देखो, वो राजाओं की प्रेरणा आधुनिक काल का जो राष्ट्र है, वो अपने आसन को जब त्यागता है, जब मानो देखो, वो नाना प्राणियों के रसों को अग्नि में तपा करके हिंसा करके अपने स्थान को त्यागता है। ये कैसा राष्ट्र बन गया है।

भगवान मनु का राष्ट्र कितना विचित्र था, क्या जिस राजा के राष्ट्र में उन्होंने घोषणा की थी, क्या एक मछली से ले करके प्राणीतव की रक्षा होनी चाहिए। हे भगवनं ब्रह्मे ये भगवान मनु का सिद्धान्त कितना दूरी चला गया है एक वो राष्ट्र की घोषणा है एक जो मैं आधुनिक राष्ट्र की घोषणा कर रहा हूं क्या मछली का पालन होना चाहिए। परन्तु उसको प्राणियों को भक्षण करना चाहिए। तो कितना दूरी ये जगत चला गया है, मानो देखो, जब मानव, प्रत्येक गृह में जब सात्विक वायुमण्डल होता है।

तो राष्ट्र भी सात्विक होता है और वह सात्विक ही विचारधारा मानव को ऊँचा बनाती है, समाज और

प्रजा को ऊँचा बनाती है, आज मैं ये विचारता रहता हूं, क्या ये समाज मानो देखो, दूरी चला गया, जब मानव अपने में भक्षणां ब्रह्मे लोकाम् वाचन्नम ब्रहे व्रताम् मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते रहते हैं और ये कहते हैं, उच्चारण करते रहते हैं कि वैज्ञानिक बनो, परन्तु विज्ञानवेत्ता वही ऊँचा होता है जो समाज को त्रास नही देता है, समाज में सात्विक वायुमण्डल लाता है, तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाता रहता हूं और मेरा अन्तर्हृदय केवल यज्ञमान के साथ रहता है, क्योंकि कई काल में मैंने ये चर्चाएं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से की, क्या महाभारत के काल के पश्चात यागों का और मेरी पुत्रियों का माताओं का मानो तिरस्कार हुआ है, उसी का परिणाम है, क्या आज प्रत्येक मानव देखो, मांस भक्षण करने वाला है क्योंकि माताओं का तिरस्कार हुआ है अव्रहे मध्यकाल में और नाना सम्प्रदाय उसके मूल में विद्यमान हैं। परन्तु देखो, जब में ये विचारता हूं। क्या यागों का तिरस्कार कैसे हुआ? देखो, जहां मांसों में देखो, अप्रतं देखो, यागों में शुद्ध पवित्र साकल्य प्रदान किया जाता है वहां मांसों की आहुतियां दी गई। जैसे गो मेध याग में देखो, गो की आहुति और अश्वमेध याग में घोड़े के अङ्गों की आहुति दी जाने लगी। मानो देखो, अजामेध याग में बकरी के मांस की आहुति दी जाने लगी, उसको अजा कहते हैं, परन्तु विचारा नही समाज ने, वेदों के शब्दों का अनर्थ होने से, प्रायः देखो, इस प्रकार का अज्ञान आया। देखो, यहां स्वार्थी प्राणियों ने अपने में देखो, विचार न ला करके अशुद्ध वायुमण्डल की प्रतिभा को जन्म दिया। उसी से सम्प्रदायों का जन्म हुआ, सम्प्रदायों ने वेद को अपने अङ्गों से नही जाना, परन्तु देखो, उसका परिणाम ये हुआ, क्या वे नास्तिकवाद में नास्ति में परिणत हो करके यागों का तिरस्कार किया, अब भी जो भी

सम्प्रदाय, उत्पन्न होता है, वो याग का तिरस्कार करता है, मेरी पुत्री का तिरस्कार करता है। दोनों के तिरस्कार के मूल में ही आज का समाज विद्यमान है यदि देखो, याग का और मेरी माता का तिरस्कार नही होता तो ये समाज इस दशा पर इस अमृतम् इस मानो देखो, आभा में निहित नही होता। .... शेष अनुपलब्ध, २५ १२ १९८५।

7 १७ ०१ १९८६ अनुशासन से राष्ट्रवाद

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, । ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है वे हमारे वरणीय कहलाते हैं। जो भी मानव उसका वरण कर लेता है, अथवा उसे वर लेता है, वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। जितना भी यह मानवीय जगत है मानो चाहे वह जड़वत के रूप में हो, चाहे वह चैतन्यवत के रूप में हो, मानो उस चेतना में, दोनों रूपों में, उस चेतना का भान होता है अथवा उसकी प्रतीति होती है। तो हमें उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना लेना चाहिए, क्योंकि जितना यह व्याप्य जगत हमें दृष्टिपात आता है, उसमें भिन्न भिन्न प्रकार के प्राणी, भिन्न भिन्न प्रकार का यह जगत अपने में एक अनूठा माना गया है, जिसके ऊपर मानो, ऋषि मुनि अपने में अन्वेषण अथवा अनुसन्धान करते रहते हैं।

वैदिक साहित्य में याग

आज का हमारा वेद मन्त्र, कुछ याग के सम्बन्ध में अपनी चर्चा कर रहा है। यागां रुद्र भागं ब्रह्मलोकम्।

मानो यह जो ब्रह्माण्ड है, यह एक प्रकार का यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है, जिसकी आभा में बेटा! यह सर्वत्र जगत मानो निहित हो रहा है। बहुत पुरातन काल हुआ, भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का, वैदिक मन्त्रों से जानने की बड़ी उत्कृष्ट इच्छा हुई। नाना ऋषि मुनियों का समूह, उनकी विचारधाराएँ जब स्मरण आई, तो यह नाना प्रकार के यागों का चयन, मानवीय मस्तिष्क में होता रहा। जैसे हमारे यहां अश्वमेध याग है, हमारे यहां अग्निष्टोम याग है, वाजपेयी याग है, मानो अजामेघ और नाना जैसे पुत्रेष्टि यागों का चयन भी होता रहा है। यह हमारे वैदिक साहित्य से भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन और नाना प्रकार के याग की प्रतिभा होता रही है।

पण अकाल

मुझे स्मरण आता रहता है एक समय बेटा! पण अकाल हो गया था। पण अकाल उसे कहते हैं वृष्टि अति हो गई, और वृष्टि अति होने के पश्चात मानो देखो, जल ही जल वृष्टि से मानव की मानो जनसम्पदा की हानि हुई। वृष्टि जब मानो पण अकाल हुआ, अन्न नहीं रहा पृथ्वी पर, न पशु का रहा। तो मेरे प्यारे! देखो, अन्न प्राप्त नहीं हुआ। मुझे स्मरण है महर्षि चाक्राण मुनि मेरे प्यारे! देखो, अन्न से पीड़ित थे, वह अपने गृह में, जब उन्होंने प्रवेश किया, तो उनकी पत्नी बड़ी व्याकुल हो रही थीं, और उन्होंने कहा कि मुझे अन्नां ब्रह्मे व्रणाः यदि अन्न प्राप्त नहीं होगा, तो मेरे प्राणान्त हो जाएँगे। अब चाक्राण ने विचारा कि, अन्न कहां प्राप्त हो सकता है। मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि चाक्राण ने भ्रमण किया और विचारं ब्रह्मे बेटा! एक हाथीवान के द्वार पर पहुँचे। हाथीवान, हाथी पर विद्यमान हो करके बेटा! वह अन्न का पान कर रहा था। वह मा का पान कर रहा था। मानो जब उसके समीप पहुँचे तो उन्होंने कहा भिक्षामयी देहि। मुनिवरों! देखो, हाथीवान ने, अपने में

से मानो देखो, एक मुट्ठी भर, उन्होंने बेटा! उड़दों का पान किया। जब उन्हें उड़द प्रदान कर दिए, तो वह कहता है हाथीवान कि, महाराज! जलं ब्रह्मे, उन्होंने कहा शूद्रों भवे सम्भवा, तो वाक उन्होंने उच्चारण किए, क्या मैं जल भी लाऊ? उन्होंने कहा तू शूद्र है।

प्राण रक्षा में आश्रय

तो मेरे प्यारे! देखो, हाथीवान आश्चर्य चकित हो गया। उन्होंने कहा प्रभु! मेरे जो झूठे उड़द हैं, उनमें तो मैं शूद्र नहीं हूँ और जल के लाने से मैं शूद्र कैसे बन जाऊँगा? तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा चाक्राण ऋषि महाराज ने, वेद का एक मन्त्र उन्होंने उद्गीत रूप में गाया और उन्होंने कहा सोत ब्रीह्हि सम्भवा जलं ब्रहे अन्नादां भिक्षं भवे सम्भवास्ति लोकाः वेद का ऋषि कहता है, हे हाथीवान! अन्न का तो अभाव है, क्योंकि पण अकाल हो गया है, अन्न कहीं प्राप्त नहीं मानो देखो, प्राणों की रक्षा करनी है और प्राणों की रक्षा में मानो जो मिथ्या ब्रव्हे उसमें झूठ का कोई प्रश्न नहीं आता, प्राणों की रक्षा करनी है और जल बहुत है, इसीलिए इसका मैं तुम्हारा, आश्रय क्यों बनूँ? मैं तुम्हारा आश्रय नहीं लेना चाहता हूँ जल के सम्बन्ध में, केवल प्राणों की रक्षा में तुम्हारा आश्रय लेना चाहता हूँ।

अश्वपति के यहाँ वाजपेयी याग

अब मेरे पुत्रों! देखो, यह उत्तर दे करके, महर्षि चाक्राण अपने गृह में पहुँचे। तो वहाँ उनकी पत्नी को, कोई कोई श्वांस की गति आ रही थी। मानो वह गतिवं ब्रहे उन्होंने कहा देवी! तुम इस अन्न को पान करो। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने अन्न का पान किया, प्राणों की गति तीव्र बन गई। मानो प्राणों की रक्षा हो गई। अब मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा देवी! मैं और अन्न आपको अब नहीं ला सकूँगा। क्योंकि कल मैं महाराजा अश्वपति के यहाँ एक मानो देखो, उनके यहाँ एक वाजपेयी याग हो रहा है। मैं उस याग का उद्गाता बनूंगा, और उद्गाता

बन करके ही मानो मैं तुम्हारे लिए अन्न ला सकता हूँ। तो मुनिवरों! देखो, महर्षि के वाक्यों को पान करके, पत्नी अपने में प्राणों की रक्षा के कर्तब्र्हे प्राणों की रक्षा तो उनकी हो ही गई, अगला दिवस आया, महर्षि चाक्राण ने अपने आसन को त्याग दिया और भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में पहुँचे। महाराजा अश्वपति के यहाँ मानो देखो, वाजपेयी याग हो रहा था, जिस याग के ब्रह्मत्त्व पर महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज विद्यमान थे। अध्वर्यु के रूप में बेटा! महर्षि वैशम्पयान थे और देखो, राजा अश्वपति उस याग के यज्ञमान बन करके उनके मानो देखो, महर्षि श्वेतकेतु मुनिवरों! देखो, उस याग के पुरोहित बन करके देखो, वह याग प्रारम्भ हो गया। मुनिवरों! देखो, जैसे याग प्रारम्भ हुआ, तो उद्गाता के आसन पर कोई नहीं, परन्तु उस आसन पर जा करके महर्षि चाक्राण विद्यमान हो गये। जब चाक्राण विद्यमान हो गये। तो मुनिवरों! देखो, उस समय महाराजा अश्वपति ने कहा हे ऋषिवर! यह वाजपेयी याग है तुम्हें यह प्रतीत है। उन्होंने कहा प्रभु! हाँ मैं जानता हूँ। कि आप वाजपेयी याग कर रहे हैं क्योंकि पण अकाल हुआ है। और मैं इसका उद्गाता बनना चाहता हूँ।

याग का उद्गाता

मेरे प्यारे! देखो, जब उद्गाता बनने का प्रसंग आया, तो उस समय ऋषि ब्रहे राजा अश्वपति ने कहा, क्या हे ऋषिवर! उद्गाता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा जो उद्गीत गाने वाला है। उन्होंने कहा उसका देवता कौन है? उन्होंने कहा उद्गीत गाने वाले का उद्गाता ब्रहे मानो वह सूर्य है। वह प्रकाश देता है, कान्ति देने वाला है। वह मानो देखो, उसी के तरंगों में तरंगति होना होता है। तो इसीलिए देखो, वह उद्गाता है। मेरे पुत्रों! देखो, राजा ने पुनः यह कहा क्या हे भगवन! रंसग भवि सम्भवा बृही अस्ति मानो देखो, उद्गाता कौन है?

उन्होंने कहा उद्गाता वह है, जो वेदों का उद्गीत गाता है और वेदों के मन्त्रों के द्वारा उद्गीत गाता हुआ मानो अपनी अन्तरात्मा को शान्त करने वाला है, और यज्ञमान की वाणी को पवित्र बनाता है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, इसका देवता कौन है? उन्होंने कहा इसका देवता वायु है उद्गाता का देवता वायु है क्योंकि वायु जब उद्गीत गाती है तो प्रकाश होता है, मानो जब वायु वेग में गति करती है तो मुनिवरों! वहाँ अग्नि का प्रकाश हो जाता है। अग्नि प्रकाश में परणित हो जाती है। उन्होंने कहा, यह वायु ही देवता है, इस मानो वाजपेयी याग का देवता कौन वायु है। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने जब वायु का नामोकरण किया, तो उन्होंने पुनः प्रश्न किया, कि इस याग का उद्गाता कौन है?

यज्ञशाला की अधिपति

उन्होंने कहा प्रभु! इस याग का उद्गीत गाने वाला, सोम की वृष्टि करने वाला चन्द्रमा है। वह चन्द्रमा ही तो सोम की वृष्टि करता है, अमृत को देने वाला है, वही तो आपोमयी ज्योति कहलाता है। उन्होंने बेटा! देखो, वह मौन हो गये, जब वह मौन हो गये, तो राजा ने पुनः यह कहा कि महाराज! यह जो यज्ञशाला है इसका कौन देवता है? उन्होंने कहा यज्ञशाला का देवता, पञ्च महाभूत है। क्योंकि वह सर्वांग पूजन है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा यह सर्वांग पूजन है, इस पूजन की आभा में मानव को संलग्न रहना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, वह सर्वांग ब्रह्मा इसीलिए इसका देवता जो सर्वांग सृष्टि का निर्माण करने वाला, ब्रह्मा है वही उद्गीत गाने वाला, वह इस यज्ञशाला का अधिपति कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, चहूमुखी जो यह यज्ञशाला है, यह चहूमुखी यज्ञशाला का जो ऊर्ध्वा मुख है वह द्यौ कहलाता है। वह द्यौ लोक में ही तो वे तरंगे जाती हैं। मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञशाला में, इसीलिए स्वाहा उच्चारण करने का महत्त्व

माना गया है। क्योंकि यह जो स्वाहा शब्द है, मन्त्र का देवता है और देवता के साथ स्वाहा है और वह स्वाहा मुनिवरों! भूः भुवः स्वः, वह स्वः में, मानो द्यौ लोक में, वह द्यौ में प्रवेश कर जाता है और द्यौ में जा करके ही मुनिवरों! देखो, शब्द का आकार बनता है और वह शब्द अन्तरिक्ष की मानो द्यौ आभा में परणित हो जाता है। मेरे पुत्रों! मैं इस शब्द के विज्ञान में तो जाना नहीं चाहूँगा, केवल विचार विनिमय यह है, क्या, हम मुनिवरों! देखो, द्यौ को अपने में धारण करना चाहते हैं। यह जो द्यौ है, यह ब्रह्मा है। मुनिवरों! देखो, वह राजा, मौन हो गया। ऋषि ने कहा कि ब्रह्मा, परमात्मन इस संसार का, यज्ञ का अधिपति माना गया है, वह मूर्ध्वा में रहता है। इसीलिए याग मानो देखो, यज्ञमान की प्रथम पगडण्डी कहलाती है, वह पृथक, मोक्ष में जाने की आनन्द में जाने की, प्रथम पगडण्डी है।

इसीलिए देखो, राजा ने कहा चलो, हे उद्गाता! तुम उद्गीत गाने योग्य हो, क्योंकि जो उद्गीत गाता है, इस वाणी में कौन देवता है उद्गीत गाने का, उन्होंने कहा कि उद्गीत गाना केवल अग्नि है, वह अग्नि का जब समन्वय हुआ, जल की पुट लगी और मानो देखो, वायु बाह्य और आन्तरिक जगत में प्रवेश कर गई और देखो, उसी आभा में बेटा! मानो देखो, उद्गान गाना प्रारम्भ कर देता है। उद्गाता किस समय उद्गान गाता है, जिस समय मानो देखो, वह अपनी वाणी के ऊपर संयम करता हुआ और यह विचारता है कि मेरे यज्ञमान की वाणी पवित्र हो जाए, वाणी में उद्गीत गाने लगता है।

तो मेरे प्यारे! मैं इस याज्ञिक विज्ञान में तो जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह है कि हम अपने में उद्गीत गाने वाले बनें। मेरे प्यारे! देखो, सोम के द्वारा, हम अपने में जागरुक बन करके ही मुनिवरों! देखो, हम याज्ञिक बनते चले जाएँ। मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत पुरातन काल हुआ, मेरे प्यारे! महानन्द जी! मुझे

प्रेरणा देते रहते हैं, याग के सम्बन्ध में, उद्गीत गाने की प्रेरणा देते रहते हैं, अब मैं विशेष चर्चा तो देने नहीं जाऊँगा, क्योंकि देखो, याग बेटा! प्रारम्भ हो गया। जब वाजपेयी याग प्रारम्भ हुआ तो उन्होंने कहा सम्भोति ब्रह्म लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, सांयकाल को यज्ञमान ने जब दक्षिणा प्रदान की, वह अन्न को ब्रह्मे ले करके ही मुनिवरों! देखो, वह अपने गृह में प्रवेश हुए और उन्होंने अपनी पत्नी को वह अन्नाद पान कराया। उन्होंने कहा देवी! आज मैं महाराजा अश्वपति के याग में उद्गाता बना हुआ हूँ, तुम अन्न को पान करो, और मैं उद्गाता के लिए प्रातः कालीन मानो पुनः जाऊँगा।

पुनरुक्ति देवता

मेरे प्यारे! देखो, वह पुनः अगले दिवस, वह उस यज्ञशाला में पुनः पधारे, राजा ने कहा कि महाराज! यह पुनरूक्ति देवता कौन हैं? उन्होंने कहा पुनरूक्ति दिवस है। एक दिवस आया है, रात्रि आई, दिवस आया, यह मानो देखो, पुनरूक्ति देवता कहलाता है। इस पुनरूक्ति देवता के गर्भ में, मानव की आयु निहित हो जाती है। बेटा! देखो, ऋषि कहता है क्या, पुनरूक्ति में ही मानव की आयु है। जैसे बेटा! देखो, श्वांस आता है प्राणं ब्रह्मे कृताम् बेटा! वह गति करता है, ध्रुवा में, ऊर्ध्वा में गति करने वाला है, तो वही तो हमारा सखा है, वही तो प्राणतव कहलाता है, वही तो मानव की आभा में निहित रहता है। तो बेटा! आज मैं, विशेष चर्चा तो प्रगट करने नहीं जाऊँगा। अब मेरे प्यारे! महानन्द जी! दो शब्द उच्चारण करेंगे

पूज्य महानन्द जी सम्भविता रुद्रो मां प्रजां दिव्याहम् मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव वाजपेयी याग के सम्बन्ध में और भी भिन्न प्रकार के यागों के सम्बन्ध में, अपनी चर्चा कर रहे थे क्योंकि मेरे पूज्यपाद का जो यह अनुपम ज्ञान है यह बड़ा विचित्र और नितान्तता में

परणित रहा है हमारे हृदयों में, प्रायः इनकी छवि हमारे हृदयों में परणित रहती है और हमारा हृदय यह कहता रहता है कि हम इन वाक्यों को प्रायः श्रवण ही करते रहे, इनका वाक आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान से गुथा हुआ होता है और जितना भौतिक विज्ञान है, वह आध्यात्मिकवादी ही मानो देखो, उस आभा में निहित रहता है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ परिचय तो देना नहीं चाहता हूँ, क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कहीं अश्वमेध याग की चर्चा कर रहे हैं, कहीं नरमेघ याग, कहीं गो मेघ यागों की चर्चाएं करते रहते हैं। आज इन्होंने वाजपेयी याग की चर्चा की है। वाजपेयी याग मानो राजा करता है, जिससे वृष्टि शान्त हो जाए और यह पृथ्वी में देखो, यहां बलि का वर्णन हो जाए, ऐसा मानो देखो, इनका मन्तव्य रहता है।

वाममार्ग

मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन करते हुए कहा था, कि इन यागों का, महाभारत काल के पश्चात बड़ा तिरस्कार हुआ और वह तिरस्कृत करने वालो, जो यह मानव समाज रहा है, उसको हम वाममार्ग कहते हैं। परन्तु वह प्रथा कहाँ से कहाँ तक चली और कहाँ वह जा करके अब उसका अन्त होने जा रहा है, मैं अन्त तो नहीं कह सकता, वास्तव में तो उसकी वृद्धि हो रही है, परन्तु अन्त मैं इसलिए यह कहता हूँ कि जिस माध्यम से उसका प्रसार हुआ, प्रसार की प्रवृत्तियाँ समाप्त हो गई है। मानो देखो, पुरातन काल में यागों के चलन में, महाभारत काल के पश्चात क्योंकि बुद्धिमानो का अभाव हो गया और उस अभाव के कारण देखो, यहाँ वाममार्ग पनपा और वाममार्गी उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गति करने वाला हो, जो उल्टे मार्ग को लेता है, उसको हम, वाममार्ग कहते हैं जो पामर प्रवृत्ति का होता है। हिंसक होता है, जो मांसाहारी होता है, जो अपने ऊदर की

केवल मानो देखो, मांसो की रुद्रियाँ बना लेता है। ऐसे मानव को मैं प्रायः वाममार्ग कहता हूँ। जो धर्म के नामों पर देखो, उसके नामों पर अपने आहार को अशुद्ध बना लेता है, वह वाममार्ग कहलाता है। परन्तु देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को तो मैंने कई काल में यह मानो परिचय दिया है।

मानवीय कर्म

आज बारम्बार उन परिचयों को देता रहता हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव का मैं वर्णन करना चाहता हूँ। क्या, हमारे पुरातन काल में जैसा पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी वर्णन कर रहे थे कि महाराजा! अश्वपति का राष्ट्र, अश्वपति के राष्ट्र में जब अतिवृष्टि हो गई, तो उन्होंने वाजपेयी याग की रचना की, उससे वृष्टि शान्त हो गई। क्योंकि राजा जिस प्रयत्न को करता है, प्रजा उसी अनुसार बरतने लगती है। आधुनिक काल का जो राजा है मानो देखो, वह यागों को अग्रणीय नहीं बना रहा है, अग्रणीय क्यों नहीं बना रहा है? क्योंकि वह नाना प्रकार के सम्प्रदाय के मूल में मानो देखो, यागों का चलन नहीं हो सकता, याग को केवल हम रुढ़ि नहीं कह सकते, क्योंकि याग तो एक व्यापक कर्म है, एक मानवीय कर्म कहलाता है और राजा यह मानता है कि यह याग, एक साम्प्रदायिक माना गया है। जब राष्ट्र यह स्वीकार करता है, परन्तु वह सम्प्रदाय तो नहीं कहता याग को, वह सूक्ष्म विचारधारा, परन्तु कर इसलिए नहीं पाता क्योंकि नाना प्रकार के सम्प्रदाय, यह जो रूढ़िवाद है, यह राजा के राष्ट्र का ह्रास कर रहे हैं। जब मैं यह विचारता हूँ तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को देखो, महाराजा अश्वपति का वर्णन करते हैं, कि राजा अश्वमेध याग, जहां वाजपेयी यागों का चलन, राजा के राष्ट्र में होता है, राजा को करना चाहिए। क्योंकि यदि प्रजा को सुखद बनाना चाहता है। मानो देखो, आधुनिक काल का राष्ट्र यह चाहता है कि प्रजा

को जितना भी निठल्ला बनाया जाता है, उतना ही तेरे राष्ट्र की प्रतिभा ऊँची बनती है, आधुनिक समाज की यह प्रतिभा बनी हुई है। यह राष्ट्रीय कृतियाँ बनी हुई है, इसके ऊपर देखो, राष्ट्र को विचारना है। क्या, राष्ट्र को अपने आहार और व्यवहार को ऊँचा बनाना है और यह रूढ़िवाद, जब तक राष्ट्र में पनपता रहेगा, समाज में पनपता रहेगा, राष्ट्रवाद कदापि भी ऊँचा नहीं बन सकता। यह असंभव है।

राष्ट्र में विभिन्न मान्यताएँ

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यहाँ कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, क्या यहां नाना प्रकार की रूढ़ियों में यह राष्ट्र परणित हो रहा है, कहीं यहाँ मोहम्मद के मानने वाले हैं, कहीं ईसा के मानने वाले हैं, कहीं मानो देखो, यहाँ नानक के मानने वाले, सब एक दूसरे के रक्त के पिपासी बने हुए है। मानो देखो, इसके सम्बन्ध में, मैंने अपनी बहुत पुरातन चर्चाएं प्रगट की हैं। जब मैं पुरा अतीत के काल में प्रवेश करता हूँ, आधुनिक काल के राष्ट्रवाद को लेता हूँ तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है हम कैसे युग में अपने वाक्यों को प्रगट कर रहे हैं। मानो ऐसा युग है यह, क्या इसमें नाना प्रकार की मानो देखो, मान्यता वाले और राष्ट्र कहता है नाना धर्म कहने लगता है राष्ट्र, जब यह राजा, राष्ट्र के कर्मचारी जब यह एक मानो नाना धर्म कहते हैं तो मैं यह विचारता रहता हूँ, क्या, इन्होंने किसी विद्यालयों में शिक्षा पाई है अथवा नहीं, मुझे तो यह भी संदेह बना रहता है। क्योंकि जब धर्म एकोकी वचन है वह मानो देखो, नाना धर्मों की चर्चा कहां से कर रहा है? यह विचार नहीं आ रहा है।

आध्यात्मिक राष्ट्रवाद

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह कहता हूँ कि आधुनिक काल का राष्ट्र, नाना धर्म कहता है ऊर्ध्वा में, सभाओं को यह संबोधित करता हुआ, क्या, मैं नाना

धर्मों को स्वीकार करता हूँ। मैं विचार रहा हूँ हे भोले प्राणी! क्या तू नाना जो धर्म कह रहा है, धर्म तो एक ही वचन है, यह बहुवचन तो नहीं माना। मानो देखो, धर्म तो मानवीयता को कहते हैं, धर्म तो मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है, उसको उसमें कौन ऐसा अभागा प्राणी है संसार का, जो उसे धर्म नहीं कह सकता और तू नाना धर्म उच्चारण कर रहा है। नाना धर्म तो बनते ही नहीं है संसार में, मेरे पुत्रों! भवा सम्भवे लोकाम् मेरे प्यारे! पूज्यपाद गुरुदेव ने हमें कई काल में वर्णन कराया, जैसे पुत्रों! ब्रह्मा, पुत्र कह करके संबोधित करके यह कहा क्या, तुम मानो देखो, एकोकी धर्म के मर्म को जानने वाले बनो। तो हम भी यही कहते हैं हे राजन! आधुनिक काल के समाज को भी, अपने धर्म को देखो, धर्म के मर्म को जानने वाला बन और हे राजन! तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो राष्ट्र ऊँचा उस काल में बनता है जबकि तेरी मनुवंश की प्रणाली तेरे द्वार पर होगी, क्योंकि इस संसार का, यह मैंने कई काल में वर्णन किया है क्या, इस संसार का जब मानो देखो, राष्ट्रवाद का निर्माण हुआ है, राष्ट्रवाद वास्तव में कोई वाद नहीं कहलाता है, राष्ट्रवाद कहते हैं अनुशासन को, अनुशासन का नाम राष्ट्रवाद है। बाह्य जगत का जो अनुशासन है उसका नाम राष्ट्रवाद है। और जो इन्द्रियों पर अनुशासन करता है वह आध्यात्मिक राष्ट्रवाद कहलाता है।

राष्ट्र निर्माणवेत्ता, भगवान मनु

यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार की राष्ट्रीय प्रणालियों में केवल देखो, एक अनुशासन ही एक ऐसा शब्द है, एकोकी धर्मज्ञ ही मानवता का एक ऐसा शब्द है, जिसको अपना करके मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाता है। आज मैं विचार न देता हुआ, अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराता हूँ क्या हे प्रभु! आज यह जो राष्ट्रवाद है यह मुझे बड़ा विचित्र प्रतीत हो रहा है।

आधुनिक जो काल है, यह मानो देखो, मैंने पुरातन काल में भी कहा, यह काल इस प्रकार का, क्योंकि वाममार्ग है, आधुनिक काल में देखो, सुरापान करना, मांस का आहार करना, राजा देखो, जब अपने आसन को त्यागता है, जब नाना प्राणियों के रस को अग्नि में तपा करके पान कर लेता है, क्या, मैं इसको राष्ट्र कह सकता हूँ। मेरे विचार में तो यह आ नहीं रहा है परन्तु देखो, राष्ट्र वह है, भगवान मनु जी ने मानो देखो, भगवान मनु महाराज ने मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया, क्या, राष्ट्र का निर्माणवेत्ता सबसे प्रथम भगवान मनु हुआ है, भगवान मनु ने मानो मछली से ले करके और प्राणियों तक की रक्षा करने के लिए उन्होंने राष्ट्रवाद के लिए घोषणा की है। एक मछली की भी रक्षा होनी चाहिए, क्योंकि वह जल के दूषितपन को, वायु मण्डल के दूषित पने को अपने में सिंचन करने वाली है और जितने भी प्राणी हैं संसार में, एक दूसरे प्राणी से कटिबद्ध हो रहे हैं, एक दूसरे से जैसे माला के मनके है, एक मनका, द्वितीय मनका, यह सूत्र में पिरोएं हुए है, इसी प्रकार यह जो प्राणी मात्र का जगत है, यह एक दूसरे में पिरोया हुआ सा जगत दृष्टिपात आता है। आज जब मैं यह विचारता हूँ हे माता! तू श्रृङ्गार में श्रृंगारित हो रही है, परन्तु जब तेरे गर्भ से महान पुत्रों! का जन्म होगा, तो यह राष्ट्र ऊँचा और समाज ऊँचा बनेगा। मानो देखो, माता जो तेरा कण्ठमयी श्रृङ्गार है वह तेरी वाणी पवित्र होनी चाहिए, यह ज्ञानमयी होनी चाहिए, क्योंकि जिससे तू अपने गर्भ के स्थलों में जो शिशु है, वह जो आत्मा है, तू आत्मा से चर्चा कर सके। तू अपनी आत्मा से, आत्मा के हृदय की चर्चा कर सके, माता तू वह पवित्र कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो, मैं विशेष चर्चा, क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव तो यह सर्वत्र जानते रहते है।

मानो देखो, मैं तो कोई विशेष विचार देने नहीं

आया हूँ, केवल मेरा तो एक ही विचार है क्या, राजा का राष्ट्र पवित्र होना चाहिए। भगवान मनु ने एक मछली को कमण्डल में पनपाया, फिर गढेले में पनपाया, वह मानो देखो, वही मछली समुद्र को चली गई। विचार क्या देखो, मनुजी ने कहा, क्या यह संसार जब ऊँचा बनता है, जब मानवीय धारा पर आता है, जब प्रत्येक मानो देखो, प्राणी अपने में प्राणतव की रक्षा और आनन्द का अनुभव करने वाला हो, जब समाज में, एक दूसरे के आनन्द को अपने में धारयामि बना लेता है, तो जीवन की प्रतिभा समाप्त हो जाती है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं वहीं आना चाहता हूँ हमारी जो वाणी है, वह आकाशवाणी देखो, मृतमण्डल में जा रही है। मानो देखो, मैं एक याग का दर्शन कर रहा था, मैं आज वर्तमान में एक याग का दर्शन कर रहा था। हे यज्ञमान! मेरा जो अन्तर्हृदय है वह यज्ञमान के साथ रहता है, मैं कहता हूँ हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, मेरी यह सदैव कामना रहती है। हे यज्ञमान! तेरे जीवन की धाराएँ विचित्र बनी रहे और तेरा ब्रह्मे तेरे गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे, सदुपयोगिता ही उस मानव का जीवन है। हे यज्ञमान! तेरी वाणी में पवित्रतम आ करके जीवन को ऊँचा बनाता रहे।

याग से वायुमण्डल में शुद्धता

तो मैं आज विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल यह वाक उच्चारण कर रहा हूँ, क्या ऐसे वाममार्ग के युग में, जहां एक दूसरा प्राणी एक दूसरे प्राणी का भक्षण करने के लिए तत्पर हो रहा है, तेरे द्रव्य का सदुपयोग हो रहा है, देवता जन हवि को पान कर रहे हैं आज का विज्ञानवेत्ता कहता है कि दूषित वायु मण्डल बन गया है। मैं यह कहता हूँ कि हे वैज्ञानिकों! तुम अपनी विज्ञानशाला में, जहां अणु और परमाणु को जानते हो, वहां साकल्य के द्वारा याग भी करो। जिससे देखो,

वायुमण्डल दूषित न हो जाए, वायुमण्डल मानो पवित्र बना रहे तो मानव को त्रास मत दे, तू क्रियाकलाप में ऊँचा बन, मानो देखो, इस प्रकार मैं अपनी धाराओं को ले करके, मैं अपने वाक्यों को प्रकट करता रहता हूँ। आज का विचार विनिमय क्या, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह परिचय कराने के लिए आया हू, मेरा यह सदैव देखो, एक परिचय रहता है क्या देखो, यहां यागों में जो नाना प्रकार के जो यहां अयोग्य क्रियाकलाप हुए है, उन क्रियाकलापों से मानव को अपना उत्थान करना चाहिए और राष्ट्र, अपने राष्ट्र का निराकरण करने वाला हो, आधुनिक काल जो यह राजा अपने राष्ट्र का निराकरण नहीं करना चाहता, राजा यह चाहता है कि रक्त भरी क्रान्ति आती रहे, तो तेरा यह राष्ट्र बना रहेगा, केवल एक यह भावना रहती है।

विनाश का कारण

मैं यह कहता हूँ यह जो नाना प्रकार का जो सम्प्रदाय युग चल रहा है, यह संप्रदायों के युग में मानव का जीवन सुरक्षित नहीं है, मानव का ज्ञान सुरक्षित नहीं है, मानव का तप भी सुरक्षित नहीं है, उसके मूल में क्या है कि नाना प्रकार के संप्रदायों में अज्ञान है देखो, वह केवल यागों के ऊपर ही आक्रमण करता है, वह विचारों के ऊपर आक्रमण हो रहा है, जब विचारों के ऊपर आक्रमण होता है तो समाज में और राजा के राष्ट्र में शान्ति नहीं आ सकती, राजा को अपने राष्ट्र में निराकरण करना है, उसका निराकरण केवल एक ही है यदि राजा चाहता है कि निराकरण आ जाए, तो देखो, नाना प्रकार के जो रूढ़िवादी हैं, जिन्हें यह धर्म कहते हैं, मैं धर्म नहीं कहता, उन्हें रूढ़ि कहा करता हूँ, उन्हें संप्रदाय के रूप में कहा करता हूँ, उन नाना संप्रदायों के आचार्यों का एक सम्मेलन हो और आचार्यों का सम्मेलन हो करके राजा को मध्यस्थता करनी चाहिए, और उनका शास्त्रार्थ होना

चाहिए। विचार विनिमय तर्क संहिता होनी चाहिए, उसी तर्क संहिता के आधार पर उसकी तर्क संहिता होनी चाहिए और जो विज्ञान, तर्क और मानवीयता पर स्थिर हो जाए और उन्हीं विचारों को अपना करके वहीं मानव का एकोकी धर्म कहलाता है। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे यह वर्णन कराया है, क्या, यह धर्म है, यहां नाना प्रकार की रूढ़ियों से जगत ऊँचा नहीं बनेगा, यहां राष्ट्र के लिए मानो यह कलंक है और यह राष्ट्र के लिए देखो, अग्नि की धारा उत्पन्न होने वाली है और हो रही है, प्राणी प्राणी का देखो, भक्षण करने के लिए तत्पर हो रहा है। उसके मूल में केवल राष्ट्रवाद है, उसके मूल में रूढ़िवाद है और रूढ़िवाद के मूल में देखो, यह जो नाना प्रकार के प्राणियों को भक्षण करके मानव अपने जीवन की ऊर्ध्वा में लगा हुआ है, यह सर्वत्र मानो विनाश का एक मूल कारण बना हुआ है।

आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रगट करना नहीं चाहता हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव को मैं वर्णन कराता रहता हूँ, क्या राष्ट्रवाद ऊँचा हो महाराजा अश्वपति याग कर रहा है पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी वर्णन कर रहे थे, आधुनिक काल का राजा याग को चाहता हुआ भी नहीं कर पाता, क्योंकि नाना प्रकार की रूढ़ियों का भय लगा हुआ है जब इस प्रकार की धाराएँ बना करती हैं तो मानो देखो, यह धर्म और मानवता की रक्षा करना, एक असंभव बन जाता है। मैं यह कहता हूँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में मुझे वर्णन कराया, मैं भी इन्हें अवगत कराता रहता हूँ कि संसार में मानो सुगन्धि होनी चाहिए, दुर्गन्धि समाप्त हो जानी चाहिए, विचारों की सुगिंध हो, और मानो देखो, उन्हीं विचारों की सुगन्धि से मानव अपने जीवन को महान बनाए, आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से, मैं आज्ञा पाना चाहता हूँ, आज्ञा पाने से पूर्व मानो मेरे दो शब्द यह क्या, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का

सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, जो देखो, भूः भुवः स्वः इन लोकों में तेरी वाणी देखो, साकल्य के साथ में भ्रमण करती रहे। यह आज का विचार अब हमारा समाप्त, अब मानो देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद गुरूदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने अपने वाक्यों को उच्चारण किया, इनके वाक्यों में एक वेदना है। मानो वह वेदना है, कि राष्ट्रवाद ऊँचा बने, वह वेदना है कि रूढ़िवाद समाप्त हो जाना चाहिए, क्योंकि अति का नाम ही रूढ़ि कहलाता है। इसीलिए धर्म, मानवता और राष्ट्रीयता एक ही सूत्र में सूत्रित होने चाहिए। ऐसा मानो देखो, महानन्द जी के विचारों का एक मन्तव्य रहा। मानो देखो, यज्ञं भवा सम्भवे यागों की इन्होंने चर्चा की, वह बड़ा विचित्र उनका वाक्, मैं इनके वाक्यों पर जब एक एक शब्द पर विचार विनिमय करता हूँ तो मुझे ऐसा ही प्रतीत होता है कि इनके हृदय में एक वेदना है, और वह वेदना क्या मानो मानवीय धर्म की एक वेदना है, राष्ट्रीयता की वेदना है, क्योंकि जो हमारे पूर्वज, हमारे जैसे भगवान मनु की चर्चा की, इस प्रकार की जो पूर्वजों की चर्चाएं है वह बड़ी विचित्र हैं, महाराजा अश्वपति के राष्ट्र को मुझे बहुत समय हुआ, पुत्रों! मुझे वहां जाने का और वास करने का भी सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मानो देखो, महाराजा अश्वपति के यहां, विद्यालयों में बहुत समय तक अध्यापन किया। परन्तु देखो, यागों के कर्मकाण्ड की पद्धति भी बड़ी विचित्र रही है। तो आज मुझे इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है, केवल विचार यह, क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना और यागों का चयन प्रायःहमारे हृदयों में होना चाहिए, हमारी वाणी में याग हो, हमारे नेत्रों में याग हो, हमारे श्रोत्रों में याग हो, याग क्या मानो देखो, सुविचार हो, सुदृष्टि होनी चाहिए, सुशब्द होना चाहिए,

सुप्रीति होनी चाहिए। प्रत्येक मानो अपनी आभा में मानव को ऊँचा बनाना चाहिए, यह आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन किए जाए। ओ३म् देवाः मां रथं मृवाः रेवा आभ्यां गतौ सर्वा मां दधि आभाः ओ३म् यन्न जनं गृवाः रथं दिव्याः अच्छा भगवन्! आज्ञा। १७ ०१ ८६

8 **१९ ०१ १९८६**

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने गएं हैं। जो भी मानव उसको अपना वरुण बना लेता है, अथवा उसे वर लेता है, तो प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। तो इसीलिए हमारा वेदमन्त्र नाना प्रकार की विवेचना करता रहता है, एक एक वेदमन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञान प्रायः निहित रहता है, इसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, विचार विनिमय करता रहा है। और अनुसन्धान करता हुआ अपने जीवन को महान बनाने की उत्सुकता में लगा रहता है, इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा विज्ञानमयी स्वरूप का वर्णन करते रहते हैं। हमारे यहां दोनों प्रकार के यागों का चलन प्रायः परम्परागतों से ही, माना गया है, दो प्रकार के यागों का वर्णन, दोनों प्रकार के विज्ञान का वर्णन प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है, एक हमारा जो भौतिक विज्ञान है और द्वितीय आध्यात्मिक विज्ञान कहलाता है। दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की जो उपलब्धियां है वह प्रायः मानवीय

मस्तिष्कों में सदैव नृत्त करती रहती हैं। और दोनों विज्ञान के सम्बन्ध में प्रायः विचारता रहता है। आज का हमारा वेदमन्त्र नाना प्रकार की चर्चा कर रहा था। आज हम बेटा! उन चर्चाओं में तो तुम्हें ले जाना नही चाहते हैं, केवल आज मैं तुम्हें एक यज्ञशाला में ले जाना चाहता हूँ, जहां यज्ञशाला में विद्यमान हो करके यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में याग करने के लिए तत्पर होता है, और अग्न्याध्यान करता हुआ अग्नि को साक्षी बनाता हुआ मानो भिन्न भिन्न प्रकार के देवताओं की विवेचनाओं में लगा रहता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें एक यज्ञशाला में ले जाना चाहता हूँ, तो चर्चाएं मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन की हैं, वह वार्त्ताएं बारम्बार स्मरण आती रहती हैं। और हमारा हृदय उन वाक्यों को उच्चारण करने में सदैव प्रसन्न और आनन्दित होता रहता है, हम अपने में यह स्वीकार करते हैं कि हमारा जो वैदिक साहित्य है अथवा वेद की जो प्रतिभा है, वह नाना प्रकार की तरंगों में तरंगित होती रही है। क्योंकि भिन्न भिन्न प्रकार के देवताओं का आह्वान विचारधारायें प्रायः हमारे यहां होती रहती है। तो आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें राजा जनक की यज्ञशाला में ले जाना चाहता हूँ, हमारे यहां दो प्रकार की यज्ञशालाओं का वर्णन प्रायः हमारे द्वारां ब्रह्मे वर्णसुताः दोनों प्रकार के यागों का चयन परम्परागतों से होता रहा है। एक मानो देखो, भौतिक विज्ञान कहते हैं, मानो यह भी उच्चारण करना चाहिए कि यागां ब्रह्मयागों ब्रहे दो प्रकार के यागों का चलन भी होता रहता है। एक मानो बाह्य एक आन्तरिक है, और दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएं होती रहती हैं। एक भौतिक विज्ञान एक आध्यात्मिक विज्ञान कहलाता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें कुछ आध्यात्मिकवाद की हम चर्चाएं करने चलें। मुनिवरों!

देखो, एक समय मुझे समय राजा जनक की जो पत्नी थी जिनका नाम रम्भेश्वरी कहलाता था तो मानं ब्रहे रम्भेश्वरी एक समय कुछ वेदमन्त्रों का अध्ययन कर रही थी, परन्तु वह अमृतं ब्रह्मे सांयकाल का समय था सांयकाल के समय कहीं से महर्षि अर्द्धभाग मुनि का आगमन हुआ और महर्षि अर्द्धभाग ने कहा देवी! किस चिन्तन में लग रही हो उन्होंने कहा देवी! मैं न्यौदा में कुछ मन्त्रों का अध्ययन कर रही हूँ। मानो उसके ऊपर मुझे चिन्तन करना है। तो मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा बहुत प्रिय तो मुनिवरों! देखो, न्यौदा में से कुछ मन्त्रों का उच्चारण महर्षि अर्द्धभाग ने भी किया, परन्तु जब वह वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहे थे तो रम्भेश्वरी निद्रा की गोद में चली गई, महर्षि अर्द्धभाग ने वहां से गमन किया और वह भ्रमण करते हुए अपने आश्रम में पंहुचे ब्रहे शन्धनं ब्रहे वाचप्रही कृतं लोकाः मेरे प्यारे! माता रम्भेश्वरी रात्रि समय निद्रा की गोद में क्या मध्य रात्रि के काल में निद्रा से जागरूक हुई, निद्रा से जागरूक हो जाने के पश्चात वह वेदमन्त्रों का अध्ययन करने लगी। तो कुछ वेदमन्त्र उन्हे स्मरण आए और वह वेदमन्त्र यह कहते थे, प्रकाशां रुद्रो भवः लोकां वाचम् प्रकाशा वेद का मन्त्र कह रहा था कि हमारे जो नेत्र है वह किसके प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। कौन प्रकाश के देने वाला है, कौन प्रकाश का द्यौतक है, तो मानो देखो, इस आभा में अप्रतं अपने को ले गई। चिन्तन करने लगी। परन्तु अपने में निमटारा नही हुआ, और भी नाना मन्त्र स्मरण आए। परन्तु उन्होंने विचारा अपने स्वामी के द्वार पर जा करके इनका निवारण करना चाहती हूँ। मुनिवरों! उन्होंने अपने आसन को त्याग करके और राजा जनक के कक्ष में पंहुची। राजा जनक ने कहा देवी! तुम्हारा मानो देखो, रात्रि के अन्तिम पहर में आने का कारण क्या है? उन्होंने कहा प्रभु! मैं बहुत समय हो गया है, मैं एक वेदमन्त्र में लगी हुई हूँ, और वह

वेदमन्त्र यह कहता है कि हमारे जो नेत्र है, इनका प्रकाश देने वाला कौन है? कौन प्रकाश देता है? तो मुनिवरों! देखो, देवी आओ, चिन्तन करेंगें, और दोनों चिन्तन में लग गएं, परन्तु प्रातःकाल हो गया। परन्तु कोई निमटारा नही हुआ परन्तु देखो, उन्होंने अपने आसन को त्याग दिया, अपने क्रियाओं से निवृत्त हुए और निवृत्त हो करके मुनिवरों! देखो, वह उनके यहां जहां ब्रह्मयाग ब्रह्म का चिन्तन होता रहता है। उनके यहां देवपूजा भी होती रहती, मेरे प्यारे! उनके यहां एक भव्य यज्ञशाला थी उस यज्ञशाला में मानो अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके यज्ञशाला में पंहुचे यज्ञशाला में मुनिवरों! देखो, वहां नाना ब्रह्मवेत्ता विद्यमान हैं।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज चाक्राणी गार्गी, मेरे प्यारे! और भी नाना जैसे ब्रह्मचारी कवन्धि भी और सुकेता और सोमकेतु और प्रवाहण, व्रेतकेतु, अश्वल नाना मुनिवरों! देखो, ब्रह्मवेत्ता उस सभा में विद्यमान थे, परन्तु जो ऊर्ध्वा में आसन लगा हुआ था, वह महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का था तो मेरे पुत्रों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर पुरोहित के पद के लिए विद्यमान थे। परन्तु राजा जनक उनकी पत्नी ने अपनी यज्ञशाला में मानो अग्निहोत्र किया, अग्न्याधान किया, देवताओं का आह्वान करने के पश्चात वह याग सम्पन्न हो गया। याग के सम्पन्न हो जाने के पश्चात अर्द्धभाग ने कहा, क्या मेरे से यज्ञमान कोई प्रसन्न कर सकता है। उन्होंने बेटा! दोनों हर्ष ध्वनि में उन्होंने कहा प्रभु! हम कुछ जानना चाहते हैं। ऋषि ने कहा बोलों क्या जानना चाहते हो? उन्होंने कहा प्रभु! हम न्यौदा में कुछ मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे, परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि हमारे जो नेत्र हैं वह किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? कौन प्रकाश के देने वाला है? क्योंकि वह जन्म ब्रहे हमें सिद्ध है कि

मानव के नेत्रों में आभा में मानो देखो, कौन प्रकाश देता है। मुनिवरों! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि हे मानव! इसको प्रत्येक मानव जानता है, प्रत्येक बालिका जानती है, कि हमारे जो नेत्र है वह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। सूर्य प्रकाश का द्यौतक है, प्रकाश के देने वाला है, वह प्रकाश देता ही रहता है, सृष्टि के प्रारम्भ में मानो देखो, सूर्य ही एक मात्र प्रकाश के देने वाला है। वह प्रकाश का द्यौतक है, इसीलिए हम मानो सूर्य के प्रकाश में अपने प्रकाश में रत्त हो जाते हैं। यह सूर्य नाना प्रकार की आभाओं में रत्त रहने वाला है, यह द्यौ से प्रकाश लेता है, और मानो देखो, यह प्रातःकाल से सायंकाल तक तपता रहता है। नाना प्रकार की वनस्पतियों को तपाता रहता है। यही सूर्य है मानो देखो, नाना प्रकार के खनिज पदार्थों को तपाता रहता है। खाद्यान्न को तपाता रहता है, जब पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार की किरणें प्रवेश करती हैं, तो मानो देखो, और भी नाना प्रकार के धातु पिपाद का निर्माण करता रहता है। यह जो सूर्य है मेरी प्यारी माता प्रातःकाल होते ही इसके उदय होते ही अपने पुत्रों को जागरूक कर देती है। कहती है हे बाल्य! आओ, सूर्य का उदय हो गया है। परमाणु उदय हो गया है, तुम मानो जागरूक हो जाओ। तो मेरे प्यारे! नाना प्रकार की वनस्पतियां प्रकाश देने के लिए तत्पर हो जाती है। तो मुनिवरों! देखो, वह प्रकाश का देने वाला वह सूर्य है मेरे प्यारे! प्रकाश के देने वाला सूर्य है जिसका समन्वय मानव के नेत्रों से होता है। नाना प्रकार की आभा में युक्त होने वाला यह मानो देखो, सूर्य कहलाता है मेरे प्यारे! देखो, दोनों ने इस प्रकार की विवेचना की और भी विवेचना की और कहा यह जो मानो सूर्य है, यही तो पय को प्रदान करने वाला है। मानव को तेज देने वाला है। उष्णता क्या प्रकाश देने वाला है, उन्होंने कहा सम्भवं ब्रहे कृतं लोकां मानो देखो, जैसा यह गो

नाम का पशु है गो नाम के रीढ़ के विभाग में एक सूर्यकेतु नाम की नाड़ी होती है। उस नाड़ी का समन्वय माता की पुरातत नाम की नाड़ी से देखो, ब्रहे सम्भवा ब्रहे मानो देखो, गो के रीढ़ के विभाग से और आन्तरिक नाड़ी एक पुरातत कहलाती है। जिसमें मानो देखो, नाड़ी में यह विशेषता है कि वह स्वर्ण के कणों को अपने में ग्रहण करने लगती है। जिन किरणों में स्वर्ण बह रहा है वह उसको अपने में धारण कर लेती है, सिंचन करने लगती है। मानो वही गो नाम के पशु के मानो आन्तरिक विभाग में, पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय होता है। परन्तु देखो, नाना प्रकार के जो यन्त्रालय लगे हुए है, जिनमें मानो देखो, नाड़ियों का समन्वय हो करके वह अप्रीत कहलाता है। इसीलिए आयुर्वेदाचार्य कहलाते हैं कि गो के घृत में पीत वर्ण है, क्योंकि उसमें स्वर्ण की मात्रा विशेष कहलाती है।

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार विवेचना की तो उन्होंने कहा हे भगवन! हम जानना चाहते हैं कि जब यह सूर्य नही होता तो कौन प्रकाश के देने वाला है? उन्होंने कहा कि हे राजन! जब यह सूर्य नही होता, तो हम चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं यह चन्द्रमा हमें प्रकाश के देने वाला है, यह मानो देखो, प्रकाशक है, जब ये चन्द्रमा अपने अमृत को बहाने लगता है देखो, माता वसुन्धरा के गर्भ में यह मानं ब्रह्मे यह अमृत को बहाता रहता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब कृषक की भूमि में अन्न उपजने लगता है, तो मानो देखो, उसको अमृत यही प्रदान करता है, माता के गर्भस्थल में, जब हम जैसे शिशु होते हैं, तो मानो यही तो अमृत बहाने वाला है, मेरे प्यारे! देखो, माता की रसना के निचले विभाग में, एक मानो चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी है, उस चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी का समन्वय, सम्बन्ध मानो पुरातत नाम की नाड़ी से होता है, पुरातत नाम की नाड़ी का सम्बन्ध, पञ्चम

नाड़ियों से होता है पञ्चम नाड़ियों का सम्बन्ध माता की लोरियों से होता है, और लोरियों से अग्रणीय बन करके मेरे पुत्रों! देखो, यह महानता में मानो ब्रहे माता की नाभि से उन नाड़ियों का समन्वय हो करके बेटा! अमृत को बहाया जाता है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है, आज जब मैं तेरे विज्ञान की चर्चा करने लगता हूँ। तो आश्चर्य हो जाता है, क्या तू कितना महान और पवित्रतम कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, आगे वेद का ऋषि कहता है सम्भवं ब्रह्मे यह मानो देखो, रात्रि को अपने गर्भ में धारण करता है, जब यह रात्रि को अपने गर्भ में धारण करता है, तो मानो देखो, वह गौतप्रव्हा सम्भवे इन्द्र बन करके मेरे पुत्रों! देखो, रात्रि को अपने में धारण करके वह अपने गो सम्भवा उसी प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, उस समय यह इन्द्र भी कहलाता है। यह गौतम भी कहलाता है। क्योंकि रात्रि के अन्धकार को जो अपने में धारण करता है। वह गौतम है, प्रकाश देने से वह इन्द्र है, तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार जब उन्होंने सूर्य की और चन्द्रमा की विवेचना प्रगट की तो दोनों पति पत्नी बोले क्या हे प्रभु! हम जब विद्यालयों में अध्ययन करते रहे हैं। हम जब आचार्य कुलों में अध्ययन करते रहे, तो इस प्रकार की विवेचना वह करते रहते थे। हम जानना चाहते हैं जब मानो देखो, यह चन्द्रमा नही होता तो कौन प्रकाश के देने वाला है। उन्होंने कहा जब यह चन्द्रमा नही होता तो मानो देखो, यही सम्भवं ब्रहे तारां विचस्तो इन तारामण्डलों के प्रकाश से हम प्रकाशमान होते हैं। इन तारामण्डलों माला बनी हुई है, मानो यह तारामण्डलों का धीमा धीमा प्रकाश आता है, उसी प्रकाश में हम मानो अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेते हैं। मानो देखो, पथ प्रदर्शक बन जाते हैं, और पथ प्रदर्शक बन करके ही उस धीमे धीमे प्रकाश से मुनिवरों! देखो,

आभा को प्राप्त हो जाते हैं।

मेरे प्यारे! यह नाना प्रकार का तारामण्डल है, एक दूसरे में गुथा हुआ जगत मुझे दृष्टिपात आता है। जब बेटा! देखो, योगाचार्यों के समीप प्रवेश करते हैं। योगश्चित वृत्तियों में प्रवेश करके मेरे पुत्रों! आभा में रत्त हो जाते हैं। तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह संसार एक दूसरे में गुथा हुआ है एक दूसरे में ओत प्रोत हो रहा है एक दूसरे की यह माला बनी हुई है मानो देखो, इस प्रकार जब यह ऋषि ने कहा कि यह तारामण्डल एक विशेष मानो देखो, एक दूसरे में माला बनी हुई है। उन्हीं का धीमा धीमा प्रकाश आ करके हमारे जीवन को उद्बुद्ध कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, उसी समय राजा ने कहा प्रभु! यह तारामण्डलों की चर्चा आपने की प्रगट पुरातन काल में भी की और भी नाना आचार्यों से और माता के चरणो में विद्यमान होते थे तो वह भी इस प्रकार का अध्ययन कराते रहती थी हम जानना चाहते हैं जब मानो यह अश्वतम् जब यह तारामण्डल नही होते तो कौन प्रकाश का द्यौतक है।

उन्होंने कहा हे भगवन! मानो देखो, जब यह तारामण्डल नही होते तो हम अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान हो जाते हैं। अग्नि प्रकाश का द्यौतक है मानो देखो, अन्धकार छाया हुआ है, मेरी प्यारी माता अग्नि के प्रकाश से अपने गृह को प्रकाशित कर लेती है, और मानो उससे प्रकाश में और पगडण्डी को ग्रहण मानो देखो, अपने में क्रियाकलापों में रत्त हो जाता है। यह अग्नि अपने विशिष्ठ मानी गई है यह अग्नि बेटा! जब आचार्य जब यह आचार्यों आयुर्वेदाचार्यों के गृहों में अग्नि प्रवेश करती है। तो उन्होंने पिचासी प्रकार की अग्नि का चयन किया, परन्तु जब यही अग्नि वैज्ञानिकों के कुल में पंहुची तो बेटा! देखो, वैज्ञानिकों ने इसके ऊपर अन्वेषण किया बेटा! पिचासी प्रकार की अग्नि के ऊपर अध्ययन प्रारम्भ किया तो मुनिवरों! देखो, उस

अग्नि में नाना प्रकार की अग्नि की धाराओं का जन्म हुआ। अरबों खरबों प्रकार की अग्नियों की धारा का जन्म हो गया, जिसको मानव गणना में नही ला सकता, मानो देखो, यही ब्रह्मग्नि बन करके मेरे पुत्रों! देखो, यह ब्रह्म का बखान करने लगती है। यही अग्नि है बेटा! जो मानव को गृह को प्रकाशित, क्या अणु और परमाणु के रूप में परणित हो जाती है। यही मानो समुद्रों में अग्नि प्रदीप्त जब हो जाती है, तो बड़वानल नाम की अग्नि कहलाती है। उस समय मेरे पुत्रों! देखो, समुद्रों से जल प्लावन आ जाते हैं। मानो यही अग्नि है जो मुनिवरों! देखो, वाणी के वाणी के रूप को धारण करके मानो विज्ञान की प्रतिभा को ओत प्रोत कराती है। यही अग्नि जब पृथ्वी के गर्भ में मानो प्रदीप्त हो करके मानो अपनी आभा में नियुक्त हो जाती है। तो बेटा! यह पृथ्वी को तपायमान करने लगती है। यह अग्नि अपने में मानो विशुद्ध कहलाती है, इसी अग्नि के ऊपर अन्वेषण करने वाला वैज्ञानिक जन मेरे पुत्रों! देखो, विज्ञान की आभा में रत्त हो जाता है, वह अणु और परमाणुओं के नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता हुआ मुनिवरों! देखो, अग्नि की प्रतिभा में रत्त हो जाता है। तो वेद के ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो राजा जनक उनकी पत्नी ने कहा प्रभु! हम जानना चाहते हैं कि जब यह अग्नि नही होती जब कौन प्रकाश का द्यौतक है।

उन्होंने कहा जब यह अग्नि नही होती तो मानो देखो, यह शब्द ही हमें प्रकाश का द्यौतक बना हुआ है, यह हमें प्रकाश देता है, आज हमें देखो, इस ध्वनि को जानना चाहिए। उसी शब्द को जानना चाहिए। जिस शब्द के कारण बेटा! यह संसार शब्दायमान हो रहा है, भिन्न भिन्न प्रकार की ध्वनियां आ रही है, और उन ध्वनियों में मानव ध्वनित हो रहा है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! कहां इस प्राणत्व तत्त्व लोकां बेटा! यह कैसी ध्वनि आ रही है अन्धकार छा

जाता है, परन्तु प्रकाश नही है, तो एक ध्वनि आ रही है, यह प्राण अपने में गुंजायमान हो करके बेटा! ध्वनित हो रहा है। वाह रे प्रभु! तू कैसा ज्ञानवान करता हुआ इस संसार को गतिवान बनाता रहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, कौन ब्रहे यह जो शब्द है, इसको जानना चाहिए। यह शब्द ही बेटा! मानव को ऊँचा बनाता है। शब्द ध्वनि के द्वारा जो ध्वनि हो रही है, प्रति ध्वनियां चल रही हैं, एक एक आभा में ध्वनि होता हुआ वायु अपने में ध्वनित होती हुई, इस मानो अन्तरिक्ष को ध्वनित बना रही है। तो विचार विनिमय क्या बेटा! हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं, जैसे एक मानव अन्धकार में चला जा रहा है। और वह मानो देखो, अन्धकार में पथ से भ्रष्ट हो जाता है। उस कुपथ में चला जाता है और अन्धकार कोई मार्ग प्राप्त नही हो रहा है। वह कहता है अरे, है कोई मार्ग चेताने वाला, उस समय उन्होंने वह द्वितीय जो मार्ग में स्थित है, वह कहता है मैं मार्ग में स्थित हूँ, आ जाओ, मैं मार्ग में स्थिर हूँ, बेटा! उसी शब्द के प्रकाश से वह मानव अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। परन्तु यह जो शब्द है जिससे बेटा! देखो, राजा, राजा का राष्ट्र पवित्र बन जाता है। यही शब्द है जो पवित्र बन जाएं मानो देखो, यह वाणी के रूप में आ जाएं। तो राजा का राष्ट्र पवित्र बन जाता है। राजा यदि सत्यवादी बन जाता है, शब्द को विचारने लगता है, तो बेटा! देखो, राजा का राष्ट्र पवित्र है। आचार्य कुल में जब मुनिवरों! देखो, आचार्य सत्यवादी होता है, और अणुक्रमणी होता है। क्रियाकलापों में लाने वाले अपने में होता है। तो बेटा! देखो, विद्यालय पवित्र बन जाता है, ब्रह्मचारी पवित्र बन जाते हैं। जिस गृह में माता पिता सत्यवादी होते हैं। सत्य का आचरण करते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वह गृह स्वर्ग की आभा में परणित हो जाता है। बाल्य बालिका स्वर्गवत अपने को स्वीकार करते हैं। तो विचार

विनिमय क्या, यह ध्वनि पर ध्वनित होते हुए देखो, दृष्टिपात करो। हे मानव! तू अपने जीवन को यदि ऊँचा बनाना चाहता है। तो तेरी वाणी पवित्र होनी चाहिए तेरी वाणी में ओज और तेज होना चाहिए। यदि हे राजन्! यदि तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है। तो राजा के राष्ट्र में राजा सत्यवादी हो प्रजा सत्यवादी हो, प्रजा में महानता हो पवित्रता हो करके बेटा! प्रत्येक मानव अपने में सुखद अनुभव करने लगता है। विद्यालय में वास करने वाले आचार्य जनों आज तुम तपस्वी बनो। अपनी वाणी को तपायमान करते हुए, चलो मानो बेटा! मुझे बहुत समय हुआ, जब मैंने तुम्हें वर्णन कराया था हम विद्यालयों में देखो, सत्यवादी आचार्यों की आभा में मानो रत्त होते रहे उनका जीवन एक महान और पवित्र बना हुआ रहता तो मानो ब्रहे तो मुनिवरों! देखो, विद्यालयों को यदि ऊँचा बनाना है। तो आचार्य तपस्वी हो सत्यवादी हो, महानता में गति करने वाला हो, मेरे प्यारे! देखो, यदि ब्राह्मण यदि ऊँचा बनना चाहता है। तो ब्राह्मण की वाणी में सत्यवाद होना चाहिए। हे ब्राह्मण! देखो, वही तो कहता है मानव की यह वेद का गान गाता है। यह जो कुछ कहता है, यह यथार्थ उच्चारण करता है, यह सत्यवादी है, तो मानो देखो, उसकी मानो देखो, बहुत काल तक मानो उसकी आभा में रत्त रहते हैं। उसकी प्रशंसा करते हैं, तो विचार विनिमय क्या बेटा! वेद के ऋषि ने कहा याज्ञवल्क्य ने हे राजन! हम मानो देखो, अग्नि नही होती, तो शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह शब्द ही प्रकाशक है, शब्द ही हमारा जीवन है। तो मेरे पुत्रों! राजा जनक की सभा में जैसे वह मौन हुए, तो मुनिवरों! राजा ने कहा प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं। तो प्रकाश का द्यौतक कौन बना हुआ है? प्रकाश देने वाला कौन है?

तो मेरे प्यारे! देखो, आचार्य ने कहा हे राजन!

जब मानो देखो, यह शब्द नही होता तो हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। मेरे प्यारे! देखो, हमारे शरीर में अन्तरात्मा भास रहा है मानो यही तो प्रकाश का द्यौतक है यही तो प्रकाश के देने वाला है। हमें इस अन्तरात्मा को जानना चाहिए, जो आत्मा हमारे शरीरों में चेतना का मूल बना हुआ है, यही तो प्रकाश के देने वाला है, राजा ऋषि ने कहा हे राजन! यदि आत्मा इस शरीर से निकस जाता है, इस शरीर से जब निकस जाता है, तो मानो देखो, सूर्य अपना प्रकाश दे रहा है। शरीर के दोनों नेत्र गोलकने ज्यों के त्यों बने हुए है, अरे, मानव इस शरीर में आत्मा नही है, अरे, क्यों नही प्रकाशमान हो जाते हो। अरे, मानव! चन्द्रमा अपना अमृत बिखेर रहा है, अरे, आत्मा नही है, तुम अमृत को क्यों नही प्राप्त कर लेते। हे मानं ब्रहे मानो देखो, तारामण्डलों की पंक्तियां बनी हुई हैं। माला बनी हुई धीमा प्रकाश आ रहा है, परन्तु शरीर में आत्मा नही है, अरे, मानव तू प्रकाशमान नही हो रहा है, मुनिवरों! देखो, वह अग्नि अपना प्रकाश दे रही है, मानव के शरीर में आत्मा नही हैं, तो मुनिवरों! देखो, वह अन्धकार हो गया है, विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, प्रकाश में रत्त रहना है, तो आत्मा का जानना है। ध्वनियां हो रही है, ध्वनियां चल रही हैं, अपनी अपनी ध्वनियों में ध्वनित हो रहा है, मुनिवरों! देखो, शरीर में आत्मा नही है, वह ध्वनि नही रही तो बेटा! इससे सिद्ध होता है, कि हमे आत्मा को जानना चाहिए, जिसके कारण हमारा शरीर मानो चेतनित बना हुआ है। प्रकाशक बना हुआ दूसरों से प्रकाश ले लेता है, मानो देखो, उसी में यह रत्त रहता है। तो मुनिवरों! देखो, हमारे यहां इस आत्मा को जानना हमारा कर्तव्य है। यह आत्मा क्या है? यह बेटा! एक चेतना है, यह कैसे जानी जाएं मानो देखो, भौतिकवाद के मार्ग से हो करके हम आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर सकते हैं। तो मेरे

प्यारे! देखो, आत्मवेत्ता जो पुरूष हैं, वह यह कहते हैं सम्भवं ब्रह्मे प्रकाशां मेरे प्यारे! देखो, आत्म ब्रह्मे कृता यह आत्मा को जानने वाला, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा को प्राप्त होता है। क्योंकि प्रभु के राष्ट्र में बेटा! न तो आलस्य है, न प्रमाद है, और न मानो देखो, यहां अन्धकार है, तो मुनिवरों! देखो, यहां जहां न रात्रि है, रात्रि वहां होती है, जहां आलस्य और प्रमाद जहां रात्रि होगी, वहीं अन्धकार होगा, वहां आलस्य और प्रमाद होगा, और जहां आलस्य और प्रमाद होगा, वहीं देखो, मृत्यु होगी। तो इसीलिए बेटा! देखो, मृत्युञ्जय बनने के लिए मानव को अपनी अन्तरात्मा को जान करके हमें प्रभु के राष्ट्र में जाना है। प्रभु के राष्ट्र में पंहुचना है, प्रभु के राष्ट्र में जाने वाले प्राणी अपने में सुखद अनुभव करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह जितना भी भौतिक विज्ञान है, इसके मार्ग से हो करके अपनी इन्द्रियों को जान करके बेटा! अन्तरात्मा को जाना जाता है।

यह आज का वाक हमारा क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम बेटा! इस अन्तरात्मा को जानने का प्रयास करें। हम आत्मवेत्ता बन करके अपनी मानवीय धारा में ऊँचा बन जाएं, तो बेटा! आज का हमारा वाक यह क्या कहता है। हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए बेटा! देखो, जब ऋषि ने यह वर्णन कराया तो राजा ने पत्नी ने दोनों ने उसके चरणों को स्पर्श किया, और उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! आप ने हमें आत्म प्रकाश में पंहुचाया है, आपने हमें प्रकाश में ले गएं हैं, आपको धन्य है, हे प्रभु! मानो देखो, यह सूर्य प्रकाशक है, यह चन्द्रमा है, यह तारामण्डल, न अग्नि है, न शब्द है भगवन! प्रकाश के देने वाला आत्मा है। आत्मा के कारण ही बेटा! मानव का शरीर क्रियाशील बना रहता है। तो इसीलिए प्रत्येक

मानव को आत्मा को जानना चाहिए। आत्मवेत्ता बनने के लिए आत्मचेतना में ही कुछ रत्त रहना चाहिए, कुछ हमें बेटा! मानो देखो, जो हमारे शरीरों में भास रहा है। प्रकाशक बना हुआ है, उस प्रकाश को जानने के लिए हम सदैव तत्पर रहें, मुनिवरों! देखो, इसके पश्चात उनका याग सम्पन्न हो गया। आत्म चर्चाएं हुई, आत्मा को प्रकाश का द्यौतक निर्णय दिया, और राजा उनकी पत्नी बड़े प्रसन्न हुए, बेटा! वह याग ब्रह्मयाग और दोनों ने अपने में सम्पूर्णता को प्राप्त हो करके बेटा! अपने अपने कक्ष में जा पंहुचे। सभा विसर्जन हो गई। तो विचार विनिमय क्या बेटा! हमें अन्तरात्मा के लिए प्रयास करना चाहिए, यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए अपनी अन्तरात्मा को जानने वाले बनें। यह है बेटा! आज का वाक क्योंकि वे परमपिता परमात्मा हमारा सबका वरणीय है। उसको अपना वरण बना करके उसी के आश्रित हो करके मानो हमें प्रभु की आराधना में रत्त रहना चाहिए। यह आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः यम रथाः त्रि वाना मनु वाचन्नमप्रा गताः आभ्यां देवाः। ओ३म् मनु सर्वं व्रत्या वायु रथाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनांक १९ ०१ १९८६।

9 ०१ ०२ १९८६

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की

महिमा का गुणागन गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं मानो यह उसका यह अनुपम ब्रह्माण्ड हमें प्रायः दृष्टिपात आ रहा है, क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना वैज्ञानिक हुए परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान सीमा से रहित है। वह सीमा में आने वाला नही हैं। क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आता है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। हमारे यहां परम्परागतों से ही, नाना वैज्ञानिक हुए है, परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ है, जो सर्वत्र विज्ञान का मूलक हो। चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता है, चाहे वह भौतिक विज्ञानवेत्ता है, दो प्रकार का विज्ञान हमारे यहां परम्परागतों से ही, माना गया है, और सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके मानो वर्तमान के काल तक उसके ऊपर बेटा! अन्वेषण होता रहा और होना चाहिए क्योंकि परमपिता परमात्मा का यह जो अनुपम जगत है, यह एक महान और पवित्र कहलाया जाता है।

आज का हमारा वेदमन्त्र कुछ कह रहा है, मानो जैसे हमने पूर्व काल में तुम्हें चर्चा करते हुए कहा था कि वे परमपिता परमात्मा मानो विष्णु के रूप में रहता है। आज का हमारा वेदमन्त्र यज्ञोमयी विष्णु की कल्पना कर रहा था, क्योंकि यह जो विष्णु है, यह याग है, जैसे हमारे यहां नाना पर्यायवाची शब्दों में भिन्न भिन्न प्रकार की प्रतिभा का जन्म होता रहा है। आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है कि यज्ञं विष्णु गतप्रव्हा वाचन्न सतप्री व्रताः वेद का वाक कहता है कि यज्ञोमयी विष्णु क्योंकि यज्ञ की विष्णु कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, याग की हमारे यहां परम्परागतों से ऋषि मुनियों ने बड़ी

विस्तृत व्याख्या की है आज मैं उन व्याख्यानों में तो जाना नही चाहता हूँ कि केवल विचार यह कि हमारे यहां यह जो विष्णु शब्द है, चाहे वह किसी भी रूप में हो, यज्ञमयी रूप में हो चाहे वह आत्मा के रूप में हो, परन्तु सर्वत्र की एक ही मूल है, उसके गर्भ में एक ही मूल है, जो कि पालन करने वाला है, मानो देखो, याग भी पालन करने वाला है।

हमारे यहां भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहा है, जैसे हमारे यहां बेटा! विष्णु याग है, रुद्र याग है, ब्रह्मयाग है, परन्तु इसी प्रकार हमारे यहां वाजपेयी याग, अग्निष्टोम याग, व्रतेकेतु याग, अश्वमेध याग, अजामेध याग देवी याग पुत्रेष्टि याग, वृष्टि याग और मुनिवरों! देखो, व्रहे वसुतकेतु याग नाना प्रकार के यागों का वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है। परन्तु इन यागों का अभिप्राय यह है क्या हम बेटा! देखो, याग में परणित हो जाएं। जिन यागों का याग का एक ही स्वरूप हमारे यहां माना गया है कि जितना भी शुभकर्म है, मानो उस सर्वत्र का नाम एक याग है। मेरे प्यारे! देखो, माता अपने में याग कर रही है, वह याग में परणित है, मुनिवरों! देखो, माता अपने अन्तर्हृदय की आत्मा से मानो वार्ता प्रगट करती रहती है। जैसा इससे पूर्व काल में हमने प्रगट किया, परन्तु एक विज्ञानवेत्ता है, वह विज्ञान के कणों में विज्ञान में ही नाना प्रकार की मुनिवरों! देखो, धाराओं की उपलब्धियां कर रहा है। मेरे प्यारे! मुझे एक वाक स्मरण आ गया है, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां बेटा! एक यज्ञशाला का निर्माण हुआ था, किसी काल में मुझे वह काल स्मरण आ रहा है, मानो देखो, उस काल में उन्होंने एक यज्ञशाला का निर्माण किया, उस यज्ञशाला में वह याग करते थे, परन्तु देखो, कहीं उनके वेदमन्त्रों में एक वाक अध्ययन किया क्या यज्ञं ब्रह्मा देवोः लोकां यज्ञमाना रथाः द्यौ लोकाः वेद का मन्त्र यह

कहता था कि यज्ञमान का रथ बन करके वह द्यौ लोक को जाता है। मानो द्यौ लोक वाले रथ को प्रायः हमें दृष्टिपात करना चाहिए। बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि के विद्यालय में मुनिवरों! देखो, कोणक ब्रहे मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि और ब्रह्मचारिणी शबरी, और महर्षि पणपेतु मुनि महाराज ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु यह नाना ब्रह्मचारी बेटा! अध्ययन करते रहते थे। परन्तु ब्रह्मचारी सुकेता एक समय प्रातःकालीन मानो अपने नित्यप्रति क्रियाओं से निवृत्त हो करके वह याग करने लगे, तो बेटा! याग में एक मन्त्र आया क्या यज्ञमानं ब्रह्मे वर्ण अस्तुति वाचन्नमाः देवात्वं ब्रह्मे यज्ञमानाः रथाः द्यौ लोकां ब्रह्मे वर्णसुति मेरे प्यारे! देखो, यह वेदमन्त्र उनके स्मरण आया कि वेदमन्त्र यह कहता था कि यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक में जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, द्यौ लोक वाले रथ को दृष्टिपात करके अध्ययन करते हुए याग जैसे समापन हुआ मेरे पुत्रों! देखो, वह महर्षि भारद्वाज मुनि के कक्ष में पंहुचे भारद्वाज मुनि बोले कहो ब्रह्मचारी! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ है? उन्होंने कहा है कि हे प्रभु! मैं इसीलिए आया हूँ, कि यह वेदमन्त्र क्या कहता है? वेदमन्त्र यह कहता है कि यज्ञमान का रथ बन करके यह द्यौ लोक को जाता है। तो क्या प्रभु! हम इसको साक्षात्कार मानो देखो, इसका निर्माण कर सकते हैं।

तो भाराद्वाज मुनि महाराज, ब्रह्मचारी सुकेता और मुनिवरों! देखो, राजा रावण के विधाता कुम्भकरण ये मानो सब विद्यार्थी और भारद्वाज मुनि के समीप मुनिवरों! देखो, इसके ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ किया। उन्होंने बेटा! इस प्रकार के मानो अपने जहां यज्ञशाला थी, उनके यहां विद्यालय में नाना प्रकार की विज्ञानशालाएं थीं। मानो परीक्षण शालाएं थी, उन परीक्षण शालाओं में वह मुनिवरों! देखो, अङ्ग संग

अनुसन्धान करने लगे, अन्वेषण करने लगे, तो करते करते मुनिवरों! देखो, उन्होंने एक चित्रावली वाचसकेतु नामक एक बेटा! एक चित्रावली का उन्होंने निर्माण किया। बेटा! उस निर्माणशाला में मानो देखो, निर्माण करते हुए मुनिवरों! देखो, उन्होंने यज्ञ का, जैसे प्रारम्भ किया और प्रारम्भ करने के पश्चात मुनिवरों! देखो, उसमें कोई यज्ञमान बना हुआ था मानो यज्ञशाला का जितना आकार था जितने होताजन, अध्वर्यु, उद्गाता विद्यमान थे मानो देखो, उनका रथ बन करके चित्रावलियां बन करके मानो देखो, यन्त्रशाला में बेटा! वह यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगी वह शब्द के साथ में वह रथ मुनिवरों! देखो, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके वह मुनिवरों! देखो, द्यौ लोक में जाता हुआ दृष्टिपात आने लगा।

तो मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम्हारा मानो देखो, तुम्हारा जो परिश्रम है, तुम्हारी जो अनुसन्धान शालाएं है वह सब सफल हो गई हैं। क्योंकि देखो, यज्ञमान का रथ जितना आकार यज्ञशाला का है और वह जो शब्द के साथ में स्वाहा उच्चारण कर रहे हो वह मानो देखो, तुम्हारे मानो द्यौ लोक में जाते हुए वह यन्त्र भी दृष्टिपात आ रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह विज्ञान की धाराओं में तो रत्त होना नही चाहता हूँ, इसी वाक को ले करके, भारद्वाज मुनि महाराज अपने ब्रह्मचारियों के सहित बेटा! भ्रमण करते हुए मानो देखो, उसके ऊपर परीक्षण होता हुआ महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज जानते थे मेरे प्यारे! देखो, भ्रमण करते हुए वह भी वैशम्पायन ऋषि के द्वार पर पंहुचे। महर्षि वैशम्पायन मुनि महाराज ने कहा आईए भगवन! वह विराजमान हो गएं और विराजमान होने के पश्चात भारद्वाज मुनि बोले कि महाराज! हमने एक यन्त्र का निर्माण किया है, और उस यन्त्र में यज्ञमान का रथ द्यौ लोक में जाता हुआ दृष्टिपात आता है क्या भगवन!

आप भी इसके ऊपर कुछ चिन्तन कीजिए महर्षि वैशम्पायन बोले क्या प्रभु! मैं तो नित्यप्रति वेदों का अध्ययन करता हूँ, और वेद के एक एक शब्द को ले करके उसके ऊपर अन्वेषण करता रहता हूँ। एक एक शब्द में मुझे आध्यात्मिकवाद भौतिकवाद और मानो सामाजिकवाद की प्रतीति होने लगती है। मानो तुम्हारा उच्चारण इतना नितान्तर है, यह तो बड़ा प्रियतम है। मेरे विचार में यह आता है शिकामकेतु जो ऋषि हैं, आज देखो, शिकामकेतु ऋषि महाराज जो उद्दालक गोत्रीय उनके द्वार पर चलेंगें। क्योंकि वह इस समय वेदज्ञ कहलाए जाते हैं, और विज्ञान के मर्म को जानते हैं। चित्रावलियों की आभा में सदैव रत्त रहते हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन और मुनिवरों! आगे जब उन्होंने भ्रमण किया तो महर्षि प्रवाहण महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य, गाड़ीवान रेवक, महर्षि विभाण्डक, महर्षि सोमकेतु इत्यादि मुनियों का बेटा! वहां से वह गमन अप्रतं ब्रह्मे देवत्वां बेटा! वहां से वह भ्रमण करने लगा। गति करते हुए महर्षि शिकामकेतु ऋषि महाराज के द्वार पर पंहुचे। महर्षि शिकामकेतु ऋषि महाराज मेरे प्यारे! देखो, वह उद्दालक गोत्रीय कहलाते थे हमारे यहां उद्दालक गोत्रीय जो वंशलज है, यह बड़ा विचित्र माना गया है। क्योंकि देखो, यह उद्दालक गोत्र का जो वंशलज है, इस उद्दालक गोत्र का जो निकास हुआ, वह हरितत केतु गोत्रों से मानो हरितत गोत्रों से इसका निकास हुआ और हरितत गोत्र का जो निकास है वह अङ्गिरस मुनि से हुआ और अङ्गिरस मुनि का मानो जो वंशलज विकास है, वह व्रेतकेतु मुनि से हुआ, व्रेतकेतु मुनि मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से मानो देखो, इन वंशलजों का निकास हुआ मुझे कुछ ऐसा स्मरण है।

हमारे यहां देखो, आदि ब्रह्मा ने मुनिवरों! देखो, चार पुत्र कहलाते थे, एक का नाम अथर्वा था एक का

नाम यजूंषि था, एक का नाम तामोकृति था, एक का नाम मुनिवरों! भौमवृत्ति कहलाता था। यह चार आदि ब्रह्मा के पुत्र कहलाते थे, मेरे प्यारे! देखो, इनके भिन्न भिन्न प्रकार के वंशलजों का इस प्रकार का निकास हुआ, आज मैं बेटा! इस प्रकार इन वाक्यों में जाना नही चाहता हूँ। क्योंकि अथर्वा के मुनिवरों! देखो, ग्यारह हजार पांच सौ वंशलज समाप्त हुए, और व्रेतकेतु मुनि के मुनिवरों! देखो, लगभग इक्कीस हजार मुनिवरों! देखो, नौ सौ बयासी वंशलज समाप्त हुए और मुनिवरों! देखो, अङ्गिरस के भी इतने ही हुए इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, वह सम्भवा ब्रव्हे मुनिवरों! देखो, नाना वंशलजों के पश्चात वह शिकामकेतु मुनि महाराज उद्दालक गोत्रीय कहलाते थे तो उद्दालक गोत्रीय मुनि महाराज मेरे प्यारे! देखो, बड़े विचित्र महापुरूष थे। परन्तु इसमें नाना वैज्ञानिक, नाना आध्यात्मिकवेत्ता मुनिवरों! देखो, नाना ऋषि होते रहे हैं। परन्तु देखो, उनमें शिकामकेतु ऋषि महाराज उनकी पत्नी व्रेतकेतु मुनिवरों! देखो, वह अपने में अध्ययन करती रहती थी, मुनिवरों! देखो, जब वह अध्ययन करते रहते साकल्य एकत्रित करते रहते गो घृत के द्वारा वो याग करते और याग में से जो परमाणुवाद उत्पन्न होता था मुनिवरों! देखो, उसके ऊपर वह अनुसन्धान करते रहते थे। उसके ऊपर अनुसन्धान करते करते उन्होंने कुछ समय के पश्चात एक यन्त्र का निर्माण किया, और जिस यन्त्र में यह विशेषता थी क्या देखो, वह जैसे याग करते थे स्वाहाः उच्चारण करते तो स्वाहा के साथ में मानो देखो, जो स्वाहा उच्चारण कर रहा है। उसका चित्र उस यन्त्र में उन्हें दृष्टिपात आने लगा उन्होंने बेटा! और अनुसन्धान किया अनुसन्धान करते करते कुछ ऐसा स्मरण है पुत्रों! क्या मुनिवरों! देखो, उनके पिता, महापिता, पड़ पिता उनके सबके चित्र बेटा! देखो, वह यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगे। मेरे प्यारे! मुझे कुछ स्मरण आगे चल करके

जब मुनिवरों! वैशम्पायन भारद्वाज नाना ऋषि व ब्रह्मचारी उनके समीप पंहुचे तो महर्षि शिकामकेतु ने बेटा! उनका स्वागत किया और स्वागत करने के पश्चात उन दोनों पति पत्नी नतमस्तिष्क हो करके बोले क्या हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं कि आपका आगमन कैसे हुआ? वैशम्पायन और देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि बोले कि महाराज! हमने यह श्रवण किया क्या तुम्हारें यहां नाना प्रकार की चित्रवालियां हैं। उन चित्रावलियों का दिग्दर्शन करने के लिए आए हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रिय भगवन! तो मेरे प्यारे! देखो, वह चित्रावलियों का दिग्दर्शन करने लगे उन्होंने बेटा! ऐसे ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया था जिनमें उनके महापिता, पड़ पिता मानो देखो, नाना ऋषि मुनियों के प्रायः चित्र आते रहते थे, मुनिवरों! उन्होंने कहा प्रभु! हमारा तो इसमें अनुसन्धान रहा है। मानो याग के पश्चात हम परमाणुवाद के ऊपर अनुसन्धान करते रहे हैं, और हमारा मानो उसमें बड़ी विचित्र उड़ाने रही हैं। और उस उड़ान का अभिप्राय कि आप को हम दृष्टिपात कराना चाहते हैं। क्या भगवन! देखो, यह यन्त्र है इसके चित्रशाला में हमारे पिता महापिता पड़पिता मानो देखो, हम अपनी वंशावलियों को कहां तक गणित करें, क्या पचासवें महापिता का हमारे इस यन्त्र में मानो देखो, चित्र का आता रहता है। पचासवें महापिता इस संसार में नही हैं, परन्तु यह जो शब्द है, उनका जो परमाणुवाद गति कर रहा है। उनका जो अणुवाद गति कर रहा है, मानो शब्द है, उनकें शब्दों के साथ में जो चित्र है, जो उनका क्रियाकलाप है, वह मानो देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात आता है। मेरे प्यारे! देखो, उनका कितना विशाल अनुसन्धान अन्वेषण किया हुआ, वह बेटा! उनका विज्ञान था, मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है, महर्षि भारद्वाज मुनि बोले कि प्रभु! हम जैसे यज्ञशाला में मानो यज्ञमान के रथ को दृष्टिपात किया

है। मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा भगवन! आप दृष्टिपात कराईए, तो भारद्वाज मुनि महाराज ने अपने वाहनों से या देखो, यन्त्र को ला करके शिकामकेतु मुनि महाराज के दृष्टिपात कराया। तो शिकामकेतु ऋषि मुनिवरों! देखो, भारद्वाज देखो, वह उद्दालक ने यह कहा कि महाराज! अप्रतं भारद्वाज मुनि से क्या प्रभु! तुम्हारी जो दशा है, विज्ञान की वह बड़ी विचित्र है, तुम्हारी चित्रावलियों की जो उड़ान है, वह मानो देखो, अपनी स्थली पर है, हमारा विज्ञान अपनी स्थली पर है। मेरे प्यारे! देखो, उनके यहां ऐसे यन्त्र चित्रावली विद्यमान थी ऐसे यन्त्र थे जहां मुनिवरों! देखो, उनके सौवें महापिता का दिग्दर्शन होता था। बेटा! तो मेरे प्यारे! मैं विज्ञान के वांगमय में तो ले जाना नही चाहता हूँ। विचार विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहां नाना वैज्ञानिक हुए हैं, शिकामकेतु ऋषि महाराज से उद्दालक बोले क्या हे प्रभु! सम्भवा ब्रह्म लोकां ब्रहे व्रतां मेरे प्यारे! देखो, वह वैश्म्पायन ने कहा क्या हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं कि क्योंकि तुम उद्दालक हो और उद्दालक गोत्र में तुम्हारा जन्म हुआ है तुम्हारे यहां नाना वैज्ञानिक पूर्व काल में भी हुए हैं।

आज भी तुम्हारा विज्ञान में बहुत ऊँची उड़ान है, परन्तु यह सब यन्त्रों में कैसे क्रियाकलाप को जाना है। उन्होंने कहा कि भगवन! मैं वेदों का अध्ययन करता हूँ, और वेदों के अध्ययन में पितरों का एक सूक्त आता है। और यह पितरों के सूक्त के ऊपर अनुसन्धान करने लगा तो मुझे मानो देखो, पितरों का दर्शन होने लगा। मैं वास्तव में पितरों की विवेचना शब्दों के रूप में मैं ही करता रहा हूँ। पितरों की विवेचना केवल मैं बाह्य जगत में भी दृष्टिपात करता रहा हूँ। और जड़ और चेतना के रूप में ही दोनों ही पितरों के रूप में मैं उनको जानता रहा हूँ आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ केवल यह कि हमारा यहां नाना प्रकार के

विज्ञानवेत्ता एक एक वेदमन्त्र के ऊपर बेटा! अध्ययन किया है, ऋषि मुनियों ने और विज्ञान में जाने का उन्होंने प्रयास किया तो मुनिवरों! देखो, वैशम्पायन बोले कि महाराज! मैं वास्तव में महाराजा अश्वपति के यहां याग में जाता रहता हूँ, मैं वृष्टि याग को कराता रहता हूँ, तो वृष्टि याग में मैं अनुसन्धान करता रहता हूँ। चित्रं रथं ब्रह्मा चित्रं दिव्यां गतप्रव्हा वाचन्नमं ब्रह्मे कृतं देवाः वसुन्धराः मेरे प्यारे! देखो, वेद के ऋषि ने कहा क्या प्रभु! मैं इस प्रकार का पठन पाठन करता रहता हूँ। और मैं यह अनुसन्धान करता रहता हूँ, कि माता वसुन्धरा के गर्भ में क्या क्या वस्तु है? क्योंकि वह वसुन्धरा अपने में वसुन्धरा बन करके रहती है, मैं पृथ्वी को मानो वसुन्धरा के रूप में मानो उसका वर्णन करता रहता हूँ। क्योंकि वसुन्धरा उसे कहते हैं, जिसके गर्भस्थल में मानो यह सर्वत्र वशीभूत रहते हैं, हम सब उसी के गर्भ में विद्यमान है। उसके गर्भ में कहीं खाद्य और खनिज तप रहा है। मानो देखो, नाना प्रकार की आभाएं तप रही हैं। तो क्या प्रभु! इसका विशुद्ध रूप ला सकता हूँ। तो महर्षि शिकामकेतु ने कहा क्या वास्तव में वैशम्पायन तुम्हारा अध्ययन मानो देखो, अद्वितीय कहलाता है।

मैंने तुम्हारा अध्ययन कई समय में श्रवण किया है, मैं बाल्यकाल में भी इन वाक्यों का अध्ययन कराता रहा हूँ, और श्रवण करता रहा हूँ, मुझे तो प्रियतम में आता रहता है, मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनि इनके विज्ञानशाला को उनके विद्यालय को दृष्टिपात करके मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज और नाना ऋषि मुनि बेटा! वहां से प्रस्थान करने लगे उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! हमने तुम्हारी विज्ञानशाला में नाना प्रकार के यन्त्रों को दृष्टिपात किया है। और तुम्हारे पिता, महापिताओं का जो क्रियाकलाप हो रहा है, वह शब्दों के साथ में तुम्हारा जो चित्र आ रहा है, तुम्हारे पूर्वजों का वह

तुम्हारी बड़ी विज्ञान की बड़ी महान एक उपलब्धि कहलाती है। मानो देखो, हम पितर जब पितर सूक्तों में प्रायः अध्ययन करते रहे है। और यह विचारते रहे हैं कि पितर लोक की कोई तो पितरों लोकां ब्रह्मा लोक कहते हैं, जहां वास करता है, जहां मानव वास करता है, उसी का नाम लोक है। तो अन्तरिक्षं ब्रह्मा यह अन्तरिक्ष भी शब्दों का एक भण्डार है, मानो देखो, शब्द विद्यमान हैं, शब्दों के साथ में चित्र है, और उन चित्रों को यन्त्रों के द्वारा दृष्टिपात कर रहे हो तुम्हारे विज्ञान की बड़ी महान एक उपलब्धि कहलाती है। हमारा हृदय मानो प्रश्न हो रहा है, तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनि इतना कह करके और वहां से उन्होंने प्रस्थान किया। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ब्रह्मचारियों के सहित अपने कजली वन में आ करके अपने विद्यालय में मानो कोई पठन पाठन का क्रियाकलाप प्रारम्भ हो गया। मेरे प्यारे! उसके पठन पाठन की जो पद्धति है, वह बड़ी विचित्र मानी गई है, उनके पठन पाठन का जो कर्म है। मानो वह तीन प्रकार के वेदों की परम्परा को और वेदों की सुरक्षा में लगे हुए थे। मानो उन्हें जो परम्पराएं रचना थी एक वेदमन्त्र के वह तीन प्रकार के मानो देखो, भाव को व्यक्त करते रहे थे, एक से उनका व्यापार रहता था कि हमारा सामाजिक जो मानो देखो, आत्मिक जो कर्म है बाह्य जगत वह पवित्र रहना चाहिए। वह वेद के माध्यम से मानो उनका अन्वेषण करते रहते थे। एक मानो विज्ञान में वेदमन्त्र का भाव उनका वैज्ञानिक था, जो मेधा से जा करके बेटा! उसका मिलन होता है। मानो एक उसका एक आध्यात्मिक विज्ञान में रत्त रहता था।

तो मुनिवरों! देखो, वेद का अध्ययन करने वाला, वेद का अर्थ और वेद के शब्दों की भाषा का वही मुनिवरों! देखो, प्रतिभाषित कर सकता है, जो विज्ञानवेत्ता हो, जो मानो देखो, यौगिक हो, और

व्यवहार में कुशल हो, तो वेद का वाक व्यवहार की चर्चा कहता है, व्यवहार में चर्चा क्या गार्हपथ्य नाम की अग्नि की, गृहपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करो। मेरे प्यारे! देखो, गृहपथ्य गार्हपथ्य, नाम की अग्नि में ब्रह्मचारी तप रहा है। अपनी विद्या का अध्ययन कर रहा है और गृहपथ्य नाम की अग्नि में पति ओर पत्नी तप रहे हैं, मानो देखो, माता पिता का जैसा व्यवहार हैं जैसा भी उनका क्रियाकलाप गृह में होता है। बाल्य बालिका उसी के अनुसार बरतते रहते हैं और बरतने का अभिप्राय यह कि उनकी जो जैसे वह अपने जीवन को व्यतीत करते हैं, परन्तु देखो, वह माता पिता ही देखो, स्वर्ग ला सकते हैं गृह में तो देखो, यह व्यापार कहलाता है इसको हमारे यहां व्यापार कहते हैं, क्या हम ब्रह्मचर्य व्रत में कैसे प्रातःकालीन अपनी क्रियाओं से निवृत्त हों, और कैसे हम अध्ययन करें? और अध्ययन की मानो वह जो प्रणाली है वह किस प्रकार की होनी चाहिए? मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार गृह में आश्रम में पति और पत्नी इस प्रकार अपने में वेदों का दर्शनों का अध्ययन करें, और अध्ययन करते हमारा गृह, उस मानो देखो, हमारे शब्दों से, हमारा गृह परमाणुवाद से, शब्दों में भरण हो जाएं, जिससे गृह में मानो देखो, शब्दों की प्रतिभा मानो देखो, एक ऊँची बनी रहे यदि किसी गृह में कलह रहता है, मानो कलह के परमाणु, उस गृह में परणित हो जाते हैं। गृह नारकिक बन जाता है, एक स्थली पर दर्शनों का अध्ययन हो रहा है, वहां वेदों का अध्ययन कर रहे हैं और वेदो का अध्ययन करते करते मानो देखो, वह गृह वह आसन पवित्र हो जाता है वहां उनके शब्दों के चित्र गमन करते रहते हैं। और उसी में रत्त होते रहते हैं। तो इसीलिए देखो, हमारा बाह्य जगत, हमारा पवित्र होना चाहिए। आज संसार में मानो देखो, प्रत्येक मानव जिस प्रकार का व्यापार करने वाला होता है, प्रत्येक

गृह में, प्रातःकालीन वेदज्ञ ध्वनि आनी चाहिए, हे माता! यदि तू अपने गृह को ऊँचा बनाना चाहती है तो तेरे गृह में मानो प्रातःकालीन मानो वेदज्ञ ध्वनि होनी चाहिए, और सुगन्धि होनी चाहिए। दो प्रकार की सुगन्धि हमारे यहां मानी गई हैं। एक मानो देखो, विचारों की सुगन्धि है, एक साकल्य की सुगन्धि है, तो साकल्य की जो सुगन्धि है, उसका आयु सूक्ष्म है, और जो विचारों की सुगन्धि है, उसका आयु दीर्घ माना गया है। वह मानो देखो, हमारा विचार पवित्र रहना चाहिए।

तो विचार विनिमय क्या देखो, राष्ट्र देखो, विद्यालय गृह और मुनिवरों! देखो, मानो देखो, विज्ञानशाला ऊँची बना करती है तो इसीलिए हमारा विचार पवित्र होना चाहिए सत्यवादी होना चाहिए महानता में गमन करने वाला हो तो मेरे प्यारे! देखो, इससे बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों का शुद्धिकरण हो जाता है परन्तु उसके पश्चात मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान है एक वेद का विज्ञान कहता है विज्ञान क्या है? मेरे प्यारे! विज्ञान में मेधावी उत्पन्न हो जाती है। मेधा, ऋतम्भरा, दोनों देखो, विज्ञान की पुकार कर रहे हैं, विज्ञान क्या है बेटा! हम याग कर रहे हैं याग में परमाणुवाद उत्पन्न हो रहा है, उन परमाणुओं को मानो देखो, हम यन्त्र में लाना प्रारम्भ करते हैं, यन्त्र में लाते लाते, वह उनका परमाणुओं का साकार रूप बनाते हैं, साकार रूप कैसे बनता है? मेरे प्यारे! देखो, जैसे हमने कहीं वेद में अध्ययन किया है, क्या गर्मश्वतं ब्रह्मा वेदों भवा सम्भवा मेरे प्यारे! माता के गर्भस्थल में, एक बिन्दु में मानो देखो, नाना चित्र विद्यमान हैं, उन्हीं चित्त की आभा परमाणुओं को ले करके वैज्ञानिक अपने में एक एक रक्त के बिन्दु में बेटा! देखो, वह यन्त्रों का पान करने लगता है यन्त्रों से एक एक रक्त के बिन्दु में चित्रों का दर्शन करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान क्या है? विज्ञान एक मानव की, एक मौलिक उपलब्धि

कहलाती है। एक मानव के अन्तरात्मा की मन ओर प्राण की मानो देखो, तीनों का विस्तार उसको विज्ञान कहा जाता है। मानव के शरीर में, एक आत्मा है, प्राण है, और मन है, मानो तीनों एक सूत्र के मनके कहलाते हैं। और उन मनकों को मानो देखो, विस्तार से बाह्य जगत में या आन्तरिक जगत दोनों में अन्वेषण करके जब उनकी आभा में लाना प्रारम्भ करते हैं। तो भौतिक विज्ञान अपना अनूठा बन करके रहता है, मैंने भौतिक विज्ञान की बहुत सी चर्चाएं की है, मानो देखो, अणु और परमाणुओं के रूप में देखो, विज्ञान देखो, अपने में पनपता रहा है। परम्परागतों से ही, मेरे प्यारे! देखो, विज्ञानवेत्ता एक एक वस्तु एक एक वाक की रचना करता है। रचना के पश्चात उनके अणु को जानने की इच्छा करता है, अणु जान करके परमाणुओं से मिलन करता है, परमाणु से उसका मिलान करता है, और मिलान करके तीनों मानो आभा में नियुक्त करते हुए वह बेटा! यन्त्रों का निर्माण करता है। तो बेटा! विज्ञान की चर्चा तो तुम्हें देने नही आया हूँ। तो विचार क्या कि मैं एक वेदमन्त्र को ले करके चला हूँ, क्या एक एक वेदमन्त्र के बेटा! तीन प्रकार के अर्थ होते हैं। और दूसरा तीसरा होता है, जिसको हम आत्मिक विज्ञान कहते हैं, आत्मा का विज्ञान क्या है? बेटा! देखो, भौतिकवाद के पञ्च महाभूतों के विज्ञान को जान करके और भौतिक विज्ञान के ऊपर आत्मा जो चेतना है, जो ज्ञान में रत्त रहने वाला है। मानो उसके ज्ञान और प्रयत्न दोनों मौलिक गुण रह करके परमात्मा के मार्ग में मानो देखो, परमात्मा के मिलन के लिए जब वह गमन करता है। तो मानो देखो, मोक्ष की पग्डण्डी को ग्रहण करता है। और वह अपनी चेतना में चेतना का समन्वय करता हुआ मुनिवरों! देखो, जैसे मानव का हृदय परमात्मा के हृदय से जब मिलन हो जाता है।

तो मुनिवरों! देखो, मानव अपनी इन्द्रियों से मौन

हो करके और परमपिता परमात्मा की चेनता में चेतना का भान होने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह आध्यात्मिक विज्ञान कहलाता है। हम तीन प्रकार के वेदों के मन्त्रों से हम लाते हैं, तो वेद का मन्त्र हमारे द्वारा सार्थक बन करके और वेद रूपी जो प्रकाश है, जो मानव के अन्तःकरण को पवित्र बनाने वाला है, हम मानो देखो, उसकी आभा को जान सकते हैं। आज मैं बेटा! तुम्हें विशेष चर्चा करने नही आया हूँ, विचार केवल यह देने के लिए आया हूँ, बेटा! मैं उच्चारण कर रहा था मैं बहुत दूरी चला गया हूँ। मैं अपने विचारों से मैं द्वितीय आभा को अपना गया हूँ, विचार यह चल रहा था कि यज्ञोमयी विष्णु मेरे प्यारे! देखो, वह विष्णु है, जो याग में परणित रहता है, मैंने तीन प्रकार के और जो मानव में भ्रमण करता हुआ बेटा! तुम्हें मैं उद्दालक गोत्र में ले गया था उस उद्दालक गोत्र में जो याग है मानो देखो, वह विष्णु है। मानो देखो, कैसा विष्णु हैं मुनिवरों! देखो, शब्द अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके और वह द्यौ में प्रवेश करते हैं ओर द्यौ में ऊर्ज्वा रहता है ओर उसी ऊर्ज्वा को ले करके सूर्य बेटा! प्रकाश देता है सूर्य भी विष्णु बन करके उसी द्यौ से ऊर्ज्वा ले करके संसार को प्रकाशमान बना देता है ओर वही मुनिवरों! देखो, द्यौ में वह चित्र विद्यमान हो जाते है जो उद्दालक गोत्रीय मुनिवरों! शिकामकेतु मुनि महाराज अपने में अनुसन्धान करता हुआ और अपने पूर्वजों के यन्त्रों में बेटा! दर्शन कर रहा है। वह विष्णु याग कहलाता है। हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है, मानो देखो, कल्याण कौन करता है, कल्याणकारी विष्णु कहलाता है। यज्ञोमयी विष्णु मेरे प्यारे! देखो, वह श्रेष्ठतम कर्म है। हे विष्णु! तू याग है, जितना भी संसार का सुकर्म है, जितने भी पितरयागी कहलाते हैं, वह यन्त्र मानो देखो, एक विष्णु के रूप में रत्त रहते हैं। एक सूर्य आभा में निहित रहते हैं, मानो

देखो, याग हो रहा है, मैं कैसे याग की तुम्हें चर्चा करने लगूं। यह जो परमात्मा का ब्रह्माण्ड है, यह तो अनन्तमयी कहलाता है, यहां तो बेटा! एक दूसरा एक दूसरा लोक एक दूसरे में पिरोया हुआ है, एक माला बनी हुई बेटा! देखो, वह विष्णु याग हो रहा है, मेरे प्यारे! एक दूसरे में एक दूसरा एक दूसरे का सहायक बना हुआ है। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी मानो देखो, प्राणी की सहायक है। और देखो, यह सूर्य पृथ्वियों की सहायता कर रहा है। और बृहस्पति मानो इनकी सहायता कर रहा है, और बृहस्पति मेरे प्यारे! देखो, आरुणि उनकी सहायता कर रहा है और ध्रुव आरुणि की सहायता कर रहा है इसी प्रकार बेटा! एक लोक नही दो लोक नही यह ब्रह्माण्ड बेटा! एक दूसरे में पिरोया हुआ है सा मुझे दृष्टिपात आ रहा है बेटा! कैसी विचित्र माला है जिस माला को धारण करके मानव अपने में यह अन्वेषण करने लगता है अरे, ... शेष अनुपलब्ध। दिनांक ०१ ०२ १९८६।

10 **०२ ०२ १९८६**

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमे दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि जिस भी विज्ञान और ज्ञान की प्रतिभा में मानव रत्त हो रहा है मानो सर्वत्र उसकी आभा में कोई चेतना अपना क्रियाकलाप कर रही है उसी चेतना के मूल में मानो एक आभा दृष्टिपात आती है जिसे हमारे यहां सूत्र के नामो से

वर्णन किया गया है उसी सूत्र में यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड बेटा! पिरोया हुआ है जैसे माला में भिन्न भिन्न प्रकार के मनके होते हैं और वह मनके किसी सूत्र में पिरोये जाते हैं। और सूत्र और मनकों का जब दोनों का समन्वय होता है तो मुनिवरों! वह माला बन जाती है और उस माला को जो धारण कर लेता है वह उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा को जानता है क्या वह परमपिता परमात्मा सर्वत्र है कोई भी ऐसी स्थली नही है जहां वह परमपिता परमात्मा न हो भिन्न भिन्न रूपों से मानो उसका निरुपण किया गया है आज का हमारा वेदमन्त्र मानो इन वाक्यों में जाना नही चाहता है आज का हमारा वेदमन्त्र उस विष्णु की याचना कर रहा है हे विष्णु! तू कल्याणकारी है कल्याण करने वाला है हमारे यहां वैदिक साहित्य में विष्णु के नाना पर्यायवाची शब्द आते हैं मानो देखो हमारे यहां विष्णु नाम पालन करने वाले को कहा गया है जो भी पालन कर रहा है उसी का नाम विष्णु कहा जाता है मुनिवरों! देखो, विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है। और विष्णु नाम माता का है क्योंकि विष्णु भी पालन करने वाला है वह ध्रुवा में रहता है मानो विष्णु नाम माता का है माता भी पालन करने वाली है कहीं मानो वह पालन है मेरे प्यारे! वह तमोगुण में भी जो उत्पन्न होना है मानो वह भी एक मूलक बना हुआ है। तो हे मेरी प्यारी माता! तुझे वेद ने विष्णु कहा है तू विष्णु है और पालन करने वाली है, तो मुनिवरों! देखो, जो भी पालन करता है उसी का नाम विष्णु कहा जाता है। आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। आज का हमारा वेदमन्त्र विष्णु की विवेचना कर रहा है, विष्णु नाम नाना पर्यायवाची शब्दों में आता रहता है। देखो, वह मुझे स्मरण आता रहा है हमारे यहां कागभुषुण्ड और महर्षि लोमश मुनि दोनों परस्पर चर्चा करते थे तो विष्णु की याचना करते रहते थे। और विष्णु के सम्बन्ध में, भिन्न

भिन्न प्रकार की विवेचनाओं में लगे रहते थे। कहीं विष्णु मानो आत्मा का पर्यायवाची कहलाता है, कहीं विष्णु परमात्मा का नामोकरण है, कहीं विष्णु नाम माता का है कही विष्णु नाम राजा का है, कहीं विष्णु नाम सूर्य का है कहीं मुनिवरों! देखो, विष्णु नाम वायु और अग्नि को कहा गया है। कहीं विष्णु नाम आपो कहा गया है। मेरे प्यारे! जितना भी यह मानवीय क्षेत्र में पालना करने का जो भी सूचक है, उसी का नाम हमारे यहां विष्णु कहा गया है। तो बेटा! जैसे मैं आज विष्णु की विवेचना में विशेष तुम्हें में ले जाना नही चाहता हूँ, केवल विष्णु अपने में उड़ान उड़ता रहता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैंने बहुत पुरातन काल में, नाना प्रकार की चर्चाएं की हैं, आज भी मैं उन आख्यिकाओं में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है, याज्ञवल्कय मुनि महाराज क्या बेटा! अपने विद्यालय में अध्ययन कराते रहते थे, एक समय बेटा! ब्रह्मचारियों के मध्य में, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, बेटा! देखो, उनके समीप, नाना ब्रह्मचारी थे, जिन ब्रह्मचारियों में रोहिणीकेतु, यज्ञदत्ता, रोहिणीकृतिका, सोमकेतु नाना मुनिवरों! देखो, ब्रह्म की जिज्ञासा वाले, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहां, विद्या अध्ययन करते थे। तो मुनिवरों! देखो, विद्यालय में, भिन्न भिन्न प्रकार की चर्चाएं होती रहती थी। परन्तु देखो, वेद का मन्त्र कहता है सम्भवं ब्रह्मे आचारं ब्रहे कृतं लोकाम हिरण्यम रथाः मेरे प्यारे! देखो, आचार्यजन, जब अपने विद्यालय को सुशोभित करते हैं, अथवा उसमें एक महानता का प्रदर्शन करते हैं, तो वह स्वयं, अपने में तपस्वी बनते हैं, क्योंकि तप ही मानव को ऊँचा बनाता है। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहां तपों की विवेचना करते हुए, आचार्यों ने और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! आओ, विराजो तो ब्रह्मचारी अपने में विराजमान हो

गएं। और विराजमान हो करके प्रातःकालीन विद्यालय में बेटा! याग करने लगे जब याग के पश्चात उन्होंने मानो कुछ वेदों के मन्त्रों का उद्गीत गाया और उद्गीत गाते गाते मुनिवरों! देखो, ऋषि कहता है, सम्भवं ब्रह्मा सम्भवं लोकां हिरण्यम रथा मेरे प्यारे! देखो, तपां ब्व्हे व्रताः अस्सुतम लोकां मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों के मध्य में तपों की विवेचना कर रहे थे। ब्रह्मचारी बोले कि महाराज! यह तप क्या है? इसके ऊपर आप इतनी विवेचना कर रहे हैं, उन्होंने कहा तपं ब्रह्मे वर्णस्वस्ति रूद्राः वाचन्न तपाः हे ब्रह्मचारियों! यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड तपों में कहलाता है। क्योंकि तप ही तप तो मानव को विचित्र बनाते हैं, राजा के राष्ट्र को भी मानो देखो, तप ही ऊँचा बनाता है। राष्ट्र ही तप को कहा जाता है। विद्यालय में ब्रह्मचारी मानो तपों में रहने वाले बनें, गार्हपथ्य नाम की अग्नि की पूजा में लगें रहें। तो मानो देखो, उनका ब्रह्मचर्य तपों में निहित हो जाता है। आचार्य अपने विद्यालय को पवित्र बना देते हैं। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या, यह संसार सर्वत्र तपों में कहलाता है। हे ब्रह्मचारियों! जब विद्यालय में ब्रह्मचारी तपता है, और तपने के पश्चात, वह आचार्य बनता है, गार्हपथ्य नाम अग्नि का जब पूजन करता है, गार्हपथ्य कहते हैं जो अग्नं ब्रह्मा, जिसमें ब्रह्मचारी तपा करता है, विद्या का अध्ययन करता है, अपने में महान बनने के लिए तत्पर होता है, और वह प्रातःकालीन, सांयकालीन मानो देखो, वह याग में परणित हो जाता है। यागां ब्रह्मा यागां ब्रह्मे लोकां मेरे प्यारे! देखो, याग में लगा रहता है याग किसे कहते हैं? याग की बड़ी विस्तृत व्याख्या, हमारे वैदिक साहित्य में आती रहती है। वास्तव में ब्रह्मचारी जब प्रातःकालीन सांयकालीन याग में लगा रहता है, तो वह याग कर्म में संलग्न हो जाता है। मेरे प्यारे! वह अपने में महानता का, एक ओजस अपने में विचार बनाता है, उसी विचार को ले

करके, वह अपनी मानवीय पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। मेरे प्यारे! वह पगडण्डी मानो एक विचित्र कहलाती है, गार्हपथ्य नाम की अग्नि में, ब्रह्मचारी अपने एक एक शब्द को पिरो देता है, अपने एक एक शब्द का साकल्य बना देता है, साकल्य बना करके हृदय रूपी, यज्ञशाला में जो अग्न्याधान हो रहा है। उसमें मुनिवरों! देखो, वह अपनी आहुतियां प्रदान करने लगता है।

तो विचार विनिमय क्या, कि मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नही आया हूँ, केवल विचार यह देने के लिए आया हूँ। क्या याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने में ब्रह्मचारियों को शिक्षा दे रहे थे, उन्होंने कहा आचार्य तपों में कहलाता है, आचार्य जब तपा करता है, सत्यवादी आभा में तप जाता है, वह उष्ण बन जाता है, और मुनिवरों! देखो, आचार्य अपने विद्यालय को, ब्रह्मचारियों के मध्य में, विद्यमान हो करके विद्यालय को पवित्र बनाता है। ब्रह्मचर्य एक महानता की ज्योति में जागरूक हो जाते हैं। याजागां याज्ञं ब्रह्मे मुनिवरों! मुनिवरों! देखो, जो जागता है, उसी का जीवन तो पवित्र रहता है। और बेटा! कौन जागता है जागरूक वही रहता है क्या जो अन्तर्हृदय की प्रतिभा को जानता है अन्तर्हृदय की प्रतिभा, मुनिवरों! देखो, ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहने वाला, अपने में ऊँची उड़ान उड़ता हुआ, बेटा! ब्रह्म की आभा में रत्त हो जाता है। आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेषता में नही याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि वेद का मन्त्र कहता है ब्रह्मवर्चोसि आओ, तुम मानो देखो, तपों में परणित हो जाओ, मेरी प्यारी माता बाल्यकाल में जब तपा करती है, ब्रह्म देखो, वीरांगना बन जाती है, और वीरांगना बन करके ही मुनिवरों! देखो, वह ममतामयी बन जाती है। मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था, माता मल्दालसा की, मैंने तुम्हें चर्चाएं की, माता मल्दालसा

बेटा! अपने विद्यालय में अध्ययन करती रहती थी, जब अध्ययन करती रहती थी तो मानो देखो, वह यह उद्गीत गाती रहती, अपने अन्तःकरण को सजातीय बनाती रहती थी वह बेटा! देखो, एक समय मनु वंश के जब एक राजा मानो देखो, विद्यालय में कहीं भ्रमण करते चले आए वे युवक थे मानो तपोमयी थे विचार मानो देखो, राजा राष्ट्र को त्याग करके, वह सन्यस्थ को प्राप्त हो गया था मेरे प्यारे! देखो, वह जब विद्यालय में आया, तो माता मल्दालसा के मानो उन्होंने उद्गीत गाने जब उन्होंने जब उन्होंने श्रवण किए तो बेटा! वह अपने में जानने लगा यह तो बड़ी विदुषी है, मानो तपोमयी हैं। उन्होंने मुनिवरों! देखो, ऋषि से कहा पनपेतु ऋषि से कहा कि महाराज! यह जो कन्या है, जो तुम्हारे विद्यालय में अध्ययन करती है, मेरी इच्छा यह है कि मानो देखो, मैं इसको राजलक्ष्मी के मानो देखो, मैं इस योग्यता को प्राप्त कराना चाहता हूँ। आपकी क्या इच्छा है उस समय ऋषि ने कहा क्या, यह कन्या से प्राप्त करो। राजा ने कहा हे देवी! मैं मानो तुम्हें अपनी राजलक्ष्मी गृह अस्तो गृह में प्रवेश कराना चाहता हूँ। तुम्हारी क्या इच्छा है? तो माता मल्दालसा ने कहा कि हे राजन्! मेरी मानो कुछ प्रतिज्ञाएं हैं, और वह प्रतिज्ञाएं यह है, कि पांच वर्ष तक ब्रह्मचारी को मेरी शिक्षा होनी चाहिए, और पांच वर्ष के पश्चात मानो वह कहीं भी अपनाने का वृत कार्य कर सकता है। मेरे प्यारे! राजा ने स्वीकार कर लिया मेरे पुत्रों! द्वितीय प्रतिज्ञा यह कि उन्होंने बाध्य किया हे राजन! यदि मेरी आज्ञा को उल्लंघन कर दिया, तो उसके बारह वर्ष के पश्चात, तो मैं अपने शरीर और आत्मा का दोनों का विच्छेद हो जाएगा मैं अपने लोक को चली जाऊंगी। तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मे लोकां बारह वर्ष तप करके मैं अपने में ब्रह्मवर्चोसि का पालन करूंगी। राजा ने बेटा! वह वाक स्वीकार कर लिया। स्वीकार करने के पश्चात मुनिवरों!

देखो, मातम ब्रह्मे वह ऋषि पणपेतु ने बेटा! उनका संस्कार कराया, और उन्हें सुयोग्य स्वीकार करके, क्योंकि वेदों के मर्म को जानने वाली वह वीरांगना थी, वीरांगना उसी को कहते हैं जप मुनिवरों! देखो, मानो देखो, अपने जीवन को सजातीय बना लेती है, महान बना करके, पवित्रता को धारण कर लेती है, वह बेटा! राजगृह में पंहुची, राजगृह बेटा! एक आनन्दित हो गया। क्योंकि हमारे यहां मनु वंश, बड़ा विचित्र माना गया है। हमारे यहां मनु वंश में, नाना प्रणालियां हुई हैं, साढ़े सात हजार प्रणाली समाप्त हो गई थी जब व्रेतकेतु मुनि मानो उस राष्ट्रीय जो माता मल्दालसा से जिसका संस्कार हुआ।

तो मुनिवरों! देखो, माता के गर्भस्थल में जब शिशु का प्रवेश हो गया, तो शिशु के आते ही वह अपने में मानो मौन हो जाती और मौन हो करके अपनी अन्तरात्मा में, जो हृदय में, जो आत्मा में विराजमान, उसे हमारे यहां शिशु के रूप में परणित किया जाता है। वह मुनिवरों! देखो, समाधिष्ट हो करके, उस आत्मा से चर्चा करती, और यह कहती आत्मो वर्णं ब्रहे कश्मस्तं ब्रह्मे लोकां मानो देखो, आत्मा से चर्चा करती रहती। हे आत्मा! तेरा मेरे गर्भ में आने का, मानो देखो, कैसे सौभाग्य प्राप्त हुआ है? तो मुनिवरों! देखो, वह, जब कोई उत्तर प्राप्त नही होता, तो ब्रह्म की याचना करना प्रारम्भ कर देती। तो मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भ से, बेटा! वह वीरांगना नौ माह के पश्चात, उसके गर्भ से एक पुत्र का जन्म हुआ। तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, महर्षि याज्ञवल्य मुनि महाराज ने, अपने ब्रह्मचारियों से कहा हे ब्रह्मचारियों! जो विद्यालयों में, ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणी तपा करती है, वही तो ममतामयी बनती है। मानो वही तो आत्मा से, आत्म चर्चा किया करती हैं, आत्म् चर्चा कौन करता है? जो अङ्गों और उपांगों को जानने वाला है, मेरे पुत्रों! देखो,

वेद के ऋषि ने जब यह वाक प्रगट किया तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारियों ने कहा भगवन! तप की विवेचना उन्होंने कहा तपं ब्रह्मा लोकां यह जो सूर्य है यह भी तपायमान है, मानो देखो, यह तपता रहता है, प्रातःकाल से उदय होता है, उदय होते ही, मेरे प्यारे! उसकी ऊषा और कान्ति दोनों किरण आ जाती हैं। और आ करके बेटा! प्रातःकाल की प्रथम किरण का नाम ऊषा कहलाता है, द्वितीय किरण का नाम कान्ति कहलाता है, मेरे प्यारे! देखो, कान्ति ओर ऊषा का जब प्रादुर्भाव होता है, अथवा प्रकाश होता है, तो नाना वनस्पतियां अपने में उनकी कान्तियों से रस लेना प्रारम्भ कर देती है जीवन को धारण करने लगती है मानो देखो, प्रत्येक आभा में, जितना भी यह जगत मुझे दृष्टिपात आ रहा है, बेटा! यह सर्वत्र जगत, मानो सूर्य से प्रकाश ले करके और उसी प्रकाश में मुनिवरों! देखो, वह रत्त हो जाते हैं, वही प्रकाश तो मानो तपों में कहलाता है, तो प्रातःकाल से ले करके मानो वह तपता रहता है, और जब मध्य दिवस आता है तो यह मानो देखो, ऊर्ज्वा शक्ति को ले करके इस संसार को ऊर्ज्वा से तपायमान करता है वही ऊर्ज्वा के जो परमाणु हैं वह द्यौ लोक में प्रवेश हो जाते हैं मानो कुछ मानवीय मस्तिष्कों में प्रत्येक प्राणी के हृदय में प्रवेश हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! यह नाना प्रकार का जो खनिज पदार्थ है, खाद्य पदार्थ है, मानो देखो, यह भी तपायमान हो जाता है। कहीं मानो देखो, वह, कहीं पृथ्वी के ऊपर मानो देखो, पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं मानो देखो, खनिज की धारा का जन्म हो रहा है, कहीं खाद्यान्न पदार्थों का मानो निर्माण क्या, उसको तपायमान कर रहा है, वह मानो परिपक्व हो करके, मानव के जीवन का, एक पूरक बन करके और मानव के जीवन की धारा को ले करके चलता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेषता में तुम्हें ले

जाना नही चाहता हूँ, विचार विनिमय क्या कि यह जो सूर्य का जो तप करने वाले प्राणी हैं, वह तपों में मानो देखो, सूर्य की आभा में तपा करते हैं। यह हमारा देव कहलाता है। यह मानो देखो, द्यौ से प्रकाश ले करके ओर मुनिवरों! देखो, यह पृथ्वी पर बिखेर देता है नाना पृथ्वियों को तपायमान कर देता है। मानो उसको सूत्रों में सूत्रित करके बेटा! उसको अपने में धारण करता रहता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष तुम्हें विवेचना देने नही आया हूँ, यह सूर्य ऊर्ज्वा का स्वामी है, मानो देखो, जब मध्य दिवस समाप्त होता है, यह मानो देखो, शनै शनै मानो देखो, सांयकाल के आंगन में प्रवेश हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, रात्रि छा जाती है मानो देखो, सम्मिलन होता है, इसके पश्चात फिर प्रातःकाल होते ही यह रात्रि को अपने नीचे दबा कर लेता है, और दबा करता हुआ मानो देखो, रात्रि जो अन्धकार रूप में थी, वही मुनिवरों! देखो, रात्रि को अपनी किरणों से आच्छादित कर देता है मानो आच्छादित करके मानो उसी काल में यह रात्रि बेटा! अहिल्या के रूप में परणित हो जाती है यह अहिल्या कहलाती है क्योंकि अहिल्या का जो पति है वह गौतम कहलाता है। मानो हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! गौतम नाम चन्द्रमा को कहा गया है और वह चन्द्रमा गौतम बन करके ये रात्रि का स्वामीतव करता है, और प्रातःकाल होते ही मानो देखो, सूर्य इन्द्र बन करके आता है, और इन्द्र बन करके वह इन्द्र मानो ब्रह्मे व्रतां देवाः वह इन्द्र बन करके वह रात्रि को अपने नीचे दबा कर लेता है। अपने में ही धारण करके बेटा! किरणे उसके ऊपर आच्छादित हो जाती है और अन्धकार समाप्त हुआ दिवस आ गया प्रकाश आ गया बेटा! उसी प्रकाश में यह मानव अपने क्रियाकलापों में, तत्पर हो जाता है। मानो देखो, अपने में क्रीड़ा करने लगता है, तो विचार विनिमय क्या,

मुनिवरों! सूर्य तपायमान है, यह तपता रहता है, अन्धकार को नष्ट करता है, तप हुआ वही कहलाता है, जो अन्धकार को नष्ट करने वाला हो। तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि सूर्य अपने में तपता रहता है, जब साधक जन, मानो योगेश्वर जब मुनिवरों! देखो, सूर्य की किरणों के ऊपर तपोमयी बन जाते हैं तो यह शीतली प्राणायाम करके मानो देखो, उस आभा उस किरणों को अपने में सिंचन करने लगते हैं जो शीतलता लिए हुए होते हैं मानो देखो, वह उष्णता लिए हुए होते हैं उसका भी एक नृत्त करते रहते हैं तो विचार क्या मुनिवरों! वह मानव तपों में चला जाता है मेरी प्यारी माता जो जानती है जिस समय मानो देखो, वह माता के गर्भस्थल में छटा माह होता है, माता के गर्भ में हम जैसे जरायुज होते हैं तो मानो देखो, उस समय सूर्य की प्रातःकाल की किरणों को आधान करना चाहिए जब वह आधान करते हैं तो मानो देखो, मध्य में सूर्य का आधान किया जाता है और आधान करने से हे माता! तू अपने पुत्र को तेजोमयी बना सकती है, जैसे माता मल्दालसा इस प्रकार का तप किया करती थी। तो मेरे प्यारे! देखो, वह माता तपों में कहलाती है सूर्य तपता रहता है मानो तपायमान बन करके, अपने को ओजस बनाता रहता। तो मुनिवरों! देखो, यह सूर्य अपने में तपायमान है, इसीलिए हम सूर्य को बेटा! देखो, तपों में कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है, हे ब्रह्मचारियों! जैसे सूर्य तपायमान है, ऐसे ही मानो देखो, यह जब ग्रीष्म ऋतु का काल आता है, तो यह पृथ्वी तपा करती है, यह पृथ्वी तपती रहती है, और जब तपती है और जब तपती है तो मानो देखो, मेघों से वृष्टि का प्रादुर्भहे जब वृष्टि होती है। तो मुनिवरों! देखो, इस वृष्टि में ब्रह्मे व्रतां यह नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देने वाली है। बेटा! देखो, जन्म दाता वह जन्म देने वाली उसी काल

में बनती है, जब प्रथम तपायमान हो जाती है। जैसे माता तपती है, ऐसी ही पृथ्वी तपा करती है, तो बेटा! जब यह पृथ्वी तपों में बन जाती है और तपों में बन करके ही मुनिवरों! देखो, महानता का नृत्त होने लगता है मेरे प्यारे! देखो, ग्रीष्म ऋतु में जब यह तपती है, तपायमान हो करके बेटा! वर्षा ऋतु आते ही मानो देखो, मेघों से वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है, और जब मेघों से वृष्टि प्रारम्भ हुआ करती है, वही मुनिवरों! देखो, धीमी धीमी वृष्टि हो करके यह नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देती है। हे मानव! तू प्रकाशमान बनना चाहता है तो इस पृथ्वी को जानने की इच्छा प्रगट कर।

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है एक समय ऋषि मुनियों का एक मानो समूह विद्यमान था और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहां नाना ब्रह्मचारियों ने यह प्रश्न किया क्या महाराज हमने यह श्रवण किया है क्या महाराज अश्वपति के यहां एक समय देखो, अतिवृष्टि हो गई थी पण अकाल हो गया था उसके मूल में क्या है? हम उसके मूल को जानना चाहते हैं, जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से ब्रह्मचारियों ने यह प्रश्न किया कि महाराज! महाराजा अश्वपति के यहां पण अकाल हो गया था और पण अकाल में मानो देखो, अर्द्धभाग ऋषि के यहां सम्भवं ब्रव्हे अस्वतम् देवाः ब्रह्मे लोकां मानो देखो, पत्नी मृत्यु से समाप्त हो रही थी, पण अकाल में मृत्यु आ गई थी, इसके मूल में क्या था मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा एक समय जब बिना समय के वह वृष्टि हुई थी तो वृष्टि के मूल में समाज का और राष्ट्र का पाप हुआ करता है। समाज जब पाप कर्म करने लगती है, तो मानो देखो, अतिवृष्टि अनावृष्टि हुआ करती है, इसीलिए अतिवृष्टि के मूल में मानो देखो, समाज का यह पृथ्वी का दोषारोपण नही हैं, एक समय उन्होंने आलांकारिक वार्ता प्रगट करते हुए कहा मानो देखो, उन्होंने एक समय कहा क्या एक समय देवर्षि

नारद मुनि महाराज कहीं से भ्रमण करते आ गएं और भ्रमण करते हुए मानो सब प्रजा गंगा स्नान को चली जा रही थी, वह स्नानं मानो स्नान करने जा रही थी देवर्षि नारद मुनि बोले कि हे प्रजाओं! तुम कहां जा रहे हो? उन्होंने कहा कि महाराज! हम तो गंगा स्नान जा रहे हैं, उन्होंने कहा क्यों? क्या हम जो भी पापकर्म करते हैं, वह गंगा में त्याग देते हैं, मानो अपनी वेदना करते हुए स्नान के पश्चात उस अपने पाप कर्म को त्याग देते हैं। मानो देखो, देवर्षि नारद मुनि महाराज भ्रमण करते हुए वह गंगा के द्वार पर पंहुचे, और गंगा से कहा हे गंगा! तुम मानो यह क्या पाप कर्म कर रही हो सब प्रजा के पापों को तुम अपने में धारण कर रही हो, तुम बड़ी पापनी हो। मानो तुम पामर हो, मेरे प्यारे! गंगा ने कहा हे नारद! मैं पामर नही हूँ, मैं तो जितने भी प्रजा के पाप लेती हूँ, वह मैं मेघ मण्डलों को प्रदान कर देती हूँ, मेरे प्यारे! देखो, वह मेघों के द्वार पर पंहुची और मेघ मण्डलों से कहा हे मेघमण्डलों! तुम बड़े पामर हो, बड़े पापी हो, उन्होंने कहा कि महाराज! ऐसा क्यों उच्चारण कर रहे हो, उन्होंने कहा देखो, यह प्रजा के पाप गंगा लेती है। गंगा तुम्हें प्रदान कर देती है, और मानो देखो, यह प्रजां ब्रह्मे देखो, मेध पापी बन जाते हैं। मानो उसको मानो पाप को उन्होंने कहा हे नारद! इन पापों को मैं नहीं ग्रहण कर रहा हूँ, मैं इन पापों को लेता हूँ, तो मानो देखो, मैं इसकी वृष्टि मैं मानो समुद्रों को प्रदान कर देता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, देवर्षि नारद समुद्रों के द्वार पर पंहुचे, और समुद्रो से कहा कि हे समुद्रों! तुम तो बड़े पापाचारी हो उन्होंने कहा क्यों क्योंकि प्रजा के पापों को गंगा लेती है, गंगा मानो मेघों को देती है, और मेघ तुम्हें प्रदान कर देते हैं। उन्होंने कहा मैं तो मानो इनको ले करके सूर्य को प्रदान कर देता हूँ, मेरे प्यारे! देखो, देवर्षि नारद कहते हैं, सूर्य के द्वार पर पंहुचे सूर्य ने कहा आईए नारद! सूर्य से ब्रह्मे

व्रतां उन्होंने कहा कि महाराज! आप तो बड़े पापी हो आपकी यह किरणें बड़ी पापनी हैं। उन्होंने कहा क्यों? क्या देखो, प्रजा के पापों को मानो देखो, गंगा लेती है, गंगा समुद्र को और मेघ समुद्र को प्रदान करते हैं और समुद्र तुम्हें प्रदान कर देते हैं। उन्होंने कहा मैं इन्हें नही लेता हूँ, मानो देखो, मैं इन मेघ मण्डलों का और मेरी किरणों का जब संघर्ष होता है, तो समुद्रों से उत्थान, जलों का होता है। और वह वृष्टि हो जाती है, तो मैं तो पृथ्वी के प्रदान कर देता हूँ।

तो मेरे प्यारे! वह तो पृथ्वी के द्वार पर पंहुचे, पृथ्वी ने कहा आओ, नारद! उन्होंने कहा भगवन! हे मातेश्वरी! हम आ गए हैं क्यों आए, क्योंकि तुम तो बडी पापिनी हो इसीलिए आया हूँ उन्होंने कहा मानो देखो, यह प्रजा, पाप गंगा को देती है और गंगा मेघों को दे देती है, मेघ समुद्रों को और समुद्र किरणों को प्रदान कर देते हैं, सूर्य की और देखो, किरणों को ओर मेघों का और समुद्रों का संघर्ष हो करके, मानो वृष्टि हो जाती है, और यह पाप तुम्हारे समीप आ जाते हैं। उन्होंने कहा हे नारद! यह पाप मेरे द्वारा भी नही रहते उन्होंने कहा मानो ये पाप आते हैं तो अनावृष्टि में, अतिवृष्टि के रूप में मानो देखो, यह प्रजा के पाप, प्रजा के ही द्वारा चले जाते हैं, प्रजा इन्हें भोगने लगती है। मानो कहीं अनावृष्टि में भोगती है कहीं अतिवृष्टि में भोगती है मानो देखो, यह प्रजा के पाप, प्रजा उसको भोगती रहती है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह देवर्षि नारद मुनि महाराज मौन हो गएं। तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार की शिक्षाए ब्रह्मचारियों को महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा ब्रह्मचारियों को, प्रातःकालीन महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! ब्रह्मचारियों को शिक्षा प्रदान कर रहे थे। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! ये संसार तपोमयी कहलाता है ये पृथ्वी

तपती है तपने के पश्चात यह मानो देखो, मेघों से वृष्टि होते ही यह नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म दे देती है। कहीं मानो सूर्य की किरण मानो देखो, ओजस ऊर्ज्वा ले करके आती है तो स्वर्ण की मात्रा का जन्म हो रहा है। ये मानो खनिज को जन्म दे रही है खनिज पदार्थों को जान करके राष्ट्रीयता, राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बना रहे हैं, मानो द्रव्य पति बना रहे हैं, और राजा के यहां इन्हीं खनिज के द्वारा नाना प्रकार के वैज्ञानिक अपने में ऊँची ऊँची उड़ाने उड़ते रहते हैं और यन्त्रों का निर्माण करते रहते हैं, इसी प्रकार मानो देखो, ब्रह्मे लोकां वाचों लोकाः सम्भवा वेद का आचार्य कहता है, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, कि हे मानव! तू अपनी प्रतिभा को जानने का प्रयास कर, याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा क्या मानो देखो, ये पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देने वाली है, कहीं खाद्य पदार्थ हैं, कहीं खनिज है, मानो यह चारों प्रकार की सृष्टियों का मानो देखो, रचनाकार भी यह पृथ्वी कहलाती है। इसी प्रकार हम मानो देखो, इस पृथ्वी के ऊपर अन्वेषण करते चले जाएं, प्रारम्भिक जीवन में आभा को प्राप्त करते रहें, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे ऋषियों! मानो हे ब्रह्मचारियों! ये प्रत्येक मानव पदार्थ तप रहा है, इसी प्रकार जैसे यह पृथ्वी तपा करती है, इसी प्रकार हे ब्रह्मचारियों! तुम भी तपायमान बनो, और तुम भी तपने वाले बनो तप करके अपने ब्रह्मचर्य वर्चोसि का पालन करते हुए ब्रह्मवर्चोसि अभ्योव्रतं ब्रह्म लोकां मुनिवरों! देखो, यह पृथ्वी अपने में जैसे तप रही है, जैसे माता तप रही है, जिस प्रकार यह सूर्य तप रहा है, जिस प्रकार यह चन्द्रमा, मानो सूर्य से ऊर्ज्वा ले करके सूर्य से अपनी किरणों की आभा को ले करके सोम की वृष्टि कर रहा है। समुद्रों से सोम को ले करके पृथ्वी में सोम प्रदान कर रहा है। प्रत्येक प्राणी में सोम की वृष्टि हो रही है, इसी प्रकार तुम सौम्यता को धारण

करके अपने जीवन को ऊँचा बनाओ।

तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार ऋषि ने मानो ब्रह्मचारियों को एक याग के पश्चात यह उपदेश देते रहते थे, यह उपदेश मंजरियां हैं जो बेटा! विद्यालयों में ब्रह्मचारिणी इस प्रकार का उपदेश दे करके ब्रह्मचारिणीयों के जीवन को सजातीय बनाया जाता है। तो वेद का वाक कहता है, क्या ब्रह्मो वर्चप्रव्हा हे ब्रह्मचारी! तुम भी तपायमान बनो और तप करके अपने जीवन को महान बनाओ, तो महान बना करके तुम अपने जीवन को विष्णु बनाओ बेटा! देखो, ब्रह्मचर्य जब विष्णुतव में परणित हो जाता है, विष्णु कहते हैं, जो आत्मा को जानने वाला है, क्योंकि आत्मा का नाम ही विष्णु है। जो आत्मा को जानने वाला है, वही विष्णु कहलाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या वेद का वाक कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए अपने में पवित्र बनते हुए अपने में विद्यालयों को सजातीय बनाते चले जाएं। और ब्रह्मचारी जब अपने में विष्णु बन जाते हैं, तो बेटा! राष्ट्रीयता क्या, मानवता क्या, दर्शन क्या यौगिकता क्या बेटा! सर्वत्रता में एक मानो देखो, ऊर्ज्वा की वृष्टि हो जाती है। आओ, मेरे प्यारे! आज का वेद का वाक क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए हम मानो देखो, विष्णु बन करके इस संसार सागर में पालन करने वालें बने। हे मेरी प्यारी माता! तुझे वेद विष्णु कहता है मानो देखो, सजातीय कहता है, तू सजातीय बन करके अपने मानवतव को ऊँचा बनाती चल। मेरे प्यारे! देखो, विद्यालय में इस प्रकार याग के पश्चात उपदेश मंजरी प्रारम्भ हुई और वह उपदेश मानो देखो, विष्णु पर आ करके शान्त हो गया। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का यह वेद का वाक क्या कहता है, कि हम

परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और उसको जड़वत में चैतन्यवत में दृष्टिपात करें बेटा! इस संसार सागर से पार हो जाएं। जो यह संसार एक मानो देखो, एक सूत्र में पिरोया हुआ है, उस सूत्र को हम जानते चले जाएं, यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को जानते हुए उसकी आराधना करते हुए हम इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज का यह वाक समाप्त होने जा रहा है, इसके आगे की शेष चर्चाएं मेरे बेटा! कल प्रगट करूंगा। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं ब्रह्मा वाचन्न गताः। ओ३म् मधु मन्था रेवं आप्यां लोकाः। ओ३म् सर्वाणि गतं आप्यां लोकाः। ओ३म् सर्वं भद्रश्चौ आपो रथप्प्रायशां आ पां। ओ३म् ब्रह्मणा देवं मयाः सर्व भद्राः३म्। दिनांक ०२ ०२ १९८६।

11 **१८ ०३ १९८६**

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमे दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है जिस भी काल में ज्ञान और विज्ञान वेत्ताओं ने उस परमपिता परमात्मा की महती के ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ किया है उसी काल में मानो उस महामना देव की महिमा सर्वत्र एक

एक कण कण में दृष्टिपात आती रही है परमाणुवाद गति कर रहा है परन्तु वह गतिवान एक देव है वह परमाणु तो उसका आयतन माना गया है वे उसका सदन है वह उसका गृह तो जितना भी यह ब्रह्माण्ड हमे दृष्टिपात आ रहा है यह उस परमपिता परमात्मा का एक आयतन माना गया है। अथवा उसका सदन और गृह है वे उसमें वास कर रहा है और वह सर्वत्रता में विद्यमान है परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र हमे नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है क्योंकि संसार का जितना भी प्राणी मात्र है वह एक दूसरे से प्रेरित रहता है अथवा वह प्रेरणा का एक स्त्रोत्र माना गया है और प्रेरणादायक कौन है मानो वही मानो मेरा प्यारा प्रभु दृष्टिपात आता है मेरे प्यारे! वह प्रेरणा का स्त्रोत्र है इसीलिए हमे सब अपने मनोनीत को हृदय अगम्य करते हुए उस प्रभु का चिन्तन करना चाहिए वह प्रभु हमारे समीप रहता है परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र ऊंची ऊंची हमे प्रेरणा दे रहा है हमे नाना प्रकार की वार्ताएं प्रगट करता रहता है हमारा जीवन वास्तव में उस परमपिता परमात्मा की महिमा में ओत प्रोत रहना चाहिए। जिससे संसार में दूसरा प्राणी हमसे प्रेरित हो करके अपने जीवन को महान बना सके अपने जीवन को पवित्र की आभा में ले जाए हमारे यहां नाना राष्ट्रवेत्ता हुए हैं और उन राष्ट्रवेत्ताओं में भिन्न भिन्न प्रकार के विज्ञानवेत्ता हुए परन्तु हमे ऐसा कुछ प्रतीत हुआ है जितने भी राष्ट्रवेत्ता हुए हैं उनकी सबसे प्रथम जो निर्माणशाला है उनके राष्ट्रीयता की जो निर्माणशालाएं हैं उनका जो प्रारम्भ है वह विद्यालयों से हुआ करता है। मैंने कई काल में वर्णन करते हुए और यह विचार देते हुए कहा क्या हमारे यहां विद्यालयों में जब आचार्य आयुर्वेद के मर्म को जानने वाला होता है तो आचार्य ब्रह्मचारी के मस्तिष्क का अध्ययन करता रहता है और जब मस्तिष्क का अध्ययन करता है तो यह निर्णय दे देता है क्या ये

ब्रह्मचारी कौन से वर्ण में जाने योग्य है मानो कौन सा अपनी विचार धारा में रत्त रहना है तो आचार्य अपनी घोषणा कर देता है आज मैं आओ, तुम्हे महाराजा अश्वपति के एक राष्ट्र में ले जाना चाहत हूं महाराजा अश्वपति महाराज अपने में बेटा! बड़े विचित्र राजा थे मानो वह राष्ट्र के अन्न को भी ग्रहण नही करते थे वे जिस स्थली पर रहते आवास करते थे वहां स्वयं अपना कला कौशल अथवा कृषि का उद्गम करने के पश्चात उसमें अन्नाद की उत्पति होती उसे पान करना और उसी में मग्न रह करके राष्ट्र की राष्ट्र की आभा में समाज के मानो कार्यों में रत्त रहते थे एक समय बेटा! महाराजा अश्वपति ने नाना ऋषि मुनियों का एक समाज एकत्रित किया और नाना ऋषियों में कौन कौन ऋषि उस समय थे बेटा! उनका नामोकरण इस प्रकार है मानो महाराजा अश्वपति के काल में महर्षि प्रवाहण महर्षि शिलभ महर्षि दालभ्य महर्षि रेणकेतु देवर्षि नारद महर्षि वैशम्पायन और महर्षि सुकेता और महर्षि कवन्धि और महर्षि व्रेतकेतु और मुनिवरों! देखो इसमें महर्षि भृगु और भी जैसे महर्षि विश्वानन्दकेतु और महाराजा जमदग्नि इत्यादि ऋषि मुनियों का एक समाज इन महान पुरुषों में बेटा! विज्ञानवेत्ता आध्यात्मिक विज्ञान को और भौतिक विज्ञान के मिलान की चर्चा करते रहते थे मेरे पुत्रों देखो उन ऋषियों में ब्रह्मवेत्ता भी थे वह भौतिक विज्ञान से उपराम हो करके आध्यात्मिकवाद का और भौतिक विज्ञान का समन्वय करते रहते थे मेरे प्यारे! कुछ ऋषि इस प्रकार के थे जो ब्रह्म की उड़ाने उड़ते रहते थे वे ब्रह्म में ही समाधिष्ट रहते थे कुछ ऐसे ब्रह्मवेत्ता थे जो बेटा! इस जनता में जनार्दन में मानो जनता को जनार्दन में दृष्टिपात करके उस मानो देखो ज्ञान के अमृत को पान करते थे कुछ ऐसे ऋषि थे जिन ऋषियों में बेटा! अपना देखो सोमरस का पान करते थे वह सोमरस कौन सा है जिसे वह पान करते थे मेरे

प्यारे! देखो वायु का सेवन करते मानो देखो आपो का सेवन करते, और मुनिवरों! देखो इन्द्रियों के विषय का साकल्य बना करके उसका मानो देखो रस बना करके मानो देखो पान करती रहती है मैं बड़े आश्चर्य के शब्द तुम्हे उच्चारण कर रहअ हूं बेटा! हमारे यहां एक वाक आता है कि हम सोमरस का पान करना चाहते हैं बेटा! सोमरस किसे कहते हैं देखो मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि भृगु मुनि का जीवन महर्षि मुनि एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो करके वेद के कुछ मन्त्रों को ले करके वह अध्ययन करते रहते थे जब वेद के मन्त्र को ले करके अध्ययन करते तो एक समय कहीं वेदमन्त्रों में आया क्या चक्षुम्मे शुन्धामि, प्राणम्मे शुन्धामि, श्रोत्रम्मे शुन्धामि मानो देखो यह पञ्च इन्द्रियों के शुन्धामि की चर्चा आई। जब यह चर्चाएं आने लगी तो मानो देखो यह विचारने लगे कि यह तो शुन्धामि शब्द है तो महर्षि भृगु मुनि ने ऐसा मुझे स्मरण है बेटा! बारह वर्षों का उन्होंने अनुष्ठान किया एक समय बारह वर्षों तक यह ही अध्ययन करते रहे वेदमन्त्र स्मरण है और दर्शनों का और मानो देखो वायु का आपोमयी जलों का सेवन करके उसमें अन्नाद का मिश्रण करके पान करते थे परन्तु देखो महात्मा भृगु के जीवन की वह वार्ताएं स्मरण आती रहती हैं जब बेटा! उन्हे बारह वर्षों का जब छह वर्ष समाप्त हो गए उन बारह वर्षों के मध्य में एक अनुष्ठान के मध्य में पंहुचे तो उन्हे यह ज्ञान हुआ कि अमृत यह सोमरस है उन्होंने सोमरस को जाना क्या प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है मानो देखो चक्षु का मां ब्रहे विषय रुप है मेरे प्यारे! श्रोत्रों का जो स्वरुप है वह शब्द है रसना का विषय रस है और त्वचा का विषय प्रीति है मेरे प्यारे! देखो घ्राण सुगन्ध में अप्रत रहती है मानो देखो रस, स्पर्श, सुगन्ध इत्यादि जो विषय है मानो देखो इनके ऊपर अध्ययन प्रारम्भ करने लगे जब अध्ययन चलता रहा मुनिवरों! देखो छह माह के पश्चात

तपस्या के मध्य चरण में जब पंहुचे तो यह ज्ञान हुआ क्या इन्द्रियों का जो ज्ञान है इन्द्रियों का जो साकल्य है मानो देखो उसके ज्ञान और विज्ञान में जाना और उसको अपने अन्तर्हृदय में पान करना उसी को बेटा! महर्षि ने सोमरस की उपाधि प्रदान की है मेरे प्यारे! देखो उसे सोमरस कहा है उसे सोमरस क्यों कहा है। क्योंकि प्रत्येक इन्द्रियों का जो साकल्य है उसको एकाग्र करके और मुनिवरों! देखो ज्ञानां अग्नं ब्रह्मे जो उसमें ज्ञान है मानो जहां उनका दोनों का समावेश हुआ उनका पञ्चीकरण हुआ पञ्चीकरण होते ही मुनिवरों! देखो ज्ञान की अग्नि जागरुक हो जाती है और जागरुक हो करके मुनिवरों! देखो इन्द्रियों में जो दूरिता के तन्तु हैं वो दूरी हो जाते हैं और ज्ञान रुपी अग्नि में मानव बेटा! अपनी हवि का याग कर रहा है। मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे विशेषता में नही जाना चाहता हूं क्या कि महात्मा भृगु का जीवन इस प्रकार का रहा है मेरे प्यारे!

देखो वह भी महाराजा अश्वपति की सभा में विद्यमान थे तो मुनिवरों! देखो महाराजा अश्वपति ने महर्षि भृगु मुनि महाराज को उस सभा का अध्यक्षता का उन्होंने प्रार्थना की तो महात्मा भृगु ने यह कहा कि हे राजन्! मैं मध्यस्ता के सुयोग्य नही हूं उन्होंने कहा प्रभु! क्यों उन्होंने कहा कि मैं इतना तप में नही हूं मानो देखो मेरे से ऊर्ध्वा ऊर्ध्वा ऋषि विद्यमान हैं। उन्होंने बड़े बड़े अनुष्ठान किए हैं जीवन में भयंकर वनों में वायु के सेवन और जल को अन्न को जल में ही तपा करके मानो पान किए हैं मैं तो मानो उनके मध्य में इस सभा का अधिकारी नही हूं मेरे प्यारे! देखो महाराजा अश्वपति ने जब यह महात्मा भृगु से वार्ता प्रगट की तो उन्होंने महर्षि प्रवाहण से कहा कि प्रभु इस मानो सभा की अध्यक्षता कीजिए महर्षि प्रवाहण बोले कि प्रभु मैं वास्तव में मैं तपों में रहता तो हूं परन्तु देखो इस सभा के अधिकारी नही हूं इसीलिए महात्मा जो भृगु हैं यह

हमारे में सुयोग्य हैं महात्मा भृगु को उसका सभापतितव प्रदान किया गया मेरे प्यारे! जब उन्होंने ऐसा कहा तो वह शिलभ और दालभ्य से बोले कि प्रभु! आपने में से कोई भी सभापति बनो उन्होंने कहा हे भगवन! हे राजन्! सभापति तो वह बनता है जो मानो देखो सभा का स्वामीतव करने वाला हो नेतृतव करने वाला हो उन्होंने दोनों ने एक स्वर में कहा सभापतिव तो वह करना जानत है जो अपनी इन्द्रियों को संयम करने वाला हो जो अपनी इन्द्रियों के सभापतितव को जान लेता है वही तो सभापतितव को प्राप्त कर सकता है मेरे पुत्रों देखो राजा ने जब उन दोनों के वाक्यों को श्रवण किया तो वह मानो देखो देवर्षि नारद मुनि के समीप पंहुचे देवर्षि नारद मुनि के चरणों की वन्दना की उन्होंने कहा हे प्रभु आप इस सभापतितव को अपने हम आपको निर्वाचन करना चाहते हैं उन्होंने कहा हे राजन्! क्या राजाओं का निर्वाचन किया हुआ एक ऋषि को राजा कैसे निर्वाचन कर सकता है। क्योंकि वह तो राजा होता है वह अनुशासन करना जानता है प्रजा पर। वह ऋषियों को सभापतितव की चुनौती अथवा निर्वाचन नही कर सकता। निर्वाचन कौन करते हैं ब्रह्मवेत्ता का निर्वाचन ब्रह्मवेत्ता ही किया करते हैं आप इस सभा में क्यों उपस्थित हो गए हैं आपने सभा नियुक्त की है आप शान्त रहिए और इन ब्रह्मवेत्ताओं में से कोई न कोई अपना सभापतितव की चुनौती अपने आप में परिणत करेंगें। अब बेटा! देखो राजा मौन हो गए राजा ने कहा यह तो ब्रह्मवेत्ताओं का यह तो जो ब्रह्म जिज्ञासु हैं यथार्थी हैं यह तो बड़े विचित्र हैं मानो देखो राजा मौन हो गए जब राजा मौन हो गए तो इतने में बेटा! देखो ब्रह्मचारी कवन्धि उपस्थित हुए महर्षि कवन्धि ने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! तुमने इस सभा के वाक्यों को श्रवण किया है अब ब्रह्मवेत्ताओं तुम अपना एक सभापतितव नियुक्त करके जो तुममे तपस्वी हो और

जो इस सभा के लिए मध्य सभा का निर्वाचन किया है आप सब एकत्रित हुए हो उसका एक एक दूसरा अपना अपना समाधान प्रगट करता है मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी कवन्धि ऋषि कवन्धि की वार्ताएं बेटा! देखो सबको शिरोमणी हो गई। इतने में बेटा! कहीं से भ्रमण करते हुए महर्षि उद्दालक मुनि के मानो देखो उनके महापिता कहीं से भ्रमण करते हुए श्वेता मुनि भी वहां पधारे बेटा! श्वेता मुनि के आते ही ऋषि मुनि बेटा! एक दूसरे में मानो उनका अनुवादन करने लगे अपने अपने स्थानों से मानो उपस्थित हो करके मानो उनका आदर किया उन्होंने कहा आओ, श्वेता मुनि ही महाराज मेरे प्यारे! देखो विराजमान हो गए और श्वेता मुनि ने किसी वाक की मानो देखो ब्रह्मवेत्ताओं के वाक को श्रवण करके जो आसन लगा हुआ था उस आसन पर बेटा! स्वतः विद्यमान हो गए मेरे प्यारे! जब विद्यमान हो गए तो ब्रह्मवेत्ताओं में कुछ में प्रसन्नता हुई और कुछ ब्रह्मवेत्ताओं में घृणा हुई मेरे प्यारे! जो ऊंचा ब्रह्मवेत्ता थे उनमें तो घृणा नही हुई परन्तु जो निम्न कोटि का ब्राह्मण समाज था उनके हृदयों में मानो एक कलह की भावना उत्पन्न हुई मेरे प्यारे! देखो उनमें से कौन थे उनमें से महर्षि श्वां प्राति था श्वां प्राति मुनि ने कहा हे प्रभु! हे श्वेता! हे श्वेत मानं! मानो तुमने इस पद को अपने अधिकार में लिया है यह किससे तुमने आज्ञा ली है उन्होंने कहा कि मेरा अन्तरात्मा मुझे आज्ञा दे रहा है मेरा अन्तरात्मा मुझे आज्ञा दे रहा है। इसीलिए मैंने इस सभा में अपने को मैं सभापति क्या मैं आसन को ग्रहण कर गया हूं सभापति जिसकी इच्छा हो वह प्राप्त करे मेरे प्यारे! उन्होंने कहा तो वह जब उन्होंने यह उत्तर पाया तो वह मौन हो गए इतने में बेटा! देखो ब्रह्मवेत्ता श्वेतकेतु मुनि महाराज उपस्थित हुए और श्वेत केतु ने कहा हे भगवन! मैं आपसे जानना चाहता हूं क्या आप सब ऋषियों के सभापतितव को आपने प्राप्त किया है।

परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि सभापति कहते किसे हैं। मेरे प्यारे! देखो श्वेतर ने कहा क्या हे ऋषियों सभापति उसे कहते हैं जो अपनी अन्तरात्मा के अनुकूल संसार में क्रियाकलाप करता है अब मेरे प्यारे! देखो ऋषि मुनियों ने इस वाक के ऊपर बड़ी विचित्रताएं उत्पन्न होने लगी उन्होंने कहा प्रभु यह कैसे जानकारी हो कि आत्मा के अनुकूल कर रहा है उन्होंने कहा कि आत्मा के अनुकूल वह क्रियाकलाप करता है प्राणी जो मानो ब्रह्म को सर्वज्ञ स्वीकार करता है क्योंकि जहां से देखो आत्मा में मनो में जिससे शङ्का लज्जा उत्पन्न न हो किसी से घृणा न हो मानो देखो अपनी इन्द्रियों पर अधिपथ्य लाने वाला हो वही तो मानो देखो सभापतितव को प्राप्त कर सकता है। अब मेरे प्यारे! देखो ऋषि मुनियों में मानो देखो वह श्वेता से नाना प्रकार के प्रश्न होने लगे कि महाराज आप अपनी इन्द्रियों को जानते हो उन्होंने कहा आप प्रश्न करो उन्होंने कहा तुम घ्राण इन्द्रिय को जानते हो उन्होंने कहां मैं जानता हूं जितना जानता हूंगा उतना उत्तर दे सकूंगा। उन्होंने कहा तो घ्राण इन्द्रिय क्या है उन्होंने कहा यह घ्राण इन्द्रिय है जो मन्द और सुगन्ध का ज्ञान कराती है मन्द और सुगन्ध का ज्ञान कराती है और घ्राण इन्द्रिय को वह जानने वाला प्राणी होता है जो दुर्गन्ध को त्यागने वाला हो और जो सुगन्ध को अपनाने वाला हो और सुगन्ध को अपना करके घ्राण इन्द्रियों को मानो जिनसे परमाणुवाद मानो देखो घ्राण से स्पर्श होते ही परमाणु का ज्ञान हो जाए यह परमाणु पार्थिव है या अग्नेय में है। या यह आपो में परमाणु है और इस परमाणु को मानो वायु और प्राण से क्या क्या समन्वय हो रहा है जो इस प्रकार जानता है वह घ्राण इन्द्रियों का स्वामीतव है ऋषियों ने कहा कि प्रभु आप जानते हैं मानो मैं जानता तो नही हूं परन्तु इसका मैं साधक बना हुआ हूं अनुसन्धान कर रहा हूं कुछ अनुसन्धान

कर रहा हूं कुछ कर पाया हूं मेरे प्यारे! देखो वह ऋषि मौन हो गए अब मुनिवरों! देखो इसमें और द्वितीय वृत्तियों में महर्षि प्रवाहण ने एक प्रश्न कर दिया क्या प्रभु! आप श्रोत्रों इन्द्रियों को जानते हैं उन्होंने कहा मैं जानता हूं क्या श्रोत्र इन्द्रियों का विषय उन्होंने कहा श्रोत्र इन्द्रियों का जो देवता है वह मानो देखो वह शब्द है शब्दों की जो गतियां हैं वह वायुमण्डल से क्या दिशाओं से उनका समन्वय रहता है और दिशाएं जो हैं मानो देखो वही दिशा अपनी अपनी आभा से पिरोई हुई हैं वे प्राण से पिरोई हुई प्रत्येक दिशा है। और उसका समन्वय वायु से है और वायु का समन्वय अन्तरिक्ष से है। इसीलिए मानो जो शब्द है उसकी गति अन्तरिक्ष से रहती है मेरे प्यारे! देखो ऋषि उत्तर पा करके मौन हो गए अब बारी बारी मुनिवरों! देखो ऋषि मुनियों ने यह निश्चय कर लिया कि हममे ब्रह्मवेत्ता क्या यह मानो देखो सबाति के सुयोग्य है अब मुनिवरों! देखो

राजा उस सभा को दृष्टिपात करके अपने में आश्चर्य कर रहा है और यह विचार रहा है कि मैं इन ब्रह्मवेत्ताओं में या इन श्रोत्र ऋषियों में मैं क्या प्रश्न कर सकत हूं मेरे प्यारे! देखो राजा ने राजा के जो पुरोहित थे महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज देखो वशिष्ठ मुनि महाराज पुरोहित बने हुए थे वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह प्रसंग उपस्थित किया क्या महाराज महाराजा अश्वपति के अश्वपति का उन्होंने परिचय दिया क्या यह राजा अश्वपति हैं राजा अपने राष्ट्र का पालन कर रहे हैं और इनकी इच्छा यह है क्या मेरे राष्ट्र में मानो मेरा राष्ट्र कैसे पवित्र बने। मेरे राष्ट्र में ज्ञान और विज्ञान और ब्रह्मवर्चोसी का प्रवाह कैसे उत्पन्न हो सकता है या कैसे प्रवाह से गति कर सकता है जिससे मेरे राष्ट्र में कोई भी प्राणी मेरे राष्ट्र में मेरे क्रियाकलापों से चिन्तित न रह सके। मेरे प्यारे! देखो जब यह प्रसंग वशिष्ठ मुनि महाराज ने उपस्थित किया तो मुनिवरों! देखो इतने में श्वेता ने कहा क्या है

प्रभु! हम यहह जानना चाहते हैं वशिष्ठ क्या महाराजा अश्वपति तो वह होता है जो अश्वमेध याग करना जानता है देखो अश्वपति तो वह होता है जो वृष्टि याग करना जानता है और राजा वह अश्वपति होता है जो अपने ही मानो क्रियाकलापों से अन्न को उत्पन्न करके उसको पान करता है। क्या राजा में यह गुण है जो इसको तुम अश्वपति कहते हो मैं तो जानता नही हूं आप निर्णय दीजिए वशिष्ठ मुनि महाराज तो मेरे प्यारे! देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह अपना निर्णय दिया क्या महाराज यह जो अश्वपति जी हैं यह महाराज बड़े विचित्र हैं इनकी देवी और यह दोनों प्रातः काल से मानो कुछ समय तक अपनी कृषि में उद्गम करते हैं और उसमें जो अन्न उत्पन्न होता है उसे यह पान करते हैं और राष्ट्र में व्यस्त रहते हैं कि मेरी प्रजा कैसे ऊंची बने कैसे मानो देखो यागिक बने यह प्रातः कालीन याग करते हैं दैनिक याग करके कामधेनु गऊओं की सेवा करते हैं उस दुग्ध का आहार करते हैं बुद्धि उनकी शुद्ध रहती है मानो यह अपने में विचित्र हैं योगाभ्यास कुछ करते रहते हैं मानो देखो शारीरिक उद्योग करते हुए अपने में और मानो सर्वत्र जितने भी क्रियाकलाप राष्ट्र में हो रहे हैं उनमें यह भ्रमण भी करते हैं तो मेरे प्यारे! देखो श्वेता ने इस वाक को स्वीकार कर लिया तो उन्होंने कहा तो बोलो अब क्या चाहते हो इस सभा से या इन विद्वानों की सभा में ब्रह्मवेत्ताओं की ब्रह्म निष्ठों की सभा में तुम क्या चाहते हो राजा की क्या इच्छा है मुनिवरों! देखो इतने में महाराजा अश्वपति ने चरणों को स्पर्श करके कहा हे प्रभु! मेरी इच्छा यह है क्या मेरे राष्ट्र में प्रारम्भिक जो जीवन है वह ऊंचा होना चाहिए हम उसके क्रियाकलापों को आपके मुखारबिन्द से आपके निर्णय से जानना चाहते हैं मुनिवरों! देखो महाराजा अश्वपित ने नाना यन्त्रों से मानो उनके विचारों को यन्त्रों में अपने में धारण कराने लगे तो बेटा! मुझे भी कुछ

ऐसा स्मरण आता रहा है ऐसा स्मरण आ रहा है क्या मानो देखो विचार विनिमय होने लगा और महाराजा श्वेता ने ऋषि मुनियों से यह कहा हे देवताओं! अब तुम अपना अपना निर्णय दो जो राजा प्रश्न कर रहा है मुनिवरों! देखो इतने में महर्षि प्रवाहण जी उपस्थित हुए महर्षि प्रवाहण ने कहा क्या हे प्रभु! आपको तो यह प्रतीत है हमारी जो माता थी वह माता मानो कितनी विचित्र थी मेरी प्यारी माता का नाम मल्दालसा था और मल्दालसा के गर्भस्थल में जब हम विद्यमान थे तो माता अपने गर्भ के बालक से मानो चर्चा उनसे मिलन करती रहती यह मैं बड़ा विचित्र वाक प्रगट कर रहा हूं क्योंकि माता के गर्भस्थल में जब शिशु होता है तो माता तो वह अपने गर्भ में ही बालक को देखो ब्रह्मवेत्ता बना देती है और जिस प्रकार का वो बनाना चाहती है मानो वही संस्कार उसमें परिणत करने लगती है वेद का अध्ययन करना वेदों की व्याख्या करना जिस प्रकार का निर्माण कराना चाहती है तो मानो देखो इस प्रकार हे राजन्! यदि तुम अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाना चाहते हो तो तुम्हारे राष्ट्र में इन देवियों का मानो देखो मेरी माता और पुत्रियों का मानो आदर होना चाहिए। और इनके यहां इनका ऊर्ध्वा में इनका मस्तिष्क रहना चाहिए इनको ब्रह्मविद्या का अध्ययन कराया जाए आयुर्वेद का अध्ययन कराया जाए इनको मानो देखो नाना प्रकार की विद्या का अध्ययन कराओगे तो मानो उसी प्रकार के परमाणुओं का जन्म होगा और माता के गर्भ में जब शिशु का प्रवेश होगा तो वह विद्या मानो उसमें भरण हो जाती है इसीलिए सन्तानों का पवित्र होना इस मानो देखो राष्ट्र के लिए सर्वोपरि माना जाता है मेरे पुत्रों यह वाक मेरे विचार मेरे पुत्रों देखो ऋषि प्रवाहण ने अपने विचारों में प्रगट किया मेरी प्यारी मल्दाल्सा के गर्भ में जब हम मानो गर्भ से पृथक हो करके लोरियों का पान करते तो वह दर्शनों की भाषा

में हमे नाना प्रकार की शिक्षाएं प्रदान करती रहती थी उसका परिणाम यह हुआ क्या प्रवाहण, शिलभ और दालभ्य हम तीनों मानो देखो माता मल्दालसा के पुत्र हैं और तीनों ब्रह्मवेत्ता हैं तपस्या में माता ने परिणत कर दिया। तो इसीलिए हमारे जीवन में जब कुरुति नही आयेगी तो हम समाज को एक ऊर्ध्वा ही बना सकते हैं राष्ट्र को प्राण भी दे सकते हैं विचारों के विचार रुपी प्राणों का प्रदान कर सकते हैं मानो देखो यह वाक महर्षि प्रवाहण ने शिलक और दालभ्य के विचारों ने बेटा! देखो यह सिद्ध कर दिया कि माता का पवित्र होना माता का बुद्धिमान होना माता को मानो महान बनाना मानो यह मानो देखो राष्ट्रीयता का पहला चरण कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो जब इन तीनों की वार्ता समाप्त हो गई तो श्वेता मानो सभापति ने और ऋषि महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने आगे ऋषियों से कहा कि अपना निर्णय दो जो जो निर्णय देने वाला है उस वाक को प्रगट करो इतने में बेटा! देवर्षि नारद मुनि महाराज उपस्थित हुए और देवर्षि नारद मुनि ने कहा क्या मेरे विचारों में मानो देखो जहां माता का मस्तिष्क ऊंचा किया जाए, माता को विद्यालयों में ब्रह्मचारिणियों को मानो ब्रह्मचर्य से सजातीय बनाया जाए वहां उनकी शिक्षा के लिए मानो कौन होना चाहिए। उनकी शिक्षा के लिए पुरुष होना चाहिए या मेरी पुत्री होनी चाहिए तो नारद मुनि ने यह कहा क्या विद्यालयों में मानो देखो कन्या विद्यालयों में ब्रह्मचारिणीयों में वानप्रस्थिनी होनी चाहिए मानो युवा नही होनी चाहिए जिनको पतियों का नवीन सहयोग प्राप्त हुआ हो वह नही होनी जो गृहस्थ को त्याग करके वानप्रस्थ आह्वनीय नाम की अग्नि में जो तपने जा रहे हैं उन मानो वानप्रस्थियों को शिक्षा देनी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो यह वाक देवर्षि नारद मुनि ने कहा और नारद मुनि ने निर्णय दे दिया क्या वही देखो वानप्रस्थी जो विद्वान होते हैं वही मानो

देखो उनका निराकरण करेंगें क्या यह कन्या देखो क्षत्रिय कुल में जाए ये ब्राह्मण कुल में जाए या यह मानो वैश्य कुल में जाए उनके विद्या के माध्यम है भिन्न भिन्न विचारों को ले करके मानो जहां माता सहयोगी होती हैं वहां विद्यालयों में देखो शिक्षक सहयोगी होना चाहिए शिक्षक को अपने में मानो चिन्तन मनन वही मानो देखो सूक्ष्म से सूक्ष्म चिन्तन करना चाहिए जिस चिन्तन में मानव दर्शन हो जिस चिन्तन में मानो ब्रह्मचर्य की ऊर्ध्वा गति हो ध्रुवा गति न हो ऐसे मानो देखो आचार्य जब विद्यालयों में निर्माण करेंगे तो बेटा! वह निर्माणशाला पवित्र बनती रहेगी। मेरे प्यारे! देखो नारद मुनि ने यही वाक ब्रह्मचारियों के लिए कहा क्या विद्यालयों में ब्रह्मचारियों को शिक्षा देने वाले देखो वानप्रस्थ होने चाहिए। जिनका उनको मनोविज्ञान उनका विचित्र बन जाए मनो विज्ञान में मानो उनकी तरंगे उन्हें स्पर्श न कर पावें वो तरंगे अपने में तरंगित हो करके मानो देखो वह विद्यालयों को पवित्र बनाए उन्होंने बेटा! एक वाक उद्धृत करते हुए कहा क्या एक समय मैं एक समय मगध राष्ट्र में गया था भ्रमण करने के लिए तो मगध राष्ट्र में एक विद्यालय में मौनकेतु मुनि महाराज अपने ब्रह्मचारियों को विद्या प्रदान कर रहे थे तो प्रातःकालीन मैं भी उस विद्यालय में जो प्रातःकालीन याग होता था मानो देव याग के पश्चात ब्रह्मयाग की वेदों की चर्चाएं होने लगी जब चर्चाएं होने लगी तो मानो देखो उस समय ऋषि ने अपना वर्णन करते हुए वेद का अध्ययन किया अध्ययन करने के पश्चात उन्होंने कहा ब्रह्मचारियों इसमें तो तप की व्याख्या आ रही है। यह तो संसार बिना तप के ऊंचा नही बन सकता यहां तो एक एक परमाणु तप रहा है माता तप रही है पितर तप रहा है आचार्य तप रहा है ब्रह्मचारी तप रहा है सूर्य तप रहा है तो पृथ्वी तप रही है पृथ्वी सूर्य तप रहा है तो चन्द्रमा और तारामण्डल

अपनी अपनी आभा में तपायमान है जब यह प्रकृतिवाद तपायमान है नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देता रहता है। तो इसी प्रकार मेरे हृदय में यह वाक आ रहा है कि ब्रह्मचारियों में तपने जा रहा हूं तुम्हारी कोई इच्छा है तो उस समय ब्रह्मचारियों ने कहा हे प्रभु! आप तप करने जाइये तपेंगे तो हम आप तपेंगे तो हमारा जीवन तपोमय बनेगा। आप वैज्ञानिक बनेंगे हमारा जीवन वैज्ञानिक बनेगा आप मानो ब्रह्मवेत्ता बनोगे ब्रह्म को निर्णय करोगे तो हम ब्रह्मवेत्ता बनेंगे। हममे तरंगे आयेंगी मानो ब्रह्मचारियों ने आचार्य को बारह वर्ष के लिए मानो देखो तप करने के लिए चले गए बारह वर्ष के पश्चात उन्होंने देखो भयंकर वनों में उस अन्न को अधिकार उस अन्न को पान करने लगे उन वनस्पतियों का पान किया उन्होंने बारह वर्षों तक मानो देखो पत्र पुष्पों का पान करना अमृतां पान करते हुए अमृत बना करके पान करते थे मानो देखो रुढ़ियों को अनुसन्धान करते हुए तपों में बना करके मेरे प्यारे! देखो बारह वर्ष के पश्चात विद्यालय में पधारे ब्रह्मचारी तपस्या कर रहे हैं एक दूसरे में शब्दों की रचना कर रहे हैं मानो वह पठन पाठन की प्रतिक्रिया में लगे हुए हैं आचार्य आये मानो उनका स्वागत किया और उन्होंने कहा धन्य है प्रभु अब हमे अपने अनुभव प्रगट कीजिए। तो ऋषि ने अपने अनुभव को प्रगट कराया ब्रह्मचारियों को तो मेरे प्यारे! वही ब्रह्मचारी मानो देखो बुद्धिजीवि बन करके अपने में निष्ठा वृत्तियों में बन करके बेटा! देखो वर्ण आश्रम का निर्माण भी मानो विद्यालयों में होता रहता था तो देवर्षि नारद मुनि कहा जब मैंने विद्यालय की इस प्रकार की प्रतिक्रियाएं दृष्टिपात कीं तो मेरा हृदय मानो गद गद हो गया और मैं अपने में यह स्वीकार करने लगा क्या वास्तव में इस प्रकार की प्रतिक्रिया होनी चाहिए तो मेरे प्यारे! देखो यह वाक उच्चारण करके देवर्षि नारद मुनि अपने में मौन हो गए

और अपनी स्थली पर विद्यमान हो गए। मेरे प्यारे! देखो इतने में सुनेतकेतु मुनि महाराज अपने में उपस्थित हुए और सुनेतकेतु ने कहा प्रभु! मेरे विचारों में भी यही आता है क्या राष्ट्र में तपा हुआ राजा होना चाहिए। जिसको प्रत्येक इन्द्रियों पर जिस पर संयम हो और मानो देखो वह अपने राष्ट्र में एक प्रतिभाशाली मानो देखो जितनी शिक्षा प्रणाली है वह इतनी पवित्र होनी चाहिए। वह शिक्षा प्रणाली त्याग पूर्वक होनी चाहिए जिससे देखो ज्ञान और विज्ञान की आभा वाले ऋषि मुनियों का जन्म हो मेरे प्यारे! देखो सुनेत यह वाक कह करके अपने में शान्त हो गया मेरे प्यारे! देखो इतने में महर्षि भृगु मुनि उपस्थित हुए भृगु मुनि ने कहा कि मेरे विचार में तो यह जहां माता को आयुर्वेद का अध्ययन कराया जाए वहीं देखो आचार्यों को आयुर्वेद का अध्ययन कराया जाए और जिससे मस्तिष्क को जान करके वह अपना निर्णय दे सके क्या यह ब्रह्मचारी ब्राह्मण कुल में जाने योग्य है यह ब्राह्मण के क्रियाकलापों को ऊंचा कर सकता है मानो इसी प्रकार देखो वैश्य और क्षत्रिय का निर्माण कर सके विद्यालय में जब वर्ण आश्रम का जब निर्णय होता है वह समाज को वर्ण आश्रमवादी बनाते हैं। मानो देखो यह वाक उच्चारण करके भृगु मुनि ने कहा मेरे विचार तो यी एक समय हमने हमारी बहुत पुरातन काल हुआ एक सभा हुई थी मानो देखो उस सभा में देखो हमारे यहां नाना ऋषि विद्यमान हुए थे विद्यमान हो करके मानो देखो एक समय ब्रह्मां व्रते यह निर्णय होने लगा क्या मानो देखो वह सतोगुण, रजोगुण व तमोगुण में क्या क्या विशेषताएं हैं तो मानो देखो हमने एक समय यह निर्णय दिया हमारे यहां तीन देवताओं का वर्णन आता रहता है हिमालय मानो देखो शिव हिमालय का रहने वाला है और विष्णु सूर्य लोक का राजा बना हुआ है और मानो देखो तमोगुण शिव लोक का राजा बना हुआ है।

जब यह निर्णय हुआ की भई हम कैसे निर्णय करे तो मानो देखो हमने इन तीन देवताओं को चुनौती प्रदान करने के लिए सबसे प्रथम मानो देखो वह सबसे प्रथम मुझे यह निश्चय किया गया की जाओ तुम निर्णय करो इनका मानो देखो योगा क्या हम अपने वाहनों के द्वारा मानो देखो हम सूर्य लोक में पंहुचे और सूर्य लोक में जा करके अमृतं ब्रह्मा विष्णु व्रतं सबसे प्रथम देखो विष्णु लोक में नहीं हम सबसे प्रथम देखो वह हम ब्रह्म चन्द्रलोक में पंहुचें जब मानो देखो हमे यह निर्णय दिया गया तुम इस प्रकार का क्रियाकलाप करना तो मानो देखो हमने ब्रह्मा पे जा करके अपने पगों की वृत्तियां की और देखो वह तमोगुण में छा गए तमोगुण में छा करके वहां से हमने गमन किया और भ्रमण करते हुए हम जब मानो हिमालय की आभा से आये तो जब शिवजी पर इस प्रकार का आक्रमण किया शिव पर वह भी क्रोधित हो गए दण्ड देने के लिए तत्पर हो गए जब मानो हम विष्णु पुरी में पंहुचें जब विष्णु के यहां पंहुते जो मानो जब उनके मस्तिष्क में ऊर्ध्वा में देखो पश्चिम भाग में शरीर के जब पगों से ठुकराना प्रारम्भ किया। तो उन्होंने विष्णु में चरणों को वन्दनित करने लगे। और चरणों को वन्दनित करके बोले कि भगवन! आप तो बारह बारह वर्ष के बहुत से अनुष्ठान कर चुके हो आपके बड़े मानो देखो आपका शरीर बड़ा नम्र है मानो यह वृत्तियां है हे प्रभु! मानो हम तुम्हारे पग मानो बहुत सन्दित हो गए होंगे उन्होंने चरणों की वन्दना की तो परिणाम क्या उन्होंने सुदान को देते हुए कहा इस वाक को कल्प ने उच्चारण करते हुए कहा क्या इससे हमे यह सिद्ध हुआ क्या चन्द्रमा की जो प्रतिभा है वह उत्पति दायक है और शिव जी को तरंगे हैं वह मानो देखो शासन प्रदायक हैं और देखो वह जो विष्णु पूज्य वह नम्र सतोगुण की प्रदायक इसीलिए देखो तीनों गुण तो यह स्वभाविक रहते हैं परन्तु राजा के राष्ट्र में इस

प्रकार से बुद्धिजीवि प्राणी इस प्रकार के बुद्धिजीवि विद्यालयों में आचार्य होने चाहिए जो विष्णु की करे सतोगुण के होने चाहिए जो मानो देखो नम्र और वह दूसरों का निर्णय कर सके। तो मेरे प्यारे! देखो वह वाक महर्षि भृगु ने उच्चारण करके बेटा! वह अपनी स्थलियों पर मौन हो गए और मौन हो करके मुनिवरों! देखो वह सभा में ब्रह्मे वाचप्रव्हा लोकां यह विचार विनिमय होते होते बेटा! देखो प्रातःकाल से सांयकाल हो गया और सांयकाल हो करके देखो वह श्वेता ने श्वेता ऋषि ने बेटा! उस सभा को विसर्जन कर दिया और यह कहा कि यह चर्चाएं निर्णय हम कल दे सकेंगे। यह निर्णय आज नही हो सकेगा अब सन्ध्याकाल में चलो अपने अपने कक्ष में जा करके सन्ध्या मानो देखो अग्नि का ध्यान करो जिससे तुम्हारी बुद्धि में महानता की तरंगे आ करके मानो तुम अच्छी प्रकार कल अपना निर्णय दे सको तो मेरे प्यारे! देखो श्वेता यह वाक कह करके अपनी सभापति स्थली को उन्होंने त्याग दिया ऋषि मुनि अपने अपने कक्षों में जा पंहुचें तो मेरे प्यारे! देखो विचार विनिमय क्या है हमारा हमारा विचार क्या है मेरे प्यारे! देखो बहुत समय से यह वाक चल रहा है कि हम कैसे ऊंचे बनें हमारा राष्ट्र कैसे पवित्र बने तो बेटा! यह चर्चा तो कल ही करेंगे। आज का विचार विनिमय तो हमारा तो यह है क्या ब्रह्मवेत्ताओं की सभाएं होनी चाहिए ब्रह्मवेत्ता अपनी चुनौती स्वतः प्रदान करें और वह अपना निर्णय दे करके और राजा को आदेश देने वाले हों मानो देखो इस प्रकार के बुद्धिजीवी प्राणी जिस काल में होते हैं जिस समाज में होते हैं और जिस भी मानो राजा के राष्ट्र में होते हैं बेटा! वह समाज वह काल महान और पवित्र बना करता है यह वाक मुनिवरों! देखो अब समाप्त होने जा रहा है आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय क्या है हम अपने में कितने विचित्र हैं बेटा!

हम अपने में कितने विचित्र अपने को बनाएं जिससे देखो हम अपने मानवतव को ऊंचा बना करके और प्रेरणादायक बन करके परमपिता परमात्मा का जो वैदिक साहित्य है वेद का वाक है उसको ले करके मेरे पुत्रों हम समाज और राष्ट्र को ऊंचा बना सके हैं यह विचार बेटा! मैं आगे शेष चर्चाएं कल प्रगट करुंगा आज का विचार विनिमय यह अब समाप्त होने जा रहा है आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय कि हम परमपित परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम बेटा! इस संसार सागर से पार हो जाएं मेरे प्यारे! आज मुझे कितने सुन्दर एक प्रेरणा प्राप्त हुई है क्या मुनिवरों! देखो रजोगुण और तमोगुण के वाक्य आज कोई मानव योगी बनना चाहता है तो उसे मुनिवरों! देखो तमोगुण भी त्यागना है रजोगुण भी त्यागना है और सतोगुण को भी त्याग करके मुनिवरों! देखो उससे भी उपराम होना है एक रस हो करके मेरे प्यारे! देखो क्योंकि वेद का आचार्य कहता है मोक्ष की पगडण्डी के लिए देखो सतोगुण भी संस्कारों को जन्म देता है रजोगुण भी संस्कारों को जन्म देता है और तमोगुण भी संस्कारों को जन्म देता है देखो आज का विचार अब यह समाप्त यह चर्चाएं हम कल प्रगट करेंगें आज का विचार अब समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। दिनांक १८ ०३ १९८६।

12 १९ ०३ १९८६

जीते रहो, देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतो से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनुपम हैं मानो

जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमे दृष्टिपात आ रहा है इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि वह महान है विज्ञान उसका आयतन माना गया है। क्योंकि जितना भी ज्ञान और विज्ञान है मानो यह उस ब्रह्म का परमपिता परमात्मा का आयतन माना गया है अथवा उसका सदन है उसका गृह है जितना भी आध्यात्मिक विज्ञान है उस आध्यात्मिक विज्ञान में मानव रत्त होता हुआ और आध्यात्मिकवेत्ता उस आभा में परिणत हो जाता है उस परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में परिणत हो जाता है जहां बेटा! आलस्य नही रहता प्रमाद नही रहता जहां अन्धकार नही होता जहां रात्रि नही होती वहां सदैव दिवस ही दिवस रहता है आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अन्त में प्रकाश में रत्त हो जाते हैं और जितने यह भौतिक विज्ञान वेत्ता हैं मानो यह अपने में अनुसन्धान करते हुए और विचार विनिमय करते हुए और क्रियातमक परमाणुवाद को जानते हुए अन्तिम चरण मानो इनका अन्धकार का होता है। अन्धकार का क्यों होता है क्योंकि एक एक तरंगों को यह अपनी गणना में लाते रहते हैं और अपनी आत्मीयता का उन्हे बोध नही होता आत्मा का प्रकाश न रहने से मानो वह प्रकृति के परमाणुओं को ही अपने में ग्रहण करते रहते हैं एक दूसरी तरंगों का समन्वय करते रहते हैं परन्तु उनका तरंगवाद होता होता मानो अन्त में वह संसार से चले जाते हैं अपना आत्मतत्त्व कुछ होत नही प्रकृति की आवेशों में सदैव रत्त रहते हैं और प्रकृति की जितनी तरंगें हैं उसमें शून्यता है मानो प्रकृतिवाद में जितनी युक्तियां हैं। वह मानव के साथ में नही रह जाती हैं। परन्तु वह मानव अपने में अधूरा ही दृष्टिपात करता है तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे इस सम्बन्ध में आध्यात्मिक या भौतिकवाद में नही ले जाना चाहता हूं। आज मैं तुम्हे उसी क्षेत्र मे ले जाना चाहता हूं जहां

ऋषि मुनियों की गोष्ठियां होती रहती हैं जहां ऋषि मुनियों के अपने विचार मानो प्रगट होते रहते हैं उसी आभा में तुम्हे ले जाना चाहता हूं आज का हमारा वेदमन्त्र मानो विष्णु की विवेचना कर रहा था और विष्णु के स्वरुप में इतना ही हमने पुरातन काल में भी वर्तमान काल में भी मानो विष्णु का एक ही स्वरुप है जो पालन करने वाला है और वह पालन करने वाला मानो सत्यता से होता है माता यदि पालन कर रही है तो वह विष्णु है राजा पालन कर रहा है तो विष्णु है आचार्य अपने में पालना कर रहा है तो बेटा! वह विष्णु है सूर्य प्रकाश दे करके पालना कर रहा है तो वह विष्णु है चन्द्रमा अमृत बहा रहा है तो वह अमृतमयी विष्णु है विष्णु के अपने बहुत से पर्यायवाची शब्द है आत्मा का नामोकरण भी विष्णु है तो मुनिवरों! देखो जो भी पालन करता है उसी का नाम विष्णु है तो आज मैं विष्णु की विवेचना तो मैं जाना नही चाहता हूं विचार केवल यह है आज मैं बेटा! तुम्हे उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूं जहां महाराजा अश्वपित के यहां नाना ऋषि मुनियों का आगमन हुआ और नाना ऋषि मुनि अपने अपने कक्षों में से अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके और मानो उसी सभा स्थली पर विद्यमान हो गए मानो देखो अपना अपना विचार प्रगट हो रहा था ऋषि मुनियों की अपनी विचारधाराएं अपनी शैलियां बड़ी विचित्र रही हैं और वह ऋषि मुनियों ने अपना अपना व्यक्तव्य दिया मानो किसी ने कहा की माता को शिक्षित बनाना चाहिए यह जन समूह पवित्र बन जाएगा। मानो यहां से वाक का प्रारम्भ हुआ किन्ही ने कहा ब्रह्मचारियों को शिक्षा लेने वानप्रस्थ शिक्षा प्रदान करने वाला ब्रह्मचारी अपने में आचार्यों के अङ्ग संग पवित्र और तपस्वी बन सकते हैं तो अपनी अपनी स्थलियों में वाक और सुन्दर महाराजा अश्वपति अपने में प्रसन्न हो रहा है। परन्तु देखो आचार्यों ने अपना व्यक्तव्य देना प्रारम्भ किया। अब मुनिवरों!

देखो इन व्यक्तव्यों में देने वालो में ब्रह्मचारी कवन्धि ने अपना विचार देना प्रारम्भ किया ब्रह्मचारी कवन्धि बोले कि महाराज हम जो सब उपस्थित हुए हैं वह इसीलिए उपस्थित हुए हैं क्या राष्ट्रवाद का कैसे कल्याण हो और यह राष्ट्र कैसे ऊंचा बने मेरे प्यारे! इसमें महात्मा कवन्धि ने अपना विचार देना प्रारम्भ किया उन्होंने कहा राजा का राष्ट्र हो या साधारण प्रजा हो चाहे विद्वानों की अपनी अपनी विचार धाराओं में नाना प्रकार की गोष्ठियां हो परन्तु राष्ट्र और गृह जब तक ऊंचे नही बनते जब तक बुद्धिजीवी प्राणी नही होते और बुद्धिजीवियों के साथ में तपस्या होनी चाहिए क्योंकि बुद्धिजीवी एक तो वह होते हैं जो अक्षरों के बोधि होते हैं अक्षरों के जानने वाले होते हैं वे अपना विचार भी देते हैं परन्तु स्वतः अपने में अक्षर बोधि होते हैं जो अपने में अक्षर बोधि होता है और व्यक्तव्य देने वाला हो उस मानव को विशेष बुद्धिजीवी नही कहा जा सकता एक बुद्धिजीवी वह होते हैं जो बुद्धिजीवी मानो विचार देते हैं उन विचारों के अपने जीवन को लाने का प्रयास करते हैं। और विचारते विचारते वह गम्भीर मुद्रा में वह परिणित हो जाते हैं मानो एक वह जितना उन्होंने अक्षरों का बोध किया है जितना उन्होंने जाना अपने जीवन को ले जाने का जो प्रयास करता है एक बुद्धिजीवी वह प्राणी होता है तृतीय बुद्धिजीवी वह प्राणी होता है जो निष्पक्ष होता है मानो वह संसार के इस वैभव से मान और अपमान से जो उपराम होता है और वह मान और अपमान से उपराम हो करके वह मानव को राष्ट्र को एक ऊर्ध्वा में दशा प्रदान करता है और वह जो दशा है वह कैसी है मानो देखो वह योगेश्वर बनाने के लिए मानो तत्पर होती है वह राजा को भी कहता है कि तू अपने में योगी बन और प्रजा को भी कहते हैं कि प्रजाओं तुम अपने में योगी बनो अब योग किसे कहते हैं बेटा! हमारे यहां योग की परिभाषा बड़ी

बड़ी विचित्र मानी गई हैं किन्ही आचार्यों ने तो योग के सम्बन्ध में यह कहा है क्या हम परमपिता परमात्मा और प्रकृति का दोनों का समन्वय एक सूत्र में करते चले जाएं वह योग है परन्तु किन्ही आचार्यों ने कहा क्या नही अपनी इन्द्रियों को संयम में बनाना है और इन्द्रियों के साकल्यों को एकत्रित करके वह अपने हृदय रुपी यज्ञशाला में जो याग कर रहा है और याग करता करता वह मानो देखो अपने में यागिक बन जाता है उसको हमारे यहां यौगिक कहा जाता है चतुर्थ योगाभ्यासियों ने कहा कि नही जो प्राण का निदान करता है मानो देखो प्राण जो स्वतः गति कर रहा है इस प्राण को ब्रह्मरन्ध्र से क्या मूलाधार से ले करके नाभि और हृदय, कण्ठ और स्वादिष्ठ और मानो त्रिवेणी का जो स्नान करा करके इस मानो आत्मा को ब्रह्मरन्ध्र में ले जाता है और ब्रह्मरन्ध्र में वह ब्रह्माण्ड का दर्शन करता है मानो जो ब्रह्माण्ड का दर्शन करता है विचारता है कि यह ब्रह्माण्ड क्या है यह मेरी माला है और यह कैसी माला है मानो जैसे पूर्व काल के ऋषि मुनियों ने कहा क्या तीस लाख पृथ्वियों की माला बन करके जैसे सूर्य अपने में धारण कर रहा है मानो देखो एक सहस्त्र सूर्यों की माला बना करके बृहस्पति अपने में धारण कर रहा है मानो देखो कहां तक चले गए अन्त में वह मौन हो करके और वह कहते हैं कि ऋतम्भरावी बन करके इस ब्रह्माण्ड को अपनी अन्तरात्मा अपने अन्तर्हृदय में दृष्टिपात करो एक वह मानो देखो वह बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं मेरे प्यारे! देखो बुद्धिजीवी प्राणियों के कवन्धि के आधार पर मानो देखो यह सबसे ऊर्ध्वा में बुद्धिजीवी प्राणी हैं जो मानव ब्रह्माण्ड को अपने में समेट लेता है और ब्रह्माण्ड उसमें सिमट जाता है मानो देखो वह बुद्धिजीवी प्राणी कहलाते हैं अब मुनिवरों! देखो निम्न कोटि के अब मैं तुम्हे उन बुद्धिमानो के द्वारा ले जाना चाहता हूं ब्रह्मचारी कवन्धि का यह व्यक्तव्य उन

ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में प्रस्तुत होने लगा उन्होंने कहा कि एक बुद्धिजीवी प्राणी वह है जो अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके याग कर रहा है और याग करता हुआ उसमें नाना प्रकार के साकल्य अग्नि में प्रदान कर रहा है और उन साकल्यों में से जो तरंगे उत्पन्न होती हैं उन तरंगों को वह मानो तरंगित करता हुआ अपने में मानो यन्त्रों का निर्माण करता है यन्त्रों का निर्माण करता हुआ वह यन्त्रों में मानो वह परमाणुवाद को एक दूसरे से समन्वय करा रहा है समन्वय कराता हुआ जैसे अग्नि का परमाणु है उसे जल के परमाणु से समन्वय करा करके गुरुतव की उसमें पुट लगा देता है पुट लगा करके मानो देखो यन्त्रों का निर्माण प्रारम्भ हो जाता है जब यन्त्रों का निर्माण प्रारम्भ हुआ तो मानव को सूर्य लोक का यान का निर्माण किया जा रहा है कोई चन्द्रमा में जाने के लिए यातायात बनाया जा रहा है मानो देखो कोई समुद्र की तरंगों को अपने यातायात को बना रहा है कोई समुद्रों की आभा में मानो देखो वह यातायात का एक वृत बना रहा है मेरे प्यारे! देखो कोई ऐसा यात्री है कोई ऐसा वैज्ञानिक है मानो देखो जो अपने यन्त्र में विद्यमान हो करके उड़ान उड़ रहा है मानो पृथ्वी की उड़ान उड़ी पृथ्वी से देखो वह चन्द्रमा में चले गए चन्द्रमा से उड़ान उड़ी बुध में चले गए बुध से उड़ान उड़ी शुक्र में चल गए शुक्र से उड़ान उड़ी तो मानो वह मङ्गल में चले गए मङ्गल से उड़ान उड़ी तो मरेचकेतु मण्डल में चले गए। म्रेचकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो कृतिका मण्डल में चले गए कृतिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो वायुसकेतु मण्डल में चले गए वायुसकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो मृही वाचुकेतु मण्डल में चले गए वाचु मण्डल से उड़ान उड़ी तो उन्होंने बेटा! वासु सम्भूति मण्डल में चले गए सम्भूति मण्डल से उड़ान उड़ी तो परोति मण्डल में चले गए। परोति मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! वह अरुणधति मण्डल में चले गए

अरुण्धति से उड़ान उड़ी तो मुनिवरों! देखो वह वशिष्ठ में चले गए वशिष्ठ से उड़ान उड़ी तो वह मुनिवरों! देखो वह जेनकेतु मण्डल में चले गए जेनकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो सोमकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो मानो देखो बहत्तर लोकों का यान भ्रमण कर रहा है और बहत्तर लोकों का भ्रमण करके वह यात्री अपने आश्रम में पुनः प्रवेश कर रहा है तो मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हे उस क्षेत्र में विज्ञान के युग में नही मैं बुद्धिजीवी जो प्राणी हैं उनकी गणना करा रहा हूं। जो मानो देखो महर्षि ब्रह्मचारी कवन्धि ने ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में अपना निर्णय दिया उन्होंने कहा एक बुद्धिजीवी प्राणी वह है बुद्धिजीवी विज्ञानवेत्ता वह है जो अपने आश्रम में विद्यमान हो करके एक एक शब्द के ऊपर बेटा! यन्त्रों का निर्माण कर रहा है। मानो देखो एक शब्द उच्चारण हुआ और उसमें वह शब्दों की तरंगों को आश्रम में त्याग गया है वैज्ञानिक विचारता है एक महापुरुष जो यहां विद्यमान रहता था उस महापुरुष के परमाणु गति कर रहे हैं उस महापुरुष की वाणी गति कर रही है मानो देखो ऐसे यन्त्र का निर्माण किया मुनिवरों! देखो जो मानव एक स्थली पर विद्यमान है उसके चले जाने के प्रस्थान कर जाने के पश्चात बेटा! ढ़ाई घड़ी के पश्चात उस मानव का चित्र यन्त्रों में प्रवेश कर रहा है तो यह सिद्ध हुआ मानव के जो विचार हैं मानव के जितने तपे हुए विचार होते हैं वह बहुत समय तक उस स्थली पर भ्रमण करते रहते हैं मानो देखो शब्दों के आकार के रुप में वे और भी यन्त्रावलियों का निर्माण कर रहा है मानो विचारता है एक समय बेटा! एक वेदमन्त्र है और वेदमन्त्र कहता है ममत्वां ब्रह्मे वाचो सम्भवाः लोकं रथं ब्रह्मे वाचाः सम्भवा विचारता है कि मानव के गर्भस्थल में मानो हम जैसे बिन्दु का निर्मण हुआ मानो देखो निर्माण करने वाला तो प्रभु है देवताजन उसकी सहायता कर रहे हैं माता अपने विचार

दे रही है मानो देखो इन विचारों को वह बाल्य पनप रहा है तो उस शिशु को हम यन्त्रों में लाना चाहते हैं मानो देखो एक एक रक्त के बिन्दु से यन्त्रों का निर्माण कर रहा है और मानव के एक एक रक्त के बिन्दु में उसी मानव का दर्शन कर रहा है जिसके वह रक्त के बिन्दु हैं। तो मेरे प्यारे! एक मानो देखो ब्रह्माण्ड मानव के समीप आ गया विज्ञानवेत्ता के समीप एक ब्रह्माण्ड आया क्या एक एक रक्त के बिन्दु में मानव का चित्र है मानो देखो हमारे यहां मैंने तो बहुत पुरातन काल में निर्णय किया था और मैं ब्रह्मचारी कवन्धि ने यह कहा कि मेरे जो पूज्यपाद गुरुदेव भारद्वाज रेणावृत्ति भारद्वाज हैं मानो देखो उनके विद्यालय में मैं अध्ययन करता रहा हूं और उनके विद्यालय में अध्ययन करता हुआ यह सब वाक सब मेरे समीप भी क्रियातमक रहे हैं क्या जो मानो देखो हजारों हजारों वर्ष के किसी वस्त्र पर कहीं किसी के रक्त का बिन्दु प्राप्त हो गया है उसी रक्त के बिन्दु से यन्त्र में प्रवेश करने से उस मानव का चित्र भी दृष्टिपात हुआ मानो देखो मुझे ऐसा स्मरण आता रहा है ब्रह्मचारी कवन्धि ने यह अपना निर्णय अपना व्यक्तव्य दिया और उन्होंने कहा कि वह मानव बुद्धिजीवी है वह मानव जो अग्नेय अस्त्रों का निर्माण कर रहा है मानो जलास्त्रों का निर्माण कर रहा है निर्माण क्यों कर रहा है उसका क्या स्वार्थ है तो विचारता है तो इस प्रकृति की जितनी जानकारी हो जाए हम प्रकृत में कोई सारगर्भित विचारों को अपने में धारण कर सके। तो उन विचारों को अपने में धारण करना चाहते हैं परन्तु देखो जिससे हमारा इस संसार से उपराम हो तो मुनिवरों! देखो विज्ञानवेत्ता राष्ट्र के लिए मानवता के लिए बेट यह बुद्धिजीवी प्राणियों की ब्रह्मचारी कवन्धि ने बेटा! अपनी गणना कराई एक बुद्धिजीवी प्राणी वह उन्होंने प्रगट किए हैं क्या माताओं में कितनी बुद्धिजीवीता होनी चाहिए ऐसा देखो उन्होंने विचार

प्रारम्भ किया ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा कि मेरी प्यारी माता जब मैं माता की लोरियों का पान कर रहा था तो माता मुझे दर्शनों का अभ्यास करा रही हैं दर्शनों की वार्ता कह रही हैं वेद की युक्तियां प्रगट कर रही हैं और देखो विज्ञान की वार्ताओं में रत्त हैं क्योंकि इससे सिद्ध हुआ क्या मेरी प्यारी माता विद्यालयों में अध्ययन कर रही हैं विद्यालयों में अध्ययन करती करती यह विचार देती हैं क्या मैं गृह में प्रवेश करना नही चाहूंगी पुनः कहती है क्या मैं गृह में जाना चाहती हूं मुझे ऐसे सन्तान को मुझे जन्म देना है जिस सन्तान से मेरे जीवन की धारा मानो महान और पवित्र बन जाए मैं ऐसे बाल्य को जन्म देना चाहती हूं। मानो देखो माता तपस्या कर रही है अपने गर्भस्थल में शिशु को पनपा रही है और पनपा करके मानो उसे अपनी विचारधारा दे रही है अपने क्रियाकलापों की प्रतिक्रियाएं मानो वह उसमें परिणत कर रही है परिणत करके मानो वह बालक माता के गर्भस्थल में गर्भस्थल से पृथक हो करके लोरियों का पान करता हुआ वही मानव आगे चल करके ब्रह्मवेत्ता और विज्ञानवेत्ता बन जाता है तो मानो एक वह माता बुद्धिजीवी है एक वह माता अपने में बुद्धिजीवी बन रही है एक वह माता है जो मानो देखो अपने में योगाभ्यास बना करके वीरांगना बन जाती है वेदों का अध्ययन कर रही है मानो अपने जीवन को इतना व्यापक बना रही है कि योगाभ्यास और अपनी मानो वीरांगना के रुपों में क्या सर्पराज आता है उससे भी वह प्रीति कर रही है सिंहराज आ रहा है वह भी उससे प्रीति कर रहा है। मानो देखो मृगराज आता है वह भी मानो अहिंसा परमोधर्म में परिणत हो जाता है परिणाम क्या बेटा! जब तक अपने विचारों को हम उस महान दर्शन में मानवीय दर्शन में जब तक पिरो नही सकेंगे। जब तक हमारा जीवन महान नही बनेगा एक वह मेरी प्यारी माता बुद्धिजीवी है वह मानो देखो

विद्यालयों में क्या वह राष्ट्रवेत्ताओं के यहां जा जा करके अपनी प्रतिभा का गीत गाती रहती है और प्रतिभा को जानने वाले राजा अपनी स्थलियों को त्याग देते हैं तो परिणाम क्या विचारों का क्या कि मानो देखो महर्षि कवन्धि ने इन बुद्धिजीवी प्राणियों की विवेचना करते हुए यह कहा यदि समाज में इस प्रकार का बुद्धिजीवी प्राणी हो जाए इस प्रकार का बुद्धिजीवी जनसमूह बन जाए तो मानो देखो इस समाज में त्रुटियां नही रहेगीं। यह त्रुटियों से रहित समाज बन जाएगा तो मानो यह वाक उच्चारण करके मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी कवन्धि अपनी स्थली पर विद्यमान हो गए मेरे प्यारे! देखो इतने में ब्रह्मचारी सुकेता उपस्थित हुए और ब्रह्मचारी सुकेता ने आचार्यों की आज्ञा पर करके कहा कि मुझे कोई मानो समय उन्होंने कहा उच्चारण कीजिए जो उच्चारण करना है उन्होंने कहा हम सब जो उपस्थित हुए हैं वह इसीलिए हुए हैं कि राजा अश्वपति के यह इच्छा है कि मेरा राष्ट्र कैसे पवित्र बनेगा मानो देखो यह बुद्धिजीवी क्या इन तपस्वी प्राणियों ने यह बुद्धिजीवी नही हैं यह तपस्वी हैं। इन तपस्वी प्राणियों ने मानो तपस्वी महापुरुषों ने अपना अपना व्यक्त्त्वय दिया है अपने अपने विचार दिए हैं परन्तु देखो उन विचारों में मैं उच्चारण करने के सुयोग्य तो नही हूं परन्तु इतना उच्चारण अवश्य कर सकता हूं क्या तुम्हारे जो जितने गृह हैं उन गृहों में क्रियातमक रुप से प्रत्येक गृह में सुगन्धि आनी चाहिए मानो यदि राजा के राष्ट्र को राजा जब अपने को राजा स्वीकार करेगा और सुअभिमान राष्ट्रीयतव का रहेगा तो वह अपने राष्ट्र को ऊंचा नही बना सकता यह वाक मुनिवरों! देखो ब्रह्मचारी सुकेता ने वर्णन किया सुकेता ने कहा है कि हमने वेदों का बहुत सा अध्ययन किया है और वेद में यह वाक आया है क्या वाक जो भी मानव संसार में क्रियाकलाप करता है जो भी कर्म करता है वह अपने लिए किया करता है

संसार का जितना भी कर्म है जितनी भी क्रियातमक जीवन की प्रतिक्रियाएं हैं वह सब अपने लिए होता है आज एक मानव सत्य उच्चारण कर रहा है और राजा बना हुआ है वह सत्य सत्य ही उच्चारण कर रहा है तो अपने लिए सत्यवादी बन रहा है मानो देखो इसी प्रकार वह सत्यवादी बना हुआ है सत्यवादी बनेगा तो उसका अन्तरात्मा ऊंचा बनेगा और तपस्वी प्राणी बन करके अपनी तपस्या से मानो देखो आभा में वह प्रकाश में रत्त हो जाएगा। मानो देखो ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा राजा को अपने में यह न जाने कि मैं राजा हूं परन्तु और प्रजा ये न जाने क्या मैं प्रजा हूं प्रत्येक मानव अपने अपने कर्तव्य का पालन करता चला जाए परन्तु एक वाक यह है कि सबसे प्रथम राष्ट्रीयता में राजा को अपने कर्तव्य का पालन करना होगा राजा जब कर्तव्य का पालन करेगा तो प्रजा उसके अनुसार बरतती चली जाएगी मानो देखो प्रजा उसमें महानता की आभा में परिणत होती चली जाएगी जैसे विद्यालयों में हम अध्ययन करते रहे हैं आचार्य जिस प्रतिक्रिया में रत्त होता है ब्रह्मचारी उसी में रत्त हो जाता है यदि आचार्य अनुशासन में है तो ब्रह्मचारी भी अनुशासन वृत्तियां बना लेते हैं यदि देखो आचार्य चरित्रवान और तपस्वी है तो ब्रह्मचारी मानो देखो तपस्वी और वह ब्रह्मचर्यवत ब्रह्मवर्चोसी का पालन करने लगते हैं मानो देखो यह वाक हमने दृष्टिपात किया है हम विद्यालयों में इसका अध्ययन करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा क्या हे राजन्! यह सभा जो उपस्थित हुई है यह इसीलिए हुई है क्या तुम्हारे राष्ट्र का निराकरण हो क्या कैसे ऊंचा तुम्हारा राष्ट्र बने तुम तो राजा मत जानो प्रजा अपने को प्रजा न स्वीकार करके सब अपने में मानो देखो महानता का दर्शन करती रहे और मानवीय दर्शन का हमे प्रत्येक प्राणी को आभास होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो विचार क्या प्रत्येक गृह

में सुगन्धि आनी चाहिए सुगन्धि का अभिप्राय यह है क्या प्रातःकालीन प्रत्येक गृह में देवपूजा हो जिसे हम याग कहते हैं स्वाहा की ध्वनियां आनी चाहिए। प्रत्येक गृह में पुत्र है पुत्री है पुत्र वधु है मानो देखो मातृ पितर हैं। सर्वत्र एक पंक्ति में विद्यमान हो करके प्रातःकालीन याग होना चाहिए याग में सुगन्धि आनी चाहिए और ध्वनि वेदमन्त्रों की आनी चाहिए जब प्रत्येक गृह से वेदज्ञ ध्वनि आती रहेगी तो मानव अपने ऋणों से उऋण होता रहेगा जब मानव देखो अपने ऋणों से अवऋण बनता रहता है तब मानो देखो गृह में जब वेदों की ध्वनियां स्वाहा की ध्वनियां ध्वनित रहेगी तो गृह में स्वर्ग की कल्पना करते रहते हैं मानो वही तो स्वर्ग कहा जाता है ब्रह्मचारी ने कहा ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा क्या प्रत्येक गृह में मानो देखो चरित्र की सुगन्धि आनी चाहिए और जो देखो वार्ता है वह ऐसी पवित्र होनी चाहिए मानो जिससे एक दूसरा प्राणी मिल करके मुग्ध हो जाए अपने में सार्थिकतता का अनुभव करने लगे। इस प्रकार के विचार राजा के राष्ट्र में जब इस प्रकार का नियम बना रहेगा। तो प्रजा अपने कर्तव्य का पालन चरित्र की प्रतिभा और विज्ञान उसका सार्थिक बन करके रहेगा मानो देखो राजा के राष्ट्र में जहां इस प्रकार के विचार होते हैं जहां मानो देखो राजा के राष्ट्र में प्रत्येक राजा के राष्ट्र में विज्ञानशाला है विज्ञानशाला के साथ में मानवीय शाला है और मानवीय शाला के साथ में चरित्रशाला है मानो देखो वह राष्ट्र और गृह पवित्र बनते रहते हैं और यदि मानो देखो इनमें यह राजा के राष्ट्र में यह क्रियाकलाप नही होता तो राजा का राष्ट्र कोई महान नही उसको राष्ट्र नही कहा जा सकता तो विचार विनिमय क्या आज का हमारा वाक क्या कि अपने क्रियाकलापों में मानो रत्त रहें और विचारधारा में परिणत होते रहें परन्तु यह विचार दे करके राजा ने मानो देखो ब्रह्मचारी सुकेता के

चरणों को स्पर्श किया और स्पर्श करके बोले की धन्य है प्रभु मानो देखो अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो गए विद्यमान हो जाने के पश्चात अब मेरे प्यारे! देखो सब ऋषि अपने में मौन हो गए। सब ऋषि अपनी अपनी स्थलियों पर विद्यमान हैं और विद्यमान हो करके मानो देखो वह सब मौन हैं। अब मुनिवरों! देखो वह ब्रह्मचारियों ने अपना अपना व्यक्तव्य दिया। अब राजा के वाक आया अब राजा अश्वपति कोई वाक उच्चारण कर सकता है मेरे प्यारे! देखो उस समय महाराजा अश्वपित ने कहा क्या मैं मानो हे गुरुजनों! हे तपस्वियों मैं इसीलिए उपस्थित हुआ हूं क्योंकि मैं आपके चरणों की वन्दना करने के लिए और जो मुझे आज्ञा दोगों मैं उसका अवश्य पालन करुंगा मानो देखो यह राजा इतना वाक कह करके बेटा! वह अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो गए मेरे प्यारे! देखो वह अब वह ब्रह्मे वर्णा मुनिवरों! देखो श्वेता ऋषि जो अध्यक्षता के लिए नियुक्त थे सब ऋषि मुनियों ने यह प्रार्थना की क्या महाराज आपका अन्तिम कोई विचार है वह आपका होना चाहिए मेरे प्यारे! उन्होंने कहा बहुत प्रियतम वह उपस्थित हुए और उन्होंने कहा क्या जो तुमने अपना अपना विचार दिया है उन विचारों में एक महानता का एक वैदिकता का मुझे दर्शन हो रहा है मैं वेद के मानो उन विचारों को अपने में अध्ययन कर रहा हूं जिन विचारों को ले करके मानो मेरी मानवीयता और विचित्रता का दर्शन मुझे प्रत्येक ऋषि के विचारों में प्रतीत हुआ है आज मैं मानो देखो यह विचार राजा के राष्ट्र में आहार और व्यवहार की दोनों की कुशलता केवल विचारों से ही प्रतीत होने लगती है इन विचारों में मुझे राजा के राष्ट्र का आहार और व्यवहार दोनों में मुझे सार्थिकता प्रतीत हुई है जिस राजा के राष्ट्र में आहार और व्यवहार दोनों पवित्र होते हैं वह राष्ट्र बुद्धिजीवी बन करके और वह महानत का प्रदर्शन करता है वो महानता की ज्योति को जागरुक

कर देता है तो यह महानता की ज्योति वाला एक जागरुकता का विचार है मानो देखो वह श्वेता ने कहा क्या तुमने मुझे सबने अध्यक्ष बनाया है मैं यह विचारता हूं मैं यह अनुभव कर रहा हूं क्या मेरे से ऊर्ध्वा में जो विचार देने वाले महान मुझे प्रतीत हुए हैं उन्हे मानो अध्यक्षता को अपनाना चाहिए परन्तु उन्होंने अपनाया नही है इसीलिए मेरा विचार क्या अन्तिम यही है क्या राजा के राष्ट्र को मानो देखो सहायता देना बुद्धिजीवी प्राणियों का एक कर्म होना चाहिए मानो उनकी एक धारा होनी चाहिए समय समय पर राजा को संकेत करना यह बुद्धिजीवी महान योगियों का कर्तव्य होना चाहिए परन्तु रहा यह वाक क्या मेरी प्यारी माताओं का मानो देखो आदारयुक्त होना चाहिए माता ही निर्माण करती है माता ही विचार देती है परन्तु बाल्यकाल में राजा के राष्ट्र में मानो दर्शनों की शिक्षाएं आयुर्वेद की शिक्षाएं मेरी पुत्रियों को होनी चाहिए

क्योंकि जब से मंगलं ब्रह्मे जब इनमें आयुर्वेद विद्या होगी तो मानो पुरुषों में आयुर्वेद विद्या जाने से देखो आगे जाने से भ्रष्ट होने का संदेह बना रहता है। यह वाक बेटा! देखो वह श्वेत ने कहा है महर्षि श्वेत ने यह वाक क्यों कहा मैं इसका निर्णय तो नही दे सकता। परन्तु उन्होंने यह अपना वाक कहा है कि आयुर्वेद माता के द्वार पर होना चाहिए माता ब्रह्मचारी का निर्माण करती है और जब प्रारम्भ का जीवन मानव का पवित्र बन जाता है तो वह रुग्ण को प्राकूल होता है और जब प्रारम्भिक जीवन मानव का भ्रष्ट हो जाता है प्रारम्भिक जीवन में विकृतिया आ जाती हैं माता का सहयोग पवित्र नही होता शिक्षा में सूक्ष्मता आ जाती है तो उस मानव का आगे चल करके जीवन रुग्णतव में परिणत हो जाता है यदि माता को आयुर्वेद की विद्या हो तो गर्भ मैं माता उसी प्रकार की औषधियों का पान करे और जब माता लोरियों का पान कराए उसी प्रकार की

शिक्षा दे जिससे पुत्रियां और पुत्र दोनों ब्रह्मचर्यवत्त को धारण करते हुए और ब्रह्मवर्चोसी परमात्मा का चिन्तन करते हुए और मानो देखो चरी प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए जब गति करेंगे तो वह वृद्ध तक मानो रुग्ण नही हो सकता तो इसीलिए आयुर्वेद माताओं के द्वारा होना चाहिए। आगे चल करके जब यह पुरुषों के भुजों में चला जाता है तो उसमें भ्रष्टता आ जाती है आयुर्वेद में भ्रष्टता नही आनी चाहिए इसीलिए यह वाक श्वेतर ने जिस दृष्टि से कहा है पुत्रों इसका मुझे ज्ञान नही है इतना परन्तु आगे चल करके मैं इसका अन्ध हो सकता है तो विचार यह कि आगे कहा की यह माताओं की शिक्षा होनी चाहिए। और वह उनको दर्शनों की प्रतिभा दर्शनों की भाषा में दर्शनों का अध्ययन होना चाहिए। मानव उसी के अनुसार बनता रहता है समाज पवित्र बनता रहता है मानो देखो राजा के राष्ट्र में कर्तव्यवाद की धारा मानो प्रदीप्त हो जाती हैं और उन कर्तव्यवाद की धाराओं में प्रत्येक प्राणी जब अपने में रत्त हो जाता है तो राष्ट्र की भी आवश्यकता नही रहती मेरे प्यारे! यह वाक उन्होंने अन्तिम कहा क्या जब ऐसा समाज बन जाता है तो राष्ट्र कि आवश्यकता क्या है क्योंकि राष्ट्र का तो निर्माण ही इसीलिए होता है क्या वह मानो देखो अपने राष्ट्र को प्रजा को नियम में बनाना और जो नियम में ने चले उसको दण्डित करने का नाम राष्ट्र का निर्माण हुआ करता है मानो देखो राष्ट्र का निर्माण उसी काल में होता है जबकि अकर्तव्यवादी प्राणी हो जाते हैं जब अकर्तव्यवादियों को कर्तव्यवाद में लाने के लिए राजा के यहां सेना होती है राजा के यहां मानो देखो नाना प्रकार के डण्डित प्राणी होते हैं इसी प्रकार देखो वेद के ऋषियों ने अपना व्यक्तव्य देते हुए कहा क्या राष्ट्र इतना महान होना चाहिए मानो देखो अपने कर्तव्य का पालन करे तो वहां राष्ट्र की आवश्यकता केवल इतनी रहती है क्या वह प्रजा को

अकर्तव्यवादी का वह भी जैसे ब्रह्मवेत्ता जैसे विद्यालय में आचार्य प्रातःकालीन याग करता हुआ ब्रह्मचारियों को अनुशान में लाने का प्रयास करता है इसी प्रकार राजा भी एक आचार्य की भान्ति मानो वह भी प्रजा को समय समय पर देखो वह सभाओं में जाता हुआ अपना उपदेश दे जिससे प्रजा अपने कर्तव्य से अपने को दूरी न कर सके ऐसा मानो देखो यह वाक मेरे प्यारे! देखो श्वेत ने उच्चारण किया और श्वेत ने कहा कि राजा पालन करे राजा के यहां अपना अन्न इतना पवित्र हो कि बेटा! महाराजा अश्वपति के यहां राजा और उनकी पत्नी दोनों देखो वह कृषि उद्योग करते थे उद्गम करते थे और उस उद्गम से जो अन्न उत्पन्न होता उसे पान करते गऊ को मानो अपने भुजों से उसकी पालना करते उसके उदर को देखो वह दुग्ध आहार कराती उसे वह पान करते और मुनिवरों! देखो उसी में रत्त रहते और राष्ट्र को अपना विचार देते थे। राष्ट्र को अपनी प्रतिभा प्रदान करते थे बेटा! महाराजा अश्वपति के जीवन में विज्ञान मानो ज्ञान और योग और बुद्धि विचार यह आया श्वेत ने यह कहा जितने राजा के राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं और निष्पक्ष होते हैं मानो देख उतनी ही प्रजा ऊंची बनती है उतना जी राजा का राष्ट्र पवित्र बना करता है और जो मानो देखो वह घृणातमक बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं घृणातमक जितने बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं वह राष्ट्र का विनाश कर देते हैं तो इसीलिए बुद्धिजीवी प्राणियों में घृणा नही होनी चाहिए बुद्धिजीवी वह होता है जो मानो देखो वह तपस्या करने वाला हो इन्द्रियों पर विजय करने वाला हो वह मानो वह बुद्धिजीवी बन करके राष्ट्र को ऊंचा बनाता रहेगा। यह वाक क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए मेरे प्यारे! देखो आज का विचार हमे यह प्रेरणा दे रहा है कि हम अपने में कितने ऊंचे बने तो बेटा! देखो श्वेत ने अपना व्यक्तव्य दे करके और वह मौन हो गए

मेरे प्यारे! महाराजा अश्वपति ने यह मानो देखो आज्ञा पा करके ऋषि की उन्होंने स्वीकार किया क्या मेरे विद्यालय में आचार्य इस प्रकार के वानप्रस्थी हों और मेरे यहां मेरी प्यारी माताओं का और आयुर्वेद की शिक्षा जिनके द्वारा होगी इस प्रकार का मानो सब उच्चारण करके और ऋषि के चरणों की वन्दना करके राजा अपनी स्थली पर विद्यमान हो गए रतो विचार क्या मुनिवरों! देखो वह ब्रह्मवेत्ताओं की सभा मुनिवरों! देखो विसर्जित हो गई और ब्रह्मवेत्ताओं ने यह अपना व्यक्तव्य दिया है यह बड़ा विचित्र है ब्रह्मचारी कवन्धि ने यह अपना विचार दिया वह बुद्धिजीवी प्राणियों का वह बड़ा विचित्र है मुनिवरों! देखो अन्त में यह ऋषि कह करके यह संसार एक प्रकार की माला है और इस माला को एक दूसरा प्राणी अपने में धारण कर रहा है लोक लोकान्तर एक दूसरे की माला बना करके उसे सहायता प्रदान कर रहा है इसी विचारों को ले करके बेटा! राष्ट्र समाज प्रजा की मानो कृतियों का मानो जन्म होता रहा है तो मुनिवरों! देखो यह वाक आज का हमारा क्या कह रहा है हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और मुनिवरों! देखो अपने में अपने कितने महान बनें हम कैसे विष्णु बन करके बेटा! हम पालन करने वाले बनें मेरे प्यारे! देखो हे विष्णु तू कल्याण करता है तू पालन कर रहा है बेटा! जो भी पालन करता है उसी का नामोकरण विष्णु की प्रतिभा में विष्णु की कोटि में बेटा! उसी को निर्धारित किया गया है आज का विचार अब हमारा यह क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए बेटा! हम परमपिता परमात्मा के संसार सागर से पार होने का प्रयास करें हम मानो देखो ज्ञान युक्त हो करके हम परमपिता परमात्मा की मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करें जिस प्रभु के राष्ट्र में बेटा! अन्धकार नही होता आलस्य नही होता प्रमाद नही होता

रात्रि नही होती वहां सदैव प्रकाश रहता है... शेष अनुपलब्ध, दिनांक १९ ०३ १९८६।

13 २० ०३ १९८६

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना प्रभु का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा वरणीय माने गए हैं और जो भी मानव उसका वरण कर लेता है अथवा उसे वर लेता है वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है इसीलि जो मानव उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना करके मानो उसकी आभा में रत्त हो करके गति करता है मानो उसकी आभा में निहित हो जाता है परमपिता परमात्मा एक महान है मानो वह यज्ञोमयी स्वरुप माने गए हैं याग तो उस महान देव का आयतन माना गया है। उसका गृह है उसका सदन है मानो वह उसी में वास करता है मानो आज हम उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरुप है वह कितना महान है वह संसार रुपी यज्ञशाला का निर्माणवेत्ता है अथवा निर्माण करने वाला है जो निर्माणवेत्ता होता है वही तो महान कहलाया जाता है इसीलिए आज हम उस परमपिता परमात्मा की महती का अथवा उसके महान ज्ञान और विज्ञानमयी स्वरुप का प्रायः वर्णन करते रहते हैं क्योंकि हमारा वेदमन्त्र नाना प्रकार रुपों में रत्त रहने वाला है नाना प्रकार की विवेचना करने वाला है आज मुझे कहीं से यह प्रेरणा प्राप्त हो रही है क्या याग के सम्बन्ध में कुछ चर्चाएं की जाएं तो मुनिवरों! हमे यागों के सम्बन्ध में अपनी बहुत से वाक प्रगट किए हैं क्योंकि याग हमारे यहां सर्वत्रतव माना गया है संसार का जितना भी सुकर्म

है जिस कर्म में आत्मीयता है मानवता है मानवीय दर्शन है और यौगिकवाद है वह सर्वत्र मानो एक प्रकार के यागों से वह कटिबद्ध रहता है क्योंकि हमारे ऋषि मुनियों ने इस संसार के ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया है। अनूठे अनूठे उन्होंने अपने विचार दिए हैं परन्तु यह सिद्ध हुआ है इन विचारों से कि यह जो परमपिता परमात्मा का यह जो संसार है यह एक प्रकार की यज्ञशाला है और प्रत्येक मानव को याग से उन्होंने कटिबद्ध किया। क्योंकि उस सुगन्ध से मानव के जीवन का समन्वय होता है अथवा उस मानवीय जीवन से उन्होंने बेटा! देखो याग को उसमें परिणत किया है और निकट लाने का प्रयास किया हमारे यहां बेटा! कोई भी क्रियाकलाप हो चाहे वह विज्ञान की आभा में चाहे वह आध्यात्मिकवादी हो परन्तु वह सब एक याग से कटिबद्ध रहते हैं मुझे एक वाक स्मरण आ रहा है बहुत पुरातन काल का वाक है बेटा! मानो कुछ उद्दालक गोत्रीय ऋषि अपने में अनुष्ठान कर रहे थे। मानो देखो भयंकर वनों में अपने गृह से यह सङ्कल्प ले करके आये कि हम अनुष्ठान करेंगे परन्तु देखो अनुष्ठान कहते किसे हैं अनुष्ठान कहते हैं जो मानव अपनी प्रत्येक इन्द्रियों को याग में पिरोना चाहता है। प्रत्येक इन्द्रिय को यज्ञशाला के पात्रों में निहित होना चाहता है हमारे यहां यज्ञशाला के उस पात्रों की आभा में मानव सदैव निहित रहा है यज्ञशाला के दस पात्र होते हैं परन्तु उन पात्रों में जो भी कुछ विद्यमान है उसको एकोकीकरण करके उसका साकल्य बना करके और उसमें याग करना चाहता है तो इसीलिए बेटा! देखो ऋषि मुनियों ने एक विचार आया कि हम अनुष्ठान करना चाहते हैं और अनुष्ठान में हम याग में अपने को ले जाना चाहते हैं तो बेटा! कुछ ऐसा स्मरण है क्या वह ऋषिवर भयंकर वनों में जा करके उन्होंने कुछ साकल्य एकत्रित किया और साकल्य एकत्रित करके कामधेनु के गोघृत के द्वारा वह

जब याग करने लगे तो उन्हे बेटा! छह माह हो गया था अनुष्ठान करते हुए याग में परिणत होते हुए तो उनके विचारों में एक महानता का दर्शन होने लगा था कहीं से बेटा! भ्रमण करते हुए सोमव्रेतकेतु भ्रमण करते हुए आ गए और वह मानो देखो विद्यालय में से कुछ आचार्यों से विवाद ग्रस्त हो करके वह विद्यालय को त्याग करके आए। मानो उनके हृदय में उदण्डता उनके हृदय में नाना प्रकार की विडम्बना से गृहित थे तो मेरे पुत्रों देखो जब वह ऋषि के द्वारा जब वह याग कर रहे थे तो वह भी याग करने लगे जब याग करने लगे तो ऋषि ने अपने योगाभ्यास अनुष्ठान की प्रतिक्रियाओं से प्राण को मिलन करके बेटा! उनके अन्तर्हृदय को दृष्टिपात करने लगे क्योंकि अग्नि का स्वरुप बेटा! परिवर्तित हो जाता है अग्नि के स्वरुप में जितने सात्विक प्राणी विराजमान हो करके वह याग करता है। अग्नि का स्वरुप कुछ और होता है और जिस समय वह चिन्तित हो करके विडम्बना में नियुक्त हो करके याग करता है बेटा! अग्नि का स्वरुप कुछ और बन जाता है तो यह तो बेटा! विज्ञान के वाक हैं मैं इस वाक में तो तुम्हे ले जाना नही चाहता हूं विचार केवल यह कि मानो देखो अग्नि के स्वरुप को जब ऋषि ने दृष्टिपात किया तो उन्होंने ऋषि से कहा हे ऋषिवर! आप जो याग में आ गए हैं यह वायुमण्डल मानो देखो तुम्हारे विचारों से दूषित होने जा रहा है। तुम्हारे विचारों से विडम्बना है उदण्डता है उस उदण्डता के कारण तुम्हारा मन और हृदय दोनों शुद्ध नही है इसीलिए तुम्हे याग करने का अधिकार नही है मेरे प्यारे! जब ऋषि ने यह वाक कहा उद्दालक गोत्रीय ऋषि ने तो वह ऋषि मौन हो गए। चरणों की वन्दना कि की प्रभु वास्तव में मेरा हृदय चिन्तित है मेरा अन्तर्हृदय है मानो विद्यालय से मैं विराज रहा हूं और विद्यालय में ब्रह्मचारियों का मेरा विवाद आ गया उस विवाद में मेरी प्रवृति मानो

तमोगुणी बन गई है। और रजोगुणी बन गई है उस रजोगुणी प्रवृति मेरे हृदय में छाई हुई है मेरे पुत्रों ऋषि ने कहा जाओ भयंकर वन में जा करके अनुष्ठान करो पत्र पुष्पों का पान करो तुम्हारा हृदय पवित्र बन जाएगा। याग के विचारों को अपने में धारण करते रहो तो मुनिवरों! देखो वह ऋषि आश्चर्य में बोले कि प्रभु! धन्य है उन्होंने बेटा! पांच वर्ष का अभ्यास इस प्रकार का अन्न इत्यादि का पान करते तो वह अपने हृदय में जो नाना प्रकार की विडम्बना थी उसको उससे वह रहित हो गया उससे रहित हो गए तो उद्दालक गोत्रीय बेटा! जितने अपने में अद्वितीय रहे हैं और वह प्रातःकालीन याग करना अपने विचारों के ऊपर चिन्तन करना बेटा! वह नाना वृक्षों के मानो पत्र और पुष्पों को अग्नि में तपा करके बेटा! वह पान करत रहे हैं बारह बारह वर्षों का इस प्रकार अनुष्ठान करने से उनका अन्तरात्मा पवित्र हो गया। जब अन्तरात्मा में पवित्रता आ गई वही पवित्रता हमारे यहां बेटा! एक महान बन करके आती है तो विचार विनिमय क्या हमारा जो यागाम् आचार्यों ने यह माना है आचार्यों ने अपना यह व्यक्तव्य दिया वेद के माध्यम से क्या प्रत्येक मानव को याग के निकट आ जाना चाहिए। यागिक बनना चाहिए जैसा मैंने पुरातन काल में तुम्हे निर्णय दिया क्या मेरी पुत्रियों का भी याग के निकट आ जाना बहुत अनिवार्य है मानो सन्तान को जन्म देना भी मेरी पुत्रियों का वह याग है वह याग के रही है यदि उनका विशुद्ध हृदय है उस हृदय से मानो अपने गर्भ की पालना करती हैं तो मानो देखो वह उनका याग है तो मानो देखो वह उनका याग है क्योंकि पुत्र सन्तान को जन्म देना भी उन्हे विचार देना भी मेरे पुत्रों एक याग है हमारे यहां याग की परिभाषा बड़ी विचित्र मानी गई है आचार्य कुल में अहा! ब्रह्मचारी जब आचार्य के चरणों को स्पर्श करके जब वह अपनी विद्या का अध्ययन करता है आचार्य

उसे गोमेध करा रहा है और गोमेध याग करा करके कहता है ब्रह्मचारी तू गो मेध याग कर तू अपनी मानो इन्द्रियों को पवित्र बना तो वह तेरा गो मेध याग हो जाएगा। तो परिणाम क्या है मेरे पुत्रों देखो यह संसार एक यज्ञशाला में विराजमान है याग कर रहा है वह किसी भी रुप में विद्यमान है जो अपने अन्तःकरण में मानो सात्विक वायुमण्डल सात्विक वातावरण को बनाता है वह याग कर रहा है आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हे देने नही आया हूं विचार यह कि यह प्रेरणा मुझे कहीं से प्राप्त हुई हैं क्या मैं याग के सम्बन्ध में यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है वह याग कर रहा है अपनी देवी से कहता है देवी! आओ, हम याग करें हम देवताओं को हवि प्रदान करना चाहते हैं याग का अभिप्राय है देवताओं को हवि देना है हवि देना है दोनों प्रकार के रुपों से हमे हवि प्रदान करना है हवि किसे कहते हैं अपने विचार और साकल्य और द्रव्य को अग्नि के मुख में परिणत करना है और अग्नि उसका विभाजन कर देती है। अग्नि बेटा! वही अग्नि समुद्रों में वही अग्नि मानो जलों में वही अग्नि मानव के हृदय में वही अग्नि मानव की वाणी में वही अग्नि पृथ्वी के गर्भ में वही अग्नि मानो शीतल बन करके अपने में चन्द्रमा के रुपों में भी रत्त रहने वाली है तो मानो बेटा! अग्नि की विवेचना तो हम देना नही चाहते हैं विचार केवल यह क्या अग्नि पदार्थों का विभाजन कर देती है वह विभक्त हो करके मानो वायुमण्डल को पवित्र बना देती है मानव के अन्तर्हृदय में वह परमाणु जाते हैं तो वह उसे सुगन्धित बना देती है। प्रत्येक मानव बेटा! याग में उद्गाता उद्गीत गा रहा है। देवताओं का उद्गीत गाता हुआ कहता है देवतम् अभ्यं रुद्र भागा ब्रह्मा लोकं रथा मानो देखो इस आभा को ले करके अपने में कहता है कि यह एक रथ है और रथ पर विद्यमान हो करके मेरे प्यारे! देखो द्यौ लोक में प्रवेश होता है तो इसीलिए

आज हम मअनो याग के सम्बन्ध में मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अब मेरे प्यारे! महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् दधिमा रथं वाचन्नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कई समय अपना उद्गीत गा रहे हैं परन्तु उनके उद्वेतु से यह हमे प्रतीत होता है क्या इनके विचारो से यह प्रतीत हुआ है क्या यह राष्ट्रवाद और मानव समाज कितना ऊंचा रहना चाहिए। बुद्धिजीवीयों की व्याख्या करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ने अपना एक ऐसा विचार ऐसा हमे एक मार्ग दर्शाया है जिस मार्ग में एक विचित्रता हमे प्रतीत होती है परन्तु आज का हमारा यह वाक प्रारम्भ हो रहा है हमारी जो यह वाणी है यह जो हम उद्गीत गा रहे हैं यह मृत मण्डल में जा रही है यह पृथ्वी मण्डल पर जा रही है वहां मेरा अन्तरात्मा प्रसन्न हो रहा है। एक याग की मैं पूर्णता को ग्रहण कर रहा था। और अपने में यह अनुभव कर रहा था क्या मैं यज्ञशाला में विद्यमान हूं और यह प्रिय याग हो रहा है मेरा तो अन्तरात्मा सदैव यज्ञमान के साथ रहता है हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। क्योंकि सौभाग्य की चर्चा करते हुए वैदिक आचार्य जनों ने यह कहा है सौभाग्य उसे कहते हैं जहां मानव के हृदय में सदैव एक महानता का प्रवाह गति करता रहे। और गृह एक दूसरे से मानव प्रसन्न रहे वह जो गृह है वह सौभाग्यशाली कहलाता है और जिन गृहों में कलह रहता है विडम्बना रहती है हिंसक विचार रहते हैं वह गृह नारकिक कहलाता है तो आज का हमारा विचार केवल यह है क्या हे यज्ञमान! मेरा अन्तरात्मा सदैव यज्ञमान के साथ रहता है क्या तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तू देवतव क्रियाएं करता रहे मानो तू ब्राह्मण महापुरुषों की वार्ता को तू श्रवण करता रहे जिससे तेरे जीवन में विडम्बना

न आए और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। क्योंकि द्रव्य का सदुपयोग होना बहुत अनिवार्य है यह जो द्रव्य है इसके भिन्न रुप हैं यह द्रव्य मानव को द्रव्यपति बना देता है यह द्रव्य माता के रुप में रहता है मानो देखो जैसे बालक माता की आज्ञा का पालन करता है तो माता उसे सर्वत्र प्रदान कर देती है। उसे सर्वत्रतता दे देती है इसी प्रकार जब यज्ञं ब्रह्मा ममतामयी इस मां का सदुपयोग होता है तो माता सर्वत्र प्रदान करती है इसी प्रकार जो प्राणी द्रव्यों का सदुपयोग करते हैं मानो देखो जब यज्ञमान अपने द्रव्य का सदुपयोग करता है तो देवपुरी को उसके परमाणु बन करके जाते हैं विचारों का साकल्य के साथ में द्यौ लोक में जाते हैं वही मानव देखो द्रव्य की वृद्धि का मूल कारण बन करके मानो देखो यज्ञमान के गृह को ऊंचा बना देता है। तो परिणाम क्या मानो देखो यह यागां ब्रह्मा यह याग ब्रह्मा है यह याग विष्णु है यह याग रुद्र है यही याग मानो देखो अग्निष्टोम माना गया है हम यागों में परिणत हो रहे हैं मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को परिचय देता रहता हूं मानो यागों पर आक्रमण हुआ है यह सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके मानो देखो ऋषि अपने में यागों का चलन करते रहे हैं यागो की मीमांसा करते रहे हैं परन्तु देखो दुर्भाग्य इस समाज का दुर्भाग्य इस जगत का दुर्भाग्य मानो देखो इस पृथ्वी मण्डल क्या लोक लोकान्तरों का जब यहां यागों के ऊपर आक्रमण प्रारम्भ हुआ उस आक्रमण का परिणाम हुआ जो भी नाना प्रकार के रुढ़िवादी प्राणि आए उन्होंने यागो के ऊपर आक्रमण किया है और आक्रमण क्यों किया क्योंकि याग की मीमांसा में परिवर्तितता आ गई और याग में देखो मांस की आहुति देना यागो में गो मेध याग में गऊ की आहुति देना अजा मेध में अजा की आहुति देना इसी प्रकार देखो अश्वमेध में घोड़े के मांस की आहुति देना यहां वाजपेयी यागों में बैल की

बलि का वर्णन आना यह सब देखो उसके अर्थों का अनर्थ करके देखो याग में उनकी आहुति देना याग पर एक विशाल आक्रमण हो गया उस याग पर विशाल आक्रमण होने का परिणाम यह हुआ कि याग के ऊपर आक्रमण हुआ तो देखो जैसा मैंने इससे पूर्व काल में पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय कराया आज का मानव देखो उसी याग के सबसे प्रथम मांस प्रसाद के रुप में आया अब मानव की जीवीका के रुप में आ गया। परन्तु इतना परिवर्तन हो गया है इसीलिए मैं विचार यह दे रहा हूं क्या जिन यागो का शुद्धिकरण होना चाहिए यागो का शुद्धिकरण तो हो रहा है शनै शनै परन्तु व्यापक रुप से होना चाहिए राजा के यहां यागिक पुरुषों को विज्ञान की वार्ता दे करके और राजा से कहे हे राजन्! तेरे गृह में याग होना चाहिए और तेरे गृह में जब याग का शुद्धिकरण होगा तो तेरे राष्ट्र में यह घोषणा हो जाएगी क्या हे राजन्! यागिक ब्रह्मा प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए। जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ऋषि मुनियों की चर्चाएं महाराजा अश्वपित के राष्ट्र कि चर्चा भी कर रहे थे वैज्ञानिकों से कहो हे वैज्ञानिकों! तुम मानो अपने विज्ञानशाला में याग करना प्रारम्भ करो जिससे तुम्हारा विज्ञान सार्थक बनेगा। विज्ञान में एक महानता आएगी मानो देखो यह वाक राजा को पुकार करके अपनी आभा में नियुक्त रहना चाहिए। तो विचार क्या है तो देखो जब प्राणी अपने में दूषितपना करता है तो नष्ट हो जाता है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत ऊंचा एक वाक कल के वाक्यों में कहा था ऋषि अपना व्यक्तव्य दे रहे थे। मानो देखो कौन ब्रह्मचारी कवन्धि का एक व्यक्तव्य इस प्रकार का आया क्या देखो राष्ट्रवाद में राष्ट्रवाद में जब स्वार्थपरता आ जाती है तो राष्ट्र की प्रणाली समाप्त हो जाती है मानो देखो राजा के राष्ट्र में निस्वर्थं ब्रह्मा मानो देखो चुनौती प्रदान करने वाले ऋषि मुनि होते हैं राजा के वह राष्ट्र पवित्रता की

वेदी पर होता है मानो देखो मैंने तो यह पूज्यपाद गुरुदेव को कई काल में प्रगट कराया आज जिस मानो भूमि पर यह हमारी आकाशवाणी जा रही है राष्ट्र बड़ा चिन्तित हो रहा है समाज चिन्तित हो रहा है रक्त भरी क्रान्ति के प्रवाह मानो वह उत्पन्न हो रहे हैं। रक्त बहाया जा रहा है कहां केवल एक रुढ़िवाद की वेदी पर एक रुढ़िवाद बन गया है यहां रुढ़िवाद क्या है नाना प्रकार के धर्म के नामो पर ईश्वर के नामो पर की रुढ़ियां हैं और सब रुढ़ियां यह कहती हैं क्या हम ब्रह्म है रुढ़ि कहती है हम गुरु हैं परन्तु देखो जब रुढ़ियां यह कहती है उसके पश्चात भी रक्त बहाया जा रहा है उसके पश्चात भी रक्त का प्रवाह चल रहा है अरे जब भोले प्राणियों जब तुम ब्रह्म हो तुम सब गुरु और आचार्य हो तो यह मानो एक दूसरे में विडम्बना कैसी उत्पन्न हो गई है यह कैसी विडम्बना आ गई है इसमें केवल स्वार्थ वाद नही तो और क्या है तुम ब्रह्म नही हो ब्रह्म तो वैसे ही उच्चारण कर रहे हो तुम गुरु नही गुरु तो वैसे ही उच्चारण कर रहे हो परन्तु तुम्हारे हृदय में एक द्रव्य की आह लगी हुई है उस द्रव्य की आह से तुम्हारे में स्वार्थपरता है और पूर्वजों के नामो को तुम दूषित कर रहे हो मानो देखो जब यह वाक मैं कहता हूं तो मुझे प्रायः ऐसा दृष्टिपात आता है वैदिक साहित्य पर विचार न होने से वैदिक साहित्य पर अपनी मानवीयता का आभा नियुक्त न होने मानो मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है पूज्यपाद क्या यह सब स्वार्थवाद है आज का राष्ट्रवेत्ता आज का आधुनिक काल का जो राजा है वह प्रजा को सुगठित करना नही चाहता वह रक्त को बहाने में प्रसन्नता अपने में अनुभव कर रहा है और क्यों कर रहा है क्योंकि उसकी राष्ट्रीयता बनी रहे परन्तु देखो तुम जब शास्त्र की और मानवीयता की दृष्टि से यह नही पान कर रहा है कि जिस राजा के राष्ट्र में चिन्ता जो जाएगी रक्त बहाना प्रारम्भ हो जाएगा एक समय वह आयेगा

क्या राजा का रक्त भी मानो नदी के प्रवाह में गति करने लगेगा। मानो देखो इस प्रकार यह मानवीय विचार है जैसा तुम अपने में चाहते हो ऐसा तुम्हारे लिए होना है यदि दर्शनों का अध्ययन करते हो तो तुम दार्शनिक बन जाओगे तुम विडम्बना में रहना चाहते हो विडम्बनित हो जाओगे परन्तु देखो हे राजन्! यदि तू अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाना चाहता है तो मैंने बहुत पुरातन काल में यहां कही नानक के मानने वाले हैं कही मोहम्मद के मानने वाले हैं कही ईशा के मानने वाले हैं कही नाना प्रकार की और रुढ़ियां हैं जो नाना प्राचीनता के ऊपर आक्रमण कर रहे हैं अपने पूर्वजों के ऊपर आक्रमण हो रहा है मानो मेरे विचार में यह नही आ रहा है क्या हे राजन्! तू इसका निराकरण क्यों नही करना चाहता है इसका निराकरण इसीलिए की तेरी यह स्थली बनी रहे यह वाक मुझे प्रिय नही लग रहा है यह मानवीय दृष्टि से भी आभा की दृष्टि से भी महान नही कहलाया जा रहा है। क्योंकि मैंने कई काल में वर्णन करते हुए कहा है क्या जब तू अपने गृह में सुगन्ध को और वेदों की ध्वनि आनी प्रारम्भ हो जाएगी तो यह जो शब्द है जिसमें मानव दर्शन है जिसमें मानो सार्थकता है जिसमें यौगिकता है जिसमें विज्ञानता है जब तू इसको अपनाना प्रारम्भ करेगा तो मानो तेरा राष्ट्र पवित्र बनेगा अहिंसा परमोधर्मी तेरा राषट्र बनेगा परन्तु देखो जब मैं यह कहता हूं तो यह कहते है कि यह संस्कृति तो वृद्ध हो गई है। मानव कहता है आधुनिक काल का क्या यह संस्कृति तो वृद्ध हो गई है अरे भोले प्राणी! वृद्ध संस्कृति नही हुई है मानो देखो वृद्ध तुम्हारे में जो विचार हैं उनमें वृद्धपन आ गया है और उनमें ऐसा वृद्धपन आया है क्या तुम अपने को ऊर्ध्वा में ले जाना नही चाहते। संस्कृति अपने में संस्कृति रहेगी। यह अद्वितीय है वेदमन्त्र ईश्वरीय वाणी है वह अपनी स्थलियों पर रहेगा परन्तु देखो जिससे तुम अपने निराकरण कर सकते तो

वही वैदिकता रहेगी संसार में मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं आपको निर्णय आधुनिक काल के राजाओं प्रजाओं से कहत हूं हे प्रजाओं! जाओ राजा को यदि निराकरण करना है राजा चाहता है कि मेरे राष्ट्र में धर्म के नामो पर रुढ़िवाद न बने और रुढ़िवादों के ऊपर आक्रमण न हो करके रक्तभरी क्रान्ति न आए तो यह इसका निराकरण मैं उच्चारण करता रहता हूं मैं कहता हूं हे राजन्! तू जितने भी नाना प्रकार के सम्प्रदाय हैं नाना प्रकार के रुढ़िवादी हैं इन रुढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित कर और रुढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करके तुझे उसमें वह वेद का अध्ययन करना होगा और तुझे ब्रह्मवेत्ता बनना होगा। और मानो आचार्यों के समीप विद्यमान हो करके उनका शास्त्रार्थ होना चाहिए। उनका चिन्तन होना चाहिए और गम्भीर चिन्तन होते ही उस संस्कृति को उस मानवीयता को राजा को प्रयत्न जिसमें विज्ञान हो जिसमें सार्थकता हो जिसमें मानो देखो मानवीय दर्शन हो उसे तू अपनाने का प्रयास कर यही मानो देखो धर्म है और उस धर्म को अपना करके तुझे रक्षा करनी है और मानव को उसी वेदी पर लाना है जिससे तेरे राष्ट्र में ईश्वर के नाम पर रक्तभरी क्रान्ति न आ जाए। मानो देखो यह इसका निराकरण है परन्तु राजा नही चाहता नानक के मानने वाले हैं मानो देखो रक्तभरी क्रान्ति लाते हैं मोहम्मद के मानने वाले रक्तभरी क्रान्ति में लगे हुए हैं। परिणाम क्या उसके और भी नाना प्रकार के जो रुढ़िवाद हैं मानो देखो उसे गुरु बन रहा है कोई कानावती कह रहा है मानो देखो नाना प्रकार की ईश्वर के नाम पर एक मानो रक्तभरी क्रान्ति का प्रवाह गति कर रहा है। जब मैं यह विचारता हूं क्या यह क्या हो रहा प्रभु के राष्ट्र में तो मैं यही कहता हूं कि यह समाज राजा यागिक नही है राजा जब प्रातःकाल में मानो देखो नाना प्राणियों के बाल्यों को अग्नि में तपा करके मानो उनका रस ग्रहण करता है

जब वह रस ग्रहण करता है जब आसन को त्यागता है तो कैसे अहिंसा परमोधर्म आ सकता है कैसे वह याग को अपना सकता है परन्तु याग तो वह प्राणी अपनाते हैं जो सात्विक प्राणी होते हैं जो प्रभु का चिन्तन करने वाले और राष्ट्र को प्रभु के आश्रित त्याग करके केवल अपने आप कर्तव्य का पालन करते हैं जब ही तो राष्ट्र ऊंचा बनता है परन्तु देखो मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वाक पुरातन काल में भी प्रगट किया है आज भी मैं उन वाक्यों की पुनरुक्ति कर रहा हूं परन्तु देखो आज का मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बुद्धिजीवी प्राणियों की इतनी विवेचना की है परन्तु आधुनिक काल का बुद्धिजीवी प्राणी वह है जो वर्तमान का काल है उसकी चर्चा कर रहा हूं बुद्धिजीवी प्राणी वह है जो दूसरो के श्रृङ्गार को दूसरो के द्रव्यों को अपने द्वारा एकत्रित करके अपने मानो देखो गृहों को सजातीय बनाता है उसमें देखो ऐश्वर्य में परिणत हो करके और वह उसमें देखो सदन बना करके और स्वयं चिन्तित रहता है और वैभव को अपने में संग्रह करने वाला है वह आधुनिक काल में बुद्धिजीवी प्राणी कहलाता है परन्तु देखो यह बुद्धिजीवी नही होते यह तो बुद्धिहीन होते हैं मानो इनको तो मैं बुद्धिहीन कहा करता हूं पूज्यपाद गुरुदेव तो यह कहते रहते हैं क्या यह कटु उच्चारण कर रहा है परन्तु मैं बुद्धिहीन प्राणियों की बुद्धिजीवी प्राणी वह होते हैं जो स्वयं मानो सूक्ष्म सदन में रहते हैं प्रजा की उन्नति को दृष्टिपात करके प्रसन्न रहते हैं कर्तव्य का पालन करते हैं प्रभु के यौगिकवाद में रमण करते हैं वह बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं जैसा पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन किया है और जो राष्ट्रीयवेत्ता राष्ट्रीय आभा को मानो देखो धृष्टा दे रहे हैं वह ही बुद्धिहीन प्राणी होते हैं वह मानो अक्षरों के बोधि होते हैं और जो अक्षरों के बोधि होते हैं वह कर्तव्य का पालन नही करते वह मानो अन्धकार में चले जा रहे हैं परिणाम क्या है मानो देखो

उन्हे प्रकाश प्राप्त नही होता है वह अन्धकार में रहते हैं इसीलि अन्धकार को त्यागना प्रकाश को लाना यही मुनिवरों! देखो हमारे आचार्यों ने बुद्धिजीवी प्राणियों का लक्षण किया है मानो वर्णन किया है आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल वाक यह प्रगट कर रहा हूं क्या मानव को अपने मानवीय दर्शन पर आ जाना चाहिए और राष्ट्र को ऊंचा बनाने वाला देखो राजा नही है राष्ट्र को ऊंचा राजा नही बनाना चाहता है क्योंकि वह पद की लोलुपतता के कारण जितने राष्ट्रीयवेत्ता हैं वह कोई यह नही चाहता की राष्ट्र पवित्र बन जाए। परन्तु देखो वह समय आ रहा है क्या जो यह नही चाहते कि राष्ट्र पवित्र न रहे इनकी ही मृत्यु होने वाली है मानो वही रसातल को चले जाएगें ऐसा मानो देखो मेरा सदैव मानो विचार कहता है विचार क्या है जब मैं इन विचारों को पूज्यपाद गुरुदेव को प्रगट कराता हूं क्या अग्रतं उनकी मृत्यु तो इसीलिए क्या उनका आत्मा का जो चिन्तन है वह समाप्त हो गया है। आत्मबल जब समाप्त हो जाता है तो मानव की मृत्यु हो जाती है परन्तु विज्ञान अपने में सार्थक बन रहा है मैं यह कहता रहता हूं पुरातन काल के विज्ञान के आधार पर आज का विज्ञान ईकाई में रमण कर रहा है वह ईकाई में है क्योंकि पुरातन काल का जो विज्ञान है वह द्यौ लोकों में लोक लोकान्तरों में भ्रमण करके तुम्हे अपने जैसा पूज्यपाद गुरुदेव प्रगट करा रहे थे परन्तु देखो आधुनिक काल का जो विज्ञान है यन्त्रों का निर्माण हो रहा है अग्नेय अस्त्रों का निर्मान हो रहा है। परन्तु वरुणास्त्रों का निर्माण नही हो रहा है। मृत्यु के लिए विज्ञान है जीवन के लिए विज्ञान नही रहा है इसीलिए विज्ञान अपने में मानो देखो ईकाई में रत्त हो रहा है मैं विज्ञान की चर्चा नही देने आया हूं विचार केवल यह कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी यागों की चर्चा कर रहे थे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक ही वाक कहा है क्या संसार में जितने

भी राजा अपने अपने राष्ट्र में यह घोषणा कर दे क्या मेरे गृह में याग होगा और प्रजा के यहां भी याग होगा प्रत्येक गृह में जब यह ध्वनि आती रहे तो त्रुटि समाप्त हो जाएगीं महानता का दर्शन होने लगेगा। प्रजा में शान्ति की स्थापना हो जाएगी अन्यथा नही सकेगी तो विचार यह कि अपने विचारों को शोधन करना आज मैं विशेष चर्चा नही देने आया हूं अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा आज्ञा पाने से पूर्व क्या हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे द्रव्य का गृह में सदुपयोग हो द्रव्य का जहां दुरुपयोग होता है वहां माता का अपमान होता है जहां द्रव्य का सदुपयोग होता है वहां माता का मान होता है माता पिता मानो वह प्रभु हैं वह सर्वत्र प्रदान कर देते हैं तो इसीलिए आज का हमारा विचार यह क्या मानव को द्रव्य का सदुपयोग करना और देखो द्रव्य का दुरुपयोग न करना सदुपयोग करना मानवीय दर्शन में रत्त रहना राजा को अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाने के लिए एकोकी धर्म एकोकी विचार मानवीयता को अपना करके राजा चलेंगे तो राष्ट्र पुनः से पवित्र बन सकता है यह आज का वाक अब मैं अपने वाक्यों को यही विराम दे रहा हूं।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! मेरे प्यारे! महानन्द जी ने अपना एक विचार दिया उनके हृदय में राष्ट्रवाद के प्रति बड़ी विडम्बना रहती है परन्तु उनके यहां एक दाह है विडम्बनित रहती है। विचार तो बड़ा सार्थक रहता है विचारों में एक ही विचार मुझे बहुत प्रिय लगा क्या राजा को धर्म और मानवीयता का निराकरण करना है और अपने को धर्म और मानवता की आभा को अपनाना है एक ही वाक इन्होंने कहा महाराजा अश्वपति की वार्ता को प्रगट करते हुए अपना विचार दिया तो मुझे बहुत प्रिय लग रहा है परन्तु आज का विचार यह कि हम अपने में यागिक बनें ऋसि

मुनियों का एक ही मन्तव्य रहा है क्या उन्होंने प्रत्येक वस्तु को याग से सम्पन्न किया है राष्ट्रवाद को भी यागों से मानवीयता को भी यागों से चरित्र को भी याग से कटिबद्ध किया है तो आज का विचार अब यह समाप्त होने जा रहा है आज के विचार उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए उस परमपिता परमात्मा की महती को अपनाते हुए इस सागर से पार हो जाएं। यह आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः यम शन्ना गतम् आभ्यां देवाः। ओ३म् जनिता रथं ब्रह्म वरुणा गतं रेवाः वायु गताः। ओ३म् मनश्चमा रथम् आपाः३म्। पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनांक २०.०३.१९८६।

14 **०६ ०५ १९८६**

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र अपने में गान गाने वाला है क्योंकि वह गान गाने वाला तो प्रायः गाता ही रहता है प्रत्येक वेदमन्त्र उसका गुणगान गाता ही रहता है। मानो एक ऐसा अनुपम देव है उसे वेद बेटा! महादेव के नाम से पुकारने लगता है। जो देवो का देव कहलाता है वह महादेव कहलाता है इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की आराधना अथवा उसकी महती का वर्णन और महती के आंगन में प्रवेश होना ही एक अभ्योदय ब्रणा तो हम उसकी महती को सदैव जानने वाले बने प्रत्येक मानव का अन्तर्हृदय और उसकी जो मनोनीत

भावना है वह अपने में मानो देखो अपने को ही दृष्टिपात नही करना चाहता प्रत्येक मानव का परम्परागतों का एक मन्तव्य रहा है एक विचार रहा है कि हम सब प्राणी मात्र मानो देखो मृत्युञ्जय बन जाएं। मृत्युञ्जय बनने की एक आकांक्षा लगी रहती है और मानव यह कहता है कि मैं मृत्युञ्जय बन जाऊं मेरी प्यारी माता के द्वार से जब पुत्र का जब विच्छेद होता है तो रुधन वह अपने में रुधन करने लगती है। और मानो देखो यह चाहती है कि मैं मृत्यु को प्राप्त न हो जाऊं तो प्रत्येक प्राणी मात्र का एक मन्तव्य रहा है जब हम उस मन्तव्य के ऊपर चिन्तन और मनन करना प्रारम्भ करते हैं तो कुछ ऐसा प्रतीत होता है क्या हम अपने गम्भीर अध्ययन जिससे हमारी मृत्यु न आ जाए मेरे प्यारे! देखो मृत्युञ्जय बनने के लिए प्रत्येक मेरी माताएं प्रत्येक मानव के अन्तर्हृदय में यह विचार बारम्बार उत्पन्न आते रहते हैं क्या मैं मृत्युञ्जय बन जाऊं मृत्यु मेरे समीप न आए। एक यज्ञशाला में यज्ञमान विद्यमान है उससे जब यह प्रश्न किया जाता है कि यह तू क्या कर रहा है तो उत्तर प्राप्त होता है कि मैं मृत्युञ्जय बनना चाहता हूं। मैं अपने को मृत्यु में नही ले जाना चाहता हूं। वह मृत्युञ्जय बनने की अपनी घोषणा कर रहा है तो मेरे पुत्रों विचार विनिमय क्या कि आज हमे मृत्युञ्जय बनना है जिससे हमारे समीप मानो देखो मृत्यु ब्रह्मवाचो प्रवाह लोकाः हे मृत्यु! तू संसार को रुला देती है। हे मृत्यु! तू मानो देखो विच्छेद करा देती है तो मेरे पुत्रों विचार आता रहता है क्या वास्तव में जब हम यह विचारते हैं कि मृत्युञ्जय बनने की प्रेरणा तो प्राप्त हो रही है वेदमन्त्र भी यही कहता है और जो रसों का स्वादन बना करके अपने में अपको शान्त हो करके जब वह दृष्टिपात करता है तो मेरे प्यारे! देखो उससे एक महानता का प्रायः हमे दर्शन होता है। जिस दर्शन के लिए प्रत्येक मानव परम्परागतों से अन्वेषण और चिन्तन

करता रहा है। परन्तु वेद का मन्त्र कुछ कहता है वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू मृत्युञ्जय बन। मानो देखो तू मृत्युञ्जं ब्रह्मा व्राहे ब्रहे व्रतं लोकाः वेदमन्त्र कहता है हे मानव! तू मृत्युञ्जय बनने के लिए तत्पर हो क्योंकि मृत्युञ्जय बनना ही तेरा कर्तव्य माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो प्रत्येक मानव यज्ञशाला में विद्यमान हो करके यज्ञमान कहता है। मैं मृत्यु को प्राप्त न हो जाऊं मैं मृत्युञ्जय बनूं। प्रत्येक मानव की यह आकांक्षा बनी रहती है कि मैं मृत्युञ्जय बन जाऊं। मेरे प्यारे! देखो मानव के हृदय में यह आकांक्षा कोई नवीन नही है यह सृष्टि के प्रारम्भ से चली आ रही है। तो आओ, मेरे पुत्रों आज हम मृत्युञ्जय कैसे बनेंगे। मृत्युञ्जय की कल्पना तो आती रहती है विचार आते रहते हैं। परन्तु विचार यह आता है कि मृत्युञ्जय बनते कैसे हैं। जिसमें हमारी मृत्यु न आए वह कौन सा यन्त्र है जिसमें विद्यमान हो करके मानो देखो हम इससे पार हो जाएं।

और अपने हम आनन्दमयी हम अपने को इतना मोह न कर पाएं जिससे हमारा जीवन बेटा! उसी मोह के रुप में बेटा! हम स्वतः उस आभा मे निहित हो जाएं और वह मानो देखो मृत्यु भवः सम्भवाः मेरे प्यारे! जब यह विचार आता है तो वेद का मन्त्र कुछ कहता है। वेद का मन्त्र यह कहता है कि हे मानव! तू अपनी अन्तरात्मा को जानने का प्रयास कर। यह जो तेरे द्वारा जो अन्तरात्मा है जिससे शरीर अपनी क्रियाओं में रत्त हो रहा है। अथवा क्रियाशील बना हुआ है उसको हमे जानना है। उसके आंगन में प्रवेश करना है हे मृत्युञ्जं ब्रह्म लोकां देवाः वेद का वाक यही कहता है कि हम अन्तरात्मा को जानने वाले बनें। मेरे प्यारे! देखो हम नाना ऋषिवर विद्यमान हो करके यह प्रसंग उत्पन्न होते रहे हैं क्या यह मृत्यु क्या है जो मानव इससे इतना दुःखित हो रहा है। तो मेरे प्यारे! उसमें कोई वार्ता विशेष तो सिद्ध हमे प्रतीत नही होती है। परन्तु यही है

कि हम मृत्युञ्जं ब्रह्म लोकां वाचन्नमं ब्रह्मे व्रताः हे मानव! हम मृत्युञ्जय बनने के लिए हम वेद की आभा को अपनाने वाले बनें। वेद क्या कहता है वेद यही कहता है क्या हे मानव! तू अपने जीवन को आदर्शवादी बना करके और इस सागर से पार हो। मेरे प्यारे! हमारे यहां परम्परागतों से ही नाना प्रकार का अन्वेषण होता रहा है नाना प्रकार की विचारधाराएं मानव के समीप आती रही हैं जिसके ऊपर बेटा! मान परम्परागतों से अन्वेषण अथवा अनुसन्धान करता रहा है। आज मैं तुम्हे उस अनुसन्धान के क्षेत्र में तो ले जाना नही चाहता हूं। परन्तु विचार केवल यह कि हमारा वेद क्या कहता है। और उपवेद क्या कह रहा है इसीलिए मानव को अपने जीवन को सक्रिय बना करके और जीवन की एक अनुपम धारा को अपनाना है जिसको अपनाने के पश्चात जिसको अपनाने के पश्चात मानव के जीवन में प्रायः एक महानता का दर्शन हो जाए। वेद सुखद को अनुभव करने लगे। तो मेरे पुत्रों देखो आज मैं तुम्हे मृत्युञ्जय बनने के लिए तो नही कुछ विचार देने के लिए आया हूं और वह विचार यह है कि मानव को कितना सुदृढ़ बनना है और मानव को जैसे मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे इससे पूर्व काल में बहुत से मानो देखो मिलन और सुगठितता की इन्होंने अपनी चर्चाएं की हैं। मैं इन चर्चाओं को धारण करके मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है। क्या एक मानव अपने जीवन की आचार संहित का निर्माण कर रहा है। आचार संहित को बना रहा है तो वही आचार संहिता मेरे प्यारे! देखो महान और पवित्र बन करके हम परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्रोत्र को जानने वाले बनें। आजका हमारा वेदमन्त्र जहां यह कहता है आज का वेद का मन्त्र कहता है हे परमात्मन्! मानो तुझे वेद मानो देखो शिव की उपाधि प्रदान कर रहा है। हे शिवम् ब्रह्मा! हे शिव! तू महादेव है क्योंकि तू देवों का देव कहलाता है

मानो देखो तू देवों का देव है कल्याण करने वाला है परन्तु देवां ब्रीहि लोकां ब्रह्मे वाचाः सम्भवाः मेरे प्यारे! देखो वह देवों का देव है जो हमारे यहां दो प्रकार की धाराओं में परम्परागतों से बेटा! देखो महा देखो शिव का वर्णन होता रहा है एक शिव वह कहलात है जो मानो देखो सर्वज्ञ है। द्वितीय शिव वह कहलाता है जो मेरे प्यारे! देखो कुछ मानो अपनी धाराणाओं को ले करके मनो की पूर्ति करना चाहता है मेरे प्यारे! देखो एक वह अपने में प्रतिभाषित हो रहा है हे महा देवों के देव! तू मानो देखो देवताओं का धिपति है तू मानो देवताओं का धिराज क्या मानो ब्रह्मे वाचो देवो व्रताः मेरे प्यारे! देखो शिव नाम परमात्मा का है शिव नाम आत्मा का है शिव नाम मानो देखो बाह्य जगत में शिव एक मानो देखो अपनी एक व्यापकता में परिणत हो रहा है तो आओ, मेरे देखो यह जो शिव जो हिमालयं ब्रहो सम्भवा मानो देखो इससे हम धिराज के नामो से वर्णन करते रहे हैं। मानं ब्रह्मे लोकां हम बेटा! देखो शिव को अपनाने वाले बनें जिस शिव के लिए परम्परागतों से मानो अपने में कुछ अनुसन्धान अपने में तुम्हे कुछ विचार विनिमय कर रहा है। और वह विचार क्या है हम यह चाहते हैं कि वह जो शिव है वह कल्याणकारी है हमारे में मानो देखो कल्याण को जो भरण करने वाला है उसी महादेव को अपना करके हम इस सागर से मानो देखो पार होने का प्रयास करें। परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र यह क्या कह रहा है वेदमन्त्र कहता है कि हे मानव! तू अपने को महान बना करके ही तेजस्वी बना करके तेरे जीवन की एक महान प्रतिभा का जन्म हो जाए। जिस प्रतिभा को तुम अपने से दूरी कर पाए हो यह अग्नि मानो प्रा प्रहे वह प्रेहि के समीप आ जाए। तो मानो देखो लोक और यह लोक दोनों कल्याण के मार्ग के पथिक बन जाएं। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हे देने नही आया

हूं विचार यह देने के लिए आया हूं कि आत्मा का नामोकरण भी विष्णु कहलाता है हे अग्रतं ब्रह्मा! हे आत्मा! तू विष्णु है। हे आत्मा! तू शिव है तू कल्याण करने वाली है। मानो तेरी ही आभा में कल्याण ब्रह्मा वायु सम्भवा लोकां वचतप्रहे लोकां मेरे प्यारे! देखो हम उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते हुए अपने में महानता का प्रायः देखो दर्शन करते रहें। प्रत्येक मानव बेटा! परम्परातों से मानव दर्शन के लिए पुकारता रहता है कि मैं मानव दर्शन में रत्त हो जाऊं तो बेटा! मानव दर्शन किसे कहते हैं मानव दर्शन वेत्ता यह कहता है कि मेरा मानो यह जो क्रियाकलाप हो रहा है इस क्रिया को अन्तिम छोर देना अन्तिम मानो व्यवहार में अपनी अन्तिम रुप देने का अभिप्राय केवल यह कि हम मानो देखो अपने में इतने मानवीय दर्शन मानवीय आभा और विचित्र आभा को अपना करके सागर से पार होना है। तो मेरे प्यारे! देखो यह मानव के हृदय की एक आकांक्षा कहती है हृदय अगम्य हो करके अपने में एक विचार दे रहा है और वह विचार मुनिवरों! देखो वह प्रायः ब्रह्मणा ब्रहे सम्भवा वह विचार अपने में अनूठा बन करके रहता है। तो आओ, मेरे पुत्रों देखो विचार क्या आज मैं तुम्हे ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहत हूं। मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे इससे पूर्व काल में मानो देखो यह चर्चाएं प्रगट करते हुए कहा था। इन्होंने कहा था कि संसार में मानो प्रीति होनी चाहिए। विघटता नही होनी चाहिए। महानता होनी चाहिए और पवित्र बन करके देखो हम कुछ क्रियाकलापों में रत्त हो सकते हैं तो मेरे प्यारे! देखो ऐसा जब उन्होंने अपने विचारा वाचा सम्भवा लोकां मेरे प्यारे! देखो जब यह विचारने लगता है मानव क्या अपने में महान दर्शनं ब्रह्मे वाचप्रव्हा लोकं यज्ञनं ब्रहा मेरे प्यारे! देखो यही तो मानवीय दर्शन कहलाता है जिसमें मानव अपनेपन को विचारता रहता है अपनी

आभा को संयम में लाना प्रारम्भ करता है तो मानव वह यह लोकों की यात्रा में लोकों की आभा में जाना चाहते हैं विचित्रता में जाना चाहते हैं जिससे उससे उसके मानवीयता की मानो देखो रक्षार्थ मानवीयता का मानवीयतव उसके मानव दर्शन के रुप में वह परिवर्तित हो जाए। मेरे प्यारे! वही तो मानव का अनूठा जीवन है जिस जीवन को ले करके मानव अपनी मानवीयता का दर्शन करता रहता है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हे देने नही आया हूं। वेद का मन्त्र कहता है आपं ब्रह्मे इस आत्मा का नाम मानो देखो शिव के रुप में वर्णन किया गया है हे ममत्वां ब्रह्म लोकां आत्माः! मेरे प्यारे! देखो वही तो आत्मा मानो देखो गृहीत कहलाता है जिसके कारण हमारा शरीर एक चेतनित बना रहता है हम चेतना में रत्त होते रहते हैं। तो आओ, मेरे पुत्रों आज हम उस परमपिता परमात्मा की महती को विचारते चले जाएं परमात्मा को जो अनूठा ज्ञान है अनूठा विज्ञान है उस आत्म ज्ञान को पाने के लिए हम सदैव अपनी आभा में निहित रहते हैं तो मेरे प्यारे! विचार क्या आज हम विचार यह कि मेरे प्यारे! महानन्द जी ने यह वर्णन किया भगवान कृष्ण की कुछ चर्चाएं की और भगवान कृष्ण की यह चर्चाएं की क्या उन्होंने क्या मानो देखो कालीदह में जा करके नाग का मन्थन किया और नाग को मानो देखो मन्थन करके लाए। मंगलं ब्रह्मे वर्णसुताः ऐसा मुझे महानन्द जी ने वर्णन कराया। परन्तु जब उन्होंने विखट की चर्चाएं की वास्तविक स्वरुप का वर्णन किया तो क्या वह जो कालीदह में रहने वाला सर्पराज है वह संसार को निगलने के लिए तत्पर हो रहा है। परन्तु देखो उसी को भगवान कृष्ण ने मानो देखो उसकी कृतियों को समाप्त किया। प्रायः ऐसा नही है जैसा महानन्द जी ने वर्णन किया है मेरे विचार में तो यह आता है कि यह समाज की मानवीयता उस समय ऊंचे

शिखर पर विद्यमान था परन्तु देखो उसी के कारण से मानव ने यह अपनी कल्पनाएं की हैं। क्या वह सिंगं ब्रह्मा लोकं विष ब्रव्हा ये विषधर है यह मानव का भक्षण कर जाता है मानो यह तो यथार्थ है उसमें दो युक्तियां नही परन्तु देखो विचारना इसमें यह है क्या वह उन्होंने समाजिक तत्त्वों को कितना महान बनाया है पाताल पुरी की चर्चाएं मेरे प्यारे! महानन्द जी ने की मैंने यह चर्चाएं कई कालों में की है क्या एक समय पातालपुरी से मंगलं ब्रहे सम्भवा राजा रावण के पुत्र नारायन्तक वहां का राज करते रहते थे परन्तु जब राज करते रहते तो सम्भवा प्रव्हा लोकां वहां एक अनूठी क्रान्ति उत्पन्न हुई थी उस काल में पातालपुरी में एक क्रान्ति उत्पन्न हुई और क्रान्ति इतनी विशाल मानो एक प्राणी प्राणी के रक्त का पिपासी बन गया संस्कृति का ह्रास हो गया। संस्कृति के ह्रास के कारण मानो देखो नाग जाति यहां पातालपुरी से आई और पातालपुरी से आ करके देखो भगवान राम के समय में भी आई और कृष्ण के समय में भी आई परन्तु देखो भगवान कृष्ण ने उन नाग जाती को अपने में मानो देखो अपने में विलय कर लिया अपने में उसे अपने समाज में उसका विलय हो गया विलय होने का परिणाम यह हुआ कि यह समाज एक सूत्र में परिणत हो गया एक सूत्र में जब ही परिणत होता है जबकि मानव अपने में यह जान लेता है कि मुझे द्वेषारोप नही करना है मुझे क्रोध की मात्रा नही लानी है मानो देखो मुझे तो अपने उद्देश्य को पूर्ण करना है मुझे कुछ ऐसा स्मरण है पुत्रों मुनिवरों! देखो वह उनको लाया गया सम्भव ब्रहे कोतं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कुछ असभ्य व्यवहार तो प्रायः होता ही रहता है। परन्तु देखो भगवान कृष्ण ने उनको जान करके जानकारी ला करके और वह नित्यप्रति अपने यन्त्रों में श्रवण करते रहते थे क्या उन्होंने ऐसा नृत किया है अमुक प्राणी प्राणी ऐसा नृत किया है परन्तु हम

नृतिकाओं में जाना नही चाहते हैं विचार केवल यह क्या वह नाग जाति नाग आब्रहे वह पातालपुरी से आई मानो देखो उन्होंने अपने में विलय कर लिया अपने में सजातीय बनाया तो इसीलिए मानव को चाहिए। क्या अपने जीवन में महान बनाने के लिए उस आभा को लाने का प्रयास किया जाए जिससे हमारे जीवन में एक महानता की एक ज्योति का दर्शन हो जाए। जिससे महानता की प्रतिभा का जन्म हो जाए जिससे मानो देखो वह नाग अपने में सम्मलित हो गए। यह सर्पराज नाम नही था यह प्रजा एक नाग जाती आई पातालपुरी से आधुनि काल में जिसका नामोकरण कुछ और ही उच्चारण किया जाता है परन्तु देखो वह आई भगवान कृष्ण ने उसे अपने में सम्मलित करने का प्रयास किया और उन्होंने यह कहा कि यह तो हमारा कर्तव्य है यह तो हमारी प्रतिभा कहलाती है उसी के आधार पर अपने जीवन को कहां और कितना महान बनाना है तो मेरे प्यारे! देखो इसके ऊपर विचारना है कि हम समाज में एक मानवता को लाने का प्रयास करें जिससे समाज में सुखद आनन्द की स्थापना हो जाए मेरे प्यारे! देखो इसी प्रकार हमे विचारना है महानन्द जी ने यह प्रगट करते हुए कहा क्या कृष्ण इत्यादियों ने नाग को अपने में धारण किया और अपना करके मानो समाज को सुचारु रुप से चलाना यह राष्ट्रवाद का कर्तव्य कहलाता है तो मेरे प्यारे! देखो मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता रहा है मैंने इससे पूर्व काल में भी यह वाक प्रगट किए हैं मैंने देखो उन्होंने भगवान कृष्ण का छतीस वर्ष और पांच दिवस की आयु में मानो देखो उन्होंने अपने में मिलाने का समाज का क्रियाकलाप किया वह एक क्रियाकलापों में रत्त रहे हैं मानो देखो उन्ही क्रियाओं को जानने के लिए मानव अपने में मानवीयता को जानता रहा है और विचारता रहा है कि हम मानो देखो इस प्रकार की राष्ट्रीय प्रणाली हमारी होनी चाहिए इस

प्रकार के नियम होने चाहिए। जिससे उनमें एक प्रीति की भावनाएं मानो देखो हृदय में ओत प्रोत हो जाएं जिससे हमारा हृदय सत्य और पवित्रता की वेदी पर निहित होता है तो मेरे प्यारे! देखो मुझे कुछ ऐसा स्मरण है क्या उन्होंने बेटा! ऐसा ही किया सब कृति लोकां मुनिवरों! देखो जहां यह विचार आता है क्या नाग जाति ने अपने विराट रुप को धारण किया। तो मानो देखो यह विचार शोभनीय नही है। इन विचारो में मानो देखो कोई अङ्कुरितता नही है तो विचारना यह है क्या आज हम मुनिवरों! देखो अपने जीवन को जहां आध्यात्मिकवाद याग इत्यादियों की विवेचनाएं प्रायः हम करते रहते हैं यहां मानो यह भी एक वाक आता है वहां यह भी विचारधारा आती रहती है तो मेरे प्यारे! देखो उन विचारों को ले करके हम राष्ट्र समाज को ऊंचा बनाने के लिए प्रयास करें। मानो देखो यही चर्चाएं जब मुझे महाराजा शिव का जीवन स्मरण आता रहता है हमारे यहां शिव के नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द माने जाते हैं शिव नाम राजा का शिव नाम परमपिता परमात्मा का है परन्तु देखो यह नाना प्रकार के शिवों की चर्चाएं जब प्रायः प्रारम्भिक हो जाती हैं तो बेटा! विचार आता है इन पर्यायवाची शब्दों में शिवं ब्रह्म वाचो देवाः मेरे प्यारे! देखो हिमालय में जब विश्राम करने वाला हो वह राष्ट्र का पालन कर रहा है महाराजा शिव मानो देखो हिमालय की आभा में निहित रहते थे। और उस मानो देखो वहीं अपनी क्रियाओं में रत्त रह करके क्योंकि मानव का परम्परा का जो एक क्रियाकलाप है वह अद्वितीय माना गया है महाराजा शिव और माता पार्वती मानो प्रातःकालीन याग करते रहते थे प्रातःकालीन याग करना उसके पश्चात उन क्रियाओं से निवृत हो करके अपने अपने गृह अस्सुतं होता रहा है तो मेरे पुत्रों विचार विनिमय क्या महाराजा शिव और पार्वती दोनों मुनिवरों! देखो राष्ट्र का पालन

करते रहते थे राष्ट्रवाद में निहित रहना भी यह मानवीय का एक कर्तव्य कहलाया गया है जिस कर्तव्यवाद की वेदी को अपना करके मानव उसके पूर्ण रुपेण क्रियाकलापों में रत्त रहता है वही बेटा! देखो संसार में महान और पवित्र बन जाता है तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो महाराजा शिव पार्वती बेटा! ब्रह्म याग में परिणित हो करके वे देवपूजा में लग जाते हैं तो उन्होंने कहा एक समय पार्वती बोली की महाराज यह देवपूजा क्या है महाराजा शिव बोले की देवताओं का पूजन करना है देवता कौन हैं मानो देखो देवता वह कहलाते हैं जो देते हैं वह देवता हैं और जो देते हैं उनकी पूजा करनी है मानो देखो उसी की पूजा का अभिप्राय मैंने तुम्हे बहुत पुरातन काल में वर्णन कराया पूजा का अभिप्राय यह है कि यथोचित जो मानो देखो जिसको जैसी वस्तु है उसका उसी प्रकार पूजन करके स्वीकार करता है वही तो एक महानता की वेदी कहलाती है मेरे प्यारे! प्रातःकालीन वह विवेचना करते रहते थे। और वर्णन करते रहते थे क्या हम अपने में प्रणा ब्रहे सम्भव लोकां मानो देखो हम अपनी क्रियाकलापों में रत्त प्रातःकालीन याग करना। ब्रह्म याग में परिणत होना मानो शिव यह कहते थे क्या देवपूजा उसे कहते हैं जो देवताओं का व्यवधान कहलाता है मानो जैसे वायु वेग में गति कर रहा है वह गति प्राणां ब्रह्म वाचो देवाः वह प्राण की सत्ता को ले करके मानो गमन करता है। यदि प्राण सत्ता गति में वायु में न होगी तो वायु का अपना कोई महत्व नही वह परमाणुओं को ले करके अन्तरिक्ष में मानो ओत प्रोत करा देती है जब वह परमाणु अन्तरिक्ष में चले जाते हैं उन परमाणुओं की दो प्रकार की गतियां होती हैं एक मानो वह परमाणु वायुमण्डल में छायामान हो जाते हैं एक वही शब्द के जो परमाणु हैं शब्द के जो अब्रहा रुप हैं उन्हे अन्तरिक्ष में भरण करा देती है। मेरे

प्यारे! देखो वही शब्द बन करके वही आकार बन करके अन्तरिक्ष में ओत प्रोत होता रहा है मुझे स्मरण आता रहता है। महाराजा शिव और माता पार्वती जब अनुसन्धान करते थे अथवा दोनों अपनी विज्ञानशाला में विराजमान हो करके बेटा! देखो वह विचार करते रहते थे और विचारों में अपने में एक महानता की प्रतिभा का प्रायः दर्शन होता रहता। एक समय बोली की महाराज एक वेदमन्त्र मुझे स्मरण आ रहा है और वह वेदमन्त्र यह कहता है सम्भवं ब्रह्म लोकां वाचप्रव्ही लोगृतियां वह बोली की महाराज वेद का मन्त्र यह कहता है कि देवपूजा उसे कहते हैं जो देवताओं की आराधना करता है देवताओं की आराधना करना ही हमारा एक कर्तव्य माना गया है परन्तु जिस आभा को ले करके प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही अपने में विचित्र आभा में निहित रहा है तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि यह जो आकार बन करके अन्तरिक्ष में ओत प्रोत होता है वह आकार मानो देखो भुः भुव स्वः लोकों में रमण करता रहता है और वही अभ्योदय हो करके वही मानो देखो अन्तरिक्ष में मानो देखो ओत प्रोत हो करके वह आकार बन करके रहता है जैसे मानव का शब्द है शब्द मानो देखो एक आकार रुप में परिणत रहता है वह आकार रुप को धारण करता हुआ मानो देखो अपने में सजातीय बनाता रहता है जिस आभा में मानव अपने में पवित्रता की वेदी को अपनाता हुआ और मंगलं ब्रह्मे वाचप्रव्हा उस शब्द को देवी हम किसी भी काल में आकार रुपों में दृष्टिपात कर सकते हैं उन्होंने कहा यह वेद का मन्त्र तो यह नही कह रहा है उन्होंने कहा यह वेदमन्त्र क्या कहता है उन्होंने कहा यह वेदमन्त्र तो यह कहता है क्या सम्भव प्रव्हा वृत्ति लोकां मानो यह जो वायु है यह अपने में गति देने वाली है गतिशील मानो इसमें प्राण रहता है उन्होंने कहा देवी यह प्रणव नही मानो प्राण सत्ता है मानो जो प्राण सत्ता

मानो देखो अग्नि को भी उद्धभुत करने वाली है और अग्नि को उद्धबुध करके वही मानो देखो अकृतियां बन करके अन्तरिक्ष में ओत प्रोत हो जाती हैं उन्होंने कहा प्रभु! यह तो मैंने स्वीकार बहुत पुरातन काल में ही किया था परन्तु मेरा तो आशय यह है कि जैसे हम प्रातःकालीन हम देवपूजा करते हैं और देवपूजा में हम रत्त हो जाते हैं तो देवपूजा मानो देखो हमारे लिए बड़ी सार्थक बन करके मानो देवतव को प्राप्त होती रहती है। यह वेद का वाक कहता है आप उससे विपरीत मुझे उतर दे रहे हैं उन्होंने कहा देवी तुम्हारे जानने में मानो सूक्ष्मता है दोनों का एक ही स्वरूप बनता है दोनों की एक ही धारा बनती है जो धारा अन्तरिक्ष में प्रायः ओत प्रोत हो जाती है मानो देखो इसी के आधार पर मानो देखो भौतिक विज्ञान बेटा! अपने में शब्द को आकारित करके उनका दर्शन करते हैं जैसा मुझे स्मरण आता रहा है जैसा मैंने तुम्हे कई काल में वर्णन कराया है कि

हमारे जो पुत्रो भवा मानो देखो जो समुद्र के तटों पर विद्यमान हो करके मानो देखो याग करते हैं उसके ऊपर अन्वेषण करते हैं विज्ञान को साकार रुप देते हैं और विज्ञान का साकार रुप दे करके यह सिद्ध करते हैं क्या प्रत्येक शब्द मानो देखो हमारा आकारित बन करके अङ्कुरित हो करके वह मानव की मानवीयता में परिणत हो जाता है यह विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होता हुआ मानो वही शब्दों का आकार बन करके नाना प्रकार की चित्रावलियों में परिणत रहता है। आओ, मेरे पुत्रों मैं ब्रहे वाचप्रव्हा लोकां वायु सम्भवं लोकं ब्रह्मा वाचो मेरे प्यारे! देखो माता ने जब यह सर्वत्र उत्तर प्राप्त किया तो उन्होंने कहा एक शब्द है मानो शब्द के साथ में एक मानो देखो एक परमाणु है परमाणु के साथ में और नाना प्रकार के परमाणु जैसे मधु मक्खी है और मधु मक्खी में मानो देखो विशेष मक्खियां होती हैं। जिसको हमारे यहां रानी के रुप में परिणत किया जाता है

धिराजों के रुप में परिणत किया जाता है उसके अन्तर्गत वह सब भ्रमण करती रहती हैं और इसी प्रकार एक मानो शिशु है शिशु नाम का परमाणु है उसके अन्तर्गत परमाणु भ्रमण करते रहते हैं वही मानो देखो यन्त्रों में साकार रुप बन करके मानो एक शब्द का आकार दृष्टिपात होता रहता है जिस शब्द मानो उसकी आकृतियां दृष्टिपात होती रहती हैं मेरे प्यारे! देखो उद्दालक गोत्र में भी देवी होता रहा है और हम भी इसके ऊपर प्रायः अनुसन्धान करते रहे हैं मेरे प्यारे! देखो जब महाराजा शिव ने यह वर्णन किया तो उनकी आभा एक विचित्रता में परिणत हुई। और उन्होंने कहा धन्य है प्रभु आपने मेरे संशय को दूरी किया है मुनिवरों! देखो विचार विनिमय क्या वेद का वाक यह कहता है क्या प्रत्येक जो शब्द है वह आकारित है मानो देखो देवपूजा के हम आकार में जाते हैं तो इसीलिए हमारा जितना भी शुद्ध पवित्र शब्द होगा उतनी ही हम देवपूजा करते रहेंगे। अग्नयाधान करके मानो वही हमारा देवतव कहलाता है। विचार विनिमय क्या मैंने बेटा! देखो कोई विशेषता नही देनी है विचार केवल यह देना है कि हम अपने में महान पवित्र बन करके मानो देखो देवपूजा में परिणत हो जाएं। हमारा देवतव इतना विचित्र है मेरे प्यारे! देखो ब्रह्म का चिन्तन तो प्रातःकालीन प्रायः होत रहता है परन्तु देखो देवपूजा भी प्रातःकालीन होती रहती है देवपूजा का एक ही अभिप्राय है कि हम प्रत्येक देवता को मानो हम अपने में धारण करें अपने में उसका पूजन उसी प्रकार का करें। जैसे हम और देवता मानो दोनों एक सूत्र में आ करके और उस मानो देखो अन्तरिक्ष में उन देवतव में अपनी अपनी आभा में सर्वत्र नृत करने लगे और निहित हो जाए मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने मानं ब्रह्मे जब महाराजा सम्भवं ब्रहे व्रतां बेटा! जब यह वाक श्रवण कर लिया तो वह दोनों अपने में मौन हो गए उन्होंने

कहा धन्य है प्रभु! मेरे प्यारे! देखो यही वाक इसी वेदमन्त्र को ले करके उद्दालक गोत्र के ऋषियों ने संसार की बहुत सी वस्तुओं को जाना है इन्हीं वाक्यो को ले करके विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो करके बेटा! नाना प्रकार के यन्त्रों को जानने का प्रयास किया है और वह नाना प्रकार के यन्त्र विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो करके मानो अपनी आभा में निहित रहे हैं तो विचार क्या मेरे पुत्रों देखो विचारना यह है कि मानव दर्शन को जानना मानो दर्शन को अपने में दर्शाना है और मुनिवरों! देखो समाज को ऊंचा बनाने के लिए हमे अपने में मानो देखो प्रीति को लाना है मैं अभी अभी बेटा! देखो भगवान कृष्ण की चर्चा हम कर रहे थे मानो देखो नाग के मन्थन की चर्चा कर रहे थे। क्या कृष्ण ने नाग का मन्थन किया नाग याग किया उन्होंने याग का अभिप्राय केलव आहुति देना ही याग है यह भी याग है परन्तु इससे वायुमण्डल पवित्र होता है जिससे दूषित वायुमण्डल मानो देखो वह समाप्त हो जाता है। और शुद्धिकरण हो जाता है। परन्तु एक विचारों का शुद्धिकरण है। विचारों का शुद्धिकरण इसीलिए क्योंकि राष्ट्र का जिस भी काल में निर्माण हुआ है राष्ट्र का जिस भी काल में इसका मानो देखो निर्माण होना प्रारम्भ हुआ तो मेरे प्यारे! मेरी प्यारी माताओं का पूजन किया गया माताओं का पूजन होना इस संसार में बहुत अनिवार्य है मैंने बहुत पुरातन काल में महाराजा अश्वपति की भी चर्चाएं की हैं महाराजा अश्वपति के यहां नाना ऋषि मुनियों का समाज एकत्रित हुआ और उसमें यही कहा गया क्या माताओं का पूजन होना चाहिए। पूजन का अभिप्राय क्या है उनका यथोचित मानो देखो उनको स्थान दिया जाए। यथोचित मानो देखो उनकी प्रतिभा को अपने में धारण करना चाहिए। हे माता! तू ही तो शिशु का पालन करती है। तू आयुर्वेद के मर्म को जानने वाली है जब तू आयुर्वेद के मर्म को

जानने लगती है। तो मानो तू सुसज्जित सन्तान को जन्म देती है तू महानता की ज्योति में लाने का प्रयास करती है। तो मेरे प्यारे! विचार क्या हमारे यहां राजाओं महाराजा अश्वपति के यहां भी मेरी प्यारी माता का पूजन बहुत अनिवार्य है पूजन का अभिप्राय केवल यह है क्या मानो देखो उनके आयुर्वेद की विद्याएं वेद के मर्म को जानने वाली हो जिससे उनकी प्रतिभा उनके विचारो में एक साकल्य पवित्र बन सके और वह साकल्य बन करके वह पुत्रेष्टि याग कर सके मानो वह पुत्र याग कर सके। याग का अभिप्राय यह है क्या परमाणुओं को एकत्रित करना परमाणुओं को जहां का तहां परिणत करना मानो देखो याग माना गया है जैसे यज्ञशाला में विद्यमान हो करके यज्ञमान अपने में याग करता है और यज्ञमान जब याग करता है वह स्वाहा कह रहा है वह मानो देखो अपने में वृतियां बना रहा है। और वृतियों को बना करके वह वायुमण्डल को पवित्र बना करके देवताओं को हवि दे रहा है अग्नि में साकल्य प्रदान करता है अग्नि उनका विभाजन कर देती है। और विभाजन करके ही मानो देखो वह नाना रुपों में धारण करके नाना रुप बना करके मेरे प्यारे! देखो वायुमण्डल की प्रतिभा को ऊंचा बना देती है तो विचार विनिमय क्या इसी प्रकार जब माता अपने विचारों से महानता का दर्शन देती है बेटा! मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हे निर्णय दिया क्या जब हम ऋषि मुनियों के वांगमय में प्रवेश करते हैं माताओं की चर्चा करने लगते हैं तो विचार आता है कि वह माता कितनी विचित्र हैं कितनी महान रही हैं जो मानो देखो अपने को अपनेपन को समेट करके और दर्शनों का अध्ययन करना जैसे माता मल्दालसा का जीवन बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है माता मल्दालसा मानो शान्त चित्त हो करके अपने में वह वेद की प्रतिभा का वेद का दर्शन करती रहती और यह कहती है कि बाल्यं ब्रहे वाचं प्रव्हा अपने

गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रगट करती रही हैं। तो मुनिवरों! देखो यह समाज और राष्ट्रवाद बेटा! अपने में मानो विचित्र बनता रहा है राष्ट्रवाद की तो एक ही उपलब्धि है। राष्ट्रवाद तो होता ही इसीलिए है। क्या प्रत्येक प्राणी अपने अपने कर्तव्य का पालन करता रहे प्रत्येक मानव अपने अपने कर्तव्यवाद की वेदी पर निहित रहे और कर्तव्यवाद का पालन करता हुआ मानो देखो अपने में वह महान बनता रहे तो विचार विनिमय क्या पुत्रों क्या आज हम बेटा! तुम्हे यह की राष्ट्रवाद के निर्माण में राष्ट्रवाद की प्रणाली में केवल एक ही वाक आता है कि प्रत्येक मानव अपनी अपनी आभा में निहित हो जाए अपने में वह नाना प्रकार के यागों में परिणत हो जाए तो वह एक मानो देखो राष्ट्रीयता कहलाती है मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं राजाओं की चर्चा में जाता हूं राजा को यह जानना चाहिए कि मैं प्रजा का सेवक हूं और प्रजा यह जाने कि हम अपने कर्तव्य का पान करके राजा को ऊंचा बनाए। मानो देखो अश्व को ऊंचा बनाएं। यह सब प्रजाएं जब अपने अपने कर्तव्य की वेदी पर निहित हो जाती हैं। तो मेरे पुत्र ने मुझे इससे पूर्व काल में भी यह वर्णन मानो पुरातन साहित्य स्मरण आता रहा है वह नाग याग करने वाले भगवान कृष्ण यह नाग याग का वर्णन आता रहता है। नाग का वर्णन क्या क्या नाग जाति वह मानो देखो वह पातालपुरी में जब एक विशाल क्रान्ति हुई उस क्रान्ति के आने से नाग प्राण देखो यहां भगवान कृष्ण ने समाज को एकत्रित करके और मानो देखो याग करने के पश्चात वह नाग याग बन गया कि नाग को अपने में सम्मलित हो गए। अपने में एकोकीकरण हो गया। तो समाज को एकोकीकरण हो गया तो उस समाज का एकोकीकरण करना भी एक याग माना गया है। मानो देखो यह हमारे यहां परम्परागतों से ही प्रायः देखो ऐसा क्रियाकलाप चला आ रहा है जिसके ऊपर

हमारा साहित्य हमारी मानवीयता वैदिकता और देवतव मुनिवरों! देखो उसी में निहित रहा है। मानो देखो वह हिमालय में रहने वाले जो प्राणी थे मानो देखो जो अकर्तव्यवादी उनको भगवान शिव ने मेरे प्यारे! देखो उनको अपने में लाने का प्रयास किया राष्ट्र को ऊंचा बनाया कर्तव्यवाद की भावना देना ही मुनिवरों! देखो राष्ट्रीयता कहलाती है ... शेष अनुपलब्ध। दिनांक ०६ ०५ १९८६।

15 ०७ ०५ १९८६

जीते रहो, देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन होता रहता है। क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमे दृष्टिपात आता है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है चाहे वह जड़वत हो चाहे वह चैतन्यवत हो परन्तु जब अनुसन्धानवेत्ता जन उनके ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ करते हैं और गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो करके और विचार विनिमय करते हैं तो प्रायः सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में मानो एक चेतना दृष्टिपात आती रहती है जिस चेतना के ऊपर सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक उसी चेतना के ऊपर मानव अपनी उड़ाने उड़ता रहा है। चाहे वह योगाभ्यासी हो और भी नाना प्रकार के क्रियाकलापों में चाहे वह रत्त रहने वाला हो चाहे वह नाना प्रकार के अणुओं को एकत्रित करके और नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान में यन्त्रों का निर्माण करने वाला हो परन्तु उस चेतना के ऊपर विचार विनिमय करता रहा है बहुत समय हो

गया है जब ऋषि मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके मानो वह उस चेतना के ऊपर विचार विनिमय करता हुआ वैदिक मन्त्रों का अध्ययन करता रहा है और नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की उड़ाने भी उड़ता रहा है और यही मन्तव्य रहता है क्या मैं उस चेतना को जानने के लिए मैं तत्पर हो जाऊं जिस चेतना से यह जगत अपने में क्रियाशील हो रहा है अथवा जड़वत का भी पिण्ड बना हुआ है और चेतना को भी मानो देखो पिण्ड के आकार में दृष्टिपात करने वाले हमारे यहां ऋषि मुनि रहे हैं और विज्ञानवेत्ता भी रहे हैं परन्तु वह पिण्ड के ऊपर विचार विनिमय करते रहे हैं मुझे बेटा! नाना साहित्य विचार स्मरण आता रहता है और उसी पिण्ड आकार के निर्माण के लिए मानो अपने समाज की व्यवस्था को अथवा अपनी राष्ट्रीयता को ऊंची ऊंची आभा में लाने का प्रयास करता रहा है और यह विचारता रहा है कि मैं जब प्रभु के मौलिक सिद्धान्त प्रभु की जो मौलिकता है मैं उसके ऊपर अपने समाज और मानवता का विभाजन करता रहूं जिससे मानो अपने में मानो कर्तव्यवादी बन जाए ऐसा मुनिवरों! देखो एक एक वेदमन्त्र की आभा को ले करके मानव परम्परागतों से विचारता रहा है मैंने तुम्हे कई काल में बेटा! महाराजा अश्वपति के काल की चर्चाएं की हैं और राष्ट्रों की चर्चा करने से यह हमे सिद्ध हुआ है कि हमारे मानवीय जीवन की धारा को यदि ऊंचा बनाना है और यदि समाज को ऊंचा बनना है और यौगिकता को लाना है तो मानो देखो वह है विचार और वह है सुअध्याय अध्ययन करना मानवीयता का अध्ययन करना यह एक मानवीयता की एक मौलिकता ही कहलाई गई है। परन्तु देखो उसमें ज्ञान और विज्ञान की प्रायः मानव उड़ाने उड़ता रहा है तो ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ना यह एक मानवीयता का एक कर्तव्य कहा गया है दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की धाराओं में चाहे

मानव विचार विनिमय करता रहा है एक हमारे यहां आध्यात्मिक विज्ञान कहलाता है और द्वितीय जो विज्ञान है उसको हमारे यहां भौतिकवाद कहते हैं जिसके नाना प्रकार के अणु और परमाणुओं का निर्माण होता रहता है यन्त्रों में वैज्ञानिकजन यन्त्रित होते रहे हैं। परन्तु एक आध्यात्मिक विज्ञान है जो अपने प्रभु को अपना वरणीय बना करके और एक भौतिक विज्ञान के मार्ग से हो करके आध्यात्मिकवाद में वह प्रवेश करता है परन्तु मन्तव्य भिन्न भिन्न रहता है। बेटा! देखो जो भौतिक विज्ञान है अणु और परमाणुवाद का जो विज्ञान है उसमें मानव अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहता है विज्ञान की यह कल्पना रहती है क्या मेरा नामोकरण हो और राष्ट्र ऊंचा बने और राष्ट्र में शक्ति की मानो देखो संचितता आ जाए और यह विचारता रहता है कि यह शक्ति उपार्जन करने से मानो देखो राष्ट्र में राष्ट्रीयता आ जाती है तो मानो देखो इसके ऊपर मैंने बहुत पुरातन काल में अपने बहुत से विचार दिए हैं आज भी बेटा! मुझे स्मरण आते रहते हैं जब मैं यह विचारता हूं कि हमारे यहां यह जो विज्ञान की उपलब्धियां हैं नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की उड़ाने हैं मानो देखो राष्ट्र को उन्नत बनाना मानो शक्ति का उपार्जन करना है तो यह विचार आता है कि यदि उस शक्ति का सदुपयोग होता है तो मानो देखो राष्ट्र उन्नत हो जाता है यदि उसी शक्ति को विज्ञान के द्वारा हम उपार्जन करते हैं और उस शक्ति का यदि दुरुपयोग होना प्रारम्भ हो जाता है तो राजा के राष्ट्र में एक भ्रष्टता आ जाती है समाज में विकृतता आ जाती है तो इसीलिए हमे विचारना है क्या हम विज्ञानवेत्ता तो बने परन्तु विज्ञान का दुरुपयोग न होने दें जिस भी काल में विज्ञान का दुरुपयोग हुआ है उसी काल में रक्त भरी क्रान्ति का एक संचार रहा है मानो देखो रक्तभरी क्रान्ति की उपलब्धियां हो जाती हैं क्योंकि कर्तव्यवाद न रहने से मानो देखो राष्ट्रीय महान

न रहने से और स्वार्थप्रता होने से मन में मुनिवरों! देखो इस विज्ञान का दुरुपयोग होता है और उसके दुरुपयोग में रक्तभरी क्रान्ति बेटा! उसकी आभा में निहित रहती है तो आज मैं बेटा! देखो विज्ञान के वांगमय में तुम्हे ले जाना नही चाहता हूं विचार केवल यह बेटा! आज मैं तुम्हे ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूं जहां बहुत सी वार्ताएं मैंने बहुत पुरातन कालों में प्रगट की हैं और मानो देखो जिससे हमारे जीवन की प्रतिभा का जन्म होता रहता है बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है क्या हमारे यहां परम्परागतो से एक नियमावली बड़ी विचित्र मानी गई है गृह आश्रम हो चाहे वह विद्यालय हो चाहे वह मुनिवरों! देखो वह वानप्रस्थ चाहे वह सन्यास चाहे कोई भी आश्रम हो परन्तु उनमें एक ही वस्तु महानता का प्रतीक बनी हुई है कि वह विचार विनिमय करते रहते हैं बेटा! गृह में गृह को ऊंचा बनाना हो तो पति पत्नी दोनों का विचार विनिमय पवित्र होना चाहिए। जिस विचारधारा को ले करके मानव के हृदयों का परिवर्तन हो जाता है जैसे हमारे यहां जैसे त्रेता के काल में महर्षि वशिष्ठ और माता अरुण्धति दोनों मानो देखो मध्यरात्रि हो कोई भी पहर हो कोई भी काल हो जब भी वह एकान्त स्थली में विद्यमान होते तो उनका विचार दर्शनों की और मानवीयता पर उनका बेटा! विचार विनिमय होता रहता था। ज्ञान और विज्ञान की वह प्रायः उड़ाने उड़ते रहते थे। तो मेरे प्यारे! देखो वह जो विचित्र विचारधारा है उसमें मानव यदि कोई शत्रु भी बन करके उसके समीप आता है तो उसके हृदय का परिवर्तन हो जाता है जब मानव महानता का दर्शन करता है प्रभु की सृष्टि को निहारता रहता है तो मानो देखो पति पत्नी जब एकान्त स्थली पर विद्यमान होते हैं वह अपनी दिनचर्या आचार संहिता जब परमात्मा के ऊपर जब विचार विनिमय करते हैं तो मानो देखो उनके हृदय का शुद्धिकरण हो करके उनका विचार एक

महानता की वेदी पर आ करके वह बेटा! महानता का प्रदर्शन करता रहता है तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो इसीलिए प्रत्येक मानव को अपने अध्ययन और विचारशाला में जाना चाहिए जिससे आचार संहिता पवित्र बन करके और वह मानवता को महान बना सके और पवित्रता की वेदी पर स्वतः आ सके तो मेरे प्यारे! देखो गुरु शिष्य जब एकान्त स्थली पर विद्यमान होते हैं तो मानो वह एकान्तता में दर्शनों का अध्ययन करते हैं आचार्य से गुरु प्रश्न कर रहा है आचार्य उसका उतर दे रहा है मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी कहता है क्या महाराज मैं आत्मतत्त्व के सम्बन्ध में जानना चाहता हूं वह आत्मा के ऊपर अपना विचार दे रहा है मानो अपनी धारा को परिणत कर रहा है और ब्रह्मचारी को महान बनाने के लिए वह उत्तर देता हुआ अपना विचार दे करके बेटा! विद्यालय को पवित्र बनाता है तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों जैसे गुरु शिष्य दोनों का विचार मेरे प्यारे! देखो जब वानप्रस्थ काल आता है तो बेटा! वहां भी गुरु शिष्य परम्परा पवित्र बना करती है। परन्तु जब सन्यास को मानव प्राप्त होता है अपने वस्त्रों का भी परिवर्तन कर लेता है। परन्तु विचार के साथ में वस्तुओं का परिवर्तन होता है और वही परिवर्तन मेरे प्यारे! देखो मानव कि आत्मीयता का भाव उसके बाह्य जगत में प्रवेश होता रहता है वह एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके मेरे प्यारे! अपने प्रभु से अपनी वार्ता वह प्रगट करता है और वह कहता है प्रभु मेरा जीवन अग्नेय बन गया है। मेरा जीवन अग्नेय बन गया है जो मेरा आभूषण है वह मानो देखो आग्नये अग्नि के ब्राह कृत बन गया है तो मेरा जो वस्त्र है वह अग्नेय है मैं मानो देखो ज्ञान रुपी अग्नि मेरे अन्तर्हृदय में प्रदीप्त हो रही है हे प्रभु! मैं केवल समीप आया हूं मेरा कल्याण कर तो मानो देखो वह सन्यस्थ कहलाता है तो वह सन्यासी अपने प्रभु से वार्ता प्रगट करता है

वानप्रस्थ विद्यालयों में ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणीयों से वार्ता प्रगट हो रही है। और गुरु शिष्य दोनों एकान्त स्थली में बेटा! प्रश्नोत्तर चल रहे हैं गृह आश्रम में पति पत्नी अपने गृह को स्वर्ग में लाने के लिए वह मानो देखो दर्शनों के विचार विज्ञान की चर्चा कर रहे हैं। तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों मानव का जो सबसे महान एक आत्म चिन्तन की जो प्रतिभा है वह महान बना करती है और वह महान जब बनती है जबकि अपने में जो अपनेपन में ही अपने पन को समाहित कर लेता है मेरे प्यारे! देखो मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में देखो राजाओं ने अपने को ब्रह्मवेत्ता बनाया है अपने को ब्रह्मनिष्ठ बनाया है और ब्रह्मनिष्ठ बना करके वह बेटा! ब्रह्मवेत्ता बने हैं ब्रह्मवेत्ता बने बेटा! मुझे स्मरण है एक समय मुनिवरों! देखो महर्षि कागभुषुण्ड जी अपने आंगन में विद्यमान थे मानो देखो वह कुछ विचार विनिमय कर रहे थे महर्षि लोमश और कागभुषुण्ड जी का मुनिवरों! देखो दोनों का विचार विनिमय होता रहता था एक समय मुनिवरों! देखो कागभुषुण्ड जी ने यह कहा महर्षि लोमश जी से क्या महाराज यह शिव क्या है हम शिव के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं तो महर्षि लोमश मुनि ने यह कहा क्या तुम शिव को नही जानते हो उन्होंने कहा हम शिव तो परमपिता परमात्मा को कहा करते हैं जो सबका कल्याण कारक है मानो पर्यायवाची शब्दों में कागभुषुण्ड जी मानो पर्यायवाची शब्दों में शिव नाम परमपिता परमात्मा का है मानो शिव नाम सूर्य का है जो शिव मानो अमृत को मानो समाज को देता है और वह विष को निगल जाता है वह विष को शमन कर रहा है बेटा! वह सूर्य शिव कहलाता है वैदिक साहित्य में यही विशेषता मानी गई है क्या वह अपने में बेटा! अकाटय कहलाता है शिव नाम बेटा! सूर्य का है जो प्रतीचीदिक को भी अपने में धारण कर रहा है। समुद्र

को भी अपने में धारण कर रहा है। वह मानो देखो विष को धारण कर रहा है। और अमृत को प्रदान करने वाला उसका नामोकरण हमारे यहां शिव कहा जाता है। परन्तु देखो कहीं सतोयुग के काल में एक राजाओं ने एक ही मुनिवरों! एक ही मानो पद्धति का निर्माण किया और वह पद्धति क्या क्या मानो देखो शिव नाम के एक राजा बने एक उपाधि मानी गई है हमारे यहां भिन्न भिन्न प्रकार की उपाधियों का हमने वर्णन किया है। हमारे यहां जो ब्रह्मवेत्ता होते हैं ब्रह्मनिष्ठ होते हैं मेरे प्यारे! देखो ब्रह्म की चरी में अपने को चरा लेते हैं उनको ब्रह्मवेत्ता कहते हैं मानो देखो उनकी एक उपाधि बनी रहती है इसी प्रकार जो राजा शिव बन करके जो विज्ञान के ऊपर और मानो देखो अपने राष्ट्र में एक महानता का दर्शन कराने वाले हैं प्रजा के समीप हो करके वह प्रजा को ऊंचा बनाने वाले और वह प्रजा को उपदेश देने वाले हो और राजा ब्रह्मे व्रतां मानो देखो वह कहलाता है जो हिमालय के तुल्य अपने विचारों को बनाता है जैसे हिमालय अपने में ऊर्ध्वा में गति करने वाला है। इसी प्रकार राजा मानो देखो वह शिव कहलाता है जो अपनी प्रजा में मानो देखो महानता का प्रसार करता है विचित्र आभा देता है मानो देखो जो न्याय व्रते जो न्याय में रत्त रहने वाला है और न्याय भी मानो देखो अपनी आभा में नियुक्त कराता हुआ और प्रजा को सुखद बनाता है उसका नाम शिव कहलाता है तो शिव नाम हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! एक उपाधि मानी गई है हमारे यहां कई शिव हुए हैं इस प्रकार के मानो जो हिमालय में प्राणी रहने वाले उनके ऊपर जो आधिपथ्य करने वाला उसका नाम शिव कहलाता है तो मेरे प्यारे! हमारे यहां यह तो उपाधि द्वापर के काल तक नाना उपाधियां चली द्वापर के काल के पश्चात यह उपाधि समाप्त हो गई उसके मूल में यह रहा है क्या महाभारत काल के संग्राम में बुद्धिजीवी

प्राणी का ह्रास हो गया मानो देखो जब बुद्धिजीवी प्राणी का ह्रास हो गया तो वहां देखो बुद्धिजीवी न रह करके उपाधि क्रम भी समाप्त हो गया क्योंकि कर्तव्यवादी उपाधियां बना करते हैं ज्ञान और विज्ञान की धाराओं में उपाधियों का निर्माण होता है और जहां अज्ञान आता है वहां तो अज्ञान अन्धकार आ जाता है। उस अन्धकार में बुद्धिजीवी न रहने से अधिकारी को अधिकार नही प्राप्त कराया जाता तो वह उस काल में भयंकर भयंकर काण्ड होते रहते हैं। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! विचार यह देते हुए महर्षि लोमश मुनि ने कहा हे कागभुषुण्ड जी! तुम्हे प्रतीत है क्या मानो देखो शिव नाम उस राजा को कहा जाता है जो विज्ञान के ऊपर अधिपथ्य करने वाला हो मानो देखो जो विज्ञान की ऊंची ऊंची उड़ाने उड़ने वाला हो और अपने में विवेकी रहने वाला हो विवेकवादी जो राजा होता है उसको शिव कहते हैं मानो देखो वह अपने में महानता का दर्शन करता रहता है। विचार क्या मानो देखो हमारे यहां वह अपने में अहिंसा परमोधर्म राष्ट्र को सम्बोधित करता हुआ प्रजाओं को हे प्रजाओं! तुम मनस्तव में प्रदान करते हुए मानो देखो विवेक में परिणत हो जाओ तो विवेक में जाने से मानो देखो राजा शिव की उपाधि को प्राप्त करता रहता है तो विचार मेरे प्यारे! आता है जैसे इन्द्र है हमारे वैदिक साहित्य में इन्द्र का बड़ा वर्णन आता रहता है परन्तु देखो वैदिक साहित्य में भी इन्द्र के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं जैसे इन्द्र नाम राजा को कहा गया है। इन्द्र नाम विद्युत को कहा गया है। और इन्द्र नाम आत्मा को कहा गया है। और इन्द्र नाम परमपिता परमात्मा का भी है। तो इन्द्र का नाम जो शनुशासन में लाने वाला है उसी का नाम इन्द्र कहा गया है। मानो देखो विद्युत वेग में वायु रमण कर रही है वायु के इन्द्र के नामो से सम्बोधित किया जाता है और इन्द्र वह राजा है जो देवताओं का राजा है देवताओं

के राजा को इन्द्र कहते हैं वह देवता कौन हैं जो अपने राष्ट्र की प्रणाली को पवित्र बना सके राजा के राष्ट्र में प्रजा की आचार संहिता पवित्र हो मानो देखो उस राजा का नाम इन्द्र कहा गया है। अब वह इन्द्र मानो देखो देवताओं का राजा है देवताओं का राजा तो परमपिता परमात्मा ही कहा जाता है देवपुरी का राजा परन्तु देखो यहां लौकिक वातावरण में जब इन्द्र को उपाधि राष्ट्र की दी जाती है तो सर्वत्र राजाओं का एक राजा होता है उसका नाम इन्द्र कहा जाता है मानो देखो जितने पृथ्वी पर राष्ट्र होते हैं उन राष्ट्रवेताओं का जो राजा होता है उसको इन्द्र कहते हैं और मानो देखो कोई भी राष्ट्र में आपातकाल हो तो इन्द्र के समीप जा करके उस आपातकाल का निवारण करना यह राजाओं का कर्तव्य कहा गया है। तो मानो देखो उस राजा का नाम इन्द्र है इन्द्र की उपाधि भी देखो हमारे यहां महाभारत काल तक उसका चलन रहा उसके पश्चात यह उपाधि भी समाप्त हो गई। तो परिणाम क्या मुनिवरों! मुझे कई कालों में ऐसा प्रतीत हुआ है क्या इन्द्र वह जो मानो देखो यागिक है उस राजा को इन्द्र कहा जाता है जो यागिक है वह कई प्रकार के यागों को रचना में लाना वाला है मेरे प्यारे! देखो मेरे प्यारे! देखो वह सुगन्ध देने वाला है वह दुर्गन्ध ने देने वाला है वह सुगन्ध देता है। उस राजा का नाम इन्द्र कहा जाता है तो मेरे प्यारे! देखो जो सदैव याग में रहता है उसको हमारे यहां देखो इन्द्र की उपाधियां प्राप्त होती रहती है तो मानो देखो राजा का नाम इन्द्र कहा जाता है तो विचार क्या मैं उपाधियों के क्षेत्र में जाना नही चाहता हूं। विचार केवल यह कि उन्होंने कहा यह सर्वत्र एक उपाधि है मानो देखो हमारे विष्णु है हमारे यहां विष्णु को भी उपाधिबद्ध माना गया है। विष्णु उसे कहते हैं जो मानो देखो हमारे यहां राजा बन करके चार भुजों को अपनाने वाला है। चार नियम राजा के राष्ट्र में विशेष होते हैं

जो राजा अपने राष्ट्र को और प्रजा को धारयामि बनाने वाला हो उसका नाम बेटा! विष्णु कहा जाता है हमारे वैदिक साहित्य विष्णु सूक्त आते हैं कई स्थलियों पर देखो विष्णु सूक्तों का वर्णन आता है तो कही पर विष्णु नाम सूर्य को माना गया है। क्योंकि वह प्रकाश को देता है अन्धकार को अपने में धारण करता है। तो जो अन्धकार को अपने में धारण करता है प्रकाश को अपने में प्रदान करता रहता है। बेटा! उसका नाम सूर्य कहा जाता है। राजाओं में वह विष्णु कहा जाता है मेरे प्यारे! देखो वह विष्णु कहलाता है हमारे यहां वैदिक साहित्य में विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं परन्तु विष्णु वह क्या जो भी रक्षा करने वाला हो प्रकाश देने वाला हो बेटा! उसी का नाम विष्णु कहा जाता है तो विचार विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो राजाओं में वह विष्णु जो मानो देखो चार भुजाओं वाला राजा हो चार वह चार भुजों को मानो चार भुजाओं वाला राजा हो चार भुज को जो धारण करने वाला है तो बेटा! उसका नाम विष्णु कहा जाता है। मानो देखो आत्मा का नाम विष्णु है। जो ज्ञान और विवेक में परिणत हो जाता है वही मानो वह ज्ञान के अक्षयक्षीर सागर में वह विश्राम करता हुआ वह आत्मा ही मुनिवरों! मानो देखो विष्णु कहलाता है विष्णु मानो सूर्य को कहलाते हैं जो प्रकाश को देता रहता है अन्धकार को निगलता रहता है उसका नाम विष्णु है मेरे प्यारे! विष्णु जो अव्रतम् समुद्रों से मिलान करते हैं मानो समुद्रों से विष्णु की किरणे मिलान करती हैं। समुद्रों से मिलान करती हुई जलों का अपने में शोषण करती हुई जो धीमी धीमी जो वृष्टि करता है जो मानो मेघमण्डलों के द्वारा यह पृथ्वी नाना प्रकार के वयज्ञनों को देने वाली है वाह री मेरी माता तू कितनी विचित्र है बेटा! जब माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु माता के गर्भस्थल में होते हैं तो यह सूर्य बेटा! देखो प्रकाश देता है। यह सूर्य ऊर्ज्वा देता है माता

प्रसन्न हो रही है सूर्य प्रकाश दे रहा है अग्नि मानो देखो उष्णता में परिणत कर रही है। अमृत को बहाने वाला चन्द्रमा के द्वारा वही तो सूर्य कहलाता है मेरे प्यारे! देखो वायु इन्द्र बन करके एक महान सानितव प्रदान कर रही है यह पृथ्वी गुरुतव दे करके मेरे प्यारे! माता के गर्भस्थल में मेरे प्यारे! जब माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे अपने तपन को ले करके मानो उसकी रक्षा कर रहा है। २३.०० मिनट गुणवता अच्छी नही है।

16 ०८ ०५ १९८६

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का पठन पाठन करते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमे दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र मानो एक परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन करता रहता है इसीलिए हमारा वेदमन्त्र यह कहता है क्या हम उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा को हम प्रायः अपने क्रियाकलापों में लाते चले जाएं क्योंकि जो प्रत्येक मानव जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा को अपनाने वाला बनता है तो यह समाज और मानव तो प्रायः पवित्र बन जाता है आज का हमारा वेदमन्त्र हमे कुछ प्रेरणा दे रहा है हमारा वेदमन्त्र एक एक शब्द उस परमपिता परमात्मा

के ज्ञान और विज्ञान से पिरोया हुआ है अथवा उसमें वह ओत प्रोत हो रहा है। हमारे यहां ओत प्रोत की चर्चाएं प्रायः परम्परागतों से ही मानवीय जीवन में निहित रही हैं क्योंकि मानव उसी को कहते हैं जो एक दूसरे में समाहित हो जाता है और जिसमें वह समाहित हो जाता है मानो उसी में वह रत्त हो करके उसी का गुणगान गाता है। तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए जो यह ब्रह्माण्ड मानो अपने में एक अनूठा प्रतीत हो रहा है इस ब्रह्माण्ड को हम अपने से दूरी करते हुए जो ब्रह्माण्ड में जो वस्तु मानो समाहित हो रही है और जिस वस्तु का प्रत्येक मानव जिस चेतना का अनुसरण करता रहा है उस महान क्रिया को हमे जानना है मेरे प्यारे! देखो यहां एक मण्डल दूसरे से पिरोया हुआ है एक मानव मानव से पिरोया हुआ है। मानव मानव में समाहित हो रहा है। तो मेरे प्यारे! यह तो परमात्मा का एक अनूठा जगत है अनूठी एक प्रतिभा है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण करता रहा है मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हे बेटा! अपना विचार देते हुए कहा था क्या सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना प्रकार के विज्ञान में मानव लगा हुआ है आध्यात्मिकवाद में भी लगा हुआ है और उसकी यह इच्छा होती है कि मैं अपने में मृत्युञ्जय बन जाऊं क्योंकि मृत्युञ्जय बनने की प्रत्येक मानव परम्परागतों से बेटा! उड़ाने उड़ता रहा है मानो देखो याग इत्यादियों में यह परिणित हो जाता है। जैसे हमारे यहां महाराजा अश्वपति के यहां बेटा! जब भी कोई याग होता। चाहे वह याग वृष्टि याग के रुप में हो चाहे वह वाजपेयी याग के रुप में हो चाहे वह अग्निष्टोम याग के रुप में हो। परन्तु चाहे वह अश्वमेध याग हो किसी भी प्रकार का याग हो महाराजा अश्वपति के यहां जब भी याग हुआ तो बेटा! उसमें एक से एक ऊर्ध्वा में प्रश्न करना

प्रारम्भ हुआ मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है महाराजा अश्वपति के यहां बेटा! एक याग हुआ जिसको हमारे यहां अग्निष्टोम याग कहा जाता है तो मेरे प्यारे! देखो महाराजा अर्द्धभाग ने अपनी देवी से कहा कि हे देवी! महाराजा अश्वपति के यहां एक याग हो रहा है और मैं उस याग में उद्गाता बनना चाहता हूं। मेरे प्यारे! देखो देवी ने कहा भगवन बहुत प्रिय आप यज्ञ में यागां भविते क्योंकि यह तो जितना भी ब्रह्माण्ड है यह एक याग रुप है और राजा अपने राष्ट्र में याग करा रहा है। वह मानो प्रजा और अपने में दोनों में जो अन्तर्द्वन्द्व है उसको उसकी अन्तर्द्वन्द्वता को समाप्त करने का नाम मानो याग कहा जाता है महाराजा अश्वपित का राष्ट्र एक ऐसा राष्ट्र है जो मानो अपने में प्रजा का किसी प्रकार का जो अन्तर्द्वन्द्व है उसे वह प्रकाश में लाना चाहते हैं तो मेरे प्यारे! देखो महाराजा अश्वपति के यहां याग की सब क्रियाएं मानो देखो सम्पन्न हो गई थी वह मानो देखो जो क्रियाएं सम्पन्न हुई तो महाराजा देखो महर्षि अर्द्धभाग ब्रव्हे मुनिवरों! देखो वह जा करके उद्गाता के आसन पर विद्यमान हो गए जब उद्गाता के आसन पर विद्यमान हो गए तो मुनिवरों! देखो महारजा अश्वपति ने कहा हे ऋषिवर! तुम याग में मानो अपने उद्गाता के आसन पर विद्यमान हो गए हो। मैं यह नही जान पाया हूं कि तुम उद्गाता के योग्य हो या नही तो मेरे प्यारे! देखो जब राजा ने यह कहा तो उन्होंने कहा प्रभु! यह सुयोग्य और अयोग्य की वार्ता भी नही है। यह तो उद्गाता के सुयोग्य हूं परन्तु मैं वेद का पठन पाठन जानता हूं। इसीलिए मैंने इस आसन को ग्रहण कर लिया है। तो मेरे पुत्रों देखो महाराजा अश्वपति ने कहा क्या हे ऋषिवर! आप जिस याग में सम्मलित हो गए हो मानो उद्गाता बनना चाहते हो तो मानो तुम उद्गाता क्यों बने हो उद्गाता का रहस्य क्या है उन्होंने कहा उद्गाता कहते हैं जो वेदों का उद्घोष करता है। जो

मानो देखो वेदो का उद्घोष करके प्रत्येक यज्ञमान की वाणी को जो स्वाहाः कह रहा है जो याग का आत्मा है मानो देखो उस स्वाहा को मैं द्यौ लोक में परिणत कराना चाहत हूं। मुनिवरों! देखो क्योंकि वेद का जो मन्त्र है उसका जो देवता है उसी देवता के माध्यम से मानो देखो यज्ञ में परिणत करना चाहता हूं मुनिवरों! देखो राजा ने कहा यथार्थ परन्तु देखो पुनः उन्होंने यह प्रश्न किया क्या महाराज देखो यज्ञमान याग करने जा रहा है यह याग तो मृत्युञ्जय बनाने के लिए मानो देखो मृत्युञ्जय बनने के लिए याग होता है यह यज्ञमान मृत्यु को कैसे पार कर सकता है इसमें आप क्या उत्तर दे सकेंगें। तो मेरे प्यारे! महात्मा अर्द्धभाग ने कहा कि महाराज यज्ञमान जो उद्गाता बना हुआ है। अप्रतम् उद्घोष ब्रह्मण व्रता मैं जो उद्गाता बना हूं वह उद्गाता के रुप में है। वह वाणी से साकल्य से उद्गीत गा रहा है। मैं देवता के माध्यम से उद्गीत गा रहा हूं। परन्तु देखो यह जो ब्रह्मे व्रतां देवाः यह जो यज्ञमान जो मृत्युञ्जय बनना चाहता है। यह व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश होना चाहत है। व्यष्टि किसे कहते हैं और समष्टि किसे कहते हैं बेटा! व्यष्टि कहते हैं मानो एक सङ्कीर्ण अपनी एक आभा को जितना भी सङ्कीर्ण उसका एक नृत हो रहा है। उस मानो स्थली पर हो रहा है उसे हमारे यहां व्यष्टि कहते हैं और समष्टि उसे कहते हैं जो व्यापक रुप से किसी वस्तु को विचार लिया जाता है। जैसे एक मानव नेत्रों से संसार के नाना प्रकार के पदार्थों को वह दृष्टिपात कर रहा है परन्तु उन पदार्थों की जो स्थिति है। यह मानव के हृदय में स्थिर हो जाती है। नेत्रों से दृष्टिपात कर रहा है। हृदय में वह परिणत हो रही है। मेरे प्यारे! देखो शब्दों से शब्दों को ग्रहण कर रहा है। परन्तु देखो हृदय में उसकी स्थिति हो रही है। इसी प्रकार त्वचा से मानो प्रीति कर रहा है। वायु का भान कर रहा है वह भी हृदय में प्रवेश कर रही है। मानो

इसी प्रकार मानो देखो ब्रहे वाणी से उद्गीत गा रहा है। उस शब्दों की प्रतिभा का जो वर्णन हो रहा है वह मानव के हृदय में हो रहा है। तो मानो देखो यह जो घ्राण है यह नाना प्रकार के मन्द सुगन्द को अपने में ग्रहण कर रही है। परन्तु देखो हृदय में उसकी स्थिति हो रही है। यह हृदय ही बेटा! इस ब्रह्माण्ड का एक केन्द्र माना गया है इस ब्रह्माण्ड के ऊपर चिन्तन कर रहा है। चिन्तन करता करता उसकी स्थिति मानो हृदय में प्रवेश कर जाती है। हृदय में ही मुनिवरों! देखो सर्वत्रता में परिणत हो जाता है जैसे एक मानव देखो लोक लोकान्तरों की गणना कर रहा है। लोको में प्रवेश करना चाहता है। नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की उड़ान में लगा हुआ है। परन्तु उसकी जो स्थिति है वह भी हृदय में समाहित हो जाती है। तो मेरे पुत्रों विचार विनिमय क्या एक मेरा मानो देखो यह विचार रहा है। क्या यह संसार कितने रुपों में परिणत हो रहा है। मानो देखो नाना प्रकार की सृष्टि की रचनाएं हो रही हैं। उन रचनाकारों में चार प्रकार की मुनिवरों! देखो सृष्टि का निर्माण हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो जो स्थावर है अण्डज है, जंगम है और उद्भिज सृष्टि कहलाती है। यह चारों प्रकार की सृष्टियों का जो निर्माण हो रहा है। उसके निर्माण का जो क्रियाकलाप है उसकी भी स्थिति मानव के हृदय में प्रवेश कर जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो हृदय से नाना प्रकार के शब्दों की रचनाएं होती हैं। और वह आकारित बन करके बाह्य जगत में प्रवेश कर जाती हैं। बाह्य जगत का भी ब्रह्माण्ड बन रहा है आन्तरिक जगत भी निर्माणित हो रहा है। तो मेरे पुत्रों यह कैसा विचित्र मानो एक कृत है। तो हृदय में भी हृदय आलिंगन हो रहा है। परमपिता परमात्मा के हृदय से जब मानव के हृदय का समन्वय होता है। समन्वय होता हुआ मेरे पुत्रों देखो वह समनं ब्रीहि व्रतां ब्रहे वर्णसुता वेद का वाक कहता है जहां समन्वय हुआ

परमपिता परमात्मा के उस साधक का बेटा! मिलान हो जाता है। वह जो मानव हृदय रुपी यज्ञशाला में जो हृदय में मानो देखो व्यापक रुप से दृष्टिपात करता है। समष्टि में प्रवेश कर जाता है तो समष्टि कहते हैं इस ब्रह्माण्ड की ऊर्ध्वा कल्पना का नाम और हृदय में उसका चिन्तन उसका नाम बेटा! समष्टि कहा जाता है और व्यष्टि कहते हैं सङ्कीर्णता को जैसे एक मानव एक चिन्तन कर रहा है और चिन्तन करता हुआ एक सुन्दरी का दर्शन कर रहा है। परन्तु दर्शन करता हुआ अपने भोले ब्रहे मानो देखो उसमें एक विचार आता है व्यापक और एक सङ्कीर्ण विचार आता है परन्तु सङ्कीर्णता का नाम ही मानो व्यष्टि कहलाता है। और जब उसमें यह आता है कि मेरा प्रभु कितना कलाकार है कितना मानो निर्माणवेत्ता है उस मेरे प्यारे! प्रभु ने कैसा सुन्दर यह मानो देखो रचना वृत्तियों में निर्माणित की है और माता के गर्भस्थल में की है। लेपन करने वाला वह विश्वकर्मा है मानो देखो विश्वकर्मा कितना महान है। कितना मानो देखो उज्जवल है और कितनी महानता की रचना कर रहा है। तो बेटा! देखो वह समष्टि कहलाती है। तो इसीलिए मानव अपने जीवन को ऊंचा बनाना चाहता है तो वह समष्टि में प्रवेश हो जाए और व्यष्टि को त्यागने का व्यष्टि को मानो उसे समाप्त करने का प्रयास करता रहे तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों देखो हमारे यहां वैदिक ऋषि ने कहा है हे राजन्! हम समष्टि और व्यष्टि में प्रवेश करना चाहते हैं और उसी को हमारे यहां उद्गाता कहा जाता है। तो मेरे देखो राजा ने यह वाक स्वीकार कर लिया राजा तो मौन हो गए परन्तु देखो राजलक्ष्मी उपस्थित हो करके बोली क्या हे प्रभु! यह जो आप उद्गाता बने हैं उद्गाता बनने का आपका अभिप्राय क्या है उन्होंने कहा हे देवी! मैं जो उद्गाता बन गया हूं मैं उद्गीत गाने के लिए जिससे मेरी वाणी पवित्र बन करके और मैं यज्ञमान की वाणी को पवित्र

बना सकूं। होताओं की वाणी को पवित्र बना सकूं मानो देखो मेरा मन्तव्य यही है क्या उद्गाता बनने का कि मेरी वाणी द्यौ लोक में प्रवेश हो जाए और जितनी मानव की वाणी वैदिक मन्त्रों से सजातीय होती है उतना ही मानो देखो द्यौ लोक और यह मानो देखो भू भुवः स्वः यह लोक पवित्र बन जाते हैं गृह पवित्र बन जाता है जैसे मानो देखो जिस राष्ट्र में जिस गृह में मैं विद्यमान हूं। उसमें मैं उद्गाता बन करके उद्गीत गा रहा हूं। वाणी को सजातीय बना रहा हूं। वेदमन्त्रों के द्वारा मानो प्रकाश से मैं अपनी वाणी को कटिबद्ध कर रहा हूं। तो वही वाणी पवित्र बन करके ब्रह्म वाचो प्रव्हा वह वायुमण्डल को गृह को पवित्र बनाती हुई मानो देखो मानव के हृदय को स्वच्छ बनाती रहती है। विचार विनिमय क्या बेटा! जिस गृह में मानो दर्शनों का अभ्यास होता है। दर्शनों का और वेदमन्त्रों का उद्गीत गाया जाता है। वह गृह पवित्र हो जाता है। और जिस मानो देखो गृह में कलह रहता है। वहां नारकिकतता मानो समाहित हो जाती है। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो इसीलिए मानव को अपनी वाणी को पवित्र बनाना है मेरे प्यारे! देखो देवी इस वाक को श्रवण करके मानो देखो मौन हो गई और याग प्रारम्भ होने लगा तो मेरे प्यारे! देखो याग जैसे ही प्रारम्भ हुआ उस समय ब्रह्मे वाचप्प्रव्हा लोकां वेद का आचार्य जब बेटा! उद्गीत गाने लगा उद्गाता बन करके उद्गीत जब गाने लगा तो मुनिवरों! देखो जब उद्गीत हृदय से आलिंगन करता हुआ जब बाह्य जगत में प्रवेश करता है तो वह अशुद्ध परमाणुओं की प्रतिभा को नष्ट करता चला जाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं गम्भीरता में तुम्हे ले जाना नही चाहता हूं आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है क्या परमपिता परमात्मा ने जो सृष्टि का यह सृष्टि का सृजन किया है मानो निर्माण किया है यह ब्रह्माण्ड की एक प्रकार की बेटा! यज्ञशाला के रुप में

परिणत रहती है मानो यह यज्ञशाला है यह यज्ञशाला मानो देखो मेरे प्यारे! प्रभु ने सृष्टि के प्रारम्भ में इस यज्ञशाला को उत्पन्न किया है। इसमें मानो एक दूसरा प्राणी क्या जड़वत क्या बेटा! एक दूसरे में ओत प्रोत होता हुआ मुझे दृष्टिपात आता है एक माला के सदृश्य यह ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगता है। जैसे बेटा! माला है और माला में सूत्र है और मनके हैं दोनों के समन्वय का नाम ही मेरे पुत्रों देखो माला कहलाती है। इसी प्रकार यह जो संसार रुपी यज्ञशाला है मानो देखो इसमें ब्रह्मा उद्गीत अप्रतं ब्रह्मा वाचो मानो देखो कोई यज्ञमान बना हुआ है। कोई उद्गीत गा रहा है उद्गाता बना हुआ है कोई अध्वर्यु बना हुआ है। कोई मानो देखो यज्ञमान बन करके ब्रह्मा से प्रार्थना कर रहा है कि भगवन आप मेरे इस याग को सम्पन्न कीजिए। तो मेरे प्यारे! देखो यह उद्गीत गाता हुआ जो व्रत है आज उसी को आज हमे यह दृष्टिपात आता है कि यह जो ब्रह्माण्ड है यह एक प्रकार की यज्ञशाला है मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मा परमपिता परमात्मा देखो ब्रह्मा बना हुआ है। आत्मा यज्ञमान है पञ्चमहाभूत मुनिवरों! देखो यह होता बन करके इस यज्ञशाला में बेटा! आहुति दे रहे हैं होता बन करके मानो इस ब्रह्माण्ड को क्रियाशील बना रहे हैं तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों जब हम यह विचारते रहते हैं कि हमारा वाक हमारा यह वाक शक्ति क्या कहती है कि मुनिवरों! देखो उसको हमे ऊर्ध्वा में लाना है मानो देखो ऊर्ध्वा और इस ब्रह्माण्ड को जान करके हम विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो जाते हैं मेरे प्यारे! देखो यह इस प्रकार की जैसे यज्ञशाला है जानकारी के लिए यही विज्ञानशाला बन करके रहती है। मेरे पुत्रों देखो जैसे माला है मैंने माला का उद्धृत विचार देते हुए अपने वृत्तियों में कहा है जैसे माला है माला में बेटा! एक धागा है सूत्र है इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड का इस यज्ञशाला रुपी इस जगत का भी बेटा! कोई न कोई

सूत्र बना हुआ है। जिसमें यह पिरोई हुई है। और जिसमें मानो एक दूसरा परमाणु पिरोया हुआ है। मेरे पुत्रों देखो मुझे वह काल स्मरण आता रहता है बेटा! जब भारद्वाज मुनि के विद्यालय में मेरे पुत्रों देखो ब्रह्मचारी सुकेता ब्रह्मचारी कवन्धि दोनों मानो देखो अपने एक यन्त्र के द्वारा यन्त्र के द्वारा बेटा! शब्द के ऊपर मानो वह अनुसन्धान करते रहते थे। वह शब्द उनके साथ में जो चित्रावली बेटा! देखो गति करती अन्तरिक्ष में प्रवेश कर जाती मानो उसको दृष्टिपात करते रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो जब मैं विज्ञान के वांगमय में हम प्रवेश करते हैं विज्ञान की धाराओं में हम मानो ओत प्रोत हो जाते हैं तो बेटा! यह ब्रह्माण्ड एक प्रकार का मानो खिलवाड़ दृष्टिपात आने लगता है मानो देखो एक मालब्रव्हे वाचन्नमं ब्रह्मा वायु लोकाः मेरे पुत्रों देखो एक दूसरे में ओत प्रोत होने वाला जगत है जैसे आज का हमारा वेदमन्त्र कुछ कह रहा था। आज का वेदमन्त्र यह कहता था सम्भवं लोकां रथं ब्रह्मे वायु सम्भव ब्रहा वाचन्नमं ब्रहा मेरे प्यारे! देखो यह वेदमन्त्र यह कहता है क्या आज हम मुनिवरों! देखो प्रत्येक शब्द के साथ में एक आकार दृष्टिपात करते हैं मेरे प्यारे! देखो शब्द के साथ में एक शिशान्त है मानो देखो इसके अन्तर्गत नाना प्रकार के परमाणु गति करते रहते हैं। जैसा मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हे निर्णय देते हुए कहा था जैसे एक मधु मक्खी होती है। परन्तु देखो इसके अन्तर्गत एक रानी मक्खी होती है उसके अन्तर्गत नाना मानो देखो सहायक गति करती रहती हैं। इसी प्रकार एक शब्द है और शब्द के साथ में मुनिवरों! देखो एक शिशु है और वह मानो देखो वाणी का सूक्त कहलाता है। और उसके साथ में मुनिवरों! देखो नाना परमाणु सहायक बने हुए हैं। इसीलिए वाणी की जो स्थिति है शब्द बन करके बेटा! अन्तरिक्ष में ओत प्रोत हो जाता है। वही शब्द मेरे प्यारे! हमारे यहां वही शब्द

को बेटा! ऋषि मुनि प्रयास करते रहे हैं क्या उसको हम यन्त्रों में दृष्टिपात करना चाहते हैं तो बेटा! देखो ऋषि मुनियों ने उस मानो शब्दों को अपने यन्त्रों में लाने का प्रयास किया है। मैंने यह वाक कई काल में प्रगट किए हैं। भारद्वाज मुनि के यहां इस प्रकार के यन्त्र विद्यमान थे। जहां बेटा! देखो शब्दों का आकार बन करके जिस मानव का वह शब्द है उस मानव का चित्र मुनिवरों! देखो यन्त्रों में दृष्टिपात आता रहा है। मुझे ऐसा स्मरण है बेटा! ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि ने तो यहां तक जाना है मेरे प्यारे! देखो हजारों वर्षों के क्या मेरे प्यारे! देखो लाखो वर्षों के जो शब्द हैं उन शब्दों को यन्त्रों में बेटा! ला करके दिग्दर्शन किया है। तो आज बेटा! मैं इस विज्ञान में जाना नही चाहता हूं। विचार यह चल रहा था कि मुनिवरों! हम यागिक बने याग के सम्बन्ध में बेटा! कुछ चर्चाएं चल रही थी मेरे प्यारे! महानन्द जी मुझे प्रेरणा देते रहते हैं और प्रेरणा के आधार पर यागां भविते लोकां मेरे प्यारे! देखो हमे यागिक बनना चाहिए। और वह यागिक बनना चाहिए जिस याग के पश्चात मानव के जीवन में एक प्रतिभा का जन्म हो जाए मेरे प्यारे! देखो उसका शुद्धिकरण हो जाए। हमारे यहां महाराजा अश्वपति के याग की चर्चा चल रही थी मेरे प्यारे! उन्होंने वाजपेयी याग किया वाजपेयी याग उस काल में किया जाता है। मेरे पुत्रों देखो जहां वृष्टि और वृष्टि के ब्रहे जहां समय समय पर वृष्टि का अवधान होता है। और वह वृष्टि मानो देखो वाजपेयी याग के उपलक्ष्य में कराई जाती है। मानो देखो यागां भविते लोकां प्रजा और राजा दोनों मिल करके उस याग में मुनिवरों! अपना साकल्य प्रदान करते हैं राजा वह होता है जो प्रजा को मानो देखो मानो और वह राजा महान बना सकता है जो राजा स्वयं महान हो पवित्र हो यागिक हो मानो देखो प्रभु की प्रतिभा में रत्त रहने वाला हो ब्रह्म ज्ञान में रत्त रहने वाला हो मेरे

प्यारे! वह राजा इस समाज को अपनी प्रजा को ऊंचा बना सकता है। जैसे आचार्य कुल में मानो देखो आचार्य पवित्र होता है। जब जितना आचार्य तपा हुआ होता है उतना ही मानो देखो उसका विद्यालय तपा हुआ होता है। विद्यालय में ब्रह्मचारी सुसज्जित होते हैं और महान बन करके मानो देखो प्राण की धारा को अपनाने लगते हैं। मेरे प्यारे! जैसे प्राण प्रवाह से गति कर रहा है। मानो देखो एक दूसरे पदार्थ को एक दूसरे पदार्थ को मिलान करा रहा है वही तो बेटा! हमारे यहां पुरातन काल में विद्यालयों में बेटा! देखो नाना प्रकार की चिकित्साएं हुआ करती थी वह चिकित्सा मानो देखो प्राण चिकित्सा भी कहलाती थी। मानो देखो प्राण के माध्यम से मानो देखो रुग्णों का समाप्त होना जो सबसे महान विद्या कहलाती मुझे बेटा! वह काल स्मरण है महाराजा अश्वपति के यहां विद्यालयों में प्रातःकालीन याग के पश्चात प्राण की विद्या का अवधान कराया जाता

मेरे प्यारे! देखो मुझे वह काल स्मरण है। जब प्राण के द्वारा ही मानव बेटा! देखो लोक लोकान्तरों की यात्रा करता रहा है। क्योंकि यह यन्त्रों में ही तो प्राण को ही बेटा! विशिष्ठ बनाया जाता है। आज मैं देखो मैं प्राण के सम्बन्ध में कोई विवेचना देना नही चाहता हूं। विचार केवल यह कि आज का हमारा वाक क्या मुनिवरों! देखो महाराजा अश्वपति के यहां एक याग का आयोजन याग की वृत्तियां मानो देखो अपने में ओत प्रोत होती रही हैं। राजा स्वतः अपने में देखो प्रजा को महान बनाने के लिए अपने को ऊंचा बनाने में लगे रहते थे। आचार्य कुलों में भी जब आचार्य अपने में पवित्र बन जाता है। तो ब्रह्मचारी को यह इच्छा नही होती की मैं प्रश्न करुं। वह केवल मानो देखो उनके क्रियाकलापों को उनकी महानता को दृष्टिपात करके अपने विचारों को महान बनाने लगता है। और मानो देखो विद्यालय सजातीय बन जाता है। और जब

विद्यालय सजातीय बन गया तो राजा का राष्ट्र भी सजातीय बन जाता है। तो मेरे पुत्रों विचार विनिमय क्या है। तो इसीलिए देखो राजा जब याग करता है तो प्रजा यागिक होती है। और जब प्रजा में याग होता है तो सुगन्धि होती है वहां विचारों की सुगन्धि क्रियाकलापो की सुगन्धि होने लगती है तो बेटा! राजा का राष्ट्र सुगन्धित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो इसमें एक दूसरे का विरोधाभास नही होता वह स्वतः अपने में महान बना करता है तो बेटा! आज मैं विशेष चर्चा तो तुम्हे प्रगट करने नही आया हूं। आज का हमारा वाक यह कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और मानो देखो अपने को सजातीय बनाते रहे अपने को उज्जवल बनाते रहे। जिससे बेटा! देखो हम ज्ञान और विज्ञान मानो देखो अपनी आभा का प्रतीक बनाते रहें जिससे हमारा जीवन देखो ज्ञान और विज्ञान में रत्त होता रहे देखो हमारे यहां दोनो प्रकार का ज्ञान और विज्ञान परम्परागतों से ही मानवीय मस्तिष्को में नृत होता रहा है। और वह नृत इसीलिए क्योंकि हम जानना चाहते हैं और जान करके क्या चाहते हैं कि हमारी मृत्यु न हो हम अन्धकार में न चले जाएं। मृत्यु का अभिप्राय है कि हम अन्धकार में न चले जाएं। हम सदैव प्रकाश में रहने के लिए तत्पर रहें तो मेरे प्यारे! देखो कोई मेरी प्यारी माता कोई मेरा प्यारा ऋषिवर कोई यह नही चाहता कि मैं अन्धकार में रहना चाहता हूं। वह प्रकाश ही प्रकाश चाहता है। तो मेरे प्यारे! देखो प्रकाश क्या है। प्रकाश ज्ञान को कहते हैं जितना ज्ञान होता है जितना व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश हो जाता है। उतना ही प्रकाश उसके जीवन में उद्धभुत हो करके बेटा! परमात्मा की सृष्टि में वह महानता के विचारों को ला करके अपने मानवीय स्तर को ऊंचा बनाता रहता है। तो आओ, मेरे पुत्रों विचार यह देने के लिए आया हूं क्या मुनिवरों! देखो हम

यागिक बनें और याग में अपने जीवन को मानो देखो सूर्य से देवताओं से यागों का प्रायः बड़ा समन्वय रहता है। सूर्य की किरणों का बड़ा सहयोग रहता है। मानो देखो वायु का सहयोग रहता है। अग्नि तो प्रदीप्त रहती ही है। मानो देखो जल का भी बड़ा उज्ज्वल सहयोग रहता है जिसको हम आपो कहते हैं। वह आपो ज्योति है वह ज्योति ही मानो देखो अग्नि है वह अग्नि ही सूर्य है वह मानो देखो वह सूर्य ही मानो देखो पृथ्वी में नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देने वाली है। हे माता वसुन्धरा! तेरे गर्भस्थल में मानो एक प्रवाह गति कर रहा है। वह गति ही मानो देखो प्राणतव कहलाता है वह गति ही मानो ब्रह्मे व्रतं मेरे पुत्रों देखो वह पृथ्वी के गर्भ में कहीं स्वर्ण की धातु के रुप में गति हो रही है। कहीं रत्नों के रुप में गति हो रही है। कहीं मानो जल को शक्तिशाली बनाने के रुप में गतियां हो रही हैं। तो मेरे पुत्रों यह प्रभु का कैसा अनुपम विज्ञान है और एक दूसरे से बेटा! पिरोया हुआ एक बेटा! माला बनी हुई है। इस माला को हमे विचारना है इस माला को मुनिवरों! देखो ऋषिवर वैज्ञानिक अपने में धारण करता रहता है। और वह माला में सजातीय बन जाता है। तो आओ, मेरे पुत्रों जैसे वेद के पठन पाठन करने वाला आचार्य मेरे पुत्रों देखो वेदमन्त्रों की माला बना लेता है। और वह उस मानो सूत्र में पिरो देता है। और उसे अपने कण्ठ में सजातीय बना लेता है। मानो देखो उदान प्राण के साथ में वह सजातीय बन करके मानो उसका उद्गीत समय समय पर गाने लगता है। तो आओ, मेरे पुत्रों मैं विशेष विवेचना नही देने आया हूं। विवेचना केवल यह है क्या आज हम मेरे पुत्रों अपने में मानो सजातीय बनें और व्यष्टि से समष्टि में जाने का प्रयास करें जिससे बेटा! देखो हम मृत्युञ्जय बन जाएं। हम मृत्यु से पार हो जाएं प्रभु के राष्ट्र में चले जाएं। क्योंकि प्रभु के राष्ट्र में बेटा! रात्रि नही होती और जहां

रात्रि नही होती वहां अन्धकार नही होता और जहां रात्रि व अन्धकार नही होता तो वहां बेटा! आलस्य और प्रमाद नही होता जब यह नही होता तो सदैव प्रकाश रहता है। तो मुनिवरों! वह प्रभु का राष्ट्र है प्रभु के राष्ट्र में बेटा! सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहता है। और उस प्रकाश का नाम ज्ञान है। विवेक है जिसको धारण करके मानव संसार से पार हो जाता है। तो यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए हम मानो देखो अपने में महान इस प्रकाश को समाज को ऊंचा बनाने में बेटा! देखो मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हे निर्णय देते हुए कहा था। क्या मानव उपाधियों में परिणत रहा है। मानव को समाज को ऊंचा बनाने के लिए मानव को क्रिया में लाने के लिए नाना प्रकार की मानो उपाधियां हमारे यहां मानी गई जैसे हमारे यहां वशिष्ठ उपाधि मानो ब्रह्मवेत्ता बनाने के लिए और शिव हिमालय की भान्ति मानो देखो राष्ट्र को ऊंचा बनाने के लिए शिव उपाधि मानी गई मानो देखो, हमारे यहां नाना शिव हुए हैं जो मुनिवरों! देखो वह एक ही शिव नही क्योंकि परमात्मा का नाम भी शिव कहा जाता है जो इससे पूर्व काल में हमने प्रगट किया परन्तु राजा का नाम भी शिव है जो हिमालय पर्वत की भान्ति मानो देखो अपनी प्रजा से विचारो को ऊंचा बनाने वाला हो उस राजा का नाम बेटा! शिव कहा जाता है। मानो देखो एक व्रेतकेतु शिव हुए हैं। उनके नामोकरण भी हमारे साहित्य में आते रहे हैं आज मैं विशेषता में जाना नही चाहता हूं। तो मेरे पुत्रों देखो विचार विनिमय क्या हम अपने प्रभु का गुणगान गाते हुए अपने जीवन को व्यापक बनाते हुए सुगन्धित बनाते हुए वायुमण्डल को पवित्र बनाते हुए आज का हमारा यह वाक अब समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता

परमात्मा की आराधना करते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं यह है बेटा! आज का वाक अब समय मिलेगा तो बेटा! शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें। आज का वाक अब यह समाप्त होने जा रहा है। शेष चर्चाएं कल बेटा! अपने वाक प्रगट करेंगे। अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् मा रथं आभ्यां देवाः यम सर्वं गताः आभ्यां रेवाः यौ सर्वाः। ओ३म् दधि मां आपा इदं ब्रेवा गाताः। पूज्य महानन्द जी अच्छा भगवन! आज्ञा। पूज्यपाद गुरुदेवः मंगलं भवति। दिनांक ०८ ०५ १९८६।

17 २७ ०७ १९८६

... राजा ने कहा अरे साधु! यह छड़ी अभी तक तुमने किसी को प्रदान नही की है महात्मा ने कहा प्रभु! मैं छड़ी देता किसे मेरे से मूर्ख मुझे कोई प्राप्त नही हुआ है। मेरे से तो निर्बुद्धि भी प्राप्त नही हुआ मैं देता किसको उन्होंने कहा धन्यं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो राजा से साधु ने कहा जब राजा मौन हो गया उन्होंने कहा राजन अब आप कहां जा रहे हैं। उन्होंने कहा भगवन यह तो मुझे प्रतीत नही है कहां जा रहा हूं। परन्तु यह मेरी अन्तिम यात्रा है। उन्होंने कहा महाराज इस अन्तिम यात्रा में आप कितनी सेना अपने साथ ले जाओगे। राजा ने कहा यह साधु तो प्रायः मूर्ख है उन्होंने कहा अरे साधु मैं तो तुम्हे मूर्ख कहता ही रहता हूं। इस यात्रा में कोई सेना साथ जाती है उन्होंने कहा महाराज सेना साथ नही जाती यह राजकोष तो अवश्य ही जाएगा। क्योंकि आपके साथ में जो आपने मानो जो अपने जीवन अपना जीवन जिसने समाप्त किया है। द्रव्य एकत्रित करने में मानो देखो राष्ट्रीय विचारा ब्रहे अपनो का निर्माण किया है यह द्रव्य तो अवश्य जाएगे उन्होंने कहा अरे महाधूर्त! तुम तो बड़े महामूर्ख हो। अरे, इस अन्तिम यात्रा में ना सेना जाती है ना द्रव्य जाएगा उन्होंने कहा प्रभु आपको मानो सेवक तो

अवश्य ही चाहिए। क्योंकि देखो सेवा करने के लिए आज मानो सेवकों से तुमने सेवा कराई है। यह सेवक तो अवश्य जाएगें भगवन! उन्होंने कहा अरे, साधु तुम तो बड़े मूर्ख हो इस यात्रा में सेना, द्रव्य और यह सेवक भी साथ नही जाते। उन्होंने कहा प्रभु! यह सुन्दरी तो अवश्य ही जाएगी। क्योंकि देखो इनसे स्नेह किया है पुत्रवत हो करके अपने में ममता में दोनो परिणत रहे हो। क्या एक दूसरे के साथी नही रहे हो भगवन मैं यह कैसा आश्चर्य मैं दृष्टिपात कर रहा हूं। क्या यह सुन्दरी तो अवश्य साथ जाएगीं क्योंकि ये तुम्हारा जीवनभर साथी बने हुए हैं। उन्होंने कहा अरे, साधु यह पत्नी भी मेरे साथ नही जाएगी। उन्होंने कहा तो भगवन आपके साथ में क्या जाएगा। राजा ने कहा प्रभु मेरे साथ कुछ नही जाएगा। उन्होंने कहा तो यह छड़ी स्वीकार कर अरे राजन्! जो तुने कमाया नही है जो तेरे साथ जाता वह तुमने कमाया नही है और जो तुम्हारे आज शासन ब्रह्मे जो तुमने कमाया वह यही रह गया। अरे मेरे से मूर्ख तुम हो यह छड़ी स्वीकार करो मेरे प्यारे! देखो राजा ने उस छड़ी को दृष्टिपात किया महात्मा के शब्दों को जब श्रवण किया तो राजा मुनिवरों! देखो शान्त हो गया उन्होंने कहा भगवन वास्तव में मैंने वह कर्म नही किया जो मेरे साथ जाता मेरे प्यारे! देखो विचार विनिमय क्या विचार यह है कि मानव को बेटा! वह कर्म अवश्य करना चाहिए जो मानव के इस शरीर के त्यागने के पश्चात उसके साथ चला जाए। मेरे प्यारे! देखो जो यह द्रव्य है यह यही रह जाएगा। संसार की प्रत्येक वस्तु यहां रह जाती है। मेरे पुत्रों देखो मानव की अन्तरात्मा में जो प्रकाश है जो आत्मा का साक्षात्कार है। आत्म प्रकाश है अरे वह प्रकाश ही तो मानव के साथ जाता है। मेरे प्यारे! उस प्रकाश के लिए मानव को प्रयास करना चाहिए। और वह प्रकाश क्या मेरे पुत्रों देखो उसका नाम हमारे यहां आचार्यों ने बेटा!

देखो उस प्रकाश को हमारे यहां यौगिकवाद कहा है। अरे मानव तू यौगिकवाद में प्रवेश हो जा। जिससे तेरा योगाभ्यास ही मानो तेरा साथ चला जाए। मेरे प्यारे! देखो ऋषि मुनि परम्परागतों से यह अनुसन्धान करते रहे हैं। और विचारते रहे हैं बेटा! सोमवृत्तिका मुनि महाराज राजा को छड़ी प्रदान करके वहां से प्रदानं ब्रह्मे जाने लगे तो राजा ने कहा हे प्रभु! मैं तो मानो बड़ा पामर हूं बड़ा मानो देखो क्या करुं हे प्रभु! आपको मैंने मूर्ख कहा है। आप तो महान तपस्वी हैं। मुझे तो अब परिचय हुआ है। क्या आप कितने महान तपस्वी हैं। क्या आप मानो देखो श्मशान भूमि नही आप सर्वत्रता में मानो देखो प्रकाश का दर्शन करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो यह उच्चारण करते हुए राजा ने ऋषि से कहा प्रभु! मानो मेरा इस समय प्राणान्त होने वाला है। आपका दर्शन हुआ है मैं कितना सौभाग्यशाली हूं भगवन! मानो देखो मैं अपनी धृष्टता के कारण एक छड़ी के कारण आपका दर्शन हो गया। तो मेरे प्यारे! देखो महात्मा ने तथास्तु कह करके वहां से भ्रमण किया तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या आजके हमारे वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है। वेदमन्त्र कहता कि मानव के प्रत्येक विचारों का मानो रस बन करके द्यौ लोक में प्रवेश करता रहता है। मेरे पुत्रों ऋषि मुनियों ने विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करते हुए अपने जीवन का मन्थन किया है। अपने को यौगिकवाद में लाने का प्रयास किया है। आज मैं बेटा! विशेष चर्चा तो तुम्हे उच्चारण करने के लिए नही आया हूं। आज मैं ऐसे गम्भीर क्षेत्र में प्रवेश हो गया क्योंकि वेद का मन्त्र कहता है यज्ञं ब्रह्मा लोकां रथं ब्रह्मा कृतं लोकां मेरे प्यारे! देखो यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है। विचारों का रस बन करके द्यौ लोक को जाता है इसीलिए वेदमन्त्र कहता है कि विचारों से वायुमण्डल

पवित्र बना करता है मेरे प्यारे! देखो हमे अपने गृह को स्वर्ग बनाना है। तो वाक शक्ति हमारी पवित्र होनी चाहिए। मानो देखो जिससे हमारा गृह स्वर्ग बन जाए अपने में मानो देखो द्यौ लोक में प्रवेश हो जाए इन्ही शब्दों के कारण हमारा मानो चित्र बन करके बेटा! द्यौ लोक में प्रवेश होता है। आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ केवल यह कि महर्षि वशिष्ठ और माता अरुण्धति के विचारों में तुम्हे ले गया था मेरे प्यारे! देखो उनके विचारों में उनका मन्थन करने का जो माध्यम रहा है। वह बड़ा विचित्र रहा है मैं शेष चर्चा तो कल ही प्रगट करुंगा। आज का विचार तो केवल मैंने अपने विचारों की एक भूमिका बनाई है और वह भूमिका किस रुप में क्या वह मानो देखो वेद में वेद एक एक वेदमन्त्र में बेटा! देखो संसार की प्रत्येक प्रतिभा का दर्शन होता रहता है। विचारों का दर्शन होता रहता है। उसमें जो ज्ञान और विज्ञान विद्यमान है। उनका दर्शन होता रहता है और बाह्य और आन्तरिक जगत दोनों ही मानव के पवित्र बनते रहते हैं आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार महर्षि वैशम्पायन मुनि महाराज को मानो यह निश्चय हो गया वैशम्पायान अपने में यह जान गया कि अपने में हमे मन्थन और वेद का मन्त्र जो कहता है वह सत्य कह रहा है। वेद का वाक जो कहता है वह यथार्थ कह रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो वेद की भाषा में वेद के मन्त्रों में मानो ज्ञान और विज्ञान का प्रायः बेटा! हमे दर्शन होता है। यह चर्चा तो मैं कल प्रगट करुंगा। आज का वाक मुझे इतना समय आज्ञा नही दे रहा है। आजका विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए संसार सागर से पार हो जाएं। आओ, मेरे प्यारे! हम परमपिता परमात्मा की महती का सदैव द्दष्टिपात करते रहे क्योंकि वह सृष्टि का नियन्ता है। निर्माण करने वाला है मानो जिसका ज्ञान

और विज्ञान इतना नितान्तरता में माना गया है। क्या मेरे प्यारे! प्रत्येक मानव परम्परागतों से अनुसन्धान करता रहा है परन्तु अनुसन्धान करते करते बेटा! वह बड़ी विचित्र धाराओं में प्रवेश हो जाता है बेटा! शेष चर्चाएं हम कल प्रगट करेंगे। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या परम्परागतों से बेटा! मान नाना प्रकार के अनुष्ठान करता रहता है नाना प्रकार का अनुसन्धान करता रहता है। मुनिवरों! देखो मानव को यौगिकवाद में जा करके प्रकाश में जाना चाहिए। अन्धकार को नष्ट करना चाहिए। अन्धकार मानव की मृत्यु है और प्रकाश मानव का जीवन माना गया है। मेरे प्यारे! देखो मृत्यु और जीवन का दोनो का प्रसंग प्रत्येक मानव के हृदयों में समाहित रहता है। तो हमे आज बेटा! देखो आज के विचार उच्चारण करने का अभिप्राय कि हम प्रकाश में जाने के लिए तत्पर रहना चाहिए। बेटा! कल मुझे समय मिलेगा शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। आज का वाक समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् ब्रह्म भविताः आभ्यां रथं वाचन्नमाः। ओ३म् श्वञ्जनं ब्रह्म वायु गताः ... शेष अनुपलब्ध। दिनांक २७ ०७ १९८६।

18 ०३ ०८ १९८६ महर्षि अत्रिव माता अनुसूया की भगवान राम व माता सीता से चर्चाएं

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनुपम है। मानो उसका यह अनुपम जगत है, जिस जगत में हम सब विद्यमान हैं, इस संसार की

कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है, कोई भी स्थली ऐसी नहीं है, जहां परमपिता परमात्मा न हो। मानो वे परमपिता परमात्मा सर्वत्र विद्यमान हैं, समुद्रां की कोई तरंग ऐसी नहीं है, पर्वतों की कोई गुफा ऐसी नहीं, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो। मानो एक एक तरंगों में, उसी परमपिता परमात्मा की महती हमें दृष्टिपात आ रही है। जब हम अपने में यह विचार विनिमय प्रारम्भ करते हैं, क्या, उस परमपिता परमात्मा का जो ये अनूठा जगत है, मानो जो साकार रूप में दृष्टिपात आ रहा है, और उस साकार रूप को धारण करने वाला, वह मेरा प्यारा प्रभु है। आज जब हम उस अपने प्रभु की महिमा में, मानो रत्त होना चाहते हैं, तो प्रायः हमारा हृदय गद् गद् हो जाता है।

वैदिक साहित्य में अलंकार

आज के हमारे वेद के पठन पाठन में, भिन्न भिन्न प्रकार की विवेचनाएँ आती रहती हैं। आज का हमारा वेदमन्त्र मानो अहिल्या के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार के मानो आख्यिका के रूप में, उसका प्रायः वर्णन हो रहा था। हमारे आचार्यों ने बेटा! जब इन वेद मन्त्रों को अनुसन्धान अथवा उसको क्रिया में लाने का प्रयास किया, तो मेरे पुत्रों! वह जो क्रियामयी, उनका विचार है, वह मुझे बारम्बार स्मरण आता रहता है। हमारे वैदिक साहित्य में, नाना प्रकार की आलंकारिक वार्त्ताओं का वर्णन किया जाता है। क्योंकि हमारे वैदिक साहित्य में, एक वेदमन्त्र में एक वाक को मानो देखो, उसका परिचय दिया है, और वह परिचय इस प्रकार का दिया है, जिस परिचय में मानो देखो, उसका प्रारम्भ कहीं है और उसका अपाख्यान कहीं हमें दृष्टिपात आता है। मेरे प्यारे! हमारा वैदिक साहित्य, अपने में मानो अनूठा माना गया है और ऋषि मुनि परम्परागतों से ही, बेटा! अनुसन्धान करते रहे हैं, अथवा अन्वेषण करना

उनका प्रायः कर्तव्य माना गया है।

मुझे स्मरण आता रहता है यहाँ मेरी पुत्रियों ने भी, माता के रूप में अपने को धारण करते हुए, अपने नाना प्रकार के उपाख्यान दिए हैं, मानो अपना परिचय विशुद्ध रूपों में वर्णन किया है।

अहिल्या का अभिप्राय

तो मेरे प्यारे! आज मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह कि आज के हमारे वैदिक पठन पाठन में अहिल्या का वर्णन आ रहा था, हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! अहिल्या के नाना प्रकार के स्वरूपों का वर्णन आता रहा है, परन्तु हमारे यहाँ अहिल्या नाम माता को कहा जाता है। सबसे प्रथम अहिल्या का जो रूप माना गया है, वह सुखद देने वाली है। अहिल्या नाम बेटा! रात्रि का माना है। मुनिवरों! देखो, जहाँ अहिल्या नाम रात्रि को कहा गया है वहां चन्द्रमा की कान्ति को भी अहिल्या कहा है। मेरे प्यारे! अहिल्या के भिन्न भिन्न प्रकार के रूपों का वर्णन आता रहता है।

मुझे एक समय मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने यह वर्णन कराया, इन्होंने मुझे एक वर्णन कराया था, कि उसका वाक मैंने यह पूर्व काल में भी प्रगट किया था, कि महर्षि गौतम मुनि की पत्नी का नाम अहिल्या था, परन्तु वह देवताओं की धृष्टता के कारण वह वज्र की बन गई। परन्तु यह प्रायः बेटा! एक ऐसा शब्द है, जिसके ऊपर मैंने बहुत पुरातन काल में अपनी टिप्पणियाँ दी और वैदिक साहित्य में, क्योंकि वेद के वांगमय में, यह चर्चा होती रही है। जब वैदिक ऋषियों ने बेटा! यह विचारा, कि अहिल्या नाम पृथ्वी को कहा गया है, बेटा! रात्रि को अहिल्या और माता को क्यों कहा है? क्योंकि माता अपने कंठ में आलिंगन करती हुई अपने पुत्र को लोरियों का पान कराती रहती है, बालक को जब क्षुधा लगती है, तो माता मानो देखो,

निद्रा अवस्था में भी लोरियों का पान कराती है, इससे प्रतीत हुआ, क्या, उस माता का नाम अहिल्या है, जो सुखद और आनन्द को देने वाली है, जो क्षुधा को शान्त करने वाली है। मेरे प्यारे! यहां तो माता का वर्णन इस रूप में आया।

अहिल्या का रात्रि रूप

परन्तु देखो, यहां रात्रि को अहिल्या क्यों कहते हैं? बेटा! अहिल्या नाम रात्रि को इसलिए क्योंकि रात्रि जब छा जाती है उसमें बेटा! रति वाले, रतिका, रति करने लगते हैं, मानो योगी जन शान्त मुद्रा में अपने प्रभु का गुणगान गाने लगते हैं, क्योंकि रात्रि में मानव जागरुक नहीं रहता, वह निद्रा की गोद में चला जाता है, राष्ट्र का राष्ट्र निद्रा की गोद में चला जाता है, परन्तु वह जो योगेश्वर है, जो ध्यानावस्थित होते रहते हैं, मानो वह प्रभु के गुणगान गाने लगते हैं, मानो इस अहिल्या की सान्त्वना को दृष्टिपात करते हुए, तो मेरे प्यारे! यह रात्रि ही ऐसी है जो मानो देखो, अमृतमयी को बरसाने वाली है मानो देखो, यही रति के मूल में विद्यमान रहती है। आज बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ, विचार क्या मुनिवरों! देखो, अहिल्या नाम, रात्रि को भी कहा गया है, वह कौन सी रात्रि है बेटा! जो मानो देखो, जीवन देती है। मुनिवरों! जहां अहिल्या नाम रात्रि का आता है, वहां अहिल्या नाम बेटा! पृथ्वी का भी वर्णन होता रहता है। हमारे यहाँ वैज्ञानिक जन, जब बेटा! देखो, रात्रि के ऊपर अन्वेषण करना प्रारम्भ करते हैं, तो वैज्ञानिक कहते हैं कि यह मानो देखो, पृथ्वी अपना भ्रमण करती हुई, सूर्य के प्रकाश से, यह जहाँ जहाँ ओझल होती रहती है, वहीं रात्रि का काल बनता रहता है, परन्तु यह भी यथार्थ है, परन्तु रात्रि का अभिप्राय केवल देखो, सान्त्वना देना है। मेरे प्यारे! देखो, रात्रि अपने में प्रतिभा को प्रदान करने वाली है। अहिल्या नाम बेटा! जहां रात्रि, वहां

पृथ्वी का नाम भी अहिल्या कहा गया है। बेटा! वह कौन सी पृथ्वी है, जिसे अहिल्या कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जो पृथ्वी उपजाऊ हो, और अन्न को उत्पन्न कर सकती हो, वज्र के तुल्य पड़ी हुई भूमि हो, उसका नाम अहिल्या कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, अहिल्या नाम ब्र्व्हे अहिल्या, वह अहिल्या के रूप में विद्यमान रहती है।

भगवान राम का अहिल्या ज्ञान

मेरे पुत्रों! मैं आज तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ। त्रेता के काल में बेटा! भगवान राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न जब विद्यालय में बेटा! अध्ययन करते रहते थे, तो महर्षि वशिष्ठ मुनि के आश्रम में अध्ययन करते रहते। मेरे प्यारे! जब वैदिक साहित्य में, वेद के वांगमय में जब अहिल्या का वर्णन आया तो भगवान राम ने वशिष्ठ मुनि महाराज से यह प्रश्न किया कि महाराज! यह वैदिक साहित्य में अहिल्या का वर्णन आ रहा है। मानो देखो, अहिल्यां ब्रह्मे मेरे प्यारे! इसी शब्द को ले करके, उन्होंने पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान करना प्रारम्भ किया। मानो पृथ्वी में नाना प्रकार की जो गन्ध आती है, नाना प्रकार की जो सुगन्ध आती है, उस सुगन्ध में मानो देखो, उसके गुणों का वर्णन है। देखो, कोई भी वैज्ञानिक हो, जब पृथ्वी के कणों को, पृथ्वी के रज को सुगन्धित लेता हुआ, वह इसके गुणों का वर्णन करता है। और वैज्ञानिक कहता है कि इतनी दूरी पर इतना खनिज विद्यमान है। यहां तक बेटा! देखो, अन्वेषण करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, अहिल्या ने ब्रह्मा मुनिवरों! देखो, भगवान राम ने यह जान लिया कि अहिल्या नाम पृथ्वी को कहा जाता है। तो राम के जीवन में एक गुण रहा है, मानो देखो, वह घ्राण के द्वारा वह पृथ्वी के गन्ध को ले करके, पृथ्वी की सुगन्ध के द्वारा मानो सौ सौ और पचास पचास योजन से नीचरले तल में बेटा! जो पृथ्वी के

नीचे गर्भ में खनिज है या खाद्यान्न है, उसका वह वर्णन करते आ रहे हैं।

मेरे पुत्रों! देखो, भगवान राम का मुझे स्मरण है बेटा! जब उन्हें वन प्राप्त हो गया, वन के प्राप्त हो जाने के पश्चात बेटा! जब गृह को त्याग दिया, त्याग करके मुनिवरों! जैसे वह भ्रमण करते हुए पहुँचे, तो मानो देखो, निषाद के द्वारा पँहुचे। जब वह निषाद के द्वार पहुँचे, तो महाराजा निषाद, उनका स्वागत करने के लिए आए, तो बेटा! उनके यहाँ बहुत सी भूमि अयोध्या की इस प्रकार की थी, जो वज्र के तुल्य थी। तो भगवान राम ने देखो, निषाद के, राष्ट्रीय सभा की और सभा करके भगवान राम ने निषाद की सभा में यह कहा कि तुम अपने राष्ट्र का उत्थान करना चाहते हो, तो यह जो वज्र के तुल्य पड़ी हुई भूमि है, इसको मानो तुम क्रियात्मक लाना प्रारम्भ करो, उसे क्रिया में लाने का प्रयास करो।

मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम की आज्ञा पाते ही उन्होंने बेटा! उस भूमि का उद्धार किया। उस अहिल्या नाम की भूमि को मेरे प्यारे! देखो, कार्य रूप देना प्रारम्भ किया, उसमें अन्नाद की उत्पत्ति होने लगी।

तो परिणाम क्या मुनिवरों! देखो, अहिल्या नाम जहां रात्रि का है वहां पृथ्वी को भी अहिल्या कहा जाता है। हमारे यहां अहिल्या के नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द माने गएं है।

अहिल्या गौतम कथानक

मेरे प्यारे! देखो, अहिल्या हमारे यहाँ ब्रह्मणं ब्रहे मुझे मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने एक गाथा का वर्णन किया। क्या, एक समय मानो देखो, अहिल्या जो गौतम की पत्नी थी, वह गौतम की पत्नी मंगलं ब्रहे उस पर इन्द्र मोहित हो गये, जब इन्द्र का मोह आ गया, तो इन्द्र ने उसे छलने के लिए मानो देखो, चन्द्रमा को

मृग बनाया और इन्द्र मेरे प्यारे! देखो, उसे छलने के लिए पहुँचा। जब इन्द्र छलने के लिए पहुँचा, तो मानं ब्रहे वह गंगा स्नान को जाते थे, गौतम स्नान करने गये, तो वहां से उसे एक ध्वनि आई, क्या हे गौतम! तेरे गृह में छल हो रहा है। तो मानो देखो, मुझे मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने यह गाथा प्रगट कराई। वह अपने आश्रम में आये, तो अहिल्या को वज्र की बना दिया, वह तो वज्र बन गया और वह देखो, चन्द्रमा को कहा तुम मानो चिह्नवादी, तुम मानो देखो, दाब्ब्रहे ब्रहे तुम अपने में मानो देखो, एक चिह्न वाले बन जाओ। दागीत बन जाओ। मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र के अपने वर्णं ब्रहा मेरे प्यारे! उसे कहा तुम नाना भगों वाले बन जाओ। तो कहते हैं मुनिवरों! भीगे वस्त्र से तो चन्द्रमा मानो देखो, दर्गिलम बन गया और देखो, अहिल्या वज्र की बन गई और वह अमृतम और वह देखो, इन्द्र सहस्त्रों भगां वाला बन गया।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह आलंकारिक चर्चाएँ हैं, जब विचार में आता है, मैं वैदिक साहित्य में इन शब्दों के ऊपर अपना विचार प्रारम्भ करने लगते हैं, महानन्द जी ने तो यह वाक प्रगट किया, यह गाथा इस रूप में नहीं है, यह आलंकारिक वार्ता है परन्तु देखो, प्रभु ने जब इस संसार की रचना की अथवा सृष्टि की रचना की तो मानो इसका एक कर्म बनाया, मेरे प्यारे! गौतम नाम यहाँ चन्द्रमा को कहा जाता है। और अहिल्या नाम रात्रि को कहा गया है। मेरे प्यारे! देखो, वही ब्रह्मे वाचप्रव्हा और सहास्त्रों भगों वाला इन्द्र, वह सूर्य है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह गौतम देखो, चन्द्रमा, गौतम बन करके रात्रि को यह अपने में धारण करता रहता है। मेरे प्यारे! गौतम मेरे प्यारे! देखो, गो नाम प्रकाश का और तम नाम का अन्धकार का है। मेरे प्यारे! देखो, रात्रि को प्रकाश में लाने वाला, यह चन्द्रमा कहा जाता

है। मानो देखो, यहाँ चन्द्रमा गौतम बन करके, यह गो नाम की कान्ति से, यह मानो देखो, अन्धकार को अपने में धारण कर लेता है, रात्रि का संभोग कहा जाता है। मेरे प्यारे! जैसे ही प्रातः काल हुआ, इन्द्र आता है। मेरे प्यारे! रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है और यह मानो देखो, गौतम नाम यहां परमपिता परमात्मा को भी कहा गया है। परमात्मा में इस सूर्य रूपी इन्द्र को बेटा! सहस्रों भगों वाला बना दिया। भग नाम बेटा! नाना प्रकार की किरणों को कहा गया है। यह सहस्रां किरणों वाला मानो बन करके बेटा! देखो, यह अपने को तपाने लगा, और अहिल्या नाम की रात्रि को बेटा! अपने में धारण कर लिया। मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा जब सूर्य उदय होता है तो मानो वह चिह्नवादी बन जाता है।

तो परिणाम क्या मुनिवरों! देखो, यहां इन्द्र नाम के नाना पर्यायवाची शब्दों में, एक सूर्य का नाम भी इन्द्र माना गया है। इन्द्र और गौतम नाम परमात्मा को भी कहते हैं जो मानो देखो, अन्धकार को समेटने वाला है। मेरे प्यारे! गौतम नाम मुनिवरों! देखो, चन्द्रमा को भी कहते हैं। मुझे स्मरण है, यहां गौतम नाम के ऋषि भी हुए हैं, अहिल्या नाम की उनकी पत्नी भी रही है। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं। परन्तु ऐसा नहीं कि वह वज्र की बन गई हो, यहां अहिल्या नाम राम के जीवन में लगता है तो पृथ्वी आती है और ऋषि मुनियों की आलंकारिक वार्त्ताओं में आती है, तो मानो देखो, यहां रात्रि अहिल्या कहीं गई है।

तो विचार विनिमय क्या, मेरे प्यारे! आज मैं इस सम्बन्ध में, विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ, विचार यह देने के लिए आया हूँ कि नाना प्रकार के वैज्ञानिक, अपने में अनुसन्धान करते रहे हैं, अथवा विचार विनिमय करते रहे हैं, आज मैं उन विचारों में तो तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह,

क्या, मुनिवरों! देखो, यह रात्राणं ब्रह्मे भगवान राम ने निषाद की सभा में यह कहा कि तुम अहिल्या को अपनाओं, और यह वज्र के तुल्य, इसमें अन्न को उत्पन्न करो, इसको क्रियात्मकता लाने का प्रयास करो। मेरे प्यारे! देखो, राम ने यह निषाद को उपदेश दिया और निषाद के राष्ट्र में मानो देखो, अहिल्या नामक उस भूमि को उद्धार में लाने का प्रयास किया। मेरे प्यारे! देखो, राम इस पार्थिव तत्त्व के बड़े वैज्ञानिक थे। विज्ञान में वह सदैवरत रहते थे। मेरे प्यारे! देखो, यागों में परणित रहते।

परन्तु देखो, जब भयंकर वन में वह भ्रमण कर रहे थे, तो मुनिवरों! देखो, एक समय, रात्रि के समय लक्ष्मण, सीता और राम मानो तीनों विद्यमान थे। भयंकर वन था, भयंकर वनों में बेटा! देखो, अपने में वह प्रभु का चिन्तन कर रहे थे, कुछ मानो दर्शनों की विवेचना हो रही थी और विवेचना होते हुए राम ने यह कहा कि मैंने यह श्रवण किया है, जब हम विद्यालय में अध्ययन करते थे, क्या यह जो अत्रि मुनि का आश्रम आ रहा है, अत्रि मुनि मानो देखो, बड़े वैज्ञानिक थे अत्रि मुनि ने कई काल में हमें अणु शक्ति और परमाणुओं का और तरंगवाद का उपदेश दिया। जहां वह दर्शनों के मर्म को जानते थे, दर्शनों की प्रतिभा को जानते थे, वहां वह विज्ञान में भी बड़े पारायण कहलाए जाते थे। मेरे प्यारे! राम ने यह कहा कि हम कल यहां से गमन करेंगे और देखो, महर्षि अत्रि मुनि महाराज के द्वार पर हमारा वास होगा।

माता सीता की सिंहराज से प्रार्थना

मेरे प्यारे! इसी चिन्तन में वह मानो देखो, इसी चिन्तन में वह निद्रा की गोद में चले गये। मेरे प्यारे! देखो, सीता जागरुक थी, जब राम और लक्ष्मण दोनों निद्रा की गोद में चले गये, सीता भी निद्रा की गोद में चली गईं, मध्यरात्रि में बेटा! सीता मानो जागरुक हो

गयी, वह अपने प्रभु का चिन्तन करने लगी, प्राण में अपने को समेटती रहती थी। मेरे प्यारे! देखो, उस भयंकर वन में कहीं से मानो देखो, सिंहराज आ गया, सिंहराज आ रहा है मानो देखो, अपनी महान मानो देखो, अपने में वह निसंकोच अपने मार्ग में गति कर रहा है। सीता ने विचारा क्या, यह तो सिंहराज आ रहा है और यह सिंहराज मानव का भक्षण कर जाता है, यह सिंहराज बड़ा आश्चर्य में रहता है। तो माता सीता ने प्रभु से याचना की और यह कहा कि हे प्रभु! आप का जो ज्ञान है और विज्ञान है उसमें यह कहा है कि मानव जब गम्भीर मुद्रा में मानो मुद्रित हो जाए, तो उसे जागरुक नहीं करना चाहिए। ऋषि मुनियों ने, मैं एक समय मानो देखो, महर्षि अटूटी मुनि महाराज के द्वार पर विद्यमान थी। बाल्यकाल था मेरा, उन्होंने यह कहा, अटूटी मुनि ने यह कहा, क्या जो मानव गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो, उसे जागरुक नहीं करना चाहिए, मैं अपने पति को या अपने मानो विधाता को, मैं कैसे जागरुक करुँ और एक स्थली पर यह सिंहराज आ रहा है यह मानो हमें आहार न कर जाए।

ऐसा विचार मानो सीता के मन में आ रहा था, यह प्रभु से याचना करने लगी हे सिंहराज! हम जानते हैं कि हम तुम्हारे राष्ट्र में विद्यमान हैं, परन्तु जो जिसके राष्ट्र में चला जाता है, वह राजा मानो देखो, प्रजा जान करके वह उसको क्षमा कर देता है। मेरे प्यारे! देखो, सीता ने कहा हे सिंहराज! मानो तुम मानो देखो, इस मार्ग से द्वितीय मार्ग को अपनाने का प्रयास करो। जिससे मेरी अन्तरात्मा भयभीत न हो। मेरा आत्मा तिरस्कार न हो जाए, और मैं अपने पतिदेव को और देखो, विधाता को मैं जागरुक न कर सकूँ, इनका जगाना ही मेरे लिए पाप का मूल बन जाएगा।

माता सीता की सङ्कल्पशक्ति

मेरे प्यारे! देखो, वह सिंहराज, जैसे सीता यह

प्रार्थना कर रही थी तो बेटा! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है क्या, उन्होंने बेटा! उस मार्ग को त्याग करके, दूसरे मार्ग को अपना लिया। तो यह बेटा! मानव की स्मरणशक्ति, यह सङ्कल्पशक्ति कहलाती है, इसको सङ्कल्पमयी जगत कहा जाता है मानो देखो, जब मानव अहिंसा परमोधर्म को अपनाना प्रारम्भ करता है, उस अहिंसा परमोधर्म की वेदी पर, जो मानव अपने जीवन को लाता है तो मानो देखो, उसकी सङ्कल्प शक्ति महान बन जाती है। सीता की सङ्कल्प शक्ति बड़ी महान थी। मानो देखो, सीता अपने में सङ्कल्प में ओत प्रोत हो करके मानो अपने में मग्न होने लगी और यह कहा कि हे प्रभु! हे परमात्मान! हे सर्वज्ञ! आपकी महिमा बड़ी विचित्र है, हे प्रभु! मानो देखो, आप तो अग्निमयी स्वरूप हैं, आप तो सङ्कल्पोमयी विद्यमान हैं, प्रभु! आप तो सिंहराज के हृदयों में विद्यमान हो करके आप उसको प्रेरणा के स्रोत बने हुए है। माता सीता बेटा! यह प्रार्थना कर रही थी, मृगराज अपने भयंकर वन को चला गया। मेरे प्यारे! देखो, वह निद्रा की गोद में, वह सीता भी चली गई। प्रातः काल होते ही अपने अपने आसनों से मानो देखो, अपने आसनों को त्याग करके, अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो गई, मानो देखो, क्रियाओं से निवृत्त हो जाना यह भी मानवीयतव कहलाता है। प्रत्येक मानव को चाहिए कि प्रातः कालीन वह अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके मानो अपने कार्यों में रत्त हो जाना चाहिए।

रात्रि में प्रभु का चिन्तन

मेरे प्यारे! प्रातः कालीन क्रियाओं से निवृत्त हो करके मुनिवरों! देखो, राम ने कहा कहो, देवी! रात्रि तुम्हारी कैसी सम्पन्न हुई है? सीता ने कहा प्रभु! मेरी रात्रि बड़ी प्रियता में और प्रभु की गोद में मेरी रात्रि समाप्त हो गई। मानो देखो, रात्रि में प्रभु का प्रायः चिन्तन करना चाहिए। क्योंकि रात्रि अहिल्या है और अहिल्या की गोद में मानव विद्यमान हो करके, प्रभु का

स्मरण करना चाहिए। मेरी रात्रि, प्रभु! मानो देखो, उस अहिल्या की गोद में और प्रभु के आनन्द में मानो उसकी प्रार्थना में मेरी रात्रि सम्पन्न हो गई। और मेरे प्यारे! देखो, सीता ने कहा कहो भगवन! आप की रात्रि कैसी सम्पन्न हुई? तो उस समय राम ने कहा देवी! मेरी रात्रि ऐसी सम्पन्न हुई है क्या मानो देखो, यह जो जगत है यह मन में और मन, बुद्धि में और बुद्धि, चित्त में और मानो चित्त के मण्डल में यह मन विश्राम कर रहा है। हे देवी! यह तुम्हें प्रतीत है क्या, देखो, चित्त का मण्डल है, अहङ्कार का मण्डल है उन दोनों मण्डलों में यह मन स्थिर हो जाता है और स्थिर हो करके यह मानव ऐसे, हम बेसुध हो जाते हैं कि संसार का ज्ञान नहीं रहता। प्राणां भविते देवं ब्रह्मा हे देवी! मैंने अध्ययन किया है, गुरुदेव के चरणों में विद्यमान हो करके, माता अरूण्धति मुझे वर्णन कराती रहती थीं, क्या मानो देखो, यह जो प्राणं ब्रह्मे जब मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार अपनी साम्यावस्था में चला जाता है तो हे देवी! मानो देखो, यह प्राण आत्मा के साथ जागरुक रहता है, जो गति बनी रहती है। यह गतिवान बना रहता है। मानो देखो, वह अपने में आनन्द को अनुभव करता है।

मेरे प्यारे! जिस समय मानव का मन, यह निद्रा की गोद में चला जाता है अरे, कौन जागता है? उस समय यह प्राण आत्मा के साथ जागरुक रहता है, यह जागता है, यह गति बनाए रहता है, यह श्वांस की गति बनी रहती है। मेरे प्यारे! देखो, मानव अपने में अपने को समेट लेता है।

तो मुनिवरों! देखो, जब माता सीता और राम ने जब यह चर्चाएँ की, तो बेटा! दोनों मानो देखो, विचार विनिमय करते हुए और लक्ष्मण के समीप पहुँचे। राम ने कहा कहो, लक्ष्मण जी! रात्रि कैसी सम्पन्न हुई? तो मुनिवरों! देखो, लक्ष्मण ने कहा हे प्रियवर! हे भगवन!

मेरी रात्रि आपके चरणों में व्यतीत हो गई है, क्योंकि जो संसार में सेवक होता है, चाहे वह माता का सवेक हो, चाहे वह विधाता, पितर का सेवक हो, उसका तो प्रत्येक क्षण मानो देखो, सेवा में व्यतीत हो जाता है। आज मेरी जो रात्रि गई है। वह अहिल्या रात्रि है, और चरणों की पादुका तुम्हारी है, और माता का मुझे स्नेह प्राप्त हो रहा है, उसमें मानो देखो, मेरी रात्रि समाप्त हो गई है, सम्पन्न हो गई है।

महर्षि अत्रि आश्रम में भगवान राम

मेरे प्यारे! यह कैसे अनुपम विचार है, मानो देखो, अपने अपने विचारों में कितने मानो पूर्णता को प्राप्त हो जाते हैं, जो बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं, वह प्रातः कालीन, एक दूसरे की कुशलता में लग जाते हैं। मेरे प्यारे! एक दूसरे की आभा में निहित हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, वहां अपनी चर्चाएं करके, कुछ कन्दमूल इत्यादियों का आहार करके प्रातःराश करते हुए, मेरे प्यारे! वहां से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए, मेरे प्यारे! देखो, महर्षि अत्रि मुनि महाराज के आश्रम में पहुँचे। अत्रि मुनि ने दृष्टिपात किया, यह तो राम हैं, और सीता के सहित हैं, लक्ष्मण भी विद्यमान हैं। मेरे प्यारे! देखो, अत्रि मुनि महाराज ने उन्हें आसन दिया, वे आसन पर विराजमान हो गये। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अनुसूया से कहा देवी! हमारे यहां अतिथि विराजे हैं, ये वनचर अतिथि हैं, इनका अतिथि किया जाए।

मेरे प्यारे! देखो, उन दोनों ने उनका अतिथि किया, नाना प्रकार के कन्दमूल अन्न इत्यादि से मानो देखो, उनका स्वागत किया। मेरे प्यारे! उन्होंने, उनका जो भोज था, वह स्वीकार किया और स्वीकार करके वहीं विराजमान हो गये, राम से कहा, अत्रि मुनि ने कहो, भगवन! आपका शरीर कुशलपूर्वक है? उन्होंने कहा धन्य हैं, प्रभु! आपकी अनुपम कृपा है। क्योंकि

ऋषि मुनियों की जब अनुपम कृपा रहती है तो मानो देखो, मेरा हृदय प्रसन्न रहता है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कहो, कुछ और जानना चाहते हो? उन्होंने कहा प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि एक समय जब हम महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वारा अध्ययन करते थे, तो एक समय आपका और महर्षि भारद्वाज मुनि, दोनों का आगमन हुआ था और आपने कुछ विज्ञान की चर्चाएं प्रगट की थीं, मानो देखो, उस विज्ञान को हम पुनः से अपने में श्रवण करना चाहते हैं। उन्होंने कहा वह विज्ञान कौन सा था? उन्होंने कहा यह मुझे स्मरण नहीं रहा है, कुछ मानो देखो, तरंगवाद के ऊपर विज्ञान था।

ज्ञान विज्ञान की माला

मेरे प्यारे! देखो, उस समय महर्षि अत्रि मुनि महाराज ने कहा हे राम! मैं यह उच्चारण कर रहा था कि यह जो परमाणुवाद है, यह बड़ा विचित्र है, यह जो गुरूतववाद है, यह बड़ा विचित्र है। मानो देखो, मैं यह उच्चारण कर रहा था कि ऋषि मुनि अपने में उस माला को बनाते हैं, जिस माला को धारण करके मानव का जीवन धन्य हो जाता है, वह माला कौन सी है, जिस माला को रात्रि अपने में धारण करती रहती है, जिस माला को, आकाशगंगा, लोक लोकान्तरों के रूप में अपने को धारण करती रहती है, जिस माला को मधुमक्खी मानो जो रानी मक्खी होती है, वह नाना मक्खियों की माला बना करके, अपने में धारण करने लगती है। इसी प्रकार मानव का कर्तव्य है कि ज्ञान और विज्ञान को ले करके इसकी माला बनानी चाहिए और माला बना करके, उस माला में ब्रह्मसूत्र को पिरो देना चाहिए, जब ब्रह्मसूत्र को मानव पिरो देता है, अपने प्रत्येक शब्द के आकार को अपने मानो सूत्र में पिरो देता है, तो वह मानव धन्य हो जाता है। मैं यह उच्चारण करता रहा हूँ परम्परागतों से, कि क्या कोई मानव साधना में परणित होना चाहता है, प्रत्येक मानव

की यह इच्छा बनी रहती है, क्या मैं साधना में प्रवेश होना चाहता हूँ, मैं प्रकाश में जाना चाहता हूँ, मैं उस सूत्र का मनका बनना चाहता हूँ जिस सूत्र को मानव धारण करके मानो अपने में प्रकाशमान हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, महात्मा अत्रि मुनि ने कहा राम! मानो देखो, तुम्हें यह प्रतीत हो गया होगा। यह माला ब्रह्मे सूत्रों हमारे यहां ऋषि मुनि अपने प्रत्येक श्वांस को मानो ब्रह्म सूत्र में पिरो गएं हैं जिससे वह मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए है मानो देखो, वही, जो ब्रह्मसूत्र की आभा अपने में धारण करके, वह सोम की उत्पत्ति होती रहती है, उस सोम को वह अपने में धारण करके बेटा! सौम्य बन जाता है। मेरे प्यारे! विचार क्या, महर्षि अत्रि मुनि महाराज ने कहा हे राम! मैं मानो विज्ञान की चर्चा करता रहा हूँ। एक समय मैं भारद्धाज मुनि के आश्रम में पहुँचा था और मैंने वहाँ से आ करके मानो तुम्हारी अहिल्यां ब्रह्मा कृतं लोकाम् मानो देखो, जब यह वर्णन आया, सम्भूति वर्णन आया और वह सम्भूति वर्णन क्या कह रहा था जब मैं देखो, अपनी देवी से मैंने यह कहा अनुसूया से, किन्हे देवी! मैं आज मानो देखो, ऋषि मुनियों के मध्य में एक परमाणुवाद के ऊपर, मैं विचार विनिमय करता रहा हूँ, वह जो परमाणुवाद है, उस परमाणुवाद में मानो देखो, एक विशेषता मैंने दृष्टिपात की, जितना यह ब्रह्माण्ड मुझे दृष्टिपात आ रहा है, मानो देखो, वह ब्रह्माण्ड, मुझे एक ही परमाणु में मानो देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड मुझे दृष्टिपात आ रहा था। जैसे पूर्णमिदम् पूर्णिमा की चर्चा आती रहती है, हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत है क्या मानो देखो, माता के गर्भ स्थल में वही परमाणुवाद शिशु बन करके आता है और शिशु बन करके जैसे पहुँचा सर्वत्र देवता माना उसके अङ्ग संग विद्यमान हो जाते हैं, वही देवता अङ्ग संग विद्यमान हो करके पूर्णमिदम् पूर्णिमा की चर्चा आती है। मानो देखो, पूर्ण में से पूर्ण की उत्पत्ति हो रही है तो हे देवी!

यहां परमाणु पूर्ण है, परमाणु में से परमाणु का जन्म हो रहा है और वह जन्म हो करके मानो देखो, वही परमाणु अपने में प्रमाणित होता हुआ, अभ्योदय होता हुआ मानो देखो, वही प्रकाश का द्यौतक बन जाता है, और वही आकार में आ करके मानो देखो, वहीं पूर्णता का एक मनका बन करके, ब्रह्मसूत्र में पिरोया जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि अत्रि मुनि महाराज ने, अनुसूया के सम्भूति वाक्यों को जब प्रगट किया, तो राम अपने में प्रसन्न हो रहे थे, राम ने कहा प्रभु! मुझे इस वाक को प्रगट कराईए, जिसे आपने यन्त्रों के निर्माण की चर्चा की थी। उन्होंने कहा हे राम! मैंने एक यन्त्र का निर्माण किया था, जिस यन्त्र में मैं विराजमान हो करके मानो देखो, अरूण्धति मण्डल में एक समय गया, अरूण्धति मण्डल में चला गया था। यन्त्र का निर्माण करके मैंने महर्षि कागभुषुण्ड जी की सहायता से लोमश जी की सहायता से मैंने उस यन्त्र का निर्माण किया था। मेरे प्यारे! देखो, यन्त्र में यह विशेषता क्या, यन्त्र में विद्यमान हो करके ऋषि बेटा! भ्रमण करता हुआ मुनिवरों! देखो, अरूण्धति मण्डल पर पहुँचा, वशिष्ठ मण्डल पर जा पहुँचा मेरे प्यारे! देखो, जहां से बुद्धि की आभा का निर्माण होता है। तो मेरे प्यारे! यह महात्मा अत्रि ने प्रगट कराया।

कर्तव्य के लिए माता सीता वन में

मेरे प्यारे! देखो, माता अनुसूया ने अपने को मानो देखो, कृतंभृगासि वाक्यों को उच्चारण किया। उन्होंने कहा हे देवी! मानो देखो, अत्रि मुनि तो मौन हो गये, अब मानो देखो, यही चर्चा और सीता की ओर देखो, अनूसूया की होने लगी। अनूसूया ने कहा हे सीते! तुम भयंकर वन में क्यों आ गई हो, क्योंकि तुम्हारा जो पालन हुआ है, वह तो राष्ट्रगृहों में हुआ है, राष्ट्रीय विचारधारा में हुआ है, और तुम देखो, भयंकर

वन में क्यों आ गई? उन्होंने कहा हे मातेश्वरी! आप को तो प्रतीत है कि मैं देखो, भयंकर वन में इसलिए, क्योंकि मेरा यह कर्तव्य है, मेरे पति के रूप में मानो राम विद्यमान हैं, मैं इनकी सेवा करने के लिए क्या, मानो देखो, मैं एक दूसरे में एक दूसरे का प्राण मानो फूंका जाता है इसलिए एक दूसरे में हम रत्त रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, माता अनुसूया ने अमृतं ब्रह्मा लोकाम् उन्होंने कहा देवी! तुम मानो देखो, इस प्रकार के विचार तुम्हारे हृदय में क्यों आए? उन्होंने कहा कि हे मातेश्वरी! इसलिए विचार आए, क्योंकि जो मानव एक दूसरे का प्रेरक है, जैसे आप अत्रि मुनि के साथ भयंकर वनों में, यहां तपस्या में परणित हो रही हो, इसी प्रकार मुझे प्रेरणा ऋषि मुनियों से प्राप्त हुई है। मैं उस प्रेरणा का स्रोत बन करके, मैं भी अपने को तपस्वी बनाना चाहती हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने यह वाक कहा तो अनूसूया ने यह कहा कि तुम्हारे हृदय में हीनता की भावना तो नहीं है। सीता ने कहा कि मैं हीनता को जान नहीं पाई हूँ, हीनता किसे कहते हैं? क्या, तुम राम के अधीन तो नहीं हो उन्होंने कहा नहीं, मैं अपने विचारों के अधीन हूँ, मैं अपने क्रियात्मक विचारों के अधीन बन गई हूँ मानो इससे मैं उसमें मैं परतन्त्र रहती हूँ और उसमें देखो, अपने में स्वतन्त्र रहने के लिए सदैव परतन्त्रता का जीवन, मैं प्रिय नहीं स्वीकार करती। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक अनुसूया को बड़ा प्रिय लगा। उन्होंने कहा हे देवी! तुम्हें प्रतीत है क्या मधु विद्या यह कहती है, मधु विद्या में यह आया है कि यह जो पत्नी होती है, यह पति तक सीमित रहती है। यदि वह स्वतः अपने लिए पत्नी बन जाए तो मानो उसका उद्धार हो जाए। अपने लिए पत्नी कौन होती है, जो अपने जीवन को ऊँचा बनाने के लिए, प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर अनुशासन करना, प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर मानो

अन्वेषण करना और इन्द्रियों पर अनुशासन करना ही मानो देखो, अपने को पत्नी बनाना है। अपने को पति के लिए पत्नी नहीं, अपनी इन्द्रियों के लिए अपनी उत्सुकता के लिए पत्नी, ब्रह्मज्ञान में परणित हो जाना है, आत्मोत्थान के लिए, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाए।

मेरे प्यारे! देखो, सीता के इन वाक्यों को पान करते हुए देखो, अनुसूया बड़ी प्रसन्न हो रही थी। उन्होंने कहा हे सीते! मानो यह विचार तुम्हें कहां से प्राप्त हुए? उन्होंने कहा जब मैं बाल्य काल में माता की लोरियों का पान करती थी, तो माता ने ये विचार मुझे दिए, और माता! जब मैं विद्यालय में आ पहुँची तो आचार्य ने मुझे ये विचार दिए, इन विचारों से मेरी आत्मा का समन्वय रहता है, और आत्मा और चित्रं ब्रह्मा लोकाम् मानो देखो, आत्म विचार, आत्मा का जो चिन्तन है वह चिन्तन मानो देखो, मुझे स्वतन्त्र बनाता है, वहीं चिन्तन मुझे मोक्ष की पगडण्डी के लिए प्रेरित करता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, दोनों देवियों का जो संवाद है, वह बड़ा विचित्र मुझे दृष्टिपात आता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, सीता से कहा तो हे पुत्री! क्या तुम इस भयंकर वन में रहती हो, मानो तुम्हें किसी का मानो किसी प्राणी से तुम्हारा हृदय मानो आकुञ्चन तो नहीं हो जाता, मानो कुण्ठित तो नहीं हो रहा है। उन्होंने कहा नहीं, हे मातेश्वरी! मैं मृगराज से भी प्रार्थना कर लेती हूँ। सिंहराज से भी प्रार्थना कर लेती हूँ, सर्पराज से भी मैं प्रार्थना कर लेती हूँ, वह प्रार्थना मेरी सङ्कल्प शक्ति से देखो, वह प्राप्त कर लेते हैं और मैं उनकी वेदना को स्वीकार करके मानो देखो, अपने में प्रसन्न हो लेती हूँ। मेरे प्यारे! देखो, इसलिए मानव को इतना निर्भय होना चाहिए, इतनी मानो देखो, निर्भयता उसके हृदय में जिससे बेटा! प्राणी मात्र के लिए, आत्मा की, आत्मा ही उसमें, स्वीकार करने वाला हो। मानो सर्वे भूतो

ब्रह्मा आत्मा बेटा! सब में विद्यमान है, इस प्रकार का जो विचार मेरी पुत्रियों का जो बन जाता है, क्या, गृह हो, भयंकर वन हो, कोई भी हो परन्तु उसमें प्रीति रहनी चाहिए। भयभीतता नहीं रहनी चाहिए। यह आत्मा के ह्रासता का एक मूल बन जाता है।

माता का अहिल्या स्वरूप

तो मेरे प्यारे! आज हमारा विचार क्या कह रहा है, विचार क्या मुनिवरों! उन माताओं को अहिल्या कहा जाता है जो निर्भय रहती हैं, जो आत्मा में आत्मा का चिन्तन करने वाली है। मेरे प्यारे! देखो, मैं उन विचारों में जा रहा हूँ, क्या, हमें अपने विचारों को महान बनाना है, अपने विचारों में एक महानता का दर्शन करना है, मानवता का दर्शन करना ही एक योग्यता मानी गई है। आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ, विचार यह देने के लिए, हमारे वैदिक साहित्य में वेद के वागंमय में नाना प्रकार के बेटा! विचार आते रहते है। नाना आलंकारिक चर्चाएं आती रहती हैं, क्योंकि वेद का जो एक विचार है कि मानो देखो, अपनी वार्त्ताओं को वह प्रकृति से, ब्रह्म से मिलान हो करके उनकी चर्चा कर रहा है परन्तु देखो, उनमें एक आलंकारिक बन जाता है उस अलंकार को बुद्धिमानो का कर्तव्य है, उनका गम्भीर अध्ययन होकर के उसका विशुद्ध रूप ला करके बेटा! उसको इतिहास या उसको मानो देखो, प्रति में प्रगट न करे, जिससे देखो, आगे आने वाले समाज में वह शब्द मानो देखो, एक पाषाण के तुल्य हो जाए।

यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुहें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूँगा। अहिल्या नाम रात्रि का है, अहिल्या नाम पृथ्वी का है, अहिल्या नाम माता का है। मेरे प्यारे! देखो, अहिल्या नाम चन्द्रमा की कान्ति को भी कहते हैं। बेटा! इसके नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द हमारे वैदिक साहित्य

में आते रहते हैं। आज का हमारा यह विचार समाप्त। अब मुझे समय मिलेगा, तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन होगा। नंगोला दिनांक ०३ ०८ १९८६।

19 ०४ ०८ १९८६ ब्राह्मण नचिकेता

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने गएं है और जो भी मानव उसे अपना वरण बना लेता है अथवा उसे वर लेता है, वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। इसीलिए आज हम उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय स्वीकार करें। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना वैज्ञानिक हुए, नाना ब्रह्मवेत्ता हुए हैं, परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित है, वे सीमा में आने वाले नहीं है। इसीलिए आज हम उसे अपना वरण बनाना चाहते हैं, उसे वरना चाहते हैं। वह हमारा वरणीय माना गया है। जिस प्रकार यज्ञशाला में, यज्ञमान अग्नि को अपना वरण बनाता है, और यज्ञशाला में अग्नि की स्थापना करता है इसी प्रकार जिज्ञासु उस परमपिता परमात्मा को, अपना वरणीय बनाना चाहता है, और यह उसकी उत्कृष्ट इच्छा बनी रहती है, क्या, मैं परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना करके, मैं प्रायः उसी को प्राप्त होना चाहता

हूँ और प्रकाश में रत्त होना चाहता हूँ।

वरणीय परमात्मा

तो इसीलिए बेटा! हमारे वैदिक साहित्य वालों ने कहा, आचार्यों ने कहा, वे परमपिता परमात्मा हमारा वरणीय है, वह प्रकाश है, अन्धकार से रहित है। आज हम मानो देखो, विज्ञानवेत्ता हैं, जितना भी यह भौतिक विज्ञान, प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता है, भौतिक जगत के साथ, भौतिक विज्ञान अपने में अनूठा बना रहता है। परन्तु जब हम परमपिता परमात्मा की, महानता के ऊपर विचार विनिमय करते हैं, तो प्रायः ऐसा दृष्टिपात होने लगता है, क्या वे परमपिता परमात्मा एक अनूठा है, विज्ञानवेत्ता है, अणु और परमाणुओं का निर्माण करने वाला है। वह निर्माणवेत्ता है, मानो वह ध्रुवा है। मेरे प्यारे! देखो, जैसा पूर्व काल में भी वर्णन किया। हमारे जिज्ञासु जन परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना करके और जो ज्ञान और विज्ञान जो मानो अन्धकार से रहित है, उस ज्ञान की तरंगों को जिज्ञासु अपने में पान करता रहता है, वह जो ज्ञान है, जिससे मानव निःसंकोच बनता है, जिस ज्ञान और विज्ञान के द्वारा मानव रात्रि को रात्रि स्वीकार नहीं कर रहा है, मानो वह प्रकाश के मार्ग पर जाना चाहता है। प्रकाश को अपनाना चाहता है।

वैदिक ज्ञान से सौम्यता

तो बेटा! उसको मानो वह प्रकाश रूपी जो अमृत है, ज्ञान रूपी जो अमृत है, उसे जिज्ञासु अपने में पान करता है, वह अमृत है। मानो हमारे यहां अमृत के सम्बन्ध में सोमरस है मानो देखो, सोमरस उसे कहते हैं जो सौम्य है, सोम कहते हैं बेटा! जो मानव को सौम्य बना देता है। तो ऐसा कौन सा सोमरस है बेटा! जिसको पान करने से, मानव सौम्य बन जाता है। मेरे पुत्रों! वह कौन सा ज्ञान है, जिससे मानव के हृदय में एक मानवीयता छा जाती है और वह सौम्यता को प्राप्त हो

जाता है। मेरे पुत्रों! वह ज्ञान है, वह अमृत है, वैदिक ज्ञान जो मानव के अन्तर्हृदय में प्रकाश उत्पन्न होता है और उस प्रकाश में वह मानव सदैव रत्त रहता है। तो बेटा! उसे हमारे यहां सोम कहते हैं। हमारे वैदिक साहित्य में सोम का बड़ा वर्णन आता रहा है। मानो बालक नचिकेता को भी यमाचार्य ने सोमरस का पान कराया और वह सोमरस जब उन्होंने कहा क्या, तुमने माता अरूण्धति और वशिष्ठ मुनि महाराज दोनों की विवेचना स्वीकार की, तो मानो देखो, नचिकेता ने कहा प्रभु! तो उन्होंने सोमरस के लिए, उन्होंने याचना की, हे बाल्य! हे ब्रह्मवेत्ता! हे ब्रह्मजिज्ञासु! तुम मानो सोम का पान करो, और सोम का पान करने से ही तुम्हारा जीवन अमृतमयी प्राप्त हो जाएगा, वह अमृत है, मानो देखो, वह ज्ञान है। ज्ञान किसे कहते हैं बेटा! यह विचार आता है। प्रत्येक मानव के हृदय में यह आशङ्का बनी रहती है, कि ज्ञान किसे कहते हैं? मानो देखो, ज्ञान वह कहलाता है जब मानव प्रकृति के आवेशों में परणित हो जाता है तो उस समय उसके अन्तर्हृदय से, अन्तरात्मा से नाना प्रकार की तरंगे उत्पन्न होती हैं और उन तरंगों में मानो एक उद्बुद्ध एक मानो विचार उत्पन्न होता है कि मानो मुझे महान बनना है। मुझे तो पवित्र बनना था, तू मानो अन्धकार में चला गया, यह तो प्रकाश की विवेचना और प्रकाश में जाना था, तू अन्धकार में चला गया, जहां यह विचार आते हैं तो प्रकाश वह जिसकी अन्तरात्मा स्वीकार कर लेता है आत्मा जिसको स्वीकार करता है, वही प्रकाश है, वह अमृत है वह मानो देखो, एक रस रहने वाला, अमृत का अभिप्राय वह एक रस रहने वाला है।

खेचरी मुद्रा से सोमरस

तो बेटा! वह जो ज्ञान अमृत है उसको मानव पान करता है। मेरे पुत्रों! जब बालक नचिकेता को यह वर्णन कराया तथा अन्तरात्मा से जो चहुँमुखी तरंगों का

जन्म होता है तुम मानो उन तरंगों के ऊपर स्थित हो जाओ और वही तुम्हारा ज्ञान है, वही मानो देखो, परमपिता परमात्मा जो वरणीय है उसको अपना वरुण बना करके प्रकाश में जाने का प्रयास करो। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह वाक जब नचिकेता ने पान किए, नचिकेता ने कहा प्रभु! यह तो मैने स्वीकार कर लिया, यह तो आत्मा का अमृत बन गया है, आत्मा का सोम बन गया है, आध्यात्मिकवादी जो पुरुष है वे इसी सोमरस का पान करते हैं। अब मैं यह जानना चाहता हूँ, भगवन! क्या मुझे अपने शरीर के स्थिर करने के लिए जिस शरीर में यह अन्तरात्मा, प्रभु का दर्शन करेगा मानो प्रभु के दर्शनों के लिए वह जिज्ञासु बनने के लिए तत्पर हो रहा है तो जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए, तीव्र तपस्या करने के लिए कौन से सोमरस की आवश्यकता है, वह कौन सा रस है भगवन! जिसे मुझे शरीर को स्थिर करने के लिए मानो देखो, सोम को पान करना है।

मेरे प्यारे! देखो, यमाचार्य ने कहा क्या हे नचिकेता! जो मेरा विचारक ब्रहे जो मेरा सुयोग्य रहा है, मैं उसे वर्णन करने के लिए तुम्हें मानो देखो, अपनी आभा प्रगट कर रहा हूँ, जिसको मैंने आचार्यों के कथानुसार पान किया है। एक समय यह प्रश्न मैंने अपने पूज्यपाद मानो देखो, आचार्य, गुरु से भी यह प्रश्न किया, क्या, प्रभु! मुझे सोमरस का पान करना है, ज्यों का त्यों जैसा प्रश्न तुम्हारा है, वैसा ही मैंने पूज्यपाद गुरुदेव से जब यह प्रश्न किया तो आचार्य मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा कि तुम प्राणायाम करो और प्राण के द्वारा मानो देखो, जो खेंचरी मुद्रा है, शीतली प्राणायाम है उसके द्वारा तुम पोषक तत्त्वों को अपनी जीवात्मा को, शरीर में स्थिर करने के लिए तुम उसका आहार, उस सोम रस का तुम पान करो। मेरे प्यारे! वह कौन सा सोमरस हुआ? मानो देखो, वह परमाणु

वायु मण्डल में निहित है, और प्राणायाम करने वाला मानो शीतली प्राणायाम करता है, उस प्राणायाम को करते ही मानो अपने में पोषक तत्त्वों को, शरीर को स्थिर करने के लिए, प्राणों की रक्षा करने के लिए, अपने पोषक तत्त्वों को ग्रहण कर लेता है और वह जब उसको विधिवत अपनी क्रिया में लाना प्रारम्भ करता है तो उसको सोमरस कहते हैं।

वृक्ष पंचागं से सोमरस

मेरे प्यारे! नचिकेता मग्न हो गया और नचिकेता ने कहा धन्य है प्रभु! मुझे उस सोमरस का पान कराईए, परन्तु यदि हम खेंचरी मुद्रा के द्वारा, सोमरस को न पान कर सके तो दूसरा सोमरस कौन सा बनेगा। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि यह सोमरस है ब्रह्मणं ब्रहे जैसे देखो, नाना प्रकार के वृक्ष हैं, उन वृक्षों का रस बना करके, अग्नि में तपाना है जैसे पीपल का पाञ्चाङ्ग है जैसे वट वृक्ष का पाञ्चाङ्ग है जैसे जाल के वृक्ष का पाञ्चाङ्ग जैसे मानो तुलानवेति का पाञ्चाङ्ग है इन सब मानो देखो, रसों को बना करके, अग्नि में तपाना, अग्नि में तपा करके मानो देखो, उसे पान करना, उसे पान करके वह सोमरस बन जाता है, और सोमरस बन करके उसे अपनी जीविका को मानो, मानव साधना के लिए उसे प्रयोग कर सकता है, वह सोमरस कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, यह वाक जब उन्होंने कहा कि हम वनस्पतियों के रसों को मानो तपा करके एकोकीकरण करके उसको सोमरस कहा जाता है। परन्तु द्वितीय उन्होंने सोमरस की एक ओर भी विवेचना की है, और वह विवेचना यह है कि सोमरस मानो देखो, उसे भी कहते हैं जैसे महर्षि कणाद के जीवन में मानो वाक आता है, रेंगनी के जीवन में भी वह कथानक आता है, वही कथानक याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के जीवन में आता है। मेरे प्यारे! देखो, कणाद ऋषि कणक को एकत्रित करते रहते थे, और उस अन्न

को एकत्रित करना, जिस अन्न पर किसी का अधिकार नहीं होता, उसे शिलस्थ अन्न कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह कृषक अपने अन्न को, गृह में ले गया, और गृह में ले जा करके उसमें मानो वहाँ शिलस्थ अन्न रह जाता है, उसको वह एकत्रित करता है, और एकत्रित करके उसको वह मानो देखो, जल में देखो, उसे भिगो नम कर लेता है, वह जल में अर्पित करके, वह प्रातःकालीन मानो देखो, उसका दुग्ध बनाता है और गायत्री का, सोम विचारों का अध्ययन चलता रहता है, परन्तु उसको वह मानो देखो, जल में खरल करता हुआ, उसका दुग्ध बना लेता है मानो देखो, उसे अग्नि में तपाता है, उसको पान करता है, उससे बुद्धि महान बनती है, मानो किसी के अधिकार वाली बुद्धि का निर्माण नहीं होता। वह मानो देखो, ऐसे अन्नाद को पान करके, ऐसी बुद्धि उपजने लगती है मानो देखो, जो सात्त्विक है, अखण्ड है मानो देखो, जो छिन्न न होने वाली है। मेरे प्यारे! देखो, उस अन्न को पान करना और दर्शनों का अध्ययन करना उसके ऊपर लेखनी बद्ध करना मेरे प्यारे! उसे भी सोमरस कहा जाता है। वह भी सोम कहलाता है। सोम का अभिप्राय यह, क्या, जिस पर किसी का अधिकार न हो। मेरे प्यारे! सिवाय प्रभु के कोई भी उसका अधिकारी न हो, मानो देखो, वही उसका अधिपथ्य है, परमात्मा को पान करना, परमात्मा के ज्ञान को अपने में ग्रहण करना है, तो मुनिवरों! देखो, सोम को पान करके, सौम्य बन करके, हम सोम को प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि सोम को पान करना है, सौम्य बनना है, और सोम को ही बेटा! प्राप्त करना है। मेरे प्यारे! देखो, सोम औषध है, सोमरस है और उसको पान करने से मानव सौम्य बनता है और सौम्य बन करके बेटा! वह जो प्रभु सौम्य है,

उसको पान करना है।

सोम से मृत्युञ्जय

मेरे प्यारे! मैं दूरी न चला जाऊँ, आज मैं बेटा! दूरी न चला जाऊँ, विचार यह प्रारम्भ हो रहा था, क्या मानो देखो, सोमरस को पान करके, सोम को प्राप्त करना है। मेरे प्यारे! देखो, वैदिक साहित्य के आचार्यों ने सोमरस का बड़ा वर्णन किया है। आज मैं सोमरसों में तो जाना नहीं चाहता हूँ, परन्तु विचार यह कि बालक नचिकेता को मुनिवरों! देखो, उन्होंने वर्णन कराया, और नचिकेता मुनिवरों! देखो, उस ज्ञान को पान करके, अपने में हर्ष ध्वनि करने लगा, आचार्य के चरणों में ओत प्रोत हो गये, और यह कहा कि प्रभु! धन्य हैं, आप ने मेरे अज्ञान को दूरी कर दिया है प्रभु! इसीलिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, यमाचार्य ने, मृत्यु आचार्य ने कहा है, क्या, मानव सोम को प्राप्त करके ही मानो मृत्यु से पार हो जाता है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार विनिमय क्या, कि हम परमपिता परमात्मा के उस आनन्दमयी ज्ञान और विज्ञान के ऊपर हमारा अधिपथ्य होना चाहिए, जिससे बेटा! हमारा मानवीयतव पवित्रता में परणित हो करके बेटा! इस सागर से पार हो जाए।

आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या, नचिकेता ने कहा हे प्रभु! मैं आगे के ओर ज्ञान को जानना चाहता हूँ। उन्होंने कहा हे नचिकेता! तुम्हें मैंने यह वर्णन कराया है कि प्राण ही प्राणों के रूप में परणित रहता है, मानो यही प्राण अपने में मानवीय अभ्यों को प्राप्त हो करके और मानवतव की आभा में निहित हो जाता है। तो विचार क्या है, क्या मंगलं ब्रह्मे वाचप्रह्रं लोकाम् मानो देखो, अपने मङ्गल की कामना करने से और अन्वेषण करने से, साधना में परणित होना है, साधक बन करके ही मानो देखो, साधना करने वाला प्राणी, अपने प्रभु

और अपनी महानता, अपने जीवन को ऊँचा बना सकता है। तो मेरे प्यारे! आगे हमारा, वेद का वाक क्या कह रहा है नचिकेता और यमाचार्य दोनों का संवाद बड़ा विचित्रता में परणित हो रहा था। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहां सोमरस को पान करने वाला, मानो अपने में अपने को प्राप्त हो जाता है जैसे परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना करके मानो देखो, वरण कर लेता है और उसी को वह प्राप्त हो जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, नचिकेता और यमाचार्य दोनों के प्रसंग में अपनी आभा का बेटा! प्रायः वर्णन आता रहता है। नचिकेता ने एक समय कहा हे प्रभु! मैं मानो देखो, अपनी अन्तरात्मा में मानो देखो, ध्यानावस्थित होना चाहता हूँ, उन्होंने कहा बहुत प्रियतम! मेरे पुत्रों! देखो, अपने में ही अपने विचारों को ला करके वह मानो देखो, प्रभु का दर्शन करने के लिए तत्पर हो गये, वह साधना और अनुष्ठान करने वाला मानव, अपनी मानो अपनेपन की वृत्तियों को, अपने को प्राप्त होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यमाचार्य और नचिकेता मानो देखो, अपने गृह में वे प्रवेश हुए मानो देखो, पत्नी बड़ी प्रसन्न हुई, उन्होंने कहा कहो भगवन! ब्रह्मवेत्ता हमारे प्रसन्न हैं। नचिकेता ने कहा हे ममत्वां ब्रह्मणा लोकां हिरण्यं रथाः वाचन्नमं ब्रह्मे मेरे प्यारे! नचिकेता ने कहा यम पत्नी से हे माता! मैं बहुत प्रसन्न हूँ, क्योंकि मुझे जो मेरे पितर ने कहा था, कि तू मृत्यु को प्राप्त हो जा, आज मैं मृत्यु को प्राप्त गया, परन्तु मृत्यु के समीप न विद्यमान हो करके अपने सौम्यता का पान करता हुआ, अपने में मैं बड़ा हर्ष में मानो अपने को स्वीकार कर रहा हूँ।

मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने यह कहा तो ऋषि पत्नी बड़ी प्रसन्न हुई, उन्होंने कहा हे प्रभु! यह तो मैं जानती रहती थी, जब विद्यालय में अध्ययन करती थी, आचार्य व्रेतकेतु मुनि महाराज के द्वारा, जब मैं अध्ययन

करती रहती थी, तो मैं मुझे आचार्य यह वर्णन कराते रहते थे, क्या हे पुत्री! जब तुम गृह में प्रवेश करोगी तो मानो देखो, गृह में तुम्हारे यहां से, कोई ब्रह्मवेत्ता मानो ब्रह्मजिज्ञासु, अतिथि कोई भी मानव तुम्हारे गृह से अन्न, जल से पीड़ित नहीं जाना चाहिए। मानो देखो, यह वाक मेरी मंगलं ब्रह्मे आचार्य मुझे प्रायः वर्णन कराते रहते थे, और जब यह मङ्गलमयी कामना हम करते रहते तो मानो मेरा हृदय बड़ा प्रसन्नयुक्त हुआ और मानं ब्रह्मे क्योंकि मैं यह बाल्यकाल से जानती रहती हूँ। क्या कोई भी ब्रह्मवेत्ता मेरे आश्रम से अन्न, जल से पीड़ित नहीं जाना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, वह बोली कि हे ब्रह्मचारी! क्योंकि उद्दालक गोत्र हमारे यहां परम्परागतों से बड़ा विचित्र रहा है क्योंकि उसमें नाना ब्रह्मवेत्ता रहे हैं और इन ब्रह्मवेत्ताओं में भी मानो देखो, नाना वैज्ञानिक रहे हैं और वे विज्ञानवेत्ता इस प्रकार के रहे हैं, जिन वैज्ञानिकों ने मानो शब्द विज्ञान के ऊपर बड़ी उड़ाने उड़ी हैं। जिन विज्ञानवेत्ताओं ने मानो देखो, लोक लोकान्तरों में यातायात बनाने के लिए मानो उनका बड़ा अधिपथ्य रहा है, इसीलिए आज मैं मानो देखो, उद्दालक गोत्र के महापुरुषों की मैं प्रायः प्रशंसा करती रहती हूँ, क्योंकि मैंने उसी कुल में अध्ययन किया है, जब बाल्यकाल में मैंने अध्ययन किया था। तो हे ब्रह्मचारी! हे नचिकेता! मानो जब तुम अपने गृह में जाओ, पिता के द्वार पर जाओ तो तुम मानो देखो, प्रशंसनीय वाक और जो तुमने पान किया है, उसे तुम उदघृत करना और यह कहना कि यह यहां आचार्य यमाचार्य से मुझे प्राप्त हुआ है। मेरे प्यारे! नचिकेता ने कहा मातेश्वरी ऐसा ही होगा।

माता के विचारों का बाल्य पर प्रभाव

तो मुनिवरों! देखो, हमारे यहां विचार आता है कि मम्म ब्रव्हे सम्भवा वेद की आख्यिका यह कहती है

कि माताओं का इस गृह आसन पर मानो देखो, ब्रह्म विज्ञान में माताओं का बड़ा सहयोग रहा है। माताएं जब अपने में यह स्वीकार कर लेती हैं क्या, हमें अपने गृह को, ब्रह्मवेत्ताओं का बनाना है, तो मुनिवरों! देखो, उसी प्रकार की सन्तान को, माता जन्म देना प्रारम्भ कर देती है, अपने विचारों को उसी प्रकार बना लेती है, निर्माण कर लेती है, विचारों का, और उन्हीं विचारों की सम्पदा से मानो गृह आसन और माता के गर्भ स्थल में जो शिशु पनपता है, वह उन विचारों के निर्माण, उन विचारों की प्रतिभा से मानो देखो, उनका जन्म होता है। वह जन्म जब होता है तो वहीं ब्रह्मवेत्ता बन करके, माता के नामोकरण को ऊँचा बनाते रहते हैं।

हृदय से गान का प्रभाव

तो हे माता! यदि तू चाहती है कि मेरे गर्भ से ब्रह्मवेत्ता पुत्र का जन्म हो, तो तू ब्रह्मवेत्ता को जन्म देती है, यदि मानो तू राजा को चाहती तो राष्ट्र को राजा को जन्म दे देती है। मेरे प्यारे! इनको ज्ञान और विवेक होना चाहिए, जब ज्ञान और विवेक की उपलब्धियाँ हो जाती हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, गृह में एक प्राणी को, प्राणी से स्नेह हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, माता ने यह कहा, यमाचार्य की धर्म देवी ने जिनका नामोकरण देखो, सुशीला सुलेख कहा जाता था। मेरे प्यारे! जब वेदों का वह गान गाती थी, जब गान गाती रहती थी तो मुनिवरों! देखो, सर्पराज भी उनके गान को श्रवण करने के लिए आते थे, ऐसा मुझे स्मरण है बेटा! जब गान गाया जाता है तो हृदय से गाया जाता है, आत्मा से गाया जाता है, परमात्मा की वाणी का, आत्मा से जब मिलान होता है, तो बेटा! हिंसक, हिंसक प्राणी नहीं रहता। मेरे प्यारे! वह भी अहिंसा परमोधर्म में परणित हो जाता है।

माता

तो विचार विनिमय क्या, मेरे प्यारे! देखो, वह

नचिकेता और वह देखो, लक्ष्मी ब्रह्म मानो दोनों का विचार विनिमय होने लगा। नचिकेता ने कहा बाल्यकाल में, उन्होंने कहा हे माता! तू ममतव को धारण करने वाली है, परन्तु मैं तुम्हारे चरणों की वन्दना करता हुआ, कुछ प्रश्न करना चाहता हूँ। मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा हे बालक! तुम प्रश्न करो, तुम ब्रह्मवेत्ता हो, ब्रह्म जिज्ञासु हो, उन्होंने कहा हे माता! मैं यह जानना चाहता हूँ कि मानो जब तुम अपने बालकं ब्रव्हे मानो देखो, लोरियों का पान कराती हो, तो उस समय तुम्हारे विचारों की, जो तरंगे हैं, वह बालक के मानो श्रोत्रों में प्रवेश होती है या नहीं। मुनिवरों! उन्होंने कहा होती है। उन्होंने कहा तो यह मानो तुम्हारी शिक्षा मानो प्रद होनी चाहिए। उन्होंने कहा तथास्तु। तो नचिकेता मौन हो गया। नचिकेता ने कहा हे माता! तुम्हें माता क्यों कहते हैं? तो उस समय माता ने कहा हे पुत्र! माता इसलिए कहते हैं क्योंकि वह ममतव को मानो अपने में वह पालना करती है और जो जिसका पालना करता है, जिसका पालन होता है, वह उसके ममतव की धारणा से, उसे अपने में पान करता है। उन्होंने कहा ब्रह्मे वाचो देवाः हे मातेश्वरी! मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हें मानो देखो, बालक माता क्यों कह रहा है? उन्होंने कहा ममत्वां प्रमाण ब्रह्मे मानो देखो, वह परमाणुओं की धारणा देखो, उसी में निहित रहती है, वह इसलिए माता का भाव अपने में प्रगट करता रहता है। उन्होंने पुनः कहा हे माता! चलो, यह भी मैंने जान लिया, परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हें माता क्यों कहते हैं? जब पुनः यह प्रश्न किया तो उन्होंने कहा माता इसलिए कहते हैं क्योंकि माता की तरंगों से मानो वह बालक तरंगित हो करके बाह्य जगत में आता है। इसलिए वह माता के ममतव को प्रगट करता रहता है। उन्होंने कहा हे माता! मानो देखो, मैं ओर यह जानना चाहता हूँ, क्या तुम्हें बालक, माता ही

क्यों कह रहा है? मेरे प्यारे! जब यही प्रश्न किया, तो उन्होंने कहा ऋषि पत्नी ने हे भगवन! हे ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मचारी! माता इसलिए कहते हैं क्योंकि ब्रह्म और चरी का जो मानो आत्मा के साथ में मिलन होना है, वह माता के गर्भ स्थल में होता है, और उससे आत्मा का समन्वय होता है, विचारों की पुट लगा करती है, और उससे पुट लग करके मानो देखो, उसका भाव, वह माता के गुणों का वर्णन कर रहा है।

माता का विष्णु रूप

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा हे माता! देखो, माता को वेद ने विष्णु क्यों कहा है? उन्होंने कहा विष्णु इसलिए कहते हैं ध्रुवं ब्रह्मा लोकां ब्रव्हे मानो यहां परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु है और विष्णु नाम माता का भी है क्योंकि जो पालन करने वाला है जो मानो पालन कर रहा है, उसका नाम विष्णु कहा जाता है। परमात्मा संसार का पालन कर रहा है, इसलिए उसे विष्णु कहते हैं, माता अपने बालक का पालन कर रही है मानो देखो, माता को इसलिए विष्णु कहते। विष्णु का अभिप्राय यह है जो ध्रुवा में रहने वाला है, ध्रुवाणं वाचो ध्रुवाणं ब्रह्मे विष्णुः मेरे प्यारे! देखो, जो पालन करता है, वह नम्र बन जाता है वह मानो देखो, उनके यश्चर्यों पर हो जाता है, जैसे वृक्ष पर फल आने पर, वृक्ष मानो देखो, नम्र बन जाता है, इसी प्रकार, माता भी पुत्र के उत्पन्न होने से नम्र बन जाती है, इसलिए वह माता के गुणों का वर्णन कर रहा है। मेरे प्यारे! माता इसलिए विष्णु कहलाती है।

माता का वसुन्धरा रूप

मेरे प्यारे! देखो, बालक नचिकेता मौन हो करके बोले, कि हे माता! वेद ने माता को वसुन्धरा क्यों कहा है? उन्होंने कहा माता अपने में बसाने वाली है, वह नौ माह तक अपने गर्भ स्थल में बसाती है, इसलिए उसे वसुन्धरा कहते हैं। बालक नचिकेता ने चरणों की

वन्दना करते हुए कहा हे माता! मैं जानना चाहता हूँ कि इस माता को अदां ब्रह्मे कृतो लोकां वाचन्नमं ब्रह्मे वसुधरा क्यो कहते हैं? मेरे प्यारे! यह धारण करने वाली है, इसलिए इसको वसुधरा कहा जाता है। ऊर्ध्वांणं ब्रह्मे ध्रणप्प्रमादो मानो यह धरणी है। धरणी नाम माता का और पृथ्वी दोनों का है। दोनों वाची माने गएं हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, जब नचिकेता ने यह प्रश्न किये, माता उत्तर देती चली गई। मेरे पुत्रों! देखो, नचिकेता मौन हो गया। नचिकेता ने कहा माता धन्य हैं, आपने मेरी शङ्काओं का निवारण किया है, आपने मुझे ज्ञान और विज्ञान की आभा तुमने प्रगट कराया, ओत प्रोत कराया है, आज मैं मानो देखो, गृह में बड़ा प्रसन्न हूँ, मुझे ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो गया है।

नचिकेता की साधना

मेरे प्यारे! देखो, यह विचारवेत्ता, माता का आशीर्वाद ले करके, मेरे पुत्रों! नचिकेता ने कहा, तुम प्रश्न करो, अहा प्रश्नं ब्रह्मे आचार्य से यह प्रश्न किया कि भगवन! अब मैंने माता से, आपसे आज्ञा पाई है मानो आप मुझे आज्ञा दीजिए, मुनिवरों! यमाचार्य ने कहा हे बालक नचिकेता! तुमने मृत्यु को विजय कर लिया है, और तुम मृत्यु को विजय करते रहना, मानो देखो, तुम्हें प्रभु को अपना वरणीय बना करके, प्रभु के निकट जाना है और मानो सोम रसों का तुम्हें पान करना है। ज्ञान और विज्ञान में प्रवेश हो करके, तुम अपनी मानवता को ऊँचा बनाओ। मेरे प्यारे! आचार्य ने यह उत्तर दिया और वहां से नचिकेता मुनिवरों! देखो, वह भ्रमण करता हुआ, सात वर्ष, सात दिवस की आयु से ले करके, उन्होंने बेटा! देखो, वह इक्कीस वर्ष तक उन्होंने ब्रह्मविद्या का अध्ययन किया और वह विवेकी बन गये। साधना में परणित रहते थे।

बेटा! जब अपने गृह में पहुँचे, महात्मा विश्वश्रवा के द्वार पर पहुँच, तो महात्मा विश्वश्रवा मानो देखो,

ब्रह्मचारी के तेज और ब्रह्मचारी के तेजोमयी जो परमाणु थे मानो वह उनके हृदय में स्पर्श हुए, अङ्कित हुए, मेरे प्यारे! देखो, वह ऋषि शान्त हो गया और उसने कहा हे बालक नचिकेता! तुम तो तपस्वी बन करके आए हो, तुम्हारा तो मस्तिष्क तेजोमयी बन गया है। आओ, मेरे प्यारे! बालक नचिकेता ने चरणों को स्पर्श करके कहा हे पितर! आप का वाक मानो देखो, यथार्थ बन गया है। आज मैं उस वाक पर आ गया हूँ, हमारे वंशलजां में कोई भी वाक मिथ्या नहीं गया है, इसलिए पितर मैंने आपके वाक को मिथ्या नही किया, जब आपका वाक मिथ्या नहीं हुआ, तो मैं भी प्रभु मानो मिथ्या से रहित हो गया, और सत्यवचन में आ करके मैं विवेकी बन करके, प्रभु के मानो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड में जाना चाहता हूँ भगवन! अब मुझे आप आज्ञा दीजिए, मैं अनन्तमयी ब्रह्माण्ड में चला गया। क्योंकि प्रभु का जो निर्णय है, वह निर्णय नहीं करता अपनी वाणी, से इसलिए मैं उसके अङ्ग से अपने हृदय का, उसके हृदय से आनन्दमयी अवर्चनीय देखो, उस आभा में, मैं प्रवेश करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, यमाचार्य के द्वार से, मैं मृत्यु को विजय कर आया हूँ, परन्तु प्रभु के हृदय से मेरा मिलन हो गया। मेरे प्यारे! विश्वश्रवा ने कहा जाओ, अब तुम प्रभु को प्राप्त हो जाओ। मेरे प्यारे! पिता ने आवेश में आ करके मृत्यु को कहा और प्रसन्न हो करके प्रभु के मिलन को कहा। बेटा! देखो, दोनों बड़े वाक उसके लिए सौन्दर्यता में परणित कर गये।

यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा क्या, कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, मेरे प्यारे! देखो, इस संसार सागर से पार हो जाएं। मानव के जीवन का यदि कोई उद्देश्य है, तो वह है कि हम परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना करके,

उसकी प्रतिभा को प्राप्त करना है उसके आनन्दमयी रहस्य में प्रवेश करना है, यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा, कल बेटा! मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूँगा। आज के वाक्, उच्चारण करने का अभिप्राय कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए, परमपिता परमात्मा की आनन्दमयी स्रोतोमयी प्रवेश हो करके बेटा! इस सागर से पार हो जाए, यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करूंगा। नंगोला, दिनांक ०४ ०८ १९८६।

20 **०५ ०८ १९८६**

जीते रहो देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गाता रहता है। जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती रहती है उसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा है। क्योंकि यह ब्रह्माण्ड की जो अनुपम रचना है। अथवा यह जो ब्रह्माण्ड है जो दृष्टिपात आ रहा है। यह उस परमपिता परमात्मा की महती है अथवा यह अनुपमता है। जिसके ऊपर हमारे यहां परम्परागतों से महानता का प्रायः वर्णन होता रहा है और उस महिमा का गुणगान गाने के लिए प्रत्येक मानव अपनी आभा में रत्त होता रहा है। आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा

था। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्रों में जो शब्दों की प्रतिभा है। मानो उस आभा में वह रत्त रहने वाला है प्रत्येक शब्द की जो रचना है। उस रचना के अन्तर्गत प्रभु की कृति विद्यमान होती है। कोई भी शब्द हो कोई भी आकार का मानो अन्य वस्तु हो उसके गर्भ में वह परमपिता परमात्मा विद्यमान है। जैसे मानो देखो माता का पुत्र माता की गाथा गाता रहता है। उसके गुणों का वह वर्णन कर रहा है कि ममत्वां ब्रह्मवाचाः क्या माता यह निर्णय दे रही है क्या मेरा पुत्र है। और पुत्र माता को रहस्यदायक बना रहा है। यदि पुत्र नही होता तो ममतामयी का कोई रहस्यतम नही माना गया है। तो इसीलिए बेटा! हम परमपिता परमात्मा जो संसार का नियन्ता, निर्माण करने वाला है। मानो उस परमपिता परमात्मा महती में सदैव हम रत्त हो जाए क्योंकि वह विष्णु है पालन करने वाला है जो पालन कर्ता वही विष्णु कहलाता है हमारे यहां प्रायः वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार के विष्णु पर्यायवाची शब्दों में निहित होते रहे हैं। जैसे हमारे यहां परमपिता परमात्मा जो पालन करने वाला है। उसका नाम विष्णु कहा जाता है और विष्णु नाम माता का भी है क्योंकि वह पालन कर रही है निर्माणं ब्रह्मा व्रतं माता के गर्भस्थल में तो ही शिशु पनपता रहता है। मेरे प्यारे! देखो माता के गर्भस्थल में जब निर्माण होता है। तो निर्माण करने वाला निर्माण कर रहा है। परन्तु मेरी भोली माता उस निर्माणवेत्ता से वंचित रहती है जैसे आत्मा अपने आश्रम में शिशु कला कर रहा है। और माता अपने में मानो शान्त रहती है। विचार आता रहता है बेटा! माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु है बिन्दु में भी शिशु है परन्तु जैसे ही शिशु माता के आंगन में जैसे ही प्रवेश हुआ तो सर्वत्र देवता मानो रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं बेटा! चन्द्रमा अमृत देने लगता है सूर्य प्रकाश देता है अग्नि उष्ण बनाती है पृथ्वी गुरुतव देना प्रारम्भ कर

देता है। आपोमयी ज्योति मानो देखो ओढ़न और आसन बने हुए हैं मानो वायु प्राण देता है अन्तरिक्ष अवकाश देता है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है तेरे विज्ञान की कोई सीमा नही है मानो तेरे निर्माणवेत्ता निर्माण और शिशु के गृह का निर्माण मेरे पुत्रों सर्वत्र देवता उसकी सहायता कर रहे हैं। मेरे प्यारे! वह प्रभु कितना विज्ञानमयी है जब मेरे प्यारे! प्रभु ने सृष्टि का सृजन किया। तो मेरे पुत्रों कितनी प्रिय देवशाला का निर्माण किया है। जहां देवताजन अपनी अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके अपने देवतव का बखान कर रहे हैं अथवा देवतव की प्रतिभा का वर्णन कर रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो माता उससे वंचित रहती है। माता यह नही जानती कौन अमृत दे रहा है। कौन प्रकाश दे रहा है। कौन आपोमयी ज्योति दे रहा है। कौन गुरुतव दे रहा है वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है जब तेरे विज्ञान का हम बखान करने लगते हैं उद्गीत गाने लगते हैं तो मेरे प्यारे! उद्गीत गाते गाते वाणी शान्त हो जाती है वर्णन करने से ही वर्णन करने से बेटा! वञ्चित हो जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो यह प्रभु कितना अनुपम है। इसीलिए माता की गाथा गाने वाला वह बेटा! वह शिशु है। माता की गाथा गाने वाला वह पुत्र है। इसीलिए वह एक दूसरे में पिरोया हुआ माता पुत्र में पिरोई हुई है और पुत्र माता में पिरोया हुआ है तो मेरे पुत्रों हमे एक दूसरे की आभा में सदैव चिन्तन करना चाहिए। मनन करना चाहिए। क्या वह प्रभु कितना महानता में रत्त रहने वाला है। इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र उस ब्रह्म की गाथा गा रहा है जब बेटा! देखो वेद रुपी प्रकाश को अपनाया जाता है। तो मानो प्रत्येक वेदमन्त्रों में जो ज्ञान है। अथवा विज्ञान है चाहे वह आध्यात्मिकवादी है। चाहे वह भौतिक विज्ञान है परन्तु दोनो प्रकार के विज्ञानमयी मानो देखो उस प्रभु की कृति हमे दृष्टिपात आती रहती है तो आओ,

मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे यह विचार देने के लिए आया हूं कि हम इस माला को जो धारण करते हैं हमारा एक ही मन्तव्य रहता है कि मृत्यु से पार हो जाएं प्रत्येक मानव के हृदय में एक ही आशांका लगी रहती है क्या मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। बेटा! मृत्यु के सम्बन्ध में हमारे आचार्यों ने अपना अपना मन्तव्य दिया है। अपने अपने विचार दिए हैं और वह विचार वेत्ताओं ने कहा है किसी ने मृत्यु को बेटा! न होने के लिए तत्पर रहे हैं। किसी ने कहा है कि यह मृत्यु है मानो देखो शरीर से सम्बन्ध का विच्छेदान्त होने से ही मानो वह मृत्युञ्जय उसे मृत्यु कहा जाता है मेरे प्यारे! विचार आता है कि मृत्यु के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार का विचार विनिमय होता रहा है। आज के हमारे वैदिक साहित्य में वैदिक पठन पाठन में भिन्न भिन्न प्रकार की आभाओं का वर्णन होता रहा है। परन्तु जब यह विचार आता है कि मृत्यु क्या है वेद का वाक कहता है कि मृत्युञ्जयं भवा देव भवा लोकं ब्रह्मे व्रतो मेरे प्यारे! देखो प्रत्येक मानव यह विचारता रहा है सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक चाहे वह भौतिक विज्ञान में हो चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान में हो चाहे वह यौगिक साधना में हो चाहे वह अडम्बब्रह्मे चाहे वह कुण्डिलीनि जागरुक करने वाला हो परन्तु सबका एक ही मन्तव्य रहता है कि मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो इस सन्दर्भ में आज मैं तुम्हे ऋषि मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूं जहां बेटा! ऋषि मुनि अपना संक्षिप्त परिचय देते रहे हैं और वह परिचय क्या है कि मृत्युञ्जं ब्रह्मा लोकां जैसा बेटा! मैंने इससे पूर्व काल में याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की चर्चा की धर्म और धर्म के मर्म को जानने वाला प्राणी बेटा! देखो मृत्यु को धर्म के लिए जानत रहता है। यह मृत्यु क्या है जिसके ऊपर परम्परागतों से ऋषि मुनि एक एक वाक ऊपर चिन्तन करते रहे हैं। आओ, मुनिवरों! आज मैं तुम्हे महात्मा

जमदग्नि आश्रम में ले जाना चाहता हूं। एक समय बेटा! बहुत पुरातन काल हो गया है। जब महर्षि जमदग्नि आश्रम में बेटा! एक सभा हुई थी नाना ऋषिवर विद्यमान थे जिन ऋषियों में बेटा! महर्षि पिप्लाद, देवर्षि नारद, महर्षि सोमकेतु, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता, महर्षि वैशम्पायन, महर्षि व्रेतकेतु, मेरे पुत्रों देखो ब्रह्मचारी कवन्धि सम्भूति ऋषि महाराज जिनमें मुनिवरों! देखो महर्षि प्रवाहण महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य और चाक्राणी गार्गी भी मानो उपस्थित हुई नाना ऋषि मुनियों का एक समूह विद्यमान था मेरे पुत्रों देखो महात्मा जमदग्नि आश्रम में वह सभा हुई थी बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। जब वहां नाना प्रकार के विचार विनिमय होने लगे तो मुनिवरों! देखो महात्मा जमदग्नि ने अपने ऋषि मुनियों को नमस्कार करके यह कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! हे ब्रह्मनिष्ठ! हे ब्रह्म जिज्ञासु! आज मैं इस सभा का आयोजन इसीलिए किया है क्या मृत्यु के ऊपर विचार विनिमय करना है क्या मृत्यु क्या है क्योंकि मेरी प्यारी माता मृत्यु के लिए देखो व्याकुल होती रहती है। मानो देखो जब प्रश्न किया जाता है हे माता! तू व्याकुल क्यों हो रही है तो माता कहती है कि मेरा पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है तो जब यह प्रश्न करता है दार्शनिक हे माता! आत्मा तेरा पुत्र है या शरीर तेरा पुत्र है तो मेरे प्यारे! माता मौन हो जाती है। क्योंकि यदि वह आत्मा को पुत्र कहती है तो आत्मा को जानती नही और यदि शरीर को पुत्र कहती है तो शरीर ज्यों का त्यों निहित रहता है। शव विद्यमान है तो मेरे प्यारे! माता निरुत्तर हो जाती है। तो परिणाम वेद का ऋषि कहता है जमदग्नि ने कहा क्या मैंने यह सभा इसीलिए एकत्रित की है कि मृत्यु के ऊपर विचार विनिमय किया जाए जिस मृत्यु के लिए यह संसार मानो अपने में घृसित रहता है। और विचारता रहता है कि मृत्यु क्या है प्रत्येक मानव के

हृदय में यह आशांका लगी रहती है। तो हे प्रभु! मैं मृत्यु के सम्बन्ध में जानना चाहता हूं। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि मुनियों के विचार विनिमय होने लगे महात्मा जमदग्नि को अपने आसन पर विद्यमान हो गए मेरे पुत्रों देखो विचार आया मृत्यु भवा सम्भवा तो चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई चाक्राणी गार्गी ने कहा कि मेरे विचार में तो इस शरीर और आत्मा के दोनों के विच्छेद होने का नाम ही प्रथम ब्रह्मा मानो देखो उसको मृत्यु कहा जाता है मेरे प्यारे! देखो इसमें सोमकेतु ऋषि ने कहा क्या हे देवी! हम जानना चाहते हैं क्या शरीर और आत्मा के दोनो के विच्छेद होने से पृथक पृथक होने से दोनो की मृत्यु नही बनती क्योंकि यह तो दोनो ज्यों के त्यों है परन्तु अपने अपने स्वरुप में परिणत हो गए हैं। तो मेरे प्यारे! देखो चाक्राणी मौन हो गई इसका कोई उत्तर नही दे सकी तो परिणाम यह हुआ मुनिवरों! ऋषि मुनियों में नाना प्रकार के विचार विनिमय होने लगे तो महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज ने यह कहा कि मेरे विचार में तो यह आता है कि मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नही है। मानो देखो मृत्यु का अभाव है मृत्यु अन्धकार है। और अन्धकार का जब अभाव हो जाता है तो मृत्यु से मानव पार हो जाता है। इसीलिए मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नही है तो मेरे पुत्रों जब महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज ने यह वाक कहा तो देवर्षि नारद इत्यादियों ने मानो इसका समर्थन किया और यह कहा कि वास्तव में मृत्यु अपने में अभावन्तरों में रत्त रहने वाली है। तो मेरे प्यारे! जब यह वाक अब्रहा सम्भवा लोकां जब यह वाक उनके समीप आया तो मेरे प्यारे! नाना ऋषियों ने नाना प्रकार का विचार विनिमय होने लगा तो मेरे प्यारे! देखो सन्ध्या का काल हो गया। ऋषि मुनि अपने अपने कक्ष में जा पंहुचे मानो देखो महर्षि पिप्लाद मुनि को बहुत समय हो गया था आसन को त्यागे हुए तो मेरे प्यारे! उन्होंने अपने गृह को अप्रस्थान किया तो भ्रमण

करते हुए वह अपने गृह में पंहुचे। तो उनकी पत्नी का नाम बेटा! शंकुतका था वह शकुन्तका ऋषि को दृष्टिपात करके व्याकुल होने लगी क्योंकि बहुत समय के पश्चात गृह में प्रवेश हुआ था। उन्होंने कहा देवी तुम व्याकुल क्यों हो रही हो। उन्होंने कहा प्रभु मैं इसीलिए व्याकुल हो रही हूं क्या मेरा एक सात वर्षीय पुत्र था वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है। मैं इसीलिए व्याकुल हो रही हूं भगवन वह ब्रह्मे देखो वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है उन्होंने कहा देवी तुम्हे यह प्रतीत है मैं ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में से मानो देखो अपने अवर्तीय कर रहा हूं। मृत्युं ब्रह्मा लोकां मैंने यह निर्णय किया है। ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में क्या मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नही होती तुम मृत्यु के ऊपर इतनी व्याकुल क्यो हो रही हो उन्होंने कहा प्रभु चलो मैंने यह वाक स्वीकार कर लिया क्या मृत्यु नही होती परन्तु मैं यह जानना चाहती हूं भगवन ब्रह्मा दृष्टि से यह जो मेरा शरीर है यह क्या है यह ब्रह्मणां शरीरां ब्रहे उन्होंने कहा देवी यह जो शरीर तुम्हारा परमाणुओं का संघात है। मानो परमाणुओं का संघात है अपनी अपनी आभा में परमाणु रत्त रहते हैं जीवात्मा आत्मा जो चेतना है वो इन परमाणुओं को स्थिर करने वाली है। मानो देखो स्थिर करके उनके मूल रुपों को अपने में धारण कर रहा है। और वही देखो जब अभ्यो हो जाता है तो यह परमाणुओं का ही संघात प्रतीत होता है मेरे प्यारे! देखो शंकुतका ने कहा हे प्रभु! मैंने यह स्वीकार कर लिया है परन्तु मैं यह जानना चाहती हूं। जब यह मेरा शरीर नही था उससे पूर्व यह परमाणुवाद कहां रहता था। जब परमाणुवाद के ऊपर वाक प्रारम्भ हुआ है तो यह परमाणु मेरे शरीर से पूर्व कहां रहता था। उन्होंने कहा देवी यही तुम्हारा जो शरीर है। यह परमाणुवाद माता के गर्भस्थल में निहित था। माता के गर्भस्थल में इन परमाणुओं से मानव शरीर का निर्माण हो रहा है। तुम्हारे शरीर का

निर्माण हो रहा है। बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सो दो नाड़ियों का निर्माण हो रहा है। परन्तु निर्माणवेत्ता विश्वकर्मा निर्माण कर रहा है। मेरी भोली माता को कोई ज्ञान नही होता कौन निर्माण कर रहा है मानो देखो माता के रसना के निचरले विभाग में चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी है उस नाड़ी का सम्बन्ध माता की पुरातत नाम की नाड़ी से होता है। पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय माता की लोरियों से होता है लोरियों से पञ्चम नाड़ी बन करके चलती है मानो देखो नाभि से नाभि का समनव्य हो करके मानो देखो अमृत को बहाया जा रहा है। मेरे प्यारे! वह विश्वकर्मा निर्माण कर रहा है। परन्तु देखो निर्माणवेत्ता जिस स्थली में निर्माण हो रहा है उस माता को कोई प्रतीत नही है कौन निर्माण कर रहा है। कैसे निर्माण हो रहा है तो मुनिवरों! देखो वह परमपिता परमात्मा विज्ञानवेत्ता कहलाया गया है। मेरे प्यारे! देखो जब यह वाक का निर्णय देते हुए पिप्लाद मुनि ने कुछ शान्त हुए तो मानो देखो देवी ने कहा प्रभु मैं यह जानना चाहती हूं। जब मानो देखो माता का गर्भाश्य नही होता उससे पूर्व यह परमाणुवाद कहां रहता है भगवन उन्होंने कहा यही परमाणुवाद मानो वीरांगना के रुप में रहता है और कहीं वीरतव के रुप में रहता है। तुम्हे यह प्रतीत है वीरांगना इन परमाणुओं की रक्षा करने वाली मेरी पुत्री वीरांगना बन जाती है और वीरांगना बन करके वेदों के पठन पाठन की पद्धति को अपना लेती है। इसी प्रकार वीरतव की रक्षा करने वाला मानो ब्रह्मचारी बन जाता है। और वह ब्रह्मचरिष्यामि बन करके देवताओं की सभा में सुशोभनीय हो जाता है। देवताओं की सभा में वह देवतव को प्राप्त होने लगता है। तो मानो देखो वीरांगना जो अपने को वीरांगना बन करके वेदों का गान गाने लगती है। अपने को प्रकाश में ले जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो उनकी वाणी के लिए तत्पर हो जाता है।

जब वह तन्मय हो करके गान गाता है। उसे यह प्रतीत नही कि कौन है अमृतं ब्रह्मे बेटा! देखो संसार में जितने प्राणी मात्र हैं वह मानो देखो पुत्र कहलाते हैं वेदों की वाणी को श्रवण करने के लिए मेरे प्यारे! देखो सिंहराज वाणी को श्रवण करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है यहां मेरी पुत्रियां जब सामगान गाती है सर्पराज उनके चरणों की वन्दना करने लगता है। सिंहराज चरणों को ओत प्रोत करने लगता है। मेरे प्यारे! ओत प्रोत हो करके तन्मय हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो इसी प्रकार ब्रह्मचरिष्यामि की चर्चाएं मैंने इससे पूर्व काल में भी प्रगट की है मेरे पुत्रों देखो ब्रह्मचारी कौन जो भी इन परमाणुओं की रक्षा करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो जब ब्रह्मचारी अपने में ब्रह्मचरिष्यामि बनता है तो अपने मूलाधार से वह अपनी प्रतिक्रियाओं प्रारम्भ करने लगता है। मूलाधार से ले करके बेटा! देखो वह उड़ियान बन्ध में परिणित हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो वहां सम्भवा लोकं ब्रहे यह प्राण की सत्ता को अपने को जानने लगता है। जब प्राण का मन का दोनो का समन्वय करता हुआ बेटा! देखो वह मूलाधार से ले करके नाभि चक्र नाभी चक्र से ले करके हृदय से मानो स्वाधिष्ठान चक्र पञ्च मुनिवरों! देखो वह प्राण वृत्ति वृत्तियों में ले करके बेटा! त्रिवेणी और जहां ईंगला, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ियों का निर्माण होता है जहां ईंगला, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ियों का मिलान होता है परन्तु जहां उनका मिलान होता है। उसको त्रिवेणी स्थान कहा जाता है। परन्तु यह ब्रह्मरन्ध्र में प्रवेश करके ब्रह्माण्ड में दृष्टिपात कर लेता है। मेरे प्यारे! देखो वह ब्रह्मचारी देवताओं की सभा में सुशोभनीय बन जाता है अपने वीरतव की रक्षा करने वाला ही मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी कहलाता है मेरे प्यारे! प्रत्येक श्वांस को ब्रह्मसूत्र में पिरोना जानता है। प्रत्येक श्वांस की गति को बेटा! देखो ओ३म् रुपी सूत्र

में जो पिरोना जानता है। वही तो माला को धारण करता है। वही तो मुनिवरों! देखो वीरतव की रक्षा करके देवता बन जाता है। आओ, मेरे प्यारे! हमारे यहां ब्रह्मचर्य की दो प्रकार की गति मानी जाती हैं। एक ध्रुवा है और ध्रुवा में पितरयागी बनते हैं मुनिवरों! देखो ऊर्ध्वा में देवता बनते हैं। मानो दोनो प्रकार के यागो में मानव परिणत हो जाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या ब्रह्मचरिष्यामि मानो देखो विस्तार नही देना चाहता हूं केवल संक्षिप्त देना है। और वह परिचय क्या है महर्षि पिप्लाद ने क्या हे देवी! इन परमाणुओं की रक्षा करने वाला वीरांगना उन परमाणुओं की रक्षा करने वाला ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है वह देवताओं की सभा में सुशोभनीय हो जाता है। मेरे प्यारे! आगे ब्रह्मस्भवा वेद की विदुषी ने कहा हे प्रभु! यह भी मैंने जान लिया जब यह मानो देखो वीरतव वीरांगना नही होती तो यह परमाणुवाद कहां रहता है भगवन उन्होंने कहा हे देवी! यह परमाणुवाद मानो देखो जब वीरतव वीरांगना नही होती तो यही परमाणुवाद सृष्टि के पिता ने बेटा! सात प्रकार के अन्न को प्राप्त किया सृष्टि के प्रारम्भ ने मानो देखो यह परमाणु अन्न में विद्यमान रहता है। अन्नाद में विद्यमान रहता है प्रभु इतना विज्ञानवेत्ता है एक पौधा है। उस पौधे पर दो प्रकार का अन्न है बेटा! एक को मानव पान कर रहा है। एक को पशु पान कर रहा है। बेटा! निचरले भाग को पशु पान कर रहा है। ऊर्ध्वा भाग में जो अन्नाद है उसे मानव पान कर रहा है। बेटा! देखो मानव पान करता है ओज और तेज की उत्पति कर रहा है। और पशु पान कर रहा है तो पय दे रहा है बेटा! देखो वह दुग्ध दे रहा है आहार प्राप्त करा रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है एक ही पौधा है उसके दो प्रकार का अन्नाद विद्यमान है। मुझे देखो एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है

एक अन्न को गो जैसा पशु अन्न को पान करके बेटा! दुग्ध और पय दे रहा है उसको पान कर रहा है मानव मेरे प्यारे! अपने को अपनेपन में दृष्टिपात कर रहा है। मुनिवरों! देखो यह जो दो प्रकार का अन्न जो संसार का साझा अन्न कहलाता है मेरे प्यारे! तृतीय जो अन्न है वह हूत कहलाता है आहुति देना यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके बेटा! साकल्य की आहुति देता है। और घृतोमयी श्रद्धामयी घृत की आहुति दे रहा है। और यज्ञमान प्रसन्न हो रहा है। अपनी अन्तरात्मा से बेटा! देवता का पूजन कर रहा है। अथवा वह देवयाग कहलाता है। उसे हूत कहते है अग्नि में जो यज्ञमान पदार्थों को प्रदान कर रहा है बेटा! देखो वह अग्नं ब्रह्मा वह अग्नि उन पदार्थों का विभाजन कर देती है। उसको सूक्ष्म बना करके मेरे प्यारे! देखो वही सूर्य की आभा आती है। मानो देखो देवता प्रसन्न होते हैं। उससे मेरे प्यारे! सूर्य की नाना किरणे उसको ऊर्ध्वा में गति करा देती है उसी से जलों का उत्थान होता है जल से मेघ मण्डलो का निर्माण होता है मेरे प्यारे! देखो विद्युत का जब सहयोग प्राप्त होता है तो धीमी धीमी वृष्टि हो जाती है। यह नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देने वाली है वह मेरे प्यारे! देखो वह देवपूजा कहा जाता है। देवत्वां लोकां मेरे प्यारे! इसको आचार्यों ने हूत कहा है जो मानो श्रद्धामयी आहुति प्रदान करता है बेटा! यह विचारता है कि यज्ञमान जब स्वाहाः उच्चारण करता है तो यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक को जाता है। हमारे आचार्यों ने इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान किया है। जब यज्ञमान मानो देखो यज्ञशाला मेम विद्यमान हो करके पुरोहित के द्वारा मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मा इत्यादि उद्गाताओं के द्वारा वह यजन कर रहा है। देव पूजा कर रहा है मेरे प्यारे! देखो स्वाहाः उच्चारण कर रहा है मानो दर्शनों से गुथा हुआ वेदमन्त्रों से गुथा हुआ जो शब्द है वह द्यौ लोक में प्रवेश कर जाता है। यह द्यौ लोक में

बेटा! यज्ञमान का रथ बन करके मानो देखो वह शुद्धिकरण करता चला जाता है। आज बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हे प्रगट करने नही आया हूं विचार केवल यह क्या तीसरा जो अन्न है वह बेटा! वैदिक आचार्यों ने हूत कहा है मुनिवरों! देखो चतुष अन्न का नाम पुरुहूत कहा जाता है। बेटा! पुरोहित जन जो राष्ट्र और समाज के कल्याण के लिए सदैव विचारते रहते हैं वह अपने उद्गार देते रहते हैं। राष्ट्र को अपना उद्गार देना ही मानो देखो वह समाज को ऊंचा बनाना है मुनिवरों! देखो उनके हृदय की जो वेदना है वह केवल यह है कि हम मेरा राष्ट्र पवित्र बन जाए। मेरे राष्ट्र में एक महानता आ जाए पवित्रता आ जाए तो बेटा! देखो वह जो पुरोहित जन हैं वह आध्यात्मिकवाद की चर्चा भी करते रहते हैं आध्यात्मिक विज्ञान भी देते रहते हैं तो मेरे प्यारे! देखो जो पुरुहूत कहलाते हैं मुनिवरों! देखो जो हमारे यहां धनुर्यागी हैं नाना प्रकार के देखो राजकुमारों को नाना प्रकार की शिक्षा दीक्षा देते हैं वह पुरोहित कहलाते हैं वह पुरोहित जन है बेटा! जिन पुरोहितों की हमे पूजा करनी है। जिन पुरोहितों को हमे बेटा! देखो अपने हृदय से उनकी हृदय ग्राहिता को प्राप्त करना है। मेरे प्यारे! देखो वेद के ऋषि ने यह चार प्रकार का अन्न तो लौकिन अन्न कहलाता है। इससे लोक पवित्र बना करता है। इससे लोक महान बनता है मेरे पुत्रों देखो तीन प्रकार का जो अन्न है। वह मानो देखो आत्म कल्याण के लिए जिससे मानव मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करता है। आन्नदवत को ग्रहण को लिए तत्पर हो जाता है बेटा! वह तीन प्रकार के अन्न क्या हैं मन, प्राण और विचार मानो देखो इनके सहयोग से ही विचार होता है। और इसी के सहयोग से बेटा! देखो मन और प्राण का दोनो का समन्वय होता है और समन्वय हो करके ही विचारों की उत्पतियों का मानो देखो विचारों की उत्पति हो करके वह विचार मानो

प्राण की आभा में मन की प्रतिभा में हो मानो देखो मन पवित्र हो प्राण की गति हो इन दोनों प्रकार की आभाओ से मानो देखो विचार का जब जन्म होता है। तो मानो बेटा! देखो अपने में अपने को अपने में दृष्टिपात करता हुआ बेटा! मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करने लगता है। आओ, मेरे प्यारे! उस ब्रह्माण्ड को अपने में दृष्टिपात करने लगता है। तो मेरे प्यारे! क्योंकि प्राण और मन से गुथा हुआ यह ब्रह्माण्ड हमे दृष्टिपात आता है। एक दूसरे में ओत प्रोत होने वाला यह जो जगत है यह मानो देखो मन से और प्राण से गुथा हुआ है। और उसी से विचारों की प्रतिभा का जन्म होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो वेद का ऋषि अपने में बहुत ऊर्ध्वा में अपने विचार देता हुआ कहता है। हे देवी! यह सात प्रकार का जो अन्न है इस अन्न को मानो देखो सृष्टि के पिता ने मानो देखो प्रारम्भ किया है। जब इस संसार रुपी यज्ञशाला का निर्माण किया जब मानव शरीर रुपी यज्ञशाला का निर्माण किया और दोनो यज्ञशालाओं का जब बाह्य और आन्तरिक दोनो का समन्वय होता है तो मानो अपने में शान्त हो जाता है तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने जब यह निर्णय दिया उन्होंने कहा यह सात प्रकार का अन्न मेरे प्यारे! प्रभु ने उत्पन्न किया मानो देखो निर्माणित करने वाला है आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा या मैं इसकी व्याख्या देने नही आया हूं विचार केवल यह क्या मानो देखो एक माला बनानी है उस माला में कुछ सूत्रों में कुछ मनके पिरोने हैं और उन मनको को जो बेटा! धारण कर लेता है। वह महान और पवित्र बन जाता है। आओ, मेरे प्यारे! देखो वेद के ऋषि ने आगे वर्णन करते हुए कहा कि यह हम देखो विचारां ब्रह्म लोकां हम इसको विचारार्थ बनाते चले जाएं। मेरे प्यारे! देखो जब शकुन्तका ने यह कहा सम्भवा ब्रहे लोकां हे प्रभु! यह भी मैंने जान लिया कि यह परमाणुवाद अन्नाद में विद्यमान रहता है। मैं

इतना जान गयी हूं। एक पौधे में विद्यमान है मानो सूक्ष्म अन्न जो है यह मानो हूत में विद्यमान है और जो समाजिक जो मापदण्ड है वह पुरोहितों में विद्यमान है और जो आध्यात्मिक जो पान करने वाले हैं आध्यात्मिकवादी जो उसका अन्न पान करने वाले हैं मन और प्राण और विचार रुपी जब इसका पान करते रहते हैं यह अन्न मैंने जान लिया है भगवन परन्तु मैं यह और जानना चाहती हूं जब यह अन्न नही होता तो यह परमाणुवाद कहां रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने यह श्रवण किया अपनी पत्नी से क्या यह परमाणुवाद अन्न के पश्चात कहां रहता है क्या अन्नाद मानो देखो अपने अपने स्वरुप में विद्यमान रहता है। तो पृथ्वी के परमाणु कुछ जल परमाणु मानो कुछ अग्नि परमाणु और कुछ मानो देखो यह वायु अग्नि मुनिवरों! देखो यह पञ्चीकरण कहलाता है। यह पांचो पांचो अपने अपने स्वरूप में निहित रहते हैं। हे देवी! इन पञ्च महाभूतों के आंगन में रहने वाला आत्मा है। परन्तु जब यह आत्मा इस शरीर को त्याग देता है। आत्मा जब शरीर को त्याग देता है। तो यह देवी यह आत्मा अपने मानो चित्त के मण्डल में प्रवेश हो जाता है। और यह मानव का शरीरतव रह जाता है इसमें जब अग्नि में दाह कर देते हैं अग्नि में दाह करते हैं तो मानो देखो अग्नि के परमाणु पृथ्वी में, जल के परमाणु जल में प्रवेश कर जाते हैं। अग्नि का परमाणु अग्नि में प्रवेश कर गया और प्राण वायु में चला गया हे देवी! ब्रह्मा सम्भो दधे मानो देखो यह अवकाश अन्तरिक्ष में चला गया हे देवी संसार की कोई वस्तु का अभाव नही होता मानो देखो यह पञ्च महाभूत ही अपने अपने स्वरुप में प्रवेश हो जाते हैं। और यह आत्मा चित्त के मण्डल के साथ में मानो चित्त के मण्डल में प्रवेश हो जाता है। तो देवी यह जानना चाहता हूं क्या यह मृत्यु है क्या संसार में क्योंकि आत्मा का ह्रास नही होता परमाणुवाद भी नष्ट नही

होता तो यह जानना चाहता हूं मृत्यु है क्या मेरे प्यारे! देखो ऋषि पत्नी मौन हो गई और चरणों की वन्दना करती हुई बोली कि प्रभु आपको धन्य है आपने मेरे अज्ञान को समाप्त कर दिया है आपने मुझे प्रकाश में पंहुचा दिया है मैं प्रकाश में चली गई हूं भगवन आप मानो देखो आगे मुझे कोई वार्ता न प्रगट कीजिए। मानो देखो ऋषि पत्नी मौन हो गई और महर्षि पिप्लादु मुनि बोले कि हे देवी! तुम्हे यह प्रतीत है कि मौन तो हो गई हो परन्तु यहां तो वेद के ऋषियों ने यह कहा है क्या मृत्यु की मृत्यु कोई है मेरे प्यारे! देखो आश्चर्य से देवी बोली क्या प्रभु क्या यह मृत्यु की मृत्यु क्या है उन्होंने कहा एक समय राजा जनक की सभा में देखो महर्षि याज्ञवल्क्य और देखो महात्मा अर्द्धभाग का दोनो का शास्त्रार्थ हुआ अर्द्धभाग ने यह प्रश्न किया याज्ञवल्क्य से कि मृत्यु की मृत्यु क्या है। उन्होंने यह उत्तर दिया की मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है क्योंकि ब्रह्म को जानने वाले की मृत्यु नही हुआ करती है। मेरे प्यारे! देखो यह वाक उच्चारण करके ऋषि मौन हो गए। उन्होने कहा जो ब्रह्म को जानता है उसकी मृत्यु नही होती क्योंकि वह प्रकाश में चला जाता है। प्रकाश में रत्त हो जाता है और प्रकाश का नाम जीवन है अन्धकार का नाम मृत्यु माना गया है। इसीलिए मृत्यु अज्ञान को कहते हैं तो हे देवी इसीलिए हमे विचारना है कि हम मृत्युञ्जय बनें हम मृत्युञ्जय जब बनेंगे जब प्रभु को हम अपने में स्वीकार करेंगे जैसे प्रत्येक वेदमन्त्र उस प्रभु का गान गा रहा है। उस प्रभु की महिमा का गान गा रहा है। मेरे प्यारे! उस प्रभु की महिमा को हमे जानना है। उसे अपने हृदय में अङ्कित करना है जिससे हमारा हृदय महान और पवित्र बन करके बेटा! यह संसार सागर से पार हो जाए मेरे प्यारे! देखो महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज ने ऋषि मुनियों की सभा में अपने गृह में मानो देखो एक वायुमण्डल बना करके अपने विचारों का

अपना निर्णय दिया क्या मृत्यु अन्धकार को कहते हैं और जीवन प्रकाश को कहा जाता है प्रकाश को अपना करके अन्धकार को अज्ञान को त्यागना यह है बेटा! हमारा कर्तव्य है यह है मुनिवरों! देखो आज का हमारा वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हे शेष चर्चाएं तुम्हे कल प्रगट करुंगा। मेरे प्यारे! देखो महात्मा जमद्ग्नि आश्रम में भी जब यह निर्णय हुआ तो जमद्ग्नि आश्रम में आनन्द की तरंगे ओत प्रोत हो गई जब मानव इस प्रकार अपने को मन्थन करना प्रारम्भ करता है। मन्थन करता हुआ अन्तिम छोर पर चला जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो प्रकाश को अपनाने लगता है। अन्धकार को त्याग देता है मुनिवरों! देखो जीवन की प्रतिभा में रत्त हो करके यह प्रभु के राष्ट्र में चला जाता है। क्योंकि प्रभु के राष्ट्र में बेटा! रात्रि नही होती है। प्रभु के राष्ट्र में रात्रि नही होती और जहां रात्रि नही होती वहां आलस्य और प्रमाद भी नही होता जहां आलस्य और प्रमाद और रात्रि नही होती वहां बेटा! मृत्यु भी नही होती यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करुंगा। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवं रथाः आभ्यां रुद्राः आ पा रथं माना:३म्। ओ३म् यजानं ब्रह्म वरुणा वायु रथं बृहि विपा यञ्चमं ब्राह गतं आपा रयी। ओ३म् श्वञ्जना नाभ्यां रथप्रीवाहा यञ्चमा देवं रथा:३म्। पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन!। पूज्यपाद गुरुदेवः आनन्द कल्याणं भवति। दिनांक ०५ ०८ १९८६।

21 २२ ०८ १९८६

जीते रहो, देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भान्ति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का

प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव की परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनुपम है। जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमे दृष्टिपात आ रहा है। यह सर्वत्र परमपिता परमात्मा की महान कृतिका कहलाती है। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही भिन्न भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ता रहता है। नाना प्रकार की उड़ान उड़ने वाले ब्रह्म वेत्ताओं ने नाना रुपों में इसके गुणों का वर्णन किया है। परन्तु एक वाक ऐसा मानव के समीप है जो मानो अपने में निरीक्षण करता रहता है। और चिन्तन और मनन का एक विषय बना रहता है। प्रत्येक मानव के हृदय में एक आशङ्का लगी रहती है। क्या मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए प्रत्येक मानव यह चाहता है। क्या मेरी मृत्यु न हो नाना प्रकार की साधनाओं में मानव रत्त रहता है। और नाना प्रकार की उड़ाने उड़ता रहता है।

और इसी कारण उड़ता रहता है कि मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। प्रत्येक मानव मृत्युञ्जय बनना चाहता है। प्रत्येक प्राणी मात्र मानो इस आभा में लगा रहता है कि मेरी मृत्यु नही आनी चाहिए परन्तु जब यह विचार आता है क्या मेरी मृत्यु नही आनी चाहिए। तो नाना प्रकार की उड़ाने वैज्ञानिक अपने में प्रायः उड़ने लगते हैं वेदों का गान गाने लगता है। ज्ञान और विज्ञान की आभा में रत्त हो जाता है। मेरी प्यारी माता अपने में रुधन करने लगती है। और वह रुधन कहती है कि मेरा पुत्र मेरे समीप था परन्तु नही रहा एक दार्शनिक कहता है हे माता! तेरा मानो यह आत्मा तेरा पुत्र है या शरीर तेरा पुत्र है तो मुनिवरों! देखो माता निरुत्तर हो जाती है। यदि शरीर को अपना पुत्र कहती है तो शरीर ज्यों का त्यों निहित रहता है। परन्तु यदि आत्मा को पुत्र कहती है तो आत्म चेतना को माता जानती नही है। उसके स्वरुप का वर्णन भी उसके समीप आता है। परन्तु वह

भी परोक्ष रुप में ही रत्त रहता है। तो इसीलिए मुनिवरों! देखो मानव मृत्यु से पार होने के लिए नाना प्रकार की तपस्याओं में रत्त रहता है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहां नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे परन्तु जब अध्ययन करते तो ऋषि मुनि ब्रह्मचारियों को नाना प्रकार का उपदेश अमृतमयी पान कराते रहते थे। मानो उसके मूल में यह क्या मानव अपने में मृत्युञ्जय बन जाए परन्तु उसके रुप में केवल एक ही वाक रहता था। क्या हे ब्रह्मचारी जनों! तुम अपने ब्रह्म की आभा में रत्त हो करके मानो उससे उपरामता को प्राप्त हो जाओ। मानो एक समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातःकालीन बेटा! देखो याग कर रहे थे। ब्रह्मचारी जन अपने अङ्ग संग विद्यमान तो वेद के मन्त्रों का गुणगान गाते उद्गीत गा रहे थे मृत्यु भवा सम्भवं ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रह्मे मृत्यु मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र यह कहता था क्या हे ब्रह्मचारी जनों! मानो तुम मृत्यु से पार होना चाहते हो तो तुम तपस्वी बनो। मेरे प्यारे! देखो तपस्या की आभा में मानव सदैव अपने में रत्त रहना चाहिए। जो भी मानव यह चाहता है कि मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए मेरे प्यारे! वो तपस्या में तल्लीन हो जाए वह तपों में अपने जीवन को जब ले जाता है तो वह मृत्यु से पार हो जाता है। क्योंकि संसार का प्रत्येक पदार्थ प्रत्येक अणु और परमाणु तपायमान रहता है। जब तप की मीमांसा करने वालो ने अपने में तप की मीमांसा करना प्रारम्भ किया तो मेरे प्यारे! यह कहा कि तपं ब्रह्मा सूर्या मेरे प्यारे! देखो सूर्य अपने में तपायमान रहता है जब सूर्य तपता रहता है तो नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म दे देता है। मेरे प्यारे! यह पृथ्वी की आभा में मानो सूर्य ही तो तप रहा है नाना रुपों में मानव मेघमण्डलों में जब भी उग्रता आती है और जलों का उत्थान समुद्रों से होता है तो वह केवल

मानो तपोमयी कहलाता है। वे जो तप है वही तो मुनिवरों! देखो संसार को एक महानता की आभा में निहित करा देता है विचार वेत्ताओं ने बेटा! अपने में कहा है क्या यह मानो देखो यह संसार अपने में तपायमान है मेरी प्यारी माता अपने में मानो तपायमान है जब वह तपती है तो मानो देखो पुत्र का जन्म होता है तो वह ममतव को प्राप्त हो जाती है। मानो बिना तप के ममतव की आभा प्राप्त नही होती इसी प्रकार ब्रह्मचारी अपने विद्यालय में तप रहा है गार्हपथ्य नाम की अग्नि में वह तपायमान हो रहा है। और तपता हुआ तपने के पश्चात वही ब्रह्मचरिष्यामि बन करके मानो तपों में प्रवेश कर जाता है। वह तपों में बन जाता है तो इसीलिए हमारे यहां प्रत्येक मानव तपायमान है। मेरे प्यारे! देखो चन्द्रमा अपने में तप रहा है तो अमृत को जन्म दे रहा है। अमृतमयी बन करके मेरे पुत्रों देखो मानव अपने में अमृतता को प्राप्त होता रहता है।

आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे विशेष विवेचना देना नही चाहता हूं। आज मैं तुम्हे उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूं। जहां मानव अपने में मानवीयता का प्रायः ऊर्ध्वा में दर्शन कराता रहता है। जिस दर्शन के लिए प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही मानो आत्म चिन्तन करता रहा है। आत्मवेत्ता बन करके आत्मा में मानो आत्मा को अपने में दृष्टिपात करता रहता है। आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद का मन्त्र क्या कहता है वेद का ऋषि क्या कहता है क्या अपने में मुनिवरों! देखो तपायमान बन करके इस संसार को तपायमान करते हुए और मुनिवरों! देखो इस संसार को तपो में दृष्टिपात करते रहे याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातःकालीन मानो देखो याग के पश्चात उनका यह ब्रह्मचारियों को उपदेश होता रहता था हे ब्रह्मचारी जनों! वेदमन्त्र यह कहता है वेदाः प्रकाशां भविते लोकां मानो यही वेद मानो प्रकाश के मार्ग पर ले जाता है मेरे

प्यारे! देखो इसी आभा में मानो चिन्तन करते हुए रात्रि का समय ब्रह्मणं ब्रह्मे बेटा! देखो वह विद्यालय में अपने में चिन्तन करने लगे रात्रि का काल आ गया रात्रिभर ऋषि का चिन्तन चलता रहा तो विचार आया ऋषि के हृदय में क्या मुझे भी तपों में जाना है। अथवा तप करना है मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज यह विचारते हुए कि मुझे तप करना है तो मुनिवरों! उन्होंने मुनिवरों! देखो अपने ब्रह्मचारियों की पंक्ति लगा करके और उपदेश देना प्रारम्भ किया कि हे ब्रह्मचारियों! वेद का मन्त्र कहता है मानव को तप में जाना चाहिए तो मेरी मनो की इच्छा यह है कि मैं तप करने जा रहा हूं। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु यह हमारा बड़ा अहोभाग्य है क्या अब हम अपं ब्रह्मा आप तप करने के लिए जा रहे हैं तो यह हमारा सौभाग्य है क्या मानव को तपस्या में तल्लीन रहना चाहिए यदि भगवन आप तपोगे तो भगवन हमे भी तपायमान कर सकते हो मानो देखो विद्यालयों में आचार्य जब तपा हुआ होता है। तो मुनिवरों! देखो आचार्य का विद्यालय पवित्र बना करता है गृह में मानो देखो गृह मानो देखो माता पिता तपस्वी होते हैं तो गृह में ऊर्ध्वा सन्तान का जन्म होता है। राजा यदि तपस्वी होता है तो राजा के राष्ट्र में मानो प्रजा पवित्र होती है। राजा अपने में महान बनता रहता है। राजा अपने में महान पवित्रता की वेदी परिणत हो जाता है प्रजा और राजा मिल करके अपने मानो देखो राजेश्वरी अपने विचारो को महान बना करके कर्तव्यवाद की वेदी पर ला करके राष्ट्र को ऊंचा बनाते रहते हैं इसीलिए राजा के राष्ट्र में पवित्रतवता होनी चाहिए। तपों में जीवन रहना चाहिए। इसीलिए भगवन यह हमारा अहोभाग्य है। आप तपस्या करने जाईये भगवन! अपं प्रमाणं ब्रह्मा तपाः मेरे प्यारे! देखो तपो में जीवन रहना चाहिए। आओ, मेरे प्यारे! वेद का ऋषि क्या कहता है आचार्य कहता है कि हे मानव! तुम तपो

में अपने को ले जाओ तपो में मानो देखो जीवन की आभा में अपने जीवन की प्रतिभा को ऊंचा बनाते रहो तो मेरे प्यारे! देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों से आज्ञा पा करके वहां से उन्होंने प्रस्थान किया और भ्रमण करते हुए वह भयंकर वन में पंहुचें परन्तु भयंकर वन में जा करके कुछ वेदमन्त्रों की आख्यिकाएं उनके समीप आने लगी और वह वेदमन्त्र कहता था तपं ब्रह्मा तपो हृदयन्नं मानो तपं ब्रवाहं ब्रह्मे लोकां मेरे प्यारे! वेद का आचार्य यह विचारने लगा कि वेदमन्त्र कहता है कि मानव को तपो में रहना चाहिए। हमे भी अपने जीवन को तपस्वी बनाना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो जब तपो की चर्चाएं आईं तपो में जीवन की आभा का दर्शन उनके समीप आया तो विचारने लगे तपं ब्रह्मा लोकां हिरण्यं रथाः मेरे प्यारे! देखो यह तपोमयी जीवन एक आभा में नियुक्त कहलाता है। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने विचारा क्या वेदमन्त्र कहता है कि एक मानव तपस्वी बनना चाहता है। और मन को तपाना चाहता है। परन्तु वह मन के सम्बन्धी जितने प्राणी होते हैं उनको सन्तुष्ट करना है यदि वह सन्तुष्ट नही होते हैं तो मानो उनके मन की तरंगे मन को मानो स्पर्श करने लगती है। अथवा छूने लगती है वही मन की तरंगे मन को प्रभावित करके उसके तपो में मानो स्थिरता आ जाती है उसके तपो में निष्क्रियता आ जाती है। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने में यह विचारा मेरी दो पत्नीयां हैं मानो उन दोनो पत्नीयों को मुझे सन्तुष्ट करना है मानो देखो अपनी आभा में नियुक्त करना है तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज उनकी दो पत्नीयां थी एक का नाम कात्यानी था और द्वितीय का नाम मैत्रये था तो मुनिवरों! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज वहां से भ्रमण करते हुए मानो अपने गृह में प्रवेश किया सबसे प्रथम वह कात्यानी के समीप पंहुचे कात्यानी दृष्टिपात करते हुए याज्ञवल्क्य मुनि महाराज को बेटा!

ऊंचा आसन दिया और आसन दे करके कहा कहो भगवन आज बिना सूचना के आप मेरी स्थली पर कैसे आपका आगमन हुआ है उन्होंने कहा हे देव ब्रह्मा हे देवतं हे देवी! मैं इसीलिए आया हूं क्या आज मैं प्रातःकालीन कई समय से ब्रह्मचारियों के मध्य में मानो देखो तपो की चर्चाएं चल रही थी तपो में महिमा का वर्णन आ रहा था और तप ही तप की महिमा का वर्णन करते हुए मानो तपो में जीवन की आभा अपने में निहित कहलाती है। मानो देखो तपो में जीवन रहना चाहिए तपं तपं हिरण्यं रथं ब्रह्मा हे देवी! मेरी इच्छा यह है कि मैं तप करने जा रहा हूं। तुम्हारी क्या इच्छा है क्योंकि तुम मेरी प्रिय हो और मन से मानो मेरे मन का तुम्हारे मन का घनिष्ट समन्वय है। अब यदि मैं यदि तुम्हारा मन सन्तुष्ट हो तो मैं तप करने के लिए चला जाऊं। तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के इन चर्चामयी वाक्यों को पान करते हुए देवी ने कहा प्रभु यह तो हमारा बड़ा सौभाग्य है आप तप करने के लिए जा रहे हैं मानो देखो हमारा जीवन अहो भाग्य है हम अपने में मानो सौभाग्यशाली हैं। जो प्रभु आप तप करने जा रहे हैं। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का मानो पवित्रता की आभा में निहित हो गया। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा धन्य है देवी! तो मैं तप करने जाऊं तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने मानो कात्यानी ने कहा हे देव! आप तप करने जाईये। मैं प्रभु का चिन्तन और प्रभु के संलग्न में हम भी सदैव निहित रहेंगे। तो मेरे प्यारे! देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रसन्न हो करके वहां से भ्रमण करते हुए वे मैत्रये के समीप पंहुचे मैत्रये ने भी उसी प्रकार उनका स्वागत किया और उनके चरणों की वन्दना की तो मेरे प्यारे! देखो उसमें अब्रहो उदं ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रह्मे कृतां उन्होंने बड़ प्रसन्न हो करके बोली कहो भगवन! आज बिना सूचना के आपको मेरे आसन पर आने का कारण

क्या है। उन्होंने कहा हे देवी! मैं इसीलिए आया हूं। क्या कई समय से ब्रह्मचारियों के मध्य मे मानो यह चर्चा चल रही थी यह आभा में अपने में तपों की चर्चाए हो रही थी क्या तपं हिरण्यं रथाः तपो देवत्यां लोकां ब्रह्मा मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि तप करना है। तपो में जीवन को ले जाना है तपो की आभा में निहित रहना है। तो आज मैं तप करने के लिए जा रहा हूं उन्होंने कहा हे प्रिय मैत्रये! तुम्हारा समन्वय मानो देखो वह युवा काल से मन से मन का समन्वय रहा है। मैं मन को सन्तुष्ट करने के लिए आया हूं। उन्होंने कहा धन्य है देवतं परन्तु देखो आप जो तप करने जा रहे हैं। मानो मैं तुम्हारी प्रिय हूं मेरा क्या बनेगा। क्योंकि पत्नी जो होती है पति के आश्रित होती है। मानो देखो वह उसके विचारो में उसके विचारों की प्रियता होती है। आप मुझे त्याग करके कहां जा रहे हैं मेरा क्या बनेगा। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा देवी! तुम्हे प्रतीत है कि जिस समय बाल्यकाल में मेरा तुम्हारा दोनो का आध्यात्मिक विज्ञान के ऊपर शास्त्रार्थ हुआ था आध्यात्मिकवाद में मानो देखो में परिणत हो गई थी आध्यात्मिकवाद इतना गम्भीर विषय रहा है। हमारा तुम्हारा क्या मानो देखो मैं तुम्हे मैंने तुम्हे विजय कर लिया और तुम मानो देखो अपने में प्रियता की दृष्टि से प्रियता बनी तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा देवी! आज तुम्हे यह अज्ञान कहां से छाया है। यह अज्ञान तुम्हारे अन्तर्हृदय में नही आना चाहिए क्योंकि अन्धकार है। इस अन्धकार की प्रतिभा में मानव की प्रियता समाप्त हो जाती है मानव की मानवता का ह्रास हो जाता है। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब ऐसा कहा तो मैत्रये ने कहा प्रभु मेरा तो यही मन्तव्य रहा है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और मैत्रये दोनो विराजमान हो गए। और दोनो का विचार विनिमय होने लगा। उन्होंने कहा देवी तुम्हे यह प्रतीत है क्या संसार

में जो भी मानव कर्म करता है वह अपने लिए किया करता है मानो जो भी संसार में क्रियाकलाप हो रहा है। क्रिया में जीवन आ रहा है। प्रत्येक मानव अपने लिए वह कर्म करता रहता है। परन्तु देखो आज तुम अपने में अभ्योदय होती रहती हो तुम्हे यह प्रतीत है कि पत्नी जो होती है। वह पति तक सीमित रहती है। मानो यदि अपने लिए पत्नी बन जाए। तो उसका कल्याण जाए यह मधुता में प्राप्त हो करके वह मानो अपने में महान बन सकती है। क्योंकि जब वह प्रभु की प्रियता में परिणत हो जाती है तो तो पति की प्रियता समाप्त हो जाती है। और जब पति की मानो सङ्कीर्ण मानो देखो प्रियता समाप्त हो करके और प्रभु के आंगन में वह रत्त हो जाती है। तो मानो वह महानतम है मानो वह तपस्या है और वह मानो स्वतः अपने लिए पत्नी बनना है। मेरे प्यारे! इसी प्रकार पति जो होता है। वह पत्नी के लिए सीमित होता है वह अपने लिए पति बन जाए अपनी इन्द्रियों पर विजय करने लगे अपने लिए पतितव को प्राप्त हो जाए तो मानो देखो वह प्रियता को प्राप्त होता रहता है। आओ, मेरे प्यारे! विचार विनिमय करते हुए ऋषि ने कहा हे देवी! पुत्र जो होता है वह मानो माता के लिए पुत्र है यदि वह अपने लिए पुत्र बन जाए अपने लिए प्रभु का पुत्र स्वीकार कर ले तो उसका कल्याण हो जाए। मेरे प्यारे! देखो यह जो पुत्री है। यह पिता के लिए पुत्री है आत्मा के लिए वह प्रियता कहलाती है। परन्तु यदि वह अपने लिए पुत्री बन जाए और यह स्वीकार करे मेरा जो प्रभु है वह सखा है वही मानो मेरे आंगन में मैं उसी के आंगन में विद्यमान हूं। उसी की आभा में नियुक्त हूं। तो मानो देखो वह प्रियता प्रभु की बन करके मुनिवरों! देखो एकोकी मृत्यु से पार हो जाए तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा देवी! यह जो वित्त है यह तुम्हारे लिए वित्त है परन्तु आत्मा के लिए वित्त नही होता मानो इसी प्रकार यह संसार

अपने लिए संसार है यदि अपने लिए संसार बन जाए तो मुनिवरों! देखो कल्याणता को प्राप्त हो जाता है तो आओ, मेरे प्यारे! ऋषि ने इस मधु विद्या को मुनिवरों! देखो मैत्रये से वर्णन कराया मैत्रये से कहा हे देवी मानव को जो आन्तरिक और वाह्य क्रियाकलाप है उसी में मानव रत्त रहता है। उसी में मानव क्रियाकलाप करता रहता है। मानो देखो उसी में अभ्योदय होता रहता है। अपने तक ही नही मानो देखो भव्यता को प्राप्त होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो मैत्रये मौन होने लगी उन्होंने कहा देवी! मानव का तप ही अपने लिए तप कहलाता है। उग्रता का नाम तप कहलाता है। जब मानव की उग्र प्रवृत्ति बन जाती है। उग्रता आ जाती है तो मानो वही तो आत्मतव कहलाता है। वही तो आत्म कल्याण कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने यह वर्णन कराया तो मुनिवरों! देखो मैत्रये के हृदय में शान्ति की स्थापना हो गई। और शान्ति में रत्त हो करके मेरे प्यारे! देखो अपने में अभ्योदय होने लगा तो वेद के ऋषि ने कहा है आचार्यों ने कहा है क्या मुनिवरों! देखो मैत्रं ब्रह्मा लोकां हिरण्यं वाचन्नमं ब्रह्मे कृतं लोकाः मेरे प्यारे! देखो वेद के आचार्य ने मैत्रये से कहा देवी इस मधु विद्या को जानने की इच्चा प्रगट करो क्या जो भी मानव क्रियाकलाप जो भी क्रियाक्रम संसार का जो व्यापार है वह अपने लिए किया करता है। दूसरों के लिए नही परन्तु अपनी आत्मतृप्ति के लिए आत्मा की कुछ पिपासाएं होती हैं। विचारों की धाराएं होती हैं। मानव के विचारों में मानव का विचार का विचार किस मार्ग को ग्रहण करता है मानो वही तो अपने में प्रियता को धारण करता है। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहता है वेद का ऋषि कहता है कि हम अपने को महानता की वेदी पर ले जाना चाहते हैं तो मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है। कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते

हुए परमपिता परमात्मा की महानता में रत्त होते हुए अपने को तप में ले जाएं और तपस्वी बना करके मानो सूर्य जैसे प्रकाश देता है। ऊर्ज्वा देता है वही तो ऊर्ज्वा मेरे प्यारे! तपो में निहित हो जाती है तो आओ, मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से मैत्रये ने कहा हे प्रभु आपको धन्य है चरणों की वन्दना करते हुए देवी ने कहा हे प्रभु आपने हमारे अन्धकार के मानो जो अन्धकार हमारे अन्तर्हृदय में छाया हुआ है। वो मानो देखो अन्तर्हृदय में से दूरी हो गया है। वह अन्धकार आपने हमारा समाप्त कर दिया है। मानो देखो अन्धकारां भविते लोकां हे प्रभु! हमारा अज्ञान समाप्त हो गया है। आप तप करने के लिए जाईये मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने दोनो पत्नीयों मानो देखो उन्हे आत्म सन्तुष्टि दे करके आत्मा में ज्ञान का प्रसार करके अज्ञानता को नष्ट करके वहां से बेटा! उन्होंने गमन किया और वह तप के लिए तप मानो तप जाने से पूर्व यह उच्चारण करने लगे देवी तुम दो देवी हो तुम्हारा मैं द्रव्य का मानो विभाजन किए देता हूं। मैत्रये ने कहा प्रभु आप तप करने जाईये हम अपना विभाजन स्वतः कर पायेंगे। क्रियाओं में रत्त रहेंगें। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वहां से गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो वह भयंकर वनों में जा पंहुचें भयंकर वनो में जब जा पंहुचे तो तपं ब्रह्मा मानो वह तप करने लगे अब तप के लिए विचार आने लगा कि तप कहते किसे हैं वेद का वाक कहीं तो कहता है। क्या उग्र क्रिया का नाम तप कहलाता है। मेरे प्यारे! कहीं कहता है अन्नादं भूतं ब्रह्मा यह अन्न पवित्र होना चाहिए तो मन पवित्र होगा मानो कहीं वेद का वाक यह कहता है कि यह मन प्रकृति का सूक्ष्मतम तत्त्व माना गया है। परन्तु देखो इस प्रकृति के ऊपर हम शासन कर सकते हैं तो उसका नाम तप है परन्तु विचार विनिमय करते अन्त में दर्शनों की एक आभा ऋषि के

आंगन में आई कि तप कहते हैं मानो तपं ब्रह्मा वाचप्रव्हे अन्नादं भूतं ब्रह्मा वेद का आचार्य अपने में विचार विनिमय करने लगा कि अन्न को पवित्र बनाने का नाम मानो तप कहलाता है। इसीलिए हमारा अन्न पवित्र होना चाहिए तो अन्न के ऊपर बेटा! विचार विनिमय करने लगा क्या अन्न कैसा होना चाहिए तो ऋषि ने बेटा! विचारते विचारते बेटा! अपने में यह विचारा क्या उस अन्न को पान करना चाहिए जिस अन्न पर किसी का अधिकार न हो मानो उसे वेद के आचार्यों ने बेटा! शिलस्थ अन्न कहा गया है। मानो कृषक जिस भूमि में से अन्न को ले जाते हैं और जो अन्न रह जाता है उस अन्न को शिलस्थ अन्न कहते हैं उसको बेटा! देखो ऋषि ने एकत्रित किया और ऋषि एकत्रित करके उस अन्न को मानो जल में खरल करके उसको पान करते थे और मेरे प्यारे! देखो मन को एकाग्र करने का प्रयास जब मन एकाग्र हो गया उसके पश्चात बारह वर्ष बेटा! उन्होंने इस प्रकार का तप किया और बारह वर्ष के पश्चात उन्होंने बेटा! एक लेखनी का बद्ध किया मानो लेखनी का बद्ध किया जिसका नाम शतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का निर्माण किया बारह वर्षों के तप करने के पश्चात उन्होंने अपने विचारों को एकत्रित किया और उन विचारों में बेटा! सत की मीमांसा की क्या उन्होंने कहा उन्होंने कहा कि शतपथ ब्राह्मण मानो देखो ब्राह्मण का जो पथ है वो सत रहना चाहिए शत पथ ब्राह्मण मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने यही एक शब्द अपने में नियुक्त किया कि शतपथ ब्राह्मण मानो जो सत का पथ है वही मानो देखो ब्राह्मण का पथ है ब्राह्मण उसी को कहते हैं जो ब्राह्मण सत के पथ को अपनाता है। सत के पथ को वह गमन करता है। तो मेरे प्यारे! देखो उन्होंने यही वाक नियुक्त करते हुए उन्होंने अपनी पोथी का निर्माण करते हुए उन्होंने तीन शब्दों की व्याख्या की है और

तीन ही शब्द इस संसार को ऊंचा बनाते हैं सबसे प्रथम क्या ब्राह्मण कौन है तो वेद के ऋषि ने ब्राह्मण की व्याख्या की जो सत का पथिक है। मानो वही ब्राह्मण कहलाता है। वेद के ऋषि ने कहा ब्राह्मण कौन है जो मानो देखो ब्रह्म को जो एक एक कण कण में स्वीकार करता है। वो ब्राह्मण है वेद का ऋषि कहता है मानो देखो वह ब्रह्म की चरी को कौन चरता है वह कहता है कि ब्रह्मचारी ही चरता है मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी ही अपने में देखो ब्रह्म की आभा को प्राप्त हो करके ब्रह्म की चरी को चर लेता है। मुनिवरों! देखो ब्रह्मचारी कौन है जो ब्रह्म की चरी को चरता है बेटा! एक एक श्वांस में मानो एक एक श्वांस को जो ब्रह्म सूत्र में पिरो देता है बेटा! वह ब्रह्मचारी कहलाता है वही साधक कहलाता है जो एक एक श्वांस को मानो देखो ब्रह्म सूत्र में पिरो देता है ब्रह्म सूत्र गामी बन जाता है वह ब्रह्म मयी सत मयी आभा ब्रहा मेरे प्यारे! देखो वह ब्रह्म सूत्र में पिरोना ही हमारे लिए एक साधना की प्रतिभा बन जाती है। मेरे प्यारे! देखो चरी क्या है जितना भी यह जगत हमे दृष्टिपात आता है। उसको जो मेरे प्यारे! ब्रह्मवेत्ता साधक और योगेश्वर बन करके इस ब्रह्म को अपने में समेट लेता है। जान करके समेटता है विज्ञान की धाराओं में रत्त हो करके विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो करके बेटा! देखो विज्ञान की महानता में रत्त हो जाता है आओ, मेरे प्यारे! देखो वह ब्रह्मचरिष्यामि मानो वह ब्रह्म की चरी को चरने वाला है ब्राह्मण कौन है जो ब्रह्म को एक एक कण कण में स्वीकार करता है। और आचरण करता है मैं तो मानो ब्रह्म की आभा में निहित रहता हूं। मैं ब्रह्म सूत्र में पिरोया हुआ हूं। और मानो देखो यह जो ब्राह्मण्ड है यह प्रभु की महानता है। यह प्रभु की आभा कहलाती है तो मेरे प्यारे! देखो वह ब्राह्मण प्रभु को एक एक कण कण में दृष्टिपात करता हुआ इस सागर की प्रतिभा में दृष्टिपात करता है।

याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! वेद के कुछ अक्षरों को ले करके कुछ आख्यिकाओं को ले करके उन्होंने बेटा! देखो शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का निर्माण किया बारह वर्षों को उन्होंने उस अन्न को पान किया जिस पर किसी का कोई अधिकार न हो और मुनिवरों! देखो वह तपस्या में परिणत हो गए तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या वेद का ऋषि कहता है कि हम अपने में महानता की ज्योति में मानो देखो ज्योतिवान हो जाएं। जिससे हमारा जीवन एक महान बन करके इस संसार सागर से पार हो जाए। जिससे बेटा! मानवीयतव अपने में मानवता का दर्शन करता रहे आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा यह वेद का मन्त्र क्या कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! देखो कई अनुष्ठान किए बारह बारह वर्ष के उनमें अपने मानवीय जीवन को तपो में ले गए और उग्रता में परिणत हो करके बेटा! वह मानो देखो अपने में महानता की ज्योति की आभा में निहित हो गए। आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है। कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम इस संसार सागर से पार हो जाएं आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद का मन्त्र यह क्या कह रहा है। कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम इस संसार सागर से पार हो जाएं। बेटा! आज का हमारा यह वाक क्या कह रहा है। वेद का ऋषि कहता है कि मानव को तपस्या में रहना चाहिए। तपो में परिणत होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो तपो में जब मानव अपने जीवन को बना लेता है। वह अपनी महानता को प्राप्त हो जाता है। सूर्य बेटा! अपने में तपायमान है पृथ्वी अपने में तपायमान है मानो तप करके ही नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म

देने वाली है इसीलिए वेद का ऋषि कहता है हे मानव! तू तपस्या में परिणत हो जा। तेरा मानवीतं तपो में रहना चाहिए। आज का वाक यह क्या कहता है बेटा! कि हम अपने जीवन को तपो में परिणत करते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करुंगा। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः यम सर्वां गतं माहं आपा रथाः। ओ३म् यौ सर्वं माहं गताः रथं आपाः। दिनांक २२ ०८ १९८६।

22 २९ ०८ १९८६ आध्यात्मिक विमर्श

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगाना गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनुपम है मानो उसी की प्रतिभा प्रत्येक प्राणी मात्र में निहित रहती है हमारे यहां आचार्यजन परमप्रागतों से ही उस परमपिता परमात्मा की महिमा का प्रायः गुणगान गाते रहे हैं और प्रत्येक वेद का मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाता है अथवा उसके गुणों का वह वर्णन करता रहता है क्योंकि जो वेद का मन्त्र गायन रूप में गाया जाता है मानो प्रत्येक रूपों में वह रत्त रहने वाला है। तो मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र हमें कुछ प्रेरणा दे रहा था, वेद का मन्त्र यह कह रहा था शिवं ब्रह्मा वाचो संभवा लोका मानो वे परमपिता परमात्मा शिव के रूप में विद्यमान है, परमात्मा के नाना प्रकार के गौणिक नामों का वर्णन होता रहता है, हमारे यहां

वैदिक साहित्य में, परमपिता परमात्मा के नाना रूपों का प्रायः वर्णन आता रहता है। मानो शिव कहते है, जो उस परमपिता परमात्मा को जानने वाला हो, मानो उसके स्वरूप को जो जानता है और वह उसमें रत्त रहने वाला है। मानो वह शिव की प्रतिभा को जानता है। हमारे यहां वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार के प्रायः रूपों का वर्णन होता रहता है। जैसे हमारे यहां शिव नाम बेटा! सूर्य को कहा गया है, शिव नाम परमात्मा का है, शिव नाम आत्मा का है, और शिव नाम राजा को भी कहा जाता है। परन्तु राजा का नामोकरण शिव कहलाता है। वहां उसका रूप मानो वैदिक आख्यिका में परिवर्तित होता रहता है।

शिव

तो आओ, मेरे प्यारे! हमारे यहां नाना प्रकार की आभाओं में रत्त रहने वाला जो विज्ञानमयी स्वरूप है, वह शिव जो राजा कहलाता है परन्तु शिव नाम सूर्य का है, जो मैंने मेरे प्यारे! कई कालों में इसकी विवेचना भी की है। आज भी मुझे स्मरण आ रही है, क्या मानो जो पृथ्वी के विष को अपने कण्ठ में अथवा अपनी किरणों में धारण करने वाला है, वहां रूपान्तर बन जाता है, वहां सूर्य का नाम शिव कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने भी नाना प्रकार की क्रियाओं का वर्णन किया। परन्तु उन्होंने कौटिक स्वरूप का भी प्रायः वर्णन किया और उन्होंने कहा है कि शिव नाम जो कल्याणकारी है, प्रत्येक मानव का कल्याण करने वाला, वह शिव परमपिता परमात्मा है। परन्तु जो शिव प्राणी मात्र के लिए मानो जो शिव बन करके मेरे प्यारे! देखो, वह जो सूर्य है वह नाना प्रकार की किरणों में प्रायः भासता रहता है, नाना प्रकार की आभाओं में भासने वाला मानो वह सूर्य, शिव कहलाता है। जब पृथ्वी विष बनने लगती है, अनावृष्टि और अतिवृष्टि के रूप में भी मानो

यह विष को उगलने लगती है तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय यह शिव, उस पृथ्वी के विष को अपने कण्ठ में धारण कर लेता है और वह शिव मानो देखो, पृथ्वी के विष को अपने में धारण करके और मुनिवरों! देखो, वह वृत्तियाँ कहलाता है, यह पृथ्वी अपने में सांत्वना को प्राप्त हो जाती है।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने वहां शिव नाम वैदिक साहित्य में बेटा! सूर्य को कहा गया है यहां शिव नाम सूर्य का है और जब यह अन्तरात्मा मानो देखो, शिवं ब्रह्मा वर्णनम् जब यह पिण्डाकार बन करके, इस ब्रह्माण्ड का पिण्डाकार बनता है या यूँ उच्चारण कर लीजिए, कि मानव का जो शरीर है, माता के गर्भस्थल में जब विद्यमान होता है तो उसका एक अण्डाकार बनता है मानो वह जो अण्डाकार के रूप में इसकी वृत्तियाँ बना करती हैं तो वह बाह्य जगत बनता है और बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों का जब समन्वय हो जाता है तो मानो यह मानव, पिण्ड में आत्मा इसमें समन्वय होने से, मेरे प्यारे! देखो, प्राण, एक मानवता के रूप में परणित हो जाता है और वही मानव आत्मा के कारण मानो देखो, तपस्या करता हुआ, वह आत्मा ही शिव कहलाता है। आत्मा ही मानो देखो, चेतना के रूप में भास रहा है, पञ्च महाभूतों को अपने में धारण कर रहा है।

तो मेरे! प्यारे देखो, यहां शिव नाम जहां नाना रूपों में, मेरे प्यारे! देखो, योगी का नाम भी शिव कहा गया है। जो अपनी अन्तरात्मा को जान करके मानो अपने ही इस मानव शरीर को एक मुनिवरों! अभ्योदय करता रहता है। हमारे यहां देखो, नाना प्रकार के वेदों के मन्त्रों में नाना प्रकार की प्रतिभा का वर्णन होता रहा है मुझे स्मरण आता रहता है जब ऋषि मुनि बेटा! इस प्रतिभा में सदैव रत्त रहते थे, कि हम शिव को वैदुष्य रूप से जानना चाहते हैं। वैदिक साहित्य में नाना प्रकार

के मन्त्रों में मानो इसका वर्णन आया है। हमारे यहां शिव नाम के सूक्त विद्यमान हैं। जो हमारे यहां वैदिक साहित्य में प्राप्त होते रहते हैं। तो मुझे ऐसा कुछ भासता रहता है ऋषि मुनियों की चातुर्यता में ऐसा मुझे प्रतीत होता है कि यहां शिव नाम उस योगेश्वर को कहा जाता है। तो मुनिवरों! देखो, कण्ठ में अपने सर्पोंर् की माला बना लेता है, सर्पों की माला बना करके और मुनिवरों! देखो, अपनी जटाओं में गंगा को धारण कर लेता है। तो मेरे प्यारे! वह त्रिकोण को अपने में मानो देखो, एक मानो डमरु के रूप में एक मुनिवरों! देखो, इसकी प्रतिभा भासती रहती है।

व्याकरण की उत्पत्ति

तो विचार आता रहता है कि वेद का मन्त्र जब इसकी विवेचना करता है, तो मेरे प्यारे! हमें उसके शुद्ध रूपों का वर्णन हमारे यहां प्रायः हमें भासने लगता है। मेरे प्यारे! मुझे एक समय मेरे पुत्र महानन्द जी ने यह वर्णन कराया था कि माता पार्वती और देखो, शिव दोनों के नृत्त से ही व्याकरण की उत्पत्ति हुई। मानो उसी के शब्द की ध्वनियों में ध्वनित होने वाले मानो देखो, व्याकरण की आभा, एक मानव के समीप आती रही है। जो महाराज शिव ने एक स्वर्ण ब्रह्मा पुत्र वासं ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, यह जो दाण्डवत जो नृत्त है, यह हमारे यहां परम्परागतों से बड़ा विचित्र माना गया है। मेरे प्यारे! शिव और पार्वती दोनों ने दाण्डवत नृत्त किया और नृत्त करने से मानो वह जो डमरु बजा, उसकी ध्वनि हुई, तो इन शब्दों को, व्याकरण के रूप में परणित किया गया है। मेरे प्यारे! यह वाक चलो, मुझे इसमें किसी प्रकार का विरोधाभास नहीं है, परन्तु जब मैं इसको वैदिक साहित्य में या इसको आध्यात्मिकवाद में या इसको देखो, व्यावहारिक रूप में लाने का प्रयास किया जाता है।

हमारे आचार्यों ने मुझे, एक समय बेटा! यह

स्मरण आया, क्या चलो, भई! महर्षि लोमश और देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी तपस्या में परणित हो रहे हैं मानो देखो, उनके यहां हमें गमन करना चाहिए। इस वाक के लिए हमें सिद्ध करना था क्या यह मानो देखो, ध्वनि का ध्वनित कैसे होता रहता है यह दाण्डवत जो नृत्त है किसके द्वारा होता है अथवा इसके पिछरले भाग में कौन सी मानो देखो, प्रतिभा भासती रहती है तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण है, भ्रमण करते हुए जब महर्षि कागभुषुण्ड जी और लोमश मुनि के द्वार पर पहुँचे तो महर्षि लोमश मुनि से इस आकार का वर्णन किया, कागभुषुण्ड जी के समीप भी यह वाक आया। यह वाक आया कि यह मानो देखो, यह महाराजा शिव ने देखो, नृत्त किया, माता पार्वती ने नृत्त किया और मानो देखो, शिव ने शिवं ब्रह्मा देखो, वह शिव ने उस डमरु की ध्वनि से व्याकरण शब्दों की उत्पत्ति का निकास हुआ। तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक जब उन्होंने श्रवण किया, उन्होंने कहा कहो कागभुषुण्ड जी, इस वाक पर मानो निर्णय लेंगे। मानो वह बहुत समय से अनुष्ठान में लगे हुए हैं, जो नाना प्रकार के अनुष्ठान करते रहते हैं। तो मेरे प्यारे! जब उनके समीप पहुँचे, तो कागभुषुण्ड जी ने अपने आसन को त्याग करके, ब्रह्मवेत्ताओं का स्वागत किया और ब्रह्मवेत्ताओं का स्वागत करने के पश्चात उन्होंने कहा कहो, भगवन! आगमन कैसे हुआ? तो मुनिवरों! देखो, उनके समीप यह प्रश्न किया गया कि हे भगवन! यह दाण्डवत ऐसा मानो वाक स्वीकार कर रहा है।

ब्रह्मरन्ध्र में ध्वनि

तो मुनिवरों! देखो, कागभुषुण्ड जी ने कहा कि वास्तव में ऐसा ही मैंने श्रवण किया है। परन्तु मुझे योगाभ्यास के माध्यम से कुछ ऐसा भासता रहता है क्या, मानो देखो, गंगा जिसकी जटाओ में रहने वाली हो, मुनिवरों! देखो, उन्होंने वर्णन किया, सर्पों की

जिसकी माला बनी हुई हो, देखो, त्रिशूल उनके आंगन में रत्त रहने वाला हो और उस पर ही मानो देखो, डमरु की एक ध्वनि होती हो और उस समय नृत्त का एक भास होता हो, तो यह विचारणीय प्रसंग है। इसके ऊपर चलो, विचार विनिमय करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, ऋषिवर विराजमान हो गये। मुनिवरों! देखो, कहीं से भ्रमण करते हुए मेरे प्यारे! देखो, वैशम्पायन भी आ गए, वैशम्पायन मानो देखो, शब्दों के सम्बन्ध में वैदिक शब्दों की बड़ी विवेचना करते रहते थे। महर्षि वैशम्पाय ऋषि महाराज के यहां जब यह प्रसंग उनके समीप आया तो निर्णयात्मक के लिए विराजमान हो गये।

त्रिवेणी

तो मेरे प्यारे! देखो, जब वह निर्णय करने लगे तो निर्णय देते हुए, उन्होंने यह निर्णय दिया, क्या गमं ब्रहे व्रतं ब्रह्मा जब मानो यह डमरु, जब ध्वनि करने लगता है, जब मानव योगाभ्यास करता है और प्राण की ध्वनि को मानो ब्रह्मरन्ध्र में लाता है, तो ब्रह्मरन्ध्र में जब प्रवेश करती है तो यह ध्वनि हुआ करती है और वह जो ध्वनि होती है, उसी ध्वनि में मानो कोई न कोई विशेषता विद्यमान होती है। मेरे प्यारे! देखो, वह जो ध्वनि, मुनिवरों! मानव के मस्तिष्क में होती है, उस ध्वनि के द्वारा ही मेरे प्यारे! देखो, शब्दों के व्याकरण की उत्पत्ति का एक स्रोत माना गया है। ऐसा हमारे यहां ऋषि मुनियों ने उस समय आत्मा को शिव के नाम से वर्णन किया गया है। मेरे प्यारे! प्राण को भी शिव के रूप में परणित किया गया है, और यह जो पार्वती है यह प्रकृति मानी गई है। मानो जब देखो, प्रकृति रूप में यह नृत्त होने लगता है, सृष्टि के प्रारम्भ में, जब सृष्टि का प्रारम्भ होता है तो मेरे प्यारे! देखो, भगवान शिव बनते हैं। प्रकृति मानो पार्वती के रूप में यह मानो सन्निधान मात्र से नृत्त होने लगता है। आधुनिक काल में भी, वर्तमान में भी बेटा! देखो, वह

नृत्त हो रहा है, सृष्टि के प्रारम्भ में भी नृत्त हुआ और मुनिवरों! देखो, ऋषि मुनियों ने उस ध्वनि को जानने का प्रयास किया और ध्वनि को जान करके मानो देखो, वह डमरु नाम हमारे यहां कहीं कहीं किसी भाष्यकार ने मेरे प्यारे! इस मानव के मस्तिष्क को भी कहा है, जब मेरे प्यारे! देखो, गंगा क्या है, इंगला, पिंगला, सुषुम्णा ये तीन प्रकार की नाड़ियाँ कहलाती है। मानो ये भी एक हो करके मानो त्रिवेणी के स्थान को धारण करने लगती है। जब यह त्रिवेणी के स्थान को धारण करने लगती है, तो मुनिवरों! देखो, उसमें देखो, गंगा के नामों से वर्णन किया गया है।

हमारे यहां वैदिक साहित्य में बेटा! देखो, यहां शिव नाम मुनिवरों! देखो, यहां शिवं ब्रह्मा शिव नाम बेटा! पर्वतों को भी कहा गया है, वह जो पर्वत है मानो उससे स्रोत चलता है, जल का स्रोत चलता है, वह गंगा के रूप में मानो उसके नामोकरण का प्रतिभाषित होने लगता है। जैसे मानव जब योगाभ्यास में परणित होता है तो मेरे प्यारे! देखो, इंगला, पिंगला, सुषुम्णा इनको गंगा, यमुना, सरस्वती के रूप में भी परणित किया गया है। जब मुनिवरों! देखो, त्रिपति अब्रहा जब नेत्रों के और नासिका के ऊर्ध्वा भाग में मेरे पुत्रों! जब यह प्राण ब्रह्मरन्ध्र से गति करता हुआ, आत्मा के सन्निधान मात्र से मेरे प्यारे! जब यह उस आभा में प्रतिभाषित होता है, तो उस समय मुनिवरों! देखो, इसका त्रिवेणी स्वरूप बन जाता है मानो गंगा, यमुना, सरस्वती या इंगला, पिंगला, सुषुम्णा ये तीन प्रकार के रूपों में बेटा! इसको मानो प्रतिभाषित, हमें दृष्टिपात होने लगता है, जिससे हम यह जान लेते हैं कि प्रायः वास्तव में यह साहित्य न हो करके, यह केवल वेद की आख्यिकाओं का एक आलंकारिक रूप हमारे समीप

आता रहता है।

सर्पों की माला

मेरे प्यारे! देखो, उस समय कागभुषुण्ड जी ने अपना यह निर्णय दिया क्या, हम भी मानो इसके ऊपर अन्वेषण करते रहते हैं कि हमारे मस्तिष्क में जो ब्रह्मरन्ध्र में मानो देखो, आत्मा के सन्निधान मात्र से इस मानो देखो, ये प्रतिक्रियाएँ वे जो अहा! एक स्वर ध्वनि होती है और उसी में त्रिगुणात्मक रहता है। मेरे प्यारे! देखो, त्रिशूल हमें यह निर्णय देता है जहां त्रिगुण कहलाते हैं। रजोगुण, तमोगुण, और सतोगुण की प्रतिभा में निहित रहने वाला वह मानो त्रिवास्त कहलाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का वाक यह कहता है क्या, शिव नाम यहां मानो देखो, एक मानो योगेश्वर को, जो आत्मा को जानना चाहता है उसका नामोकरण भी शिव कहा जाता है, जो मेरे प्यारे! तीन गुणों को ले करके रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण को ले करके या अपने में भासता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, यह जो सर्प है सर्वत्र मालां ब्रह्मा वह जो सर्पों की माला को अपने कण्ठ में धारण करता है, जब योगेश्वर अहिंसा परमोधर्म में परणित होता है, तो मेरे प्यारे! देखो, वह किसी से दूरिता नहीं, अपने में स्वीकार न करते हुए मानो देखो, वे सर्प, उसके कण्ठ की माला बन जाते हैं, वह सर्वत्रता का गुणावादन करने लगता है।

परमात्मा की रुद्र रूप

तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का मन्त्र हमें यह विवेचना देता है हे मानव! तू अपने वास्तविक स्वरूप में मानो परणित होने का प्रयास कर, मानो देखो, हमारे यहां पुरातन काल से ही ऋषि मुनि अपने में अनुसन्धान करते रहते हैं, मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन ने यह कहा कि आपने जो निर्णय दिया है, ऋषिवर! क्या यह मानो त्रिगुणात्मक, एक त्रिगुण कहलाता है। वह मानो

देखो, उसकी विवेचना ओर चाहते हैं? उन्होंने कहा कि यह त्रिगुणं ब्रह्मे कहलाता है। मानो तीनों गुणों वाला, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण ये तीन गुण कहलाते हैं मानो सतोगुण में पालन होता है, रजोगुण में शासन है और तमोगुण में मानो देखो, उत्पत्ति का मूल बनता है और जब विचारा जाता है तो एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। हमारे यहां बेटा! देखो, साहित्यकारों ने पालना के स्वरूप में जब वर्णन किया गया, तो पालना करने वाली माता है। मानो प्रभु, परमपिता परमात्मा का नाम भी हमारे यहां विष्णु कहा जाता है, जो पालन करने वाला है। विष्णु नाम माता का है, जो पालना करती है। मानो दोनों ही, विष्णु के रूप में वर्णित किए गएं हैं। तो वेद के आचार्यों ने कहा है कि हे विष्णु! तू कल्याणकारी है, तू कल्याण करने वाला है मानो देखो, यह विष्णु सतोगुण है, रजोगुण में मानो पालना क्या मानो शासन होता है, माता शासन भी कर रही है और पालन भी कर रही है। एक समय बेटा! माता मलदाल्सा से किसी ने यह प्रश्न किया क्या हे माता! इस माता का रजोगुण कौन सा स्वरूप कहलाता है। उन्होंने कहा जब वह बालक पर शासन करती है और उसको शिक्षा देती है उसको मानो देखो, दूरिता से उसे सात्त्विक रूप में परिवर्तित करती है तो उस समय माता का रुद्र रूप बन जाता है। परमपिता परमात्मा भी जब मानो इस संसार का संहार करता है तो उस समय परमात्मा का नाम रुद्र रूप बन जाता है।

पाप का मूल

तो मेरे प्यारे! देखो, वह माता पालन करने वाली और रजोगुण में मानो देखो, उस पर शासन कर रहा है और शासनकर्त्ता जो होता है वह मानव को मानो कर्तव्यवाद की वेदी पर ले जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, इसके पश्चात तमोगुण की प्रतिभा आती है तमोगुण में मेरे प्यारे! देखो, चञ्चल

धारां ब्रहे भावाकृतियों में आ करके उत्पत्ति का मूल बनता है। मेरे प्यारे! देखो, वहां ब्रह्म स्वरूप बन करके, ब्रह्मचरिष्यामि कृतियों में रत्त हो करके शिशु के रूप में परणित हो जाता है। तो मेरे प्यारे! वेद का ऋषि तो यह कहता है क्या वही रजोगुण है, और वही तमोगुण वही सतोगुण कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, उसमें जो भावातीत होना है, भावों का जो प्रतिपादन है वह अपने अपने स्वरूप में देखो, परिवर्तित होता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, अति का नाम, ऐषणाओं में सतोगुण को त्याग करके रजोगुण में जब अतीतता आ जाएगी वही मानो देखो, उग्र रूप बन करके भयंकर स्वरूप बन जाता है, तमोगुण का भी जब अति मानो अतीतता आ जाती है वही मानो देखो, पाप का मूल बन जाता है। तो मेरे प्यारे! पाप का मूल न बने, मानो अपने अपने कर्तव्यवाद की वेदी पर, मानव जब तत्पर रहता है तो मानव जब एक दूसरे का पूरक कहलाता है। एक दूसरे में भासता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहां वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार की मानो देखो, काल्पनिक वार्त्ताएँ आती रहती हैं, जिसके ऊपर हम सदैव चिन्तन करते रहते हैं और मनन करना प्रत्येक मानव का कर्तव्य कहलाता है। जिससे मुनिवरों! देखो, मानव अपने में मानवीयता के क्षेत्र में प्रवेश करता हुआ, अपने कर्तव्यवाद की अनुपमधारा में जब वह परणित हो जाता है तो मेरे प्यारे! मानव का एक सात्विक रूप बन जाता है।

तो विचार विनिमय क्या, हम आत्मा को जानने, आत्मा को जानते हुए अपने में आत्मा को भासते रहे, जो आत्मा शिव के रूप में हमारे मानव शरीर में विद्यमान है। मानो वह त्रिगुणात्मक कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय क्या, हमारे यहां शिव नाम मानो सूर्य को माना गया है। जो विष को अपने में धारण करता है। विष को अपनी किरणों में मानो

ओत प्रोत करा देता है और मानो अमृत को बिखेर देता है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव का कर्तव्य है क्या, वह विष को मानो नष्ट करता चला जाए, अमृतमयी बन करके मानव को प्रकाश के क्षेत्र में जाना चाहिए।

महाराजा शिव व माता पार्वती

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वाक यह क्या कह रहा है मुनिवरों! देखो, हमारे यहां परम्परागतों से ही, नाना विचार विनिमय होता रहा है। मैंने बेटा! राजा शिव के संबध में बहुत पुरातन काल में अपनी विवेचना दी, आज भी मुझे स्मरण आ रहा है बेटा! देखो, मुझे ऐसा प्रतीत आता रहता है, क्या शिव नाम जो हिमालय के तट पर रहने वाला राजा, मेरे प्यारे! देखो, माता पार्वती और शिव दोनों परस्पर मुनिवरों! देखो, विज्ञान की विवेचना में लगे रहते थे मानो विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करते रहते थे और वह विज्ञान अपने में एक अनूठा माना जाता है।

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय बेटा! हिमालय की आभाओं में मानो विद्यमान होने वाले भगवान शिव, राजा शिव के रूप में और मुनिवरों! देखो, वह शिव नामं ब्रह्मे माता पार्वती दोनों विद्यमान थे, बेटा! मध्यरात्रि का काल था, मध्यरात्रि में जब जागरुक हो जाते हैं तो बेटा! दोनों आत्मा, परमात्मा की चर्चाओं में, आत्मा परमात्मा के भेदन में बेटा! दोनों विचार विनिमय करने लगे और देखो, वह विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो गये। मेरे प्यारे! माता पार्वती बोली कि हे प्रभु! यह मध्यरात्रि है, और मुझे एक वेदमन्त्र स्मरण आ रहा है और वह वेदमन्त्र यह कहता है आ मां ब्रहे रुद्र वाचं ब्रीहि व्रतं देवाः वेद का वाक यह कहता है कि भगवन! एक मानव देखो, भय में परणित हो जाता है और उस मानव को द्वितीय आभा में कहता है, मैं तुम्हारे तत्पर आ रहा हूँ, तो हे भगवन! वह कौन

सी ऐसी सत्ता है, वह कौन सा ऐसा परमाणुवाद है, अणुवाद है जो मानव में बलिष्ठता प्रदान कर देता है।

मन्त्र शब्द से यन्त्र निर्माण

महाराजा शिव बोले क्या हे देवी! जब मानो देखो, मानव अपनी अन्तरात्मा के भाव में इतना मानव न रह करके वह केवल मन के भाव में परणित हो जाता है, और मन यह प्रकृति का क्षेत्र बनाना प्रारम्भ करता है, उस समय मानो देखो, वह किसी कारण से जब किसी के आवेश में मानो देखो, भय में परणित होता है तो उस समय वह अपनी वाणी से कहता है मेरे प्राणों की रक्षा करो। मानो द्वितीय जो प्राणी उसके वाक्यों को श्रवण करता है वह प्राण भावातीत में कहता है, मैं तत्पर हूँ, तुम्हारी रक्षा के लिए, मानो उसकी वाणी का, प्राणों का जो बल है, बलिष्ठ होना है मानो उसी के ही बल की प्रतिभा, उसके हृदय में प्रवेश हो जाती है। तो मानो देखो, वही उसमें परणित हो जाता है। मेरे प्यारे! माता पार्वती बोली कि हे प्रभु! चलो, मैंने यह स्वीकार कर लिया, आपका वाक बड़ा दार्शनिकता में परणित हो रहा है, परन्तु इससे भी हमें विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो करके, यन्त्र का निर्माण करना।

मेरे प्यारे! देखो, माता पार्वती के इन शब्दों को पान करते हुए महाराजा शिव ने कहा कि यह बहुत प्रियतम हम एक यन्त्र का निर्माण करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, इसी विचार में मुनिवरों! देखो, रात्रि का काल समाप्त हो गया, उनके द्वारा कहीं से भ्रमण करते हुए उनके पुत्र गणेश जी और देखो, अञ्जना पुत्र हनुमान जी दोनों का आगमन हुआ और दोनों का आगमन हो करके, मेरे पुत्रों! दोनों, जब विराजमान हो गये, तो मेरे प्यारे! महाराजा गणेश जी ने और शिव अमृतं ब्रहे उन्होंने कहा हे पितर! आज हम वेदों का अध्ययन कर रहे थे, मानो वेद के वांगमय में कुछ ऐसा आया है कि मानो एक एक शब्द के ऊपर यन्त्र का निर्माण कर

सकता है, हम यह चाहते हैं, हम ऐसे यन्त्र का निर्माण करना चाहते हैं जिससे हम किसी से मानो देखो, विजय न हो, हमारी यह यन्त्र सहायता करने वाला हो। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। मेरे प्यारे! देखो, वह विराजमान हो गएं और वह विचार विनिमय, जब वेदों के वांगमय में प्रवेश किया, विचार करने लगे उन्होंने कहा यहां निकटतम एक मुनि रहते हैं, जिसका नाम मानो देखो, मार्कण्डेय जी कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, चलो, मार्कण्डेय जी के द्वार पर चलते हैं।

ब्रह्मचर्य

तो मेरे प्यारे! देखो, मार्कण्डेय जी के आश्रम के लिए उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए, जब मार्कण्डेय जी के द्वार पर पहुँचे तो मार्कण्डेय जी ने दृष्टिपात करके, कि शिव, गणेश और हनुमान तीनों का आगमन है वे ब्रह्मचर्य में अपने जीवन को मानो व्यतीत कर रहे थे। अमृते ब्रह्मा अमृत को पान कर रहे थे, और विष को अपने से दूरी करना चाहते थे। मेरे प्यारे! देखो, जब वह मार्कण्डेय जी के द्वार पर पहुँचे, तो अमृत का पान करने वाले मार्कण्डेय जी ने मानो देखो, राजा को आसन दिया और वह विराजमान हो गएं और मुनिवरों! देखो, गणेश और देखो, हनुमान भी विराजमान हो गएं और विराजमान होने के पश्चात उन्होंने कहा कहो, भगवन! मेरे द्वार पर, कैसे आगमन हुआ है? महाराजा शिव बोले कि हे भगवन! ऋषिवर! इसलिए आए हैं, क्या, तुम अमृत का पान कर रहे हो और विष को अपने से दूरी कर रहे हो? हम भी इस अमृत का पान करना चाहते हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम, भगवन! अमृत का पान वैसे नहीं किया जाता, अमृत के पान करने के लिए ब्रह्मचरिष्यामि बनना पड़ता है। मेरे प्यारे! उन तीनों ने यह वाक स्वीकार कर लिया और उन्होंने उस आश्रम में मानो ब्रह्मचर्य व्रत को अपने को मानो गृहीत

किया।

तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचर्य का अभिप्राय क्या हुआ, वेद का एक वाक कहता है श्वानं ब्रह्मे श्वानं ब्रीहि व्रतं ब्रहा मना वञ्चतं बृहि व्रताः मेरे प्यारे! देखो, वेद का वाक कहता है क्या, वह अमृतं ब्रह्मचरिष्यामि मानो ब्रह्मचारी उसे कहते हैं, जो बेटा! श्वास, प्राण और मन दोनों को एक सूत्र में ला करके और उसे ब्रह्म में जो पिरोने वाला हो, जो ब्रह्म में पिरो देता है, प्रत्येक श्वांस को ब्रह्म में पिरो देता है तो एक वर्षों तक उन्होंने बेटा! इस ब्रह्मचरिष्यामि का पालन किया। मेरे प्यारे! देखो, जब वह ब्रह्मचरिष्यामि बन गये, एक वर्ष हो गया, एक वर्ष के पश्चात्, वे मार्कण्डेय जी के द्वार पर मानो पहुँचे, कि एक वर्ष हो गया है। उन्होंने कहा आओ, विराजो! तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा तुमने अमृत को अब तक पान नहीं किया है, उन्होंने कहा हमें आनन्द की अनुभूति तो प्राप्त होने लगी, क्या वही आनन्द ही तो अमृत माना गया है। महाराजा मार्कण्डेय जी ने जब यह कहा तो उनके आंगन में यह विचार समाहित हो गया। उन्होंने कहा धन्य हे प्रभु! परन्तु कुछ और भी हमें उपदेश दीजिए।

तो मार्कण्डेय जी ने कहा क्या इंगला, पिंगला, सुषुम्णा मानो देखो, नाम की जो नाड़ी है, इसका ब्रह्मरन्ध्र में जब समावेश होता है तो प्राण की जब मानो देखो, धुक धुकी ब्रह्मरन्ध्र में प्रवेश होती है, तो वहां एक रस मानो देखो, आन्तरिक धारा में परणित होने लगता है, उसको योगी जन, रसना के अग्र भाग से पान करते रहते हैं मानो वह अमृत कहलाता है, उस अमृत को हमें पान करना, मानो देखो, अनिवार्य है मार्कण्डेय जी के इस वाक को पान करके महाराजा शिव ने कहा प्रियतम। इसको हम दर्शनों में अध्ययन करते रहे हैं, वेदों में भी इसकी अनुभूति होती रही है। मानो देखो, जब शिव ने यह कहा अब्रहे तो मेरे प्यारे!

मार्कण्डेय जी बोले कि महाराज! अब हम देखो, विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो करके, अपने मानवीयता को ऊर्ध्वा में ले जाना चाहते हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, महाराजा हनुमान जी ने कहा हे प्रभु! मैं आपसे कुछ प्रश्न करना चाहता हूँ, मार्कण्डेय जी बोले कि महाराज! आप उच्चारण कीजिए, हे ब्रह्मचारी! आप ब्रह्मेवर्चोसि कहलाते हैं, आप जो प्रश्न करना चाहते हैं, मैं उसका विचित्र रूप जानने के पश्चात मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दूंगा। उन्होंने कहा तो प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ क्या, ब्रह्मे वाचा आपको बहुत समय हो गएं है अमृत को पान करते हुए, परन्तु अमृतां ब्रह्मे अमृत को पान करके और शेष क्या रह जाता है। उन्होंने कहा अमृत को पान करने के पश्चात शेष कुछ नहीं रह पाता। उन्होंने कहा तो प्रभु! मैं यह जानना और चाहता हूँ क्या, मैंने यह श्रवण किया है, क्या आप मानो देखो, विज्ञान में आपकी बड़ी तीव्र गति कहलाती है, उन्होंने कहा हे हनुमन्तं ब्रहे मैं मानो कुछ जानता हूँ इस सम्बन्ध में, मुझे कुछ अनुभूति होती रहती है। तो उन्होंने कहा तो प्रभु! विज्ञान का, भौतिक विज्ञान का और अमृत को पान करने का परस्पर कौन सा समन्वय कहलाता है।

अमृतमयी विज्ञान

मुनिवरों! देखो, मार्कण्डेय जी ने कहा क्या, विज्ञान ही मानो देखो, अमृत है और अमृत ही विज्ञान कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, इस आश्चर्य में परणित हो करके, हनुमान बोले प्रभु! ऐसा है क्या, क्योंकि विज्ञान में तो प्रकृति के वांगमय में प्रवेश होना होता है और विज्ञान में जब प्रकृति के गर्भ में चले जाते हैं तो यह प्रकृति नाना प्रकार की धाराओं को मानो उद्बुद्ध कराने लगती है और वैज्ञानिक इसमें तत्पर हो करके इसके मानो एक द्रव्य को जानता है द्वितीय द्रव्यों की उपस्थित होने लगती है, तो विज्ञान मानो देखो, अपनी

धारा में गति करने लगता है और आप मानो देखो, यह प्रकृति के क्षेत्र में वैज्ञानिक लगा रहता है, शरीर हो जाता है पुनः आता है, परन्तु उसी में लगा रहता है और आनन्द एक अमृतमयी कहलाता है, जिसको जान करके शेष नहीं रह जाता। तो इन दोनों का परस्पर जो समन्वय है, वह आपने मानो देखो, एक ही वाक में समाप्त कर दिया, क्या वही अमृत ह,ै वही विज्ञान है।

भौतिकता से आध्यात्मवाद

तो मेरे प्यारे! मार्कण्डेय जी ने कहा हे हनुमन्तम! तुम विराजमान हो जाओ, अब मैं तुम्हारे प्रश्नों का विधिवत उत्तर देने, जानने लिए तत्पर हूँ। क्योंकि जितना मैं जानता हूँ, तो मार्कण्डेय जी ने कहा हे हनुमन्तम! ब्रहे मानो देखो, तुम अब श्रवण करो, मंगलं ब्रह्मा सम्भूति आस्वास्तं वृहि सम्भवा उन्होंने कहा इस वेद की आख्यिका को जानते हो, उन्होंने कहा प्रभु! जानते हैं। उन्होंने कहा तो इसी को जान करके, क्या विज्ञान मानो देखो, विज्ञान की जो धाराएं हैं, मानव के द्वारा पांच ज्ञानेन्द्रियाँ कहलाती हैं। पांच ज्ञानेन्द्रियों में जितना विज्ञान है, वह पञ्च महाभौतिकता में उसकी तरंगे विद्यमान हैं। दोनों का परस्पर जो समन्वय होता है तो मानो देखो, यह आध्यात्मिक विज्ञान में देखो, इस भौतिक विज्ञान को जान करके और वह आध्यात्मिक विज्ञान में जब प्रवेश करता है तो आध्यात्मिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान के मार्ग से हो करके और आध्यात्मिक विज्ञान में प्रवेश करके उसकी आवृत्ति प्रतीति होने लगती है। वह अमृतमयी गाना प्रारम्भ करने लगता है, भौतिक विज्ञान को जब तक योगेश्वर नहीं जानेगा और आध्यात्मिक विज्ञान में प्रवेश नहीं करेगा तो उसे अमृत की प्राप्ति नहीं हो सकेगी।

मानो देखो, क्रियात्मकता में भौतिक विज्ञान को जानते जानते, अपनी इन्द्रियों से समाहित, इन्द्रियों में

उस विज्ञान को समावेश कर लेना चाहिए और इन्द्रियों को, इन्द्रियों के विषयों को, आध्यात्मिक चेतना में ले जाना चाहिए और चेतना में जब मानो चेतनितता आनी प्रारम्भ हो जाती है, तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड प्रत्येक इन्द्रियों में, इन्द्रियां, जब लघु मस्तिष्क में प्रवेश करती हैं, तो मानो देखो, वहां सर्वत्र ब्रह्माण्ड का दर्शन होता है और दर्शन हो करके जो भौतिक विज्ञान है और उसके मानो श्वेत्तां ब्रह्म वाचा मेरे प्यारे! देखो, उसको त्याग करके जब भौतिक विज्ञान परमात्मा का राष्ट्र अमृतमयी चला जाता है तो अमृत को पान करने वाला, आनन्द की अनुभूति करने लगता है। तो मानो देखो, यह भौतिक विज्ञान ही देखो, आनन्द है और आनन्द ही अमृत है और दोनों मिल करके अमृत कहलाते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, हनुमान जी चकित रह गये, उन्होंने कहा वेद के ऋषि ने तपस्वी ने तो मुझे यह निर्णय करा दिया है। परन्तु मेरे विचार में अब तक नहीं आया है। उन्होंने कहा प्रभु! मैं जान नहीं पाया हूँ, इस वाक को, उन्होंने कहा और जानने की इच्छा है तो विराजो, उन्होंने कहा इन्द्रियों में सूर्य मानो सूर्य से ले करके अग्नि का विज्ञान रहता है, और घ्राण में पृथ्वी की जितनी सुगन्ध है, मन्द है, उनका ज्ञान रहता है। श्रोत्रों में, आकाश में, जितना भी शब्दार्थ है, उसका ज्ञान रहता है और मानो देखो, वायु में स्पर्श से ले करके मानो गति का जितना ज्ञान है, उसमें रहता है विज्ञान और अन्तरिक्ष में यह सब समाहित हो जाता है, जिसको अवकाश कहते हैं, इसमें समाहित हो जाता है और समाहित हो करके शून्य बिन्दु में गति करने लगता है, गति नहीं, शून्य बिन्दु में मानो शून्य बिन्दु बन जाता है, वही शून्य बिन्दु देखो, विकास में आता है और विकास में शून्यता में गति करने लगता है।

परमात्मा का हृदय

जब शून्यतां ब्रह्मा मानो देखो, यह आध्यात्मिक

विज्ञान की प्रतिभाषिता कहलाती है। मानो वही विज्ञान, जो अपने में विज्ञान की धारा में परणित हो करके मानो देखो, यह अग्रणीय बनता है तो अमृत को प्राप्त करने लगता है, उसका आध्यात्मिकवाद इसके समीप आना प्रारम्भ हो जाता है और वह प्रकाश में रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, अन्त में वह वाणी का विषय न रह करके मौन, अन्त में सान्त्वना को प्राप्त हो जाता है। और मेरे प्यारे! मानो यह वाक उन्होंने वर्णन किया, मुनिवरों! देखो, मार्कण्डेय जी के इन वाक्यों को पान करके, हनुमान जी ने कहा प्रभु वाक तो आपका यथार्थ है, परन्तु मेरी अन्तरात्मा में अब तक यह नहीं समाहित हुआ। मैं अब तक नहीं जान पाया हूँ, प्रभु! यह मैंने जान लिया, कि आपके वाक्यों को मैं मानो देखो, उनको मध्य में से दो भाग नहीं कर सकता, परन्तु मैं इस वाक को मेरी अन्तरात्मा में, जब तक समाहित नहीं होगा, मैं इस वाक को स्वीकार नहीं करूंगा, उन्होंने कहा अच्छा और जानो। जानं ब्रह्मे उन्होंने कहा कि यह जो लोक लोकान्तरों का ब्रह्माण्ड है, यह जो एक माला बनी हुई है, लोक लोकान्तरों की यह माला के सदृश्य कहलाता है। एक दूसरे में ब्रह्माण्ड, एक दूसरे में समाहित होता रहता है और उसके पश्चात मानो यह जो पञ्च महाभूत हैं, पञ्च महाभूतों की मानो प्रतीति भी मानो देखो, शून्यता में, हृदय में समाहित हो जाती है। यह जो अन्तरिक्ष है, यह परमात्मा का हृदय माना गया है। मानव का शब्द है, वह भी हृदय में है। मानो जितनी भी प्रतिक्रियाएं हैं, वह सब हृदय में समाहित हो जाती है, और उस हृदय का अन्त में जो समावेश है, वह परमात्मा के हृदय से, अमृत का अमृत से समन्वय हो करके अमृत प्राप्त हो जाता है।

अमृत का स्वरूप

मेरे प्यारे! देखो, यह हनुमान जी के विचार में

यौगिक प्रतिक्रियाएँ आई और उन्होंने कहा प्रभु! अब मेरी सन्तुष्टि हो गई है, मैं यह जान गया हूँ क्या जो विज्ञान है वही अमृत है, और जो अमृत है, वही विज्ञान है। तो मेरे प्यारे! देखो, अमृत किसे कहते हैं? अमृत उसे कहते हैं जहां आत्मा को आनन्द की प्रतीति होने लगती है, मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक जब उनके विचार में आया, तो मुनिवरों! देखो, वह अपने में मौन हो गया, और हनुमान जी ने कहा धन्य हैं प्रभु! उन्होंने उनके चरणों की वन्दना की और उन्होंने कहा धन्य हैं प्रभु! आज तो मैंने यह दृष्टिपात किया है, क्या आप मानो देखो, अन्तरिक्ष में उड़ान उड़ने वाले हैं, आप मानो देखो, चन्द्रमा और पृथ्वी के मध्य में आपका एक आसन भी बना हुआ है, वह भी मैंने दृष्टिपात किया, उसके पश्चात भी आप अमृत को पान कर रहे हैं, यह मुझे बड़ा आश्चर्य आता रहता है।

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, जब मानव देखो, ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ने लगता है तो वह बेटा! देखो, विचित्र एक नृत्त होना प्रारम्भ हो जाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें विशेष विवेचना न देता हुआ, महाराजा हनुमान और मुनिवरों! देखो, महाराजा गणेश जी और महाराजा शिव इस वाक को निर्णय ले करके बेटा! वह वहां से गमन करने लगे, जब वह मुनिवरों! देखो, हिमालय में आ पहुँचे तो माता पार्वती ने कहा कहो, भगवन! कागभुषुण्ड जी अमृतं ब्रह्मे उन्होंने कहा अमृतं ब्रह्मे असुतं ब्रह्मा कृतं लोकाम् मानो देखो, तो कागभुषुण्ड जी अमृत को पान करते रहते थे। या मारकेण्डेय जी अपने में पान करते रहते हैं उस पान की विवेचना को पान करने में हम अपने में पान करते रहते हैं मेरे प्यारे! यह तीनो विराजमान हो गए, माता पार्वती पुनः भी यही प्रश्न किया कि महाराज मानो

ऐसे यन्त्र का निर्माण क्यों नही कर रहे जो हमारी सहायता करे मानो ऐसे परमाणुओं को एकत्रित करना तीनों ने प्रारम्भ किया मुनिवरों! देखो, जिस यन्त्र में मुनिवरों! देखो, यह विशेषता क्या एक मानव एक स्थली पर विद्यमान है और वह मुनिवरों! देखो, वह यह कहता है कि कोई मेरी सहायता करो तो उसे वह बल देता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, जब यन्त्र का निर्माण ही कर रहे थे मुनिवरों! देखो, लंका में से राजा रावण का भी कहीं से आगमन हो गया मेरे प्यारे! देखो, हनुमान जी यन्त्र को जान करके अपने कक्ष में चले गए, अपने आसन पर मानो जहां उनका निकटतम उनका एक आसन था उस पर चले गए थे, और वह मुनिवरों! देखो, रावण की आभा में और गणेश जी की आभा में और महाराजा शिव कि आभा में वह यन्त्र का निर्माण हुआ था जो मुनिवरों! देखो, महाराजा शिव ने वह यन्त्र रावण को प्रदान कर दिया था। आज मैं यह आगे की शेष चर्चाएं तुम्हे कल प्रगट करूंगा ... मानव के हृदय में यह विचार रहता है कि हम प्रभु की महिमा का गुणगान गाने वाले बनें, तो मुनिवरों! कल मुझे समय मिलेगा कल मुनिवरों! अपने यन्त्र को व्रतां महात्मा मारकण्डेय मुनि से उनका और विचार विनिमय होगा, तो बेटा! यह वाक अब हमारी समाप्त होने जा रही है कल मुझे समय मिलेगा तो बेटा! कल शेष चर्चाएं कल पुनः प्रगट करेंगें। आज का वाक समाप्त आज के वेदमन्त्रों का एक आख्यिका को ले करके ... शेष अनुपलब्ध, मोदी नगर, २९ ०८ १९८६।

23 ३१ ०८ १९८६ पुरोहित का स्वरूप

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस

मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय है, जो भी मानव उसको अपना वरण बना लेता है, अथवा वर लेता है वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र कहता है, हे मानव! तू उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय स्वीकार कर, क्योंकि वह वरणीय है, और जो उसको प्राप्त करता है उसी को प्रायः वह प्राप्त होता रहता है, वह वरणीय ही नहीं बेटा! वह पुरोहित कहलाते हैं, मानो वह पराविद्या के महान विशेषज्ञ हैं, वह पराविद्या ही मानो उसका आयतन माना गया है, अथवा वह उसका गृह माना गया है। तो इसीलिए हम परमात्मा को अपना पुरोहित नियुक्त करें, क्योंकि वे पराविद्या को देने वाले है, परावरणियों में परणित रहने वाले है, तो इसीलिए आज हम उस परमपिता परमात्मा को, प्रायः अपना वरणीय स्वीकार करें।

पुरोहित

तो मेरे प्यारे! हमारा जो परमपिता परमात्मा एक महान है, अथवा जो अनूठा बन करके रहता है हमारे अन्तर्हृदयों में, हम उस परमपिता परमात्मा को पुरोहित के रूपों में, प्रायः परणित करते रहे है, हे पुरोहित! तू पराविद्या को प्रदान करने वाला है। मानो तू अन्धकार से प्रकाश में ले जाने वाला है, हे परमातन्! हम तुझे पुरोहित के नामों से प्रायः वर्णन, उसको तेरा आह्वान करते रहते हैं और तेरे गुणां का गुणवादन करते हुए, अपने में यह स्वीकार करते है हे पूर्व ब्रहे तू हमारा पुरोहित कहलाता है। मानो पुरोहित उसे कहते हैं, जो यज्ञमान के लिए, पराविद्या के लिए, परामार्ग के लिए उसे प्रेरित करता रहता है। मानो देखो, जो पराविद्या को प्रदान करता हुआ, आत्मा का उत्थान होता है आत्म तत्त्व जिस विद्या से मानव का अन्तरात्मा उज्ज्वल और

महान बनता है, उसको जो प्रदान करता है, वह पुरोहित कहलाता है। बेटा! परमपिता परमात्मा को, भी हम पुरोहित के रूप में परणित करते हैं, क्या, उन्होंने बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ में, हमें वेदों का ज्ञान दिया है, अथवा वह जो प्रकाश है, वह अनुपम है। जितनी भी मानव का क्रियाकलाप है, चाहे वह क्रियाकलाप याग के रूप में हो, चाहे वह क्रियाकलाप अनन्य किसी क्रियाकलापों में रत्त रहने वाला हो, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा उन सबका स्रोत माना गया है।

परमात्मा का पुरोहित रूप

तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा को पुरोहित के रूप में परणित किया करते हैं, क्योंकि पराविद्या को प्रदान करने वाला, परा ऋचाओं को देने वाला है। मेरे प्यारे! जब हम वेद के किसी मन्त्र को ले करके कुछ विवेचनाएँ प्रारम्भ करते हैं, तो मानो देखो, वह पुरोहितां भव सम्भवा वह पुरोहित के रूप में हमें दृष्टिपात आता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है और वह याग कर रहा है अग्निहोत्र कर रहा है मानो अग्नि का चयन कर रहा है, और अग्नि का चयन करता हुआ, अपने में पुरोहित की उपासना कर रहा है। हे पुरोहित! मेरा हृदय पवित्र हो जाए, हे पुरोहित! मेरे अन्तर्हृदय में, मेरे मस्तिष्क में एक मानो देखो, एक पराविद्या, एक महान मानवीय दर्शनों को, दर्शाने वाली, मेरे मस्तिष्क में विद्या का अवधान हो जाए।

द्यौ लोक में क्रियाकलाप

तो बेटा! यह प्रार्थना करता रहता है और यह कहता है, मैं अपने में स्वर्ग और मानवीयता को अपने में एक सूत्र में लाना चाहता हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो, वह उस पुरोहित को, अग्नि के रूप में स्वीकार करता है। मानो देखो, कहीं अग्नि को अतिथि के रूप में कहा गया है, कहीं अग्नि को पुरोहित के रूप में, क्योंकि देखो, जो भी हम अग्नि के मुखारबिन्द के रूप में परणित

करते हैं, उसकी मानो भूः भुवः और स्वः ये तीन प्रकार की गतियाँ होती हैं, परन्तु जो दार्शनिक शब्द है, दार्शनिक साकल्य है, मेरे पुत्रों! देखो, अग्नि के मुख में परणित कर देता है और वह अग्नि मानो देखो, परादानम् वह पराविद्या, परादेवताओं को प्रदान कर देती है। तो वह अग्नि मानो पुरोहित के रूप में, वह स्वः के रूप में, द्यौ लोकों तक पहुँचा देती है। मेरे प्यारे! देखो, भुवः जो निचरले स्थलियां में मानो साकल्य रह जाता है, तो मेरे प्यारे! भुवः को प्राप्त हो जाता है और जो पृथ्वी के सम्बन्धि गुरूतव है मुनिवरों! देखो, भुवः में परणित हो जाता है। वह भुवः में परणित होता हुआ, मेरे पुत्रों! देखो, अपने में भी अपनी आभा को प्राप्त होता रहता है। परन्तु जो पराविद्या है तो मानो वेदों का गान है उसमें भी आध्यात्मिकवाद है, दार्शनिक विचार है, विज्ञान अपने में अप्रोत कृतियों में रत रहता है। मेरे प्यारे! उसको जब वह उद्गीत रूप में, गान के रूप में गाता रहता है।

अग्नि का पुरोहित रूप

तो मुनिवरों! देखो, वह प्रायः मानव विद्या का एक स्रोत बन जाता है, जिसके ऊपर ऋषि मुनि परम्परागतों से बेटा! अनुसन्धान अथवा अन्वेषण करते रहते हैं। यज्ञमान कहता है अपनी देवी से हे देवी! आओ, हम याग में परणित हो जाए, मानो देखो, दोनों जब याग में परणित हो जाते, तो उनका जो विचार है, उनकी जो क्रियाकलापता है, वह द्यौ लोक को प्राप्त हो जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, द्यौ में प्रवेश होना, यह हमारा आत्मीय मानो एक क्रियाकलाप माना गया है, वह हमारा पुरोहित है, जहां हमारा, परमपिता परमात्मा विद्या में प्रदान करने वाले, विचारों को दे करके वह हमारा पुरोहित कहलाता है। इसी प्रकार हमारा अग्नि भी पुरोहित है। एक पुरोहित वह कहलाता है जो यज्ञशाला में विद्यमान हो करके उद्गीत गा रहा है,

अथवा जो मानो उद्गाता बन करके और ब्रह्मा इत्यादि बन करके बेटा! अपने विचारों को उद्गीत रूप में गान गाता है, प्रत्येक आहुति को वह वेद मन्त्रों की मानो ध्वनि से ध्वनित करके बेटा! वह द्यौ लोक में प्रवेश करा रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह पुरोहित कहलाता है, वह बुद्धिमान पुरोहित कहलाता है, जो बेटा! पराविद्या में प्रदान करने वाला है।

स्वरूप के क्रियाकलाप की स्वयं को प्राप्ति

तो मेरे प्यारे! देखो, वह कौन परावर्णित ब्रहे लोकां पुरोहिताः हे पुरोहित! यज्ञमान की पत्नी, और वे दोनों कहते हैं हे पुरोहित जन! आओ, तुम मेरे हृदय में किसी प्रकार की त्रुटियाँ विद्यमान हो, तो उसे हम आप को प्रदान करते हैं। हे पुरोहित! आओ, मेरे हृदय को तुम पवित्र बना दो, मानो वेद मन्त्रों से मेरे हृदय को, मेरी वाणी को पवित्र बनाते रहो। हे उद्गाताओं! तुम आहुति के उद्गीत गा करके मेरी वाणी का शोधन कर दो, मेरे हृदय में दूरिता न रहे, ऐसा विचार जब दोनों प्रगट करते हैं, तो पुरोहित, ब्रह्मा इत्यादि बेटा! देखो, वह अपनी वाणी से और उनकी वाणी को उसके हृदय को स्वच्छ बना देते हैं परन्तु देखो, वह जो पुरोहित है वह भी तो शुद्धवत होना चाहिए, जब वह स्वच्छ होता है तो मेरे प्यारे! देखो, वह पवित्रता की आभा प्रदान कर देता है। उन्होंने कहा प्रभु! हे भगवन! हे पुरोहित जनों! आओ, तुम उद्गीत गाओ, वह निर्वाचन करता हुआ, मेरे प्यारे! वह कहता है प्रभु! मेरे हृदय में आभा को उज्ज्वल बना करके, मैं स्वर्ग में, मैं अपने गृह को स्वर्ग में ले जाऊँ, मैं अपने को द्यौ लोक में प्रवेश करा सकूं, ऐसा मुझे उद्गीत गान दीजिए, उद्गीत गाईए। मेरे प्यारे! देखो, पुरोहित उन्हें उपदेश देता है, और हे यज्ञमान! मैं तुम्हारा पुरोहित हूँ, और तुम मेरे निकटतम विद्यमान हो, वेद मन्त्रों पर तुम्हारी वाणी मानो देखो, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ लोक में

वह मानो अग्नि की तरंगों पर विद्यमान हो जाती है। अग्नि एक ऐसा विज्ञान है, अग्नि एक ऐसा दूत है जो शब्दों के आकार और क्रियाकलापों को ले करके, मेरे प्यारे! देखो, वह अन्तरिक्ष में प्रवेश करा देता है, वह अन्तरिक्ष में ले जाता है, द्यौ लोक में प्रवेश करा देता है। मेरे प्यारे! वेद का वाक यह कहता है कि जैसा भी क्रियाकलाप होता है, वह प्रायः उसी को प्राप्त होता रहता है, वह आता है, तारतम्य बना हुआ है उसके ऊपर हमें विचार विनिमय करना है।

मेरे प्यारे! देखो, वह वेद का वाक कहता है हे पुरोहित जनां! हे यज्ञं ब्रह्मा! हे यज्ञमान! तुम अपने हृदय को पवित्रवत बना करके तुम प्रजापति के समीप पहुँचों। क्योंकि यज्ञोमयी प्रजापतं ब्रह्मा यह यज्ञ ही प्रजापति है। आओ, तुम प्रजापति के समीप विद्यमान हो करके, अपने को उज्ज्वल बनाओ, आओ, तुम विराजमान हो करके, परमात्मा के हृदय से, अपने हृदय का समन्वय करते चले जाओ जिससे दोनों हृदयों का समन्वय हो करके बेटा! परमपिता परमात्मा की आनन्दमयी जो पगडण्डी है, आनन्दमयी जो मोक्षमयी जो पगडण्डी है, तुम प्रायः उसे प्राप्त हो जाओ। मेरे प्यारे! देखो, यह वेद का वाक कहता है। आज का हमारा वेद मन्त्र, यह उद्गीत गा रहा है, हे यज्ञमान! आ करके तुम अपने में पवित्रवत बन जाओ और तुम जिस साकल्य को अग्नि में प्रदान कर रहे हो। मानो देखो, वह साकल्य इतना अहिंसामयी होना चाहिए, जिससे मानो तुम्हारा जो उद्बुद्ध स्वाहा, उद्बुद्ध अग्नि है वह ऐसे प्रदीप्त हो जाए, जैसे प्रातःकाल का सूर्य उद्य हो करक,े मानो वह प्रकाश देता है, अन्धकार को नष्ट करता चला जाता है। इसी प्रकार, तुम्हारा इतना उद्गम, साकल्य अहिंसामयी होना चाहिए जिससे मानो तुम उद्बुद्ध हो करके, तुम प्रभु के समीप पहुँच सको और

अपने जीवन को स्वर्ग और आनन्दमय ले चलो।

सत्यकाम की अनुभूति

जैसे बालक सत्यकाम ने गऊओं के पीछे अपने जीवन को व्यतीत किया, पिछरले भाग में, मानो गऊओं के दुग्ध और घृत के द्वारा याग करते थे और गऊओं की सेवा करते थे और इन्द्रियों को संयम में लाने का प्रयास करते मानो देखो, वह ब्रह्मचारी सत्यकाम को संसार की अनुभूति हो गई थी। इसी प्रकार मैं भी प्रभु! अपने में अनुभूति चाहता हूँ, पवित्रता चाहता हूँ कि उपासना करते हुए, मेरे प्यारे! प्रभु का विधान करता है हे अग्नि! हे ब्रह्मणा वाचा! हे पुरोहित जनों! कल्याणम् मेरी आभा में तुम परणित हो जाओ। मेरे प्यारे! देखो, यह कह करके उसमें समाहित हो जाता है। जैसे माता का पुत्र क्षुधा से पीड़ित हुआ, माता के आँचल में वह आलिंग्न रूपों में परणित हो जाता है, लोरियों का आलिंगन करता हुआ, अपने उदर की पूर्ति करता रहता है। इसी प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञमान पुरोहित के हृदय में समाहित हो करके हृदय का अभिप्राय यह जो हृदय में समाहित हो करके, हृदय का अभिप्राय यह जो हृदय के उद्गार हैं, हृदय की जो विचारक नई धारा है वह उसमें मानो जो समाहित हो जाता है उसमें जो तन्मय हो जाता है मेरे प्यारे! वह द्यौ लोक को प्राप्त हो जाता है।

पुरोहित की तीन प्रकार

मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत सा काल स्मरण आता रहता है मानो देखो, उस काल में तो मैं जाना नहीं चाहता हूँ, महाराजा दिलीप जी ने पुरोहितों की आज्ञा पा करके ही तो तन्मय हो गये, नन्दिनी के संरक्षण में वह परणित हो गये, मेरे प्यारे! देखो, उसी में तल्लीन हो करके बारह वर्षों का कठोर तप किया, और यज्ञोमयी सङ्कल्प किया, तो मेरे प्यारे! देखो, वह

महानता को प्राप्त हो गये।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देना नहीं चाहता हूँ, विचार केवल यह कि वह जो हमारा पुरोहित है, बेटा! वे परमपिता परमात्मा देखो, ज्ञान और विज्ञान की अनुभूति कराता है, अग्नि देवता जो पुरोहित है, वह हमें तेजोमयी बनाता है और जो वह मानो पुरोहित है, वह ज्ञान के पुंज में ले जाता है, ज्ञान की तरंगों में ज्ञानित बना देता है, यह स्वर्ग में ले जाने वाला है। तो मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान कहता है मेरे तीनों पुरोहित मेरे हृदय में भी मानो सहायता के देने वाले हैं। मेरे हृदय को पवित्रवत बनाने वाले मानो जिससे मैं स्वर्ग, यज्ञकामा स्वर्गाः मैं, स्वर्ग को जान करके मानो देखो, एक महान पवित्र वेद की आभा में परणित हो जाऊँ, और मैं द्यौ लोक को प्राप्त हो करके, मैं उसी में समाहित हो जाऊँ।

मेरे प्यारे! देखो, शून्य बिन्दु में यह जगत मानो समाहित हो जाता है और शून्य बिन्दु से इसका विकास होता है। तो मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है हे मानव! हे यज्ञमान! तू अपनी वाणी को पवित्र बना, देखो, पुरोहित जन मेरी वाणी को पवित्र बनाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक जब यह विचार वेद का कहता है तो मेरे प्यारे! नाना प्रकार की वार्त्ताएँ स्मरण आने लगती हैं। मेरे पुत्रों! आज मैं विचारों में तुम्हें ले जाना तो नहीं चाहता हूँ। विचारों का संक्षिप्त परिचय देने के लिए हम आते रहते हैं। परन्तु देखो, परिचय देते रहते हैं और वह परिचय क्या है बेटा! क्या, आओ, मुनिवरों! देखो, व्याख्याता, अपनी यज्ञशाला में मानो देखो, बुद्धिमान क्या, ब्रह्मवेत्ता विराजमान हो जाते हैं। बेटा! इसी संदर्भ में मैं तुम्हें एक वार्ता में ले जाना चाहता हूँ जो पुरातन काल में भी इन वार्त्ताओं का मैंने अपने में वृत्त किया। तो मेरे प्यारे! देखो, अहिंसामयी पुरोहित आभा में परणित हो जाए, तो आज मैं विशेष आभा में

तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। मुनिवरों! देखो, हमारे यहां नाना ऋषियों की गाथाएँ आती रहती हैं।

महात्मा अर्धभाग

मेरे प्यारे! देखो, एक ऋषि हमारे यहाँ मुनिवरों! देखो, अप्रतं ब्रह्मा असुतं ब्रह्माणि लोकाम् बेटा! एक ऋषि हुए हैं, जिनका नामोकरण हमारे यहां स्वानम वृहीतव वाचो स्वज्ञना अस्ति। मेरे प्यारे! आध्यात हुए हैं, महात्मा अर्धभाग के जीवन में भी ऐसे नाना प्रकार की गाथाएँ आती रहती है। परन्तु देखो, जहां अर्धभाग मानो देखो, अपने में प्रतिपादित रहते, तो मेरे प्यारे! एक समय पण अकाल पड़ गया था, विशेष पण अकाल पड़ा, तो मुनिवरों! देखो, अकाल पड़ गया, तो अन्न इत्यादि न रहा। तो मेरे प्यारे! जब अन्न इत्यादि न रहा, अन्न के न रहने पर अर्धभाग की धर्म देवी, मेरे प्यारे! देखो, प्राणान्त होने लगी, जब प्राणान्त होने लगी तो मुनिवरों! वह ऋषि जब देखो, कहीं से आए तो वह प्राणों में, अपने में प्राणों को त्यागने में तत्पर हैं, ऋषि ने कहा देवी! यह क्या है? उन्होंने कहा प्रभु! मैं अन्न से पीड़ित हूँ, मुझे अन्न नहीं प्राप्त हो रहा है। तो मुनिवरों! देखो, महात्मा अर्धभाग ने वहां से गमन किया और भ्रमण करते हुए अन्न के लिए गमन किया।

हाथीवान के उड़द

तो मेरे प्यारे! देखो, वह एक हाथीवान मानो देखो, मा को पान कर रहा, वह मांष को पान कर रहा था, उन्होंने कहा भिक्षा मे देहि। बेटा! उन्होंने कुछ मानो देखो, उड़द, मा का दान दिया और उन्होंने माष का दान देते हुए, उन्होंने कहा लीजिए भगवन! जब उन्होंने अर्पित कर दिया, उन्होंने कहा जलं ब्रहो सम्भवा मानो देखो, हाथीवान ने कहा प्रभु! मैं आपको जल लाऊँ। महात्मा अर्धभाग ने कहा कि नहीं, मुझे जल नहीं चाहिए, तुम शुद्र हो। जब उन्होंने यह वाक कहा तो उन्होंने प्रार्थना की, कि प्रभु! मेरे जो मानो उड़द थे,

उसमें मैं शुद्र नहीं हूँ और जल में मैं शूद्र बन जाऊँगा। तो महात्मा अर्धभाग ने उसे शिक्षा दी, क्या जो वस्तु बहुतायत में होती है, मानो जल मुझे प्राप्त हो सकता है, मुझे जल की आवश्यकता नहीं, मुझे अन्न, प्राण की रक्षा के लिए चाहिए, प्राण की रक्षा करने के लिए मानो देखो, झूठन भी कुछ नहीं होता है। तो इसलिए मेरी पत्नी के प्राणान्त हो रहे हैं, मेरे प्यारे! देखो, महात्मा अर्धभाग ने वहां से गमन किया और भ्रमण करते हुए, पत्नी को उन्होंने कुछ प्रदान किया, तो उनके प्राणों की रक्षा हो गई।

उद्गाता

मेरे प्यारे! अगले दिवस महाराजा अश्वपति के यहां याग होना था, वह याग में परणित हुए, जब याग में सम्मिलित हुए तो बेटा! उद्गाता के आसन पर जाकर विद्यमान हो गये, राजा ने कहा अश्वपति ने, हे ऋषिवर! आपने बिना आज्ञा के मानो उद्गाता के आसन को ग्रहण किया, तुम उद्गाता हो? उन्होंने कहा प्रभु! मैं उद्गता के सुयोग्य बनूँ, उन्होंने कहा इस यज्ञ का उद्गाता कौन है? उन्होंने कहा भौतिक यज्ञ का उद्गाता मानो देखो, यह सूर्य है। ये सूर्य की किरण ही, याग की प्रतिमा को अपने में समेट लेती है, अपने में धारण कर लेती है। उन्होंने कहा धन्य है। उन्होंने कहा भगवन! इस यज्ञशाला में, यज्ञ का उद्गाता प्रतिपादी कौन है? उन्होंने कहा प्रभु! इसका उद्गाता, उद्गीत गाने वाला मानो देखो, चन्द्रमा, जो सोम को दे करके सोम की वृष्टि कर देता है, उन्होंने कहा धन्य है। उन्होंने कहा हे ऋषिवर! इस यज्ञ का उद्गाता कौन है? उन्होंने कहा इस यज्ञ का उद्गाता स्वर है, वह जो स्वरों से गान गाने वाला उद्गाता है वह अपनी वाणी को, यज्ञमान की वाणी को पवित्र बनाता है। इसलिए वह उद्गाता कहलाता है। चतुर्थता में यह प्रश्न उनकी पत्नी ने किया क्या हे ऋषिवर! आप इस यज्ञशाला में उद्गाता बने हो, परन्तु इसको

आध्यात्मिक उद्गाता कौन है यज्ञशाला में? मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने आध्यात्मिकवाद का वर्णन किया तो उन्होंने कहा कि हे यज्ञो, यज्ञोमयी श्रेष्ठ देवी! मानो देखो, यज्ञ में आध्यात्मिकवाद और त्याग होता है तो मानो देखो, उद्गाता हमारा हृदय माना गया है, बेटा! देखो, हृदय ही यज्ञशाला का उद्गीत गाने वाला है क्योंकि यज्ञशाला की जो श्रद्धा है, यज्ञ की जो श्रद्धा है, वही तो मानव के, यज्ञमान के हृदय में समाहित होती है, और वह यज्ञमान का हृदय ही उद्गाता कहलाता है।

यौगिक उद्गाता प्राण

मेरे प्यारे! देखो, वह राज देवी शान्त हो गई। उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि हे ऋषिवर! इसको भौतिक विज्ञान में कौन उद्गाता है इस यज्ञ का? मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि यज्ञ का जो उद्गाता है, मानो भौतिकवाद में देखो, वायु ही इसका उद्गाता है क्योंकि वायु ही इसको प्रसारण करता है, इसके परमाणुओं को गति देता है और गति दे करके उसको द्यौ लोक में क्या, वायु में क्या, अग्नि में क्या, सर्वत्रता में मानो उसे प्रदान कर देता है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक उन्होंने कहा तो पुनः प्रश्न किया देवी ने, क्या हे प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ कि जब यज्ञमान, यज्ञमान की पत्नी विराजमान होते हैं, तो उस समय देखो, उनका उद्गाता कौन है? मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा हे देवी! जब यज्ञमान, यज्ञमान की पत्नी विराजमान होते हैं तो मानो देखो, मध्य में पुत्र ही उसका उद्गाता कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, पुत्र कैसे उद्गाता है? मेरे पुत्रों! देखो, दोनां के मध्य में पुत्र सन्तान का नामोकरण भी याग है, और यागां ब्रह्मे लोकां रथं देवाः मेरे प्यारे! देखो, वही तो मध्य में उद्गीत गाता है। दोनों के मध्य में उद्गीत गाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पत्नी मौन हो गई। ऋषि पत्नी ने मौन हो करके पुनः उसके हृदय में एक वाक जागरूक हुआ, क्या, महाराज! याग का

यौगिक उद्गाता कौन है? यौगिक उद्गाता भी तो कोई होगा, तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा हे देवी! इस याग का यौगिक उद्गाता देखो, प्राण है, इसीलिए ऋषि जन प्राणायाम करते हैं और प्राण की साधना में लग करके, ब्रह्मवर्चोसि बनते हैं मानो देखो, प्राण ही इसका उद्गाता माना गया है। प्राण से ही तो उद्गीत गाने वाला है।

मेरे प्यारे! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार देता देता, बहुत दूरी चला गया, विचार यह प्रारम्भ हो रहा है, कि याग का कितना विशाल एक विज्ञानमयी तथ्य माना गया है, जिसके ऊपर बेटा! ऋषि मुनि कितना अन्वेषण और अनुसन्धान करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब उद्गाता का प्रसंग आया, तो मुनिवरों! देखो, यज्ञमान पुनः बोले प्रसंगं ब्रह्मे देवी ने कहा! प्रभु! मेरा एक प्रश्न और रह रहा है उन्होंने कहा बोलो, उन्होंने कहा भगवन! व्यवहार में, इस यज्ञशाला में व्यवहार का उद्गाता कौन है? उन्होंने कहा व्यवहार का उद्गाता तो ब्रह्मवर्चोसि है जो मानो वेद का, स्वरों से गान गाता है वह व्यवहार के सम्बन्ध में, जगत का एक पुनः निर्माण करता, यज्ञमान की एक वाणी और व्यवहार में परणित हो करके, मानो देखो, जो उद्गीत गाता है वह पुरोहित कहलाता है, इस यज्ञ का पुरोहित ही उद्गाता कहलाता है।

अग्नि का देवता

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार देखो, महात्मा अर्धभाग ने अपने ज्ञान की आभा में मानो सूक्ष्म सा उपदेश दिया, तो मुनिवरों! उसके चरणों में ओत प्रोत हो गये। उन्होंने ओत प्रोत हो करके एक प्रश्न और किया, क्या महाराज! इस अग्नि का देवता कौन है? उन्होंने कहा बाह्य जगत में अग्नि का देवता सूर्य है, क्योंकि सूर्य उसका सखा है, इसीलिए अग्नि की ऊर्ध्वा गति हुआ करती है, मानो देखो, उन्होंने यह

वाक जब कहा तो पुनः उन्होंने कहा भगवन! सूर्य जब यज्ञशाला का, अग्नि का मानो देखो, देवता है तो अग्नि का, ऊर्ध्वा में देवता कौन है? उन्होंने कहा अग्नि में सूर्य का देवता, मानो प्राणतव माना गया है, उसमें प्राण सत्ता है, और प्राण सत्ता से अग्नि को सूर्य में और सूर्य को ऊर्ज्वा में परिवर्तित करता हुआ, मानो देखो, वही देखो, चन्द्रमा को अमृतमयी ग्रहण करके, उन्हीं से संसार की उत्पत्ति होती है वह प्रजापति में लय हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि से अपने उद्गीत गाते हुए बेटा! देखो, राजा मौन हो गया और राजा ने कहा धन्यं ब्रह्मा कृतं लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, याग के पश्चात उन्होंने याग की धाराओं को वर्णन किया।

यज्ञ का अधिपति

तो मेरे प्यारे! आज का विचार यह क्या कह रहा है कि महाराजा! अश्वपति का याग प्रारम्भ हो गया, उद्गाता उद्गीत गाने लगा, मानो देखो, उन्होंने एक प्रश्न ओर किया, क्या इस यज्ञ का मानो अधिपति कौन है? वह ब्रह्मा है। मेरे प्यारे! यह उच्चारण करके याग प्रारंभ हो गया, वेदों के उद्गीत गाए जाने लगे, अग्नि अपनी ऊर्ध्वा को प्राप्त होने लगी, मेरे प्यारे! देखो, यह आज का वाक हमारा क्या कह रहा है, कि हम मानो याग के विज्ञान में, याग के कर्मकाण्ड, में याग की मानो भावनाओं में एक सर्वत्र आध्यात्मिक और भौतिकवाद निहित रहता है। यह आज का हमारा विचार क्या कह रहा है, अब मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ, अब मेरे प्यारे! महानन्द जी! दो शब्द उच्चारण करेंगे

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् देवं मना वाचन्नम ब्रह्मा वायु गता। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, ऐसी अनुभव को उड़ाने उड़ रहे थे, जिन उड़ानों को उड़ने के पश्चात और विचार देना हमारी बड़ी धृष्टता होगी, क्योंकि इनके विचार इतने गम्भीर और अन्तर्हृदय को,

आत्मा को स्पर्श करने वाले शब्द, जो मानव को योग में, व्यवहार में, विज्ञान की धाराओं में, अहिंसा परमोधर्म में जो परणित कराने वाले है। परन्तु आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के समीप, कोई विशेष चर्चा तो नहीं, परन्तु मैं इन्हें कुछ अवगत करता रहता हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, अभी अभी अहिंसा परमोधर्म की चर्चा कर रहे थे, कि याग अहिंसा में होना चाहिए, मानो देखो, पुरातन काल में, मध्य काल में, कुछ ऐसे तथ्य हमारे समीप आए हैं, कुछ ऐसे तथ्य समाज के समीप आए हैं, जिन यागों, की पूज्यपाद चर्चा कर रहे थे उन यागों में नाना प्राणियों के मांस की भी आहुतियाँ दी गई, किसी किसी काल में यह मैंने बहुत पुरातन काल में वर्णन भी किया। आज मैं विशेषता में तो नहीं जाऊँगा, केवल पूज्यपाद गुरुदेव को मैं कुछ वर्णन कराने जा रहा हूँ, क्या, आज मैं मानो आपातकाल में भी इस संसार की प्रतिभा एक उज्ज्वलता में बन करके रहती है। आज मैं राष्ट्रवाद के सम्बंध में, परन्तु देखो, कुछ विचार व्यक्त करता रहता हूँ। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराता रहता हूँ, आज का राष्ट्रवाद मानो ऐसी आभा में परणित हो रहा है, जो प्रत्येक प्राणी चिन्तित हो रहा है, राष्ट्र का प्रत्येक प्राणी चिन्तित हो रहा है। मानो देखो, रक्तभरी क्रान्ति के अवशेषों की, एक धाराएँ मानो तरंगें, अपने अपने स्थान से वह प्रदीप्त हो रही है, और मानो शनैः शनैः मानो देखो, स्थलियों पर अग्नि के काण्ड बनते चले जा रहे हैं, इसके मूल में क्या है?

रुढ़ियों से राष्ट्र का हानि

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से बहुत पुरातन काल में निर्णय दिया है, क्या, इसके मूल में नाना प्रकार की देखो, ईश्वर के नाम पर जो रूढ़ियाँ हैं, वह ज्ञान न रह करके रूढ़ियाँ पनपती रहती है। और वही रूढ़ियाँ देखो, अग्नि के काण्डों में परणित हो रही है, वह परिवर्तित

होती रहती है, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया, बहुत पुरातन काल में भी जो राजा मानो देखो, मांस इत्यादियों को पान करने वाला हो, जो मानो सूक्ष्म प्राणियों को वह भक्षण करने वाला हो, मानो देखो, आज उसे कहा जाए, क्या वह राष्ट्र का उत्थान करें, यह मुझे असंभव सा प्रतीत हो रहा है। मानो देखो, मैं ये कहता रहता हूँ कि राष्ट्र का कोई उपचार करना है और रक्तभरी कान्ति को समापन करने का मानो क्रियाकलाप बनाना है तो राजा को प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करके, उनका मानो शास्त्रार्थ होना चाहिए और जो कर्म, सिद्धान्त और मानव दर्शन पर जो घटित हो जाए, उसको स्वीकार कर लेना चाहिए। राजा के यहां देखो, ईश्वर के मानने वाली पद्धति हो, राज की भी वही पद्धति हो, मानो देखो, उस पद्धति में व्यापकवाद हो, जिसमें मानवीय दर्शन हो, विज्ञान घटित होता हो, उस वाक को स्वीकार करने में राजा को किसी प्रकार का आपातकाल नहीं होना चाहिए। मानो अपने को दण्ड के द्वारा, शासन के द्वारा, मानो देखो, उस आभा को लाना चाहिए, जिससे समाज में एक मानवता की प्रतिभा आ जाए, जब मैं यह विचारता रहता हूँ जिस राष्ट्र में, जिस समाज में प्राणियों का ह्रास होता हो मानो देखो, यहां प्राणियों के ह्रास में, धर्म के नाम पर, प्राणियों को, देखो, धर्म के नामों पर नष्ट किया जाता हो, वह कोई राष्ट्र या कोई धर्म नहीं होता है।

धर्म

धर्म वह है जो मेरे प्यारे! पूज्यपाद गुरुदेव वर्णन करते हैं, इन्द्रियों में जो समाहित हो रहा है मानो देखो, उसी की आभा में मैं विशेषता नहीं, जहां आज यह हमारी आकाशवाणी जा रही है वहां एक याग पूर्णता को प्राप्त हुआ, मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हुआ, मैं गौरव के सहित यह कहा करता हूँ हे यज्ञमान! मेरा अन्तर्हृदय

यज्ञमान के साथ रहता है, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, मानो तेरे गृह में, द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, याग के लिए मानो देखो, जो तरंगे तरंगित हो जाती हैं, शब्द मानो जैसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव प्रगट करा रहे थे, क्या वह देखो, शब्द द्यौ लोक में प्रवेश होता है वह द्यौ लोकों वाला शब्द मानो देखो, उसी में निहित हो जाता है।

ब्रह्मज्ञानी शासक

तो आज मैं विशेष चर्चा प्रगट न करता हुआ, मानो देखो, मैं उच्चारण कर रहा हूँ, हे पूज्यपाद गुरुदेव! यहां अब जो आपातकाल आ रहा है वह महान पुरुषों को मानो दूरिता में दृष्टिपात किया जाता है और जो उद्दण्ड है जो वृत्तियाँ है मानो देखो, राष्ट्र की दृष्टि में वह महान बनी रहती है। परन्तु ईश्वरीय दृष्टि महान बनी रहे, उसमें वह महान ही महान रहते है। परन्तु देखो, इसके पश्चात मैं विशेष चर्चा प्रगट न करता हुआ, हे राजन! हे प्रजाओं! तुम मिलन हो करके, अश्वमेध याग करो, तुम मानो प्रजा को, राजा अश्व बन करके प्रजा को महान बनाए, प्रजा में एक सात्विक वातावरण की तरंगे ओत प्रोत कर दें, तो वह राजा पवित्र कहलाता है और जो सात्विकता को मानो जो देखो, राजा के द्वारा ब्रह्म ज्ञान नहीं होता, जो राजा प्राणियों पर शासक हो करके शासन से ही मानो देखो, प्रजा से भयभीत होता है, ऐसे राजा को राजा नहीं बनना चाहिए। मेरी दृष्टि में नहीं बनना चाहिए।

मुझे वह काल स्मरण है पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते रहते थे, क्या, राजा प्रजाओं में जा करके, उनके उद्धार की मानो सुखद की वार्ता को अपने में ग्रहण करते रहते थे। आज मानो देखो, राजा तो अपने प्राणों की रक्षा में लगा हुआ है, जब राजा अपने प्राणों की रक्षा में लगा हुआ तो दूसरे के प्राणों की रक्षा क्या कर सकता है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से, कई

काल में कहा, अरे, राजन्! तू वैदिक साहित्य को क्यों नहीं अध्ययन में लाता है, तू उसमें मानो देखो, उपसंहार को क्यों नहीं लाता है, जिससे तुझे ब्रह्म ज्ञान होता है जिससे मानो देखो, तुझे ज्ञान और विवेक उत्पन्न हो करके, कर्तव्यवाद की वेदी के समीप आ जाती है, जब तक मानो ज्ञान और विवेक उत्पन्न न हो करके और विवेक की उत्पत्ति नहीं होगी, तब तक राजा को अपनी राष्ट्रीयता को नहीं अपनाना चाहिए। मानो यह उसकी घृष्ठता है, यह उसका आत्म बल मानो देखो, हृदय में आत्मा ही स्वीकार नहीं कर रहा है, यह केवल पदों की लोलुपता के लिए, अपने भय की प्रीति में लगा हुआ है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! आज तक आप ने सृष्टि के प्रांरभ से ले करके, ऐसा राजा कोई दृष्टिपात नहीं किया होगा जो अपने प्राणों की रक्षा में लगा हुआ है। जो मानो देखो, सृष्टि के प्रारम्भ से ऐसे राजा हुए है, जिन्होंने मानो देखो, मृत्यु को ज्ञान लिया है, मृत्युञ्जय बन करके प्रजा में अनुशासन में लाने का प्रयास किया गया। हे राजन! यदि तू मृत्यु में लगा हुआ है, तो मृत्यु तेरी आनी ही है परन्तु देखो, यदि तू अमृत्यु ब्रह्मज्ञान में परणित हो जाए, तो तू रूढ़ियों को समाप्त कर सकता है और जब रूढ़ियाँ, ये ईश्वर के नाम पर, नाना प्रकार की रूढ़ि, मिथ्या बन जाती है, जब यह नष्ट हो जाती है तो तेरा ब्रह्मज्ञान सिद्ध हो गया है। तेरा ब्रह्म ज्ञान, तेरे समीप आ गया है मानो देखो, इस प्रकार हे मानव! हे राजन! तू प्रजा की रक्षा करने के लिए तत्पर हो, अपनी रक्षा हो न हो, परन्तु उसकी रक्षा तो प्रभु! ही किया करता है।

मृत्युञ्जयी

मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा विचार क्या कहता है, ब्रह्म ज्ञान में रत्त होने वाला, विवेकी पुरुष कहता है क्या हे मानव! तू मृत्यु को विजय हो, मृत्यु

के ऊपर मेरे पूज्यपाद गुरुदेव नाना प्रकार की वार्त्ताएँ प्रगट करते रहते हैं, जब मानव को मृत्यु का भय बना रहता है, मृत्यु ही मृत्यु पुकारता रहता है अरे, मानव, तेरे जीवन में तो अन्धकार आना ही है, यह ब्रह्म ज्ञान क्या करेगा। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय क्या, ब्रह्मज्ञान को ले करके उद्गीत गाना चाहिए, मृत्यु का भय नहीं रहना चाहिए, अरे, वह भी तो प्राणी मात्र प्रभु की आभा में निहित रहते हैं, जब हमारा आयु, जाति और भोग हमारा पूर्व जन्मों के संस्कारों से प्राप्त होता है तो हमें इसके भय की प्रतीति हो। मेरे पुत्र अब्रहे मेरे प्यारे! देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में हमें वर्णन कराया, बाल्यकाल में जब आचार्यों के समीप विद्यमान होते हैं, तो उस समय ब्रह्म ज्ञान का उपदेश, पूज्यपाद दिया करते हैं परन्तु देखो, वह ब्रह्म ज्ञान में परणित हो जाते हैं, आज का जो गुडम्बावाद है चाहे वह शिक्षालयों में हो, चाहे आध्यात्मिकवाद बने हुए क्यों न हो, परन्तु उन्हीं, सबको मृत्यु का भय लगा हुआ होगा। इसीलिए मृत्यु नहीं आनी चाहिए अरे, मृत्यु को जानने वाले की मृत्यु को जानो, उसके पश्चात साधक तुम वृत्ति में प्रवेश कर जाओगे। परन्तु जब तक तुम मृत्यु को नहीं जानोगे, तो तब तक देखो, मृत्यु तुम्हारे समीप आती रहेगी और जब मृत्यु को जान जाओगे, क्या मृत्यु अन्धकार है, अज्ञान है, मानो हम आत्मा है, जब यह स्वीकार कर लोगे तो प्रभु! कृतियों में रत्त रहने वाला तो उसको स्वीकार करना है।

कर्तव्यवादी राजा

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मैंने आपको एक अनोखी चर्चा प्रगट की है, क्या सृष्टि के प्रारम्भ से, जब से भगवान मनु का काल आया है, भगवान मनु से ले करके, वर्तमान के काल तक कोई राजा ऐसा नहीं हुआ, जो मृत्यु से बचने का प्रयास कर रहा हो, आधुनिक काल के राष्ट्र इस पर लगे हुए हैं। जो मानो देखो, मृत्यु

का जिसको भय न लगा हो। देखो, ऐसा क्यों हो रहा है यह क्योंकि वह अपने को साधक नहीं है, उनको साधक नहीं कहा जा सकता, उनको मानो पदों की लोलुपता, कहा जा सकता है। परन्तु देखो, जो राजा होते हैं राजा को पुरोहित जन राष्ट्र का निर्वाचन करते हैं, क्या इसको ब्रह्म ज्ञान भी है, विवेक भी है, पुत्र से, पत्नी से मानो वह मोह तो नहीं कर रहा है। राजा वह होता है जो अपनी पुत्र और पत्नी से भी जिन्हें मोह नहीं होता, उन्हें मोह कर्तव्यवाद से हुआ करता है। जब मानो इस प्रकार का राजा होता है अरे, वही तो प्रजा को ऊँचा बनाता है, अन्यथा जिनको पुत्र से मोह है, पत्नी से मोह है, अरे, वह तो दूसरे के अधिकारों को हनन करके मानो देखो, अपनों की पूर्ति करते रहते हैं, इस प्रकार देखो, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को पुरातन काल में भी यह निर्णय कराया, परन्तु आज भी मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ क्या राजा शाश्वत होना चाहिए, राजा ब्रह्मज्ञानी होना चाहिए, उपनिषदों का विद्वान होना चाहिए, वेद के एक एक अक्षर को जानने वाला हो, मानो देखो, वह हिंसक न हो, वह अकृति मानो देखो, जो बारह बारह प्राणियों के रसों को पान करने वाला, प्रातः काल में प्राणी हो, अरे, वह तो मृत्यु को पान कर रहा है, मृत्यु ही आ जानी है इसमें देवं ब्रह्म वाचा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

मैंने बहुत पुरातन काल में कहा, पूज्यपाद गुरुदेव को कि ब्रह्मज्ञानी ही राजा होना चाहिए, पुरातन काल में जब राष्ट्र का निर्वाचन होता, तो बुद्धिमानो के द्वारा, मैंने पूज्यपाद गुरुदेव को कई काल में कहा क्या, साधारण प्रजा द्वारा चुनौती, निर्वाचन करने वाला राजा, तो मानो साधारण, जैसे मूर्ख प्रजा वैसे ही राजा भी उसी भान्ति का होता है। परन्तु राजा जब बुद्धिमान, वेद के मर्म को जानने वाला, विवेकी और तपस्वी जब राजा को चुनता है वह राजा शाश्वत होता है। वह राजा

पवित्र होता है वह राजा प्रजा की रक्षा करता है, वह राजा मानो देखो, अपनी रक्षा में अपनी इन्द्रियों की रक्षा करता हुआ और प्रजा को मानो देखो, उन्नत कर देता है। इस प्रकार का देखो, राष्ट्र होना चाहिए। आज का विचार अब मैं समाप्त करने जा रहा हूँ, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा अब मैं यज्ञमान के लिए यज्ञमान ऐसे मार्ग....शेष अनुपलब्ध दिनांक ३१ ०८ १९८६, मोदीनगर।

24 ## ०१ ०९ १९८६

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है, क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, उस देव की महिमा के ऊपर अथवा उसका जो ज्ञान और विज्ञानमयी जगत है, इसके ऊपर अनुसन्धान करता रहा और उस सम्बन्ध में नाना प्रकार की प्रतिभाओं में मानव ऊँची ऊँची उड़ाने उड़ता रहा है। क्योंकि ज्ञान और विज्ञान मानव के जीवन की एक मौलिकता मानी गई है, जिसके ऊपर दोनों प्रकार के विज्ञानवेत्ता अपने में प्रायः अनुसन्धान करते रहे हैं। मानो हमारे यहां आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान परम्परागतों से ही मानवीय मस्तिष्को की एक महान विचित्रता रही है, क्योंकि उसके जानने के लिए प्रायः मानव ने बहुत अनुसन्धान किया और विचारता रहा है, जिस भी काल में मानव एकान्त स्थली पर विद्यमान

होता है, तो वे परमपिता परमात्मा के अज्ञान और विज्ञानमयी मानवीय क्षेत्र में प्रवेश हो करके मानो अपने जीवन के सम्बन्ध में भी अन्वेषण करता रहा है।

तो आओ, पुत्रों! आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना में या विज्ञान के वांगमय में तो तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, आज का हमारा वेदमन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है, और वह जो प्रेरणा का स्रोत है, वह उस परमपिता परमात्मा की जो अमूल्यमयी चेतना है। उससे मानव को प्राप्त होता रहता है, और उसी से प्रेरित हो करके मानव नाना प्रकार की उड़ाने उड़ने लगता है, आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र अग्नं रथं ब्रह्मा वरुणप्रहा वाचन्नमा ब्रह्मा वायु सम्भवाः बेटा! वेद का मन्त्र हमें उद्गीत गा रहा है, और उच्चारण कर रहा है कि हे मानव! तू अपने में मानवीयता का दर्शन कर। क्योंकि मानवता का दर्शन करना बहुत ही अनिवार्य है जब मानव अपने स्वतः मानवीयतव का दर्शन उसे होने लगता है, तो उसके जीवन में एक महान प्रतिभा जागरूक हो जाती है। उसी प्रतिभा को ले करके मानव अपने में ऊँची ऊँची महानता की उड़ाने उड़ता हुआ उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में प्रवेश हो जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें कुछ ऋषि मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहां प्रत्येक मानव अपने में मानो देखो, अपनी मानवीयता के दर्शन के लिए प्रायः अन्वेषण और उनका विचार विनिमय होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहां कुछ ऋषि मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके कुछ आत्म चिन्तन करने लगे, आत्म चिन्तन के सम्बन्ध में हमारे यहां नाना ऋषि मुनियों का एक समाज एकत्रित हुआ, जिन ऋषि मुनियों में महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलभ और दालभ्य और महर्षि रेणकेतु और महर्षि वैशम्पायन महर्षि शिकामकेतु भारद्वाज और मुनिवरों! जिनमें महर्षि

विभाण्डक महर्षि सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी रोहिणी केतु, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता ब्रह्मचारी महर्षि कृति भानु और नाना अपने में अन्वेषण करने वाली मुनिवरों! देखो, मेरी प्यारी मां अपने अभ्योदय अपने में विचार विनिमय करने वाली मानो चाक्राणी गार्गी सोम वृत्तिका यह भी अपने अपने विचारों को ले करके बेटा! सभा में विराजमान हो गई, और यह विचारने लगे कि यह जो संसार हैं यह क्या है? जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से विचार विनिमय करता चला आया है। आज हम भी तो कुछ विचार विनिमय करें, तो मेरे प्यारे! दार्शनिकों के समाज में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि भई! यह जो संसार है, यह तो कल्प वृक्ष की भान्ति हैं। जैसे कल्पवृक्ष मानो अपने में ही कल्पना करने मात्र ही इस संसार की रचना हो जाती है और यह संसार एक कल्प वृक्ष है क्योंकि मानव जो भी कल्पना करता है वह उसी प्रकार का बन जाता है वह मानो देखो, उसके समीप उसी प्रकार के प्राणी और उसी प्रकार की धाराएं और ज्ञान की उपलब्धियां होने लगती हैं मानव के मस्तिष्क में, नाना प्रकार की धाराओं का जन्म हो जाता है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि यह संसार कल्पवृक्ष है, यहां कल्पना कीजिए, और वस्तु प्राप्त हो जाती हैं। मेरे प्यारे! योगीजन योगाभ्यास करते हैं, और योग में प्रवेश हो करके क्योंकि वह उनकी कल्पना है, उनका मानो सात्विक स्वरूप उनके समीप आता रहता है। परन्तु देखो, यहां ऋषि मुनियों ने कहा कि यह जो संसार है, यह कल्प वृक्ष ही नही हैं, यह तो मानो देखो, व्यापार शाला है। यहां प्रत्येक मानव देखो, यहां व्यापार शाला में अपना आदान प्रदान करने के लिए आया है। नाना प्रकार के आदान प्रदान कहीं विचारों का आदान प्रदान है, कहीं मानो कर्मों की आभा का आदान प्रदान होता रहता है, मानो यह संसार एक प्रकार की व्यापारशाला है, क्या मानो देखो, इसको कृतिमां किसी

पर मानव संस्कारों के आधार पर एक धरोहर रहती है, कोई धरोहर को मानो जिस पर धरोहर का कृत है वह उसे लेने के लिए आया है, कोई धरोहर को देने के लिए आया है।

तो मेरे प्यारे! ऋषि मुनियों ने कहा क्या यह संसार तो एक प्रकार की व्यापारशाला है मानो यहां कोई किसी का देने के लिए आया है कोई किसी का लेने के लिए मानो आदान प्रदान की एक शाला है। मेरे प्यारे! देखो, वेद का मन्त्र कहता है सम्भवं ब्रहे वाचन्न यज्ञा वेद के आचार्यों ने कहा क्या यह संसार तो एक प्रकार की यज्ञशाला है, यहां प्रत्येक मानव याज्ञिक कर्म करने के लिए आया है, मानो देखो, कहीं विचारों का याग हो रहा है। कहीं मानो उत्पादन का याग कर रहा है, कहीं साकल्य के द्वारा अग्नि होत्र कर रहा है। नाना प्रकार के याग में मानव परणित हो रहा है, तो एक प्रकार की मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला है, यज्ञ का अभिप्राय यह है कि जो एक दूसरे से कटिबद्ध रहता है। अथवा जिसका समन्वय रहता है, मेरे प्यारे! देखो, यज्ञशाला के सम्बन्ध को भी आचार्यों ने कहा कि नहीं यह संसार तो एक प्रकार की विचारशाला है। यहां प्रत्येक मानव कुछ न कुछ विचार विनिमय करने के लिए आया है और विचारता रहता है क्या यह संसार तो किस रूप में अपने चिन्तन की शाला बनाऊं। तो मेरे प्यारे! एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके मानव ऊँचे ऊँचे विचारों की उड़ाने उड़ता रहता है चिन्तन और मनन करता रहता है और इस विचारशाला को बेटा! अपने में नियुक्तता में परणित कर देता है दार्शनिक विवेचना में प्रवेश हो जाता है, मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा नही, यह संसार तो मानो देखो, प्रभु का एक नृत्त कहा जाता है। एक चेतनामयी जगत है, जो आत्मवेत्ता बन करके, अपनी आध्यात्मिक ऊँची ऊँची उड़ाने उड़ने लगते हैं। मेरे प्यारे! देखो, उसी

सन्दर्भ में, ऋषि मुनियों के विचार विनिमय में प्रारम्भ होने लगे, क्या यह संसार एक दूसरें में मानो जैसे माला है, और माला भिन्न भिन्न प्रकार के मनके हैं, परन्तु एक सूत्र में पिरोने से, वह माला बन जाती है, इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है, एक प्रकार की माला के सदृश्य है, यहां माला को पिरोया जाता है, एक दूसरी आभा में एक दूसरा विचार एक दूसरे में पिरोया जाता है। तो मानो देखो, वह माला बन जाती है जिस माला को विचारक अपने में धारण करता रहता है, मेरे प्यारे! देखो, इसी सन्दर्भ में आओ, हम कुछ विचार विनिमय करें, क्या यह माला कैसी बनती रहती है, इस माला का कैसे समन्वय रहता है? तो मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें कुछ मानवीय क्षेत्रों में, परमपिता परमात्मा की जो अनुपम माला है, उसके सम्बन्ध में मैं तुम्हें कुछ विचार, आज बेटा! उन विचारों को ले करके, हम चलें। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है वही ऋषि मुनियों का समाज, भ्रमण करते हुए, मुनिवरों! देखो, महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि के द्वार पर पंहुचा, गाड़ीवान रेवक मुनि से, ऋषि मुनियों ने, उसी वाक को मुनिवरों! देखो, उनकी पुनरूक्ति की, और यह प्रश्न किया कि महाराज! यह जो संसार है, ये एक दूसरे में ओत प्रोत हुआ से हमें दृष्टिपात आता है। एक विचार है, दूसरे विचारों में वह पिरोया हुआ है। मानो देखो, वह अपने में दर्शन को दर्शाता रहता है। तो हम देखो, आपसे प्रश्न करना चाहते हैं, क्या हे प्रभु! यह जो हमें दृष्टिपात आने वाला जगत है, यह मानो देखो, इसकी प्रतिष्ठा क्या है? यहां प्रतिष्ठा का समन्वय रहता है, प्रत्येक प्राणी, अपने में प्रतिष्ठित होता रहता है और प्रतिष्ठा को चाहता रहता है, प्रत्येक मानव प्रतिष्ठित होना चाहता है, तो मेरे प्यारे! देखो, एक दूसरे में जो प्रतिष्ठित, होने का प्रसंग है, वह परम्परागतों से ही, मानो देखो, एक दूसरे में पिरोएं हुए

होने से, उसकी प्रतिभा अपने में ओत प्रोत मानी है।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक उन्होंने कहा, क्या महाराज यह जो संसार हमें दृष्टिपात आ रहा है, यह जो नाना प्रकार का सृष्टिवाद है, जिसमें चारों प्रकार की सृष्टि हमें दृष्टिपात आ रही है, मेरे प्यारे! देखो, चारों प्रकार का जो सृष्टि का व्यवधान हो रहा है, मानो देखो, कहीं अण्डज है, श्वेदज है, और देखो, जंगम रूप में ओर मुनिवरों! देखो, एक स्थावर सृष्टि कहलाती है, यह जो सृष्टि है, जो दृष्टिपात आने वाला जगत है, यह किसमें प्रतिष्ठित रहता है जैसे मानो स्थावर है और श्वेदज है, और श्वेदज के गर्भ में अण्डज सृष्टि कहलाती है। उसी के सन्दर्भ में जंगम कहलाता है। यह जो संसार मुझे दृष्टिपात आ रहा है, यह किसमें प्रतिष्ठित रहता है, यह किसमें ओत प्रोत हो जाता है। तो मेरे प्यारे! जब ऋषि ने यह प्रश्न किया गाड़ीवान मानं ब्रह्मे व्रतं गाड़ीवान ने जब यह वाक श्रवण किया, तो उन्होंने कहा क्या तुम्हारा ऋषि मुनियों मन्तव्य क्या है? इन वाक्यों के उच्चारण करने का मन्तव्य क्या है? उन्होंने कहा हे प्रभु! हम यह प्रश्न इसीलिए कर रहे हैं, क्योंकि संसार को जानना चाहते हैं, क्या यह संसार क्या है जो प्रभु ने जिस रचना को रचाया है उसके सन्दर्भ में, हम जाना चाहते हैं मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि उसके सन्दर्भ में जाया नही जाता और जब जाने का समय होता है, जब ही उसी काल में मौन हो जाता है, यह गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज मुनि महाराज ने यह वाक कहा। परन्तु देखो, इसी विचार को लेते हुए, उन्होंने कहा कि यह जो संसार है, जो दृष्टिपात आने वाला जगत है यह मानो देखो, पृथ्वी में ओत प्रोत हो जाता है, यह जो पृथ्वी है, इसकी प्रतिष्ठा मानी गई है, इसी में यह प्रतिष्ठित रहता है। तो उन्होंने मुनिवरों! देखो, इस वाक को ले करके, यह कहा कि इस वाक को ले करके यह कहा कि सम्भवं लोकां वाचप्प्रहा वस्श्वंजन्म ब्रहे वेद का

वाक कहता है, क्या मुनिवरों! यह जो पृथ्वी है, यह गुरूतव वाली है, इसमें गुरूतव परमाणु रहते हैं, परन्तु इसी में यह संसार ओत प्रोत हो जाता है, इस पृथ्वी में पञ्च महाभूतों की प्रतिभा निहित रहती है परन्तु इसी में यह प्रतिष्ठित रहता है मेरे प्यारे! देखो, यह जो पृथ्वी है, वैदिक साहित्य में इसको वसुन्धरा के रूप में परणित किया है, यह वसुन्धरा कहलाती है, क्योंकि देखो, माता के गर्भस्थल से, पृथक हो करके प्राणी, मानो देखो, पृथ्वी के गर्भ में, वसुन्धरा की गोद में आ जाता है, यह वसुन्धरा नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान कर देती है, जिससे मानो देखो, राष्ट्रवाद का निर्माण होता है, राष्ट्रवाद की जो उत्पति है, वह खनिज और खाद्यों के द्वार से ही मानो उसका जन्म होता है। मेरे प्यारे! देखो, जिस भी काल में, राष्ट्रवेत्ताओं ने, गम्भीरता से यह अन्वेषण किया, क्या राष्ट्रवाद की उत्पति कहां से? क्योंकि वह खनिज और खाद्य इस माता वसुन्धरा के गर्भ में निहित रहती है। और वह निहित रहने उसको जान करके आगे मुनिवरों! देखो, उस पर शाखा पर शाखा उत्पतियां होती रहती है, हे माता वसुन्धरा! तू नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान कर रही है, वही परमाणुवाद अपने में मानो अपने स्वरूप को शान्त करके, वह तेरे में वशीभूत रहता है। मेरे प्यारे! स्वर्ण का परमाणु, स्वर्ण की आभाओं में निहित रहता है, परन्तु जब वह स्थूल रूप में गुरूतव रूप में आता है, वही सूक्ष्म बन करके बेटा! उसी रूप में प्रवेश कर जाता है। तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या वेद का वाक क्या कहता है, वसुन्धरं ब्रह्मे वाचप्रहा मानो देखो, ये वसुन्धरा कहलाती है, जिसके गर्भ में बेटा! हम सब वशीभूत हो रहे हैं, और उसी से नाना प्रकार के खाद्यों और खनिजों को प्राप्त करके, अपने जीवन को उद्बुद्ध बना रहे हैं। मानो देखो, हम प्रकाश में ले जाना चाहतें हैं, उनकी

ही जान करके, प्रकाश की आभा में परणित होना चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, यह पृथ्वी में ओत प्रोत हो जाता है। यह पृथ्वी अपने में प्रतिष्ठित हो जाती है मानो यह दृष्टिपात आने वाला जगत इसी में ओत प्रोत हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक ऋषि ने वर्णन किया, मेरे प्यारे! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से पुनः यह प्रश्न किया, कि महाराज! यह मानो इस पृथ्वी की प्रतिष्ठा क्या है? जब यह जगत इसमें ओत प्रोत होता है, तो पृथ्वी की प्रतिष्ठा क्या है? तो मुनिवरों! देखो, वेद के ऋषि ने, एक वेद की आख्यिका प्रगट करते हुए कहा, न्यौदा में से सम्भवं ब्रह्मा आपो ब्रव्हा लोकां आपो ज्योति रथं ब्रह्मा स्वस्तं उन्होंने कहा कि यह आपो में ओत प्रोत रहता है। आपो देखो, जलं ब्रह्मा अमृताः वह अमृत है, वह आपो में ओत प्रोत हो जाता है, मेरे प्यारे! देखो, जब यह मानव अपने में अन्वेषण करता है विचार विनिमय करता है तो इस मानव का बेटा! जल ही आसन बना हुआ है, आपो ही मानो देखो, इसका ओढ़न है, आपो ही इसके पांशे बने हुए हैं, मेरे प्यारे! यह जो जल है, यही तो प्राण सत्ता को प्रदान करने वाला है। यही तो प्राणों में ही आभा को जन्म देता रहता है, मेरे प्यारे! मानव का जो श्वांस पर श्वांस गति कर रहा है, यह आपो की धारा से कर रहा है। आपो में एक ज्योति है, जो जागरूक होती है, जो मानो देखो, जलं अमृता बन करके मेरे प्यारे! नाना प्रकार के खाद्यान्न को उत्पन्न करने वाली है। मानव के प्राण की सत्ता को प्रदान करने वाला मेरे प्यारे! माता के गर्भ स्थल में जब शिशु विराजमान होता है। तो मेरी भोली माता को ज्ञान नही होता है, परन्तु देखो, उसका ओढ़न भी माता के गर्भस्थल में आपो है, आसन भी आपो है, और मुनिवरों! देखो, पांशे भी आपो ही बने हुए है, और वह उसी में मुनिवरों! देखो, बाल्य पनपता रहता है,

अमृत को प्राप्त करता रहता है, मानो नाना प्रकार की मालाओं की छाया उससे ऊर्ध्वा में आती रहती है। परन्तु जो कैसा विचित्र मेरे प्यारे! प्रभु का विज्ञानमयी जगत है, मेरे पुत्रों! देखो, उसी में ओत प्रोत रहता है, आनन्दवत रहता है, अमृत को ग्रहण करता रहता है, मुनिवरों! देखो, वही तो मानव है जो पृथ्वी के गर्भ में आ करके बेटा! देखो, विचार विनिमय करता है।

आओ, मेरे प्यारे! यह आपो ही तो मानो देखो, एक ज्योति रूप कहा जाता है, इस आपो को जानना है, आपो में प्रवेश होना है, यही तो प्राण के देने वाला है, कृषक की भूमि को उज्ज्वल और महान बनाने वाला यह आपो कहलाता है। मानव को आपो ही तो मेरे प्यारे! देखो, अभ्योदय उदय करता हुआ अपने में महानता का दर्शन कराता रहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, आगे के वेद के ऋषि ने जब यह उत्तर दिया तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से महर्षि प्रवाहण ने नतमस्तिष्क हो करके कहा हे प्रभु! यथार्थ है। परन्तु हम जानना चाहते हैं कि यह आपो किसमें प्रतिष्ठित रहता है। आपो को हम जानना चाहते हैं, उन्होंने कहा कि यह जो आपो है, यह ब्रह्मा रूपं ब्रव्हा व्रतं मानो यह जो आपोमयी ज्योति है। यह अग्नि में ओत प्रोत हो जाता है, यह अग्नि भिन्न प्रकार की अग्नियों का चयन होता रहता है। भिन्न भिन्न प्रकार की अग्नियों का चयन मेरे प्यारे! वैदिक साहित्य में प्राप्त होता रहता है।

मुझे स्मरण आता रहता है जब ऋषि मुनि इसके ऊपर अन्वेषण करते हैं, तो बेटा! यही अग्नि कहीं गार्हपथ्य नाम की बन करके रहती है, यही अग्नि कहीं वैश्वानर नाम की बन करके रहती है, यही अग्नि मानो आह्वनीय नाम की अग्नि बन करके रहती है, यही अग्नि मानो देखो, बड़वानल नाम की अग्नि समुद्रों में प्रवेश कर जाती है। यही अग्नि मेरे प्यारे! देखो, आपो में ज्योति बन करके सूर्य की ऊर्ज्वा देने जो वाला है।

ऊर्ज्वा नाम की अग्नि मेरे प्यारे! देखो, ऊर्ज्वा बन करके मानव को सत्ता प्रदान करने लगती है। विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, वही ब्रह्माग्नि कहलाती है। वैदिक साहित्यकारों ने कहा है, आचार्यों ने न्यौदा में मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए इसका विश्लेषण करते हुए आचार्यों ने कहा कि यह जो अग्नि है, गार्हपथ्य नाम की अग्नि जो ब्रह्मचारियों के हृदयो में प्रदीप्त रहती है। जिसको ब्रह्मचारी उस अग्नि के माध्यम से अपनी ऊर्ध्वा गति बना करके योग और प्राण की आभा प्राण और मन की आभा में योग में प्रवेश करता है। और वेद का अध्ययन करता है, और वह विद्या का अध्ययन करता हुआ अपने को सार्थक बनाता है। मेरे प्यारे! यही अग्नि है, जो गृहपथ्य नाम की अग्नि कहलाती है। जहां मानो देखो, माता पिता जिस व्यवहार को करते हैं, उस गृह में वही व्यापार बाल्य बालिका में प्रवेश हो जाता है। मानो देखो, यदि वह स्वर्ग के लिए कामना करते हैं, वाणी से यथार्थ उद्गीत गाते हैं, वेदों का अध्ययन करते हैं, मानवीयता का दर्शन उनके समीप होता है, वेदों का और दर्शनों का अध्ययन करके इसी आधार पर बाल्य बालिका, वह जो विचारों की अग्नि है, वह जो गृहपथ्य नाम की अग्नि है, उसी के आधार पर, बेटा! गृह एक स्वर्ग बन जाता है, गृह एक महानता की ज्योति में नृत्त करने लगता है, परन्तु वही अग्नि वैश्वानर नाम की अग्नि है, जो बेटा! देखो, विद्यालयों में, आचार्यों के हृदयों में प्रवेश होती रहती हैं, मानो प्रविष्ट रहती है, और वह मानो देखो, बालिकाओं को माताएं देखो, अपनी शिक्षा में परणित करती हैं उसे आह्वनीय अग्नि कहते हैं, जो हृदयों में ज्ञान है परन्तु देखो, दूसरे अग्नि की प्रतिभा में आ करके, उस अग्नि को जागरूक किया जाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह आह्वनीय अग्नि मेरे प्यारे! वह आह्वान के द्वारा ही प्रकाशित होती है, वह अपना नृत्त करने लगती है, और प्रकाश में ला करके मानव, अपने में

बुद्धिमता से, नाना प्रकार की बुद्धियों को जागरूक कर लेता है। मेरे पुत्रों! देखो, यही तो अग्नि है, जो मानो देखो, विद्यालयों में प्रवेश होती है, ब्रह्मचारी पवित्र बनाया जा रहा है, मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी को शिक्षा प्रदान करते हुए शिक्षा ही तो वह शब्द ही तो अग्नि के रूप में प्रवेश हो करके मानव के हृदयों में जो ज्ञान का पुंज है। उसे वह जागरूक करके बाह्य और आन्तरिक जगत दोनों को मानवीयता को ऊँचा बनाने वाला है। यही अग्नि बेटा! जब मानो देखो, वैज्ञानिकों के मध्य में प्रवेश करती है, यह अग्नि मानो देखो, उस समय नाना प्रकार की अग्नियां बन करके रहती हैं, मानो उससे पूर्व यह अग्नि बड़वानल नाम की अग्नि है, जब मुनिवरों! देखो, जल प्लावन आता है, समुद्रों में तो बड़वानल नाम की अग्नि का भयंकर स्वरूप बन जाता है। तो वही मानो देखो, समुद्रों में अग्नि प्रदीप्त करके जल प्लावन के स्वरूप को धारण करा देती है। मेरे प्यारे! वही तो जल प्लावन कहलाता है मानो देखो, एक जब अग्नि बेटा! आयुर्वेद आचार्यों के मध्य में प्रवेश करती है वही अग्नि मेरे प्यारे! पिचासी प्रकार की अग्नियों का चयन होने लगता है। पिचासी प्रकार की अग्नियां बेटा! वैदिक साहित्य में, वर्णन की हैं, उन मानो पिचासी प्रकार की अग्नियों को मंगलं ब्रहे कहीं मानो देखो, वायु के रूप में वायु में मिश्रित हो करके रहती है, कहीं पित में मिश्रित हो करके रहती है, कहीं मानो देखो, कृतिका में मिश्रित हो करके रहती है, विचार बेटा! आज मैं आयुर्वेद में तो तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ। विचार केवल इतना ही है क्या पिचासी प्रकार की अग्नि बेटा! आयुर्वेदाचार्यों ने स्वीकार की है। परन्तु देखो, उसके पश्चात जब इस अग्नि के ऊपर चयन किया जाता है, पिचासी प्रकार की अग्नि का जब विभाजन किया जाता है, उसको विभक्त करता है, तो बेटा! वह वैज्ञानिकों के मध्य में जब उसका विभाजन किया जाता है तो मेरे

प्यारे! देखो, वह अरबों खरबों प्रकार की अग्नि का चयन होने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, जो अणु और परमाणु के रूप में प्रवेश हो जाती है, वही तो अग्नि है बेटा! जिससे वैज्ञानिक जन ऊँची ऊँची उड़ाने उडते हैं, जानने के पश्चात, तो मुनिवरों! देखो, वैज्ञानिक इस अग्नि को जानकरके नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की उड़ाने उड़ते रहते हैं।

मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, केवल संक्षिप्त विचार देने के लिए आया हूँ, परिचय देने के लिए आया हूँ, मेरे पुत्रों! देखो, यह अग्नि ही अपने मे प्रतिभाषित रहती है, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके शब्द मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष में ओत प्रोत हो जाते हैं, वह द्यौ लोक में प्रवेश हो जाते हैं, और जब विज्ञानवेत्ताओं ने मुनिवरों! देखो, इस वाणी को जानने का प्रयास, यह वाणी ही मुनिवरों! देखो, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके अन्तरिक्ष में ओत प्रोत हो जाती है। जब मानो यह अग्नि मानो वाचक ब्राह्मण्डों का वायुदेवं ब्रहा मेरे प्यारे! देखो, द्यौ लोक में अग्नि का अग्नि स्थिर हो जाती है। वाणी के देखो, तीन प्रकार के स्वरूप माने हैं। एक भूः में एक भुवः एक स्वः में कहलाता है **जिसकी चर्चा बेटा! मार्कण्डेय ऋषि के शब्दों में मार्कण्डेय जी ने जिसका विशालता से वर्णन किया है, जो इससे पूर्व कालों में हमने बेटा! देखो, वर्णन कराया था विचार क्या बेटा! देखो, मार्कण्डेय जी के विचारो में यह माना गया है क्या यह मानो देखो, जो साधारण वाणी होती है, वह भू लोक में रहती है, और जो उससे वशिष्ठ होती है वह राष्ट्रीय विचारधारा में या मनतियों में जो रत्त रहने वाली वाणी है वह मानो भुव में ओर जो दर्शनों से गुथी हुई जो सत्य से गुथी हुई शब्दार्थ है वह स्वः लोक में ओत प्रोत हो जाता है जो मेरे प्यारे! द्यौ लोक में प्रवेश हो करके सूर्य के प्रकाश से लेता है द्यौ से ही सूर्य ऊर्ज्वा**

लेता है। उसी ऊर्ज्वा में बेटा! देखो, वह मानव के जो शब्द है, शब्द के साथ में जो चित्र है, और मुनिवरों! देखो, वह ऊर्ज्वा में और मुनिवरों! द्यौ के समन्वय में बेटा! देखो, वह भ्रमण करते रहते हैं। मेरे पुत्रों! मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, वेद क्या कहता है, वेद ऊँची ऊँची उड़ाने उड़ रहा है, विचार दे रहा है मेरे पुत्रों! देखो, आगे वेद के आचार्य ने वर्णन करते हुए कहा, क्या यह अग्नि ही मानो भिन्न भिन्न रूपों में परणित रहने वाली है, यह अग्नि कहां ओत प्रोत रहती है, वेद के आचार्य ने जब यह प्रश्न किया, उन्होंने कहा अग्नि ही वायु ब्रह्मे व्रतां मानो देखो, यह अग्नि ही वायु में ओत प्रोत रहती है, मानो जहां अग्नि होती है वहीं वायु है। और वायु ब्रह्मे जहां वायु रहता है, वहीं अग्नि है, मानो देखो, जहां अग्नं ब्रह्मा लोकां वाचन्नमं ब्रह्मे सम्भवा लोकां वायु वेद का वाक कहता है कि वायु ही, अग्नि ही, वायु के आधार पर निहित रहती है।

मेरे प्यारे! देखो, अग्नि अग्नि के रूप में बेटा! देखो, वायु परणित रहना, जो गति देती है, वायु गतिवान बनाती है, परमाणुओं को गति देने वाली है, मेरे प्यारे! देखो, अग्नि के गर्भ में, जो भी विद्यमान है, चाहे अणु के रूप में है, चाहे परमाणु के रूप में हैं, परन्तु उन सबको गति देने वाली वायु है, वायु गति देती है। प्राणमयी कहलाती है। मानो देखो, यह प्राण ही एक सखा के रूप में विद्यमान रहता है। मेरे प्यारे! आज का वेद का वाक्, हमे बहुत ऊँची उड़ाने और विचार दे रहा है, मेरे पुत्रों! देखो, अपने ब्रह्मा व्रतं लोकाम् वायु सम्भवा लोकां मेरे प्यारे! देखो, वायु अपने में प्राण सत्ता को प्रदान करने वाला है, ये गति है यह पृथ्वी के गर्भ में भी नाना प्रकार के जलाम् अमृत को विभाजन करती रहती है और अन्तरिक्ष में भी परमाणुवाद को विभाजन करती रहती है, मानो देखो, यह गति है अपने को गतिवान बनाती रहती है, प्रत्येक अणु ओर परमाणु को

गतिवान बनाती है जिससे बेटा! यह जगत अपने में मानो सार्थक बन रहा है। विचार विनिमय क्या वेद का आचार्य कहता है, क्या यह अग्नि वायु में प्रतिष्ठित हो जाती है, वही उसकी प्रतिष्ठा कहलाती है, परन्तु यह वायु किसमें ओत प्रोत हो जाती है? वेद के ऋषियों ने जब यह प्रश्न किया। तो गाड़ीवान रेवक ने कहा क्या, यह ही अमृतं ब्रह्मा, यह अन्तरिक्ष में ओत प्रोत हो जाती है। क्योंकि अन्तरिक्ष हृदय है, अन्तरिक्ष में मानो सब विद्यमान हो जाती हैं, जैसे मानव के हृदय में, मेरे प्यारे! देखो, सब वार्ता उसी में समाहित हो जाती है, मानव को प्रीति आती है, उसका समन्वय भी हृदय से है, मानव नेत्रों से जगत को दृष्टिपात करता है, वह दृष्टि का चित्रों का समन्वय भी हृदय से है, शब्द आता है, उसका भी सम्बन्ध हृदय से है, रसना में मानो देखो, स्वादन आता है खट रसों का वह भी हृदय से उसका समन्वय माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, यह सर्वत्र देखो, यह पंचा अग्नं ब्रह्मा यह हृदय में समाहित इसी प्रकार, इस जगत का जो हृदय है, ब्रह्माण्ड का जो हृदय है, वह अन्तरिक्ष माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष में यह सब ओत प्रोत हो जाते हैं, सब उसी में ओत प्रोत हो करके, मेरे प्यारे! देखो, जब आगे गतियां होती है, यही अन्तरिक्ष बेटा! देखो, शून्य बिन्दु की धारा पर, प्रवेश कर जाता है। वही मेरे प्यारे! देखो, शून्य बिन्दु आगे मानो देखो, मौन हो जाता है। विचार देता हुआ कहता है, क्या अन्तरिक्ष में मुनिवरों! प्रत्येक परमाणुवाद विद्यमान है शब्द विद्यमान है शब्द के साथ में चित्र विद्यमान है, चित्रों में मानो जो क्रियाकलाप है वह भी उसी में विद्यमान है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय क्या, हमारे यहां पुरातन काल से ही नान प्रकार की आभाओं का दर्शन होता रहा है।

तो विचार क्या मेरे प्यारे! देखो, एक दूसरे में जगत यह प्रतिष्ठित हो रहा है, यह एक दूसरे में ओत

प्रोत हो रहा है, बेटा! यह माला कहलाती है जिस माला को मानव धारण करके बेटा! देखो, इस ब्रह्माण्ड की प्रतिभा को जानता है परमात्मा की महानता के ऊपर विचार विनिमय करता है, तो मेरे प्यारे! विचार क्या आज का हमारा यह वाक क्या कहता है? आज मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें देने नही आया हूँ, केवल परिचय कराने के लिए आया हूँ, और वह परिचय क्या है, मुनिवरों! देखो, हमारे यहां एक दूसरे में प्रतिष्ठित, इसी प्रकार उत्पति का मूल भी, एक दूसरे में पिरोया हुआ सा दृष्टिपात आता है। इसीलिए एक दूसरे में वह समाहित रहता है। इसीलिए गुण को, एक दूसरे पदार्थ के गुण को, एक गुण दूसरा पदार्थ नष्ट नही कर सकता। मेरे प्यारे! देखो, एक रसों में रहने वाला है, मुनिवरों! देखो, शून्य बिन्दु से, अन्तरिक्ष मानो देखो, अन्तरिक्षं ब्रह्मा जहां मुनिवरों! देखो, सब परमाणुवाद निहित रहता है, उसमें जब गति आती है, मानो चेतना के उग्र गति आती है, तो मेरे प्यारे! देखो, परमाणुवाद, अन्तरिक्ष में गति करने लगता है। उसी से बेटा! देखो, वायु, मानो देखो, वह गतिवान है, और अग्नि के परमाणु जल और पार्थिव तत्त्व मानो ये परमाणु तीन है और वायु उस परमाणुओं को गति देती है, अन्तरिक्ष इसमें मुनिवरों! देखो, ओत प्रोत रहता है, इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, यह सर्वत्र जगत अपनी अपनी आभा में निहित रहता है।

आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वाक यह क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम इस संसार सागर से पार हो जाएं। आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कहता है, कि हम परमपिता परमात्मा मानो जो जड़ जगत ओर चैतन्य जगत दोनों का स्वामीतव कहलाता है। मानो उसका जो ज्ञान और विज्ञान वैदिक साहित्य में निहित रहता है, जिसके ऊपर

मानव अपने में अन्वेषण करता रहता है, आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार यह क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए मुनिवरों! देखो, इस ब्रह्माण्ड को जानने के लिए यह ब्रह्माण्ड क्या है। एक दूसरे में ओत प्रोत होने वाला यह एक माला के सदृश्य जैसे माला के मनके सूत्र में पिरोएं जाते हैं, इसी प्रकार यह ब्रह्माण्ड का जो नृत्त है। एक दूसरे में पिरोया सा हमें दृष्टिपात होता है, यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक यह हमारा समाप्त होने जा रहा है आज के वाक उच्चारण करने अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और चेतनामयी अपनी चेतना को चेतनता में परणित करते चले जाएं। जिससे बेटा! इस ब्रह्माण्ड को हम जान करके मानो समेट करके अपने में अपने में ही अपनेपन को दृष्टिपात करते हुए इस सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक अब समय मिलेगा शेष चर्चाएं प्रगट करेंगें। अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः यम शन्ना गतं आभ्यां देवाः। ओ३म् जनिता रथौ आभ्यां रेवाः यञ्चमा रथं आप्यां रेवं जनिता वाचन्नमाः । ओ३म् सर्वं भद्राः मां रेवाः३म्। अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनांक ०१ ०९ १९८६।

25 ## १५ ०९ १९८६

जीते रहो, देखो, मुनिवरो आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जो रहे थे ये भीं तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे

परमपिता परमात्मा, अनन्तमयी माने गएं हैं, और नाना प्रकार के यागों में, यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं, जितने भी संसार में, भिन्न भिन्न प्रकार के जो क्रियाकलाप होते रहते हैं, उन क्रियाकलापों में, वे परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं। मानो जितने भी मानवीयता में, यागों का चलन है, वे यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं। हमारे यहाँ जब किसी भी प्रकार का याग हो और किसी भी प्रकार की क्षेत्रीयता में, मानवीयता में, मनस्तव की प्रतिभा का दर्शन होता हो, परन्तु सर्वत्रता के मूल में, वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं।

आज का हमारा वेदमन्त्र, नाना प्रकार की हमें प्रेरणा दे रहा है और उस प्रेरणा के स्रोत्र में हमारे यहाँ नाना प्रकार के यागों का चलन, और हमारे यहाँ कन्या याग का बड़ा वर्णन आता रहता है। क्योंकि परम्परागतों से ही, कन्या याग के सम्बन्ध में, भिन्न प्रकार की धाराओं का भिन्न भिन्न प्रकार की आभाओं में, मानव सदैव रत्त रहा है। क्योंकि मानवीयता में, मुनिवरों! देखो, चार प्रकार की धाराएं मानी गई हैं। सबसे प्रथम धारा में देव लोक कहा गया है, क्योंकि देव लोक मानव का एक लोक कहलाता है। जैसे कन्या का देव लोक कहलाता है। हमारे यहाँ कन्या के सम्बन्ध में कन्या कहते किसे हैं? याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बड़ी विशेषता और वेद के एक एक वांगमय को ले करके उन्होंने यह कल्पना की है, प्रश्न किया है वेद मन्त्रों में भी क्या कन्या कहते किसे हैं? बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने शतपथ ब्राह्मण में मानो इसी रचना का वर्णन किया है कि कन्या उसे कहते हैं जो देव लोक में रहती है, और देव लोक उसका महान है, जो मानव का देव लोक एक मुनिवरों! ऋषि मुनियों का लोक भी कहलाता है। जिसे हमारे यहाँ मुनि प्रवृत्ति कहा जाता है, जिसे मुनिवरों! देखो, प्रीहि वाद भी कहा गया है। तो वह भी एक मानो देवतम बुद्धि के युग को जान के

और विवेक की धाराओं में एक मानव वह हमारे यहाँ मुनियों का एक क्षेत्र माना गया है। जैसे परमपिता परमात्मा सर्वत्र विद्यमान रहते हैं, मानो उसका यह जगत जितना भी क्रियाकलाप है, वह सब मानो एक देवतव को ही नही एक आभा में परणित होता रहता है।

तो मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार वेद का मन्त्र कहता है कि हमारे यहाँ कन्या किसे कहा जाता है? तो कन्या के सम्बन्ध में कहा गया कि जो देवतम् ब्रह्मा, जो देव लोक में वास करने वाली हो, हमारे यहाँ कन्या के वैदिक साहित्य में, बहुत से पर्यायवाची शब्द माने गएं हैं हमारे यहाँ कन्या नाम मानो वृष्टि को भी कहा जाता है जिसे कन्या नाम की मानो देखो, उसे वृष्टि के रूप में माना गया है। कन्या भी वृष्टि में ही परणित होने वाली कहलाती है। वृष्टि का अभिप्राय यह है जो अमृतमयी धारा हो, जो अमृतमयी मानो वृष्टि करने वाली हो जो मुनिवरों! देखो, जिससे पृथ्वी में अमृत को प्राप्त होता चला जाए, तो मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है, मन्त्र कहता है, जो वृष्टि करने वाली हो, जो आनन्द की वृष्टि करने वाली हो, मुनिवरों! देखो, देवताओं के लोक में, मेरे प्यारे! देखो, देव प्रवृत्ति से जो गमन करने वाली हो, जिस समय मुनिवरों! देखो, माता की लोरियों का पान किया जाता है, वह भी देव लोक है, उसके पश्चात भी कुछ समय तक देव लोक चलता है। उसके पश्चात कन्या मानो पितर लोकों को प्राप्त होती है। बेटा! लोक कहते हैं, जहाँ मानव वास करता है, तो वह पितर लोक, मेरे प्यारे! क्या है, पितरों माता और पिता मुनिवरों! कन्या को सुयोग्य बनाते हैं, उसका जितना भी संरक्षण है, मानो वह माता पिता के ही द्वार पर होता रहता है। जब देवो ब्रह्मा व्रण प्रहे लोकां वेद का वाक कहता है कि वही तो पितर लोक कहलाता है, मेरे प्यारे! देखो, पितर, अपने में

क्रियाकलाप कर रहे हैं, मुनिवरों! देखो, पितर लोक, हमारे यहाँ, पितरों की बड़ी विचित्र व्याख्या की गई है, आचार्यों ने बेटा! पिता और माता से, ले करके पिता और पूर्वजों तब, तक आचार्यों जनो तक ले करके बेटा! सब वह पितर लोक कहलाता है। हमारे यहाँ पितर लोक में भी जड़वत में और चैतन्यवत भी माने गएं हैं। एक पितर लोक वह कहलाता है, जो बुद्धिमानो का लोक है, एक पितर लोक वह कहलाता है, जो जड़वत लोक कहलाया गया है।

मेरे प्यारे! देखो, लोकाम ब्रह्मा वाचन्न नमं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, वह जो नाना प्रकार का जो लोक है, उसी लोक में तो हमें परणित होना है, मुनिवरों! देखो, कन्या जब वह पितर लोको में जाती है। तो एक एक पितर में मानो वह मूल से तपस्या में परणित हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, माता अपने में शिक्षा देती है, पितर देता है, कि चलो संरक्षण में मानो देखो, कन्या की प्रतिभा में रत्त कराती रहती है। तो मेरे प्यारे! वह मानो देखो, उसका पितर लोक कहलाता है। आचार्य कुल है, आचार्य भी पितर कहलाते हैं, जो नाना प्रकार के वेद मन्त्रों में कन्या को पारायण बना देते हैं। शिक्षालय में शिक्षा दे करके वह शिक्षित बना करके बेटा! देखो, महान और पवित्रता की शिक्षा देते रहते है, जिससे वह मानवीयता में परणित हो जाए, मानो उसका जो पितर लोक है, वह महान बन जाए। मेरे प्यारे! देखो, जैसे सूर्य हमारा पितर लोक कहलाता है, वह मेरे प्यारे! प्रकाश देता है, जो देता है, वही तो पितर कहलाता है। आचार्य शिक्षा देता है, वह प्रकाश दे रहा है। माता शिक्षित बना रही है, तो वह मानो देखो, अनुपम प्रकाश और अनुपमता की ज्योति में प्रविष्ट करा रही है। वह भी पितर है, आचार्य तो पिता होता ही है, मेरे प्यारे! देखो, यहाँ अग्नि को भी पितर माना है, क्योंकि अग्नि हमें प्रकाश देती है, अग्नि हमें महानता की ज्योति प्रदान

कर देती है। मानो देखो, वायु भी पितरों के रूप में रहती है, क्योंकि वह प्राण सत्ता प्रदान करने वाली है। मेरे प्यारे! देखो, जड़वत और चैतन्यवत देवताओं की प्रतिभा का हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! प्रायः वर्णन होता रहता है। आज मैं इस धारा में न जाता हुआ, केवल यह क्या मुनिवरों! देखो, कन्या का यह पितर लोक कहलाता है। हे पितरों! आओं तुम रक्षा करों, यहाँ देवो की रक्षा करों, तो मेरे प्यारे! देखो, वेद भी कुछ ऐसा कहता है परन्तु जब यह देवम् ब्रह्मा पितर लोक भी समाप्त हो जाता है। युवा अवस्था को प्राप्त हो जाती है। तो बेटा! वही कन्या पति लोक को प्राप्त हो जाती है, मानो देखो, जब पति लोक को प्राप्त होती है, तो उसका शासन उसकी प्रतिक्रियाएं मानो देखो, परिवर्तित हो जाती हैं। वह पितर लोक को त्याग करके जब पति लोक को प्राप्त होती है। तो वहाँ याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं कि याग करने का अधिकार होता है, बेटा! याग की बड़ी विस्तृत व्याख्या हमारे आचार्यों ने की है, यागाम ब्रह्म लोकां मानं ब्रह्मे पूर्व व्रतं ब्रीहि व्रता मेरे प्यारे! देखा याग का अभिप्राय यह है क्या मुनिवरों! देखो, पितर और देवो यागों में मानव परणित हो जाता है, यहाँ मुनिवरों! देखो, प्रकरण यह कहता है, क्या मङ्गलम् ब्रह्मे मेरे प्यारे! वह देव लोक, पितर लोक को प्राप्त हो करके मानो वह याग करने का उसे अधिकार उसे प्राप्त होता है। तो हमारे यहाँ बहुत अनुसन्धान किया गया, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इन सबको चुनौती प्रदान की है, और वह चुनौती दी है, कि वह सन्तान ब्रह्मे कृतो बेटा! कही से वेद की आख्यिका एक एक शब्द ला करके यह कहा कि सन्तानां ब्रह्मे यहाँ सन्तान पुत्र उत्पन्न करने का नाम बेटा! याग माना है। हमारे यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के यागों में एक मानो देखो, सन्तान के उपार्जन का नाम भी याग के रूप में ही परणित किया गया है। मेरे प्यारे! प्रभु का जो यह

बड़ा एक अनुपम जगत है, अनूठा जगत है, जिसके ऊपर मानव चिन्तन करता ही रहता है, और विचारता रहता है परन्तु देखो, उसको पूर्ण रूपेण जान नही पाता। मेरे प्यारे! देखो, पूर्णं ब्रह्मे सन्तान भी पूर्ण है, माता और कन्यां ब्रह्मे देखो, वह भी पूर्ण है, वह पूर्णता में से पूर्णता का जन्म होता है। पूर्णता से पूर्णता का जन्म होता है। जैसे परमपिता परमात्मा पूर्ण है, ऐसे ही सृष्टि का प्रादुर्भाव हुआ, सृष्टि के चक्र में जैसे माता पिता अपने में पूर्ण है। वैसे सन्तान भी उसकी मानो पूर्णता को प्राप्त हो जाती है। वही जो अपने में रत्त कहलाता है, तो मेरे प्यारे! देखो, यह देव लोक नही यह पितर लोक नही पति लोक कहलाता है। यागाम् ब्रह्म लोकां यागाः मेरे प्यारे! जितने भी शुभ कर्म है, उन सबका नामोकरण एक याग माना गया है। जिस याग में मुनिवरों! माता पिता परणित हो करके, अपने में महानता की ज्योति में प्रवेश हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, यह भी लोक की एक याग की चर्चाएं हुई, हमारे यहाँ प्रत्येक स्थली में प्रत्येक क्रियाकलापो में बेटा! याग का बड़ा महत्व माना गया है। मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हे निर्णय देते हुए कहा था क्या संसार में जितना भी आत्मीय कर्म हैं, जितना भी आत्मीय तप कहलाता है, वह सब मानो याग के रूप में परणित हो रहा है। चाहे वह चन्द्रमा से धीमा प्रकाश आ रहा है, चाहे सूर्य से प्रकाश आ रहा हो, परन्तु किसी भी लोक लोकान्तरों से क्या मानो उसकी प्रतिभा का जन्म होता है। वह सर्वत्र याग कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, बिना याग के हमारे ऋषि मुनियों ने या वेद के वांगमय में प्रवेश हो करके कोई स्थली ऐसी नही जो बिना याग की उन्होंने उससे उसका विच्छेद कर दिया हो। मानो उसी में वह समर्पित हो जाती है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! देखो, मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने मुझे वर्णन कराते हुए कहा कि यागों के सम्बन्ध

में आप अपनी कुछ विवेचना दीजिए। तो बेटा! मैंने अभी अभी तुम्हे याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विचार उद्धृत करते हुए विचार प्रगट किया है क्या प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए, मानो देखो, कन्या देव लोक से ले करके, पितरों से ले करके, मानो देखो, वह पति याग में, पति लोक को प्राप्त हो जाती है लोक कहते हैं बेटा! वास को, लोक कहते हैं बेटा! सदन को, लोक कहते हैं बेटा! देखो, ऊर्ध्वा में वृत्तियों को। विचार क्या, मेरे पुत्रों! जहाँ भी मानव वास करता हो, उसी का नाम याग माना गया है। यागाम् ब्रह्म लोकां वाचन्नमाः हे कन्या! तू देव लोक से होती हुई मानो देखो, पितर लोको को मानो देखो, पति लोको को प्राप्त हों, जिससे तू सुयोग्य सन्तान मानो, सुयोग्य याग में परणित हो करके अपने याग को सजातीय बना दो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन परम्परागातों से होता रहा है, मुझे बहुत सा काल स्मरण आता रहता है, जिस स्मरण शक्ति में मानव की प्रतिभा एक महानता की ज्योति में प्रवेश हो जाती है, तो आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें यह निर्णय देने के लिए आया हूँ, कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, अपनी शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी में कन्या याग का बड़ा वर्णन किया है। मेरे प्यारे! देखो, ये सब विवेचना ऐसी मानो विशेषतव मानी गई है, जो नाना प्रकार के देवतवों को तो प्राप्त हो करके, क्योंकि देवताओं का लोक, सर्वश्रेष्ठ कहलाता है, हमारे यहाँ जब ब्रह्मचारी अपने में ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है। और ब्रह्मवर्चोसि बन करके वह मानो देखो, अपने में देवत्वां ब्रह्मा वर्णं ब्रहे सम्भवा लोकां वह मानो विवेक के द्वारा अपने देवतव को वास करता है। मैंने बहुत पुरातन काल में निर्णय देते हुए कहा था, बहुत पुराब्रही क्या वह ब्रह्मचरिष्यामि, वह देवताओं का लोक कहलाता है, बेटा! जब मानव देखो, देवताओं के लोक में वे वशिष्ठ लोकों का मानो लोक

कहलाया गया है, देखो, ब्रह्मचारी, जब अपने में क्रियाकलापों में परणित होता है, और देखो, जब वह देवताओं के लोक में प्रवेश करता है, देवताओं का लोक किसे कहते हैं? प्रत्येक मानव, अपने धर्म मानवीयता को ही अपने में दृष्टिपात कराना चाहता है। मेरे प्यारे! देखो, धर्म और मानवीयता ही, दोनों एक सूत्र में परणित हो जाती हैं। एक ही सूत्र में वह महानता की ज्योति में प्रवेश हो जाती हैं। मेरे प्रत्येक मानव का यह कथन है, मुझे मेरे प्यारे! महानन्द जी! प्रेरित करते रहते हैं कि धर्म और राष्ट्र ये दोनो भिन्न भिन्न माने गएं हैं। परन्तु मैं यह कहा करता हूँ कि यदि राष्ट्र से धर्म को निकास लिया जाए तो राष्ट्र है क्या? मानवता को हम धर्म कहते हैं, मानवता की आभा में रत्त होने वाला एक धर्म है, मानवीयता है।

आज प्रत्येक जैसा मेरे प्यारे! महानन्द जी! ने मुझे वर्णन कराते हुए कहा है क्या संसार में प्रत्येक मानव धर्म के मर्म को जानना चाहता है मैंने यह वाक बहुत पुरातन काल में कहा, क्या संसार में, राष्ट्र में मानो देखो, जीवन में, नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नहीं होनी चाहिए। धर्म एकोकी वचन होना चाहिए एकोकी वचन में ही तो धर्म निहित रहता है। धर्म की प्रतिभा मानो उसमें प्रकाशित रहती है, तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विचार यह देना चाहता हूँ क्या प्रत्येक मानव को इस सम्बन्ध में चिन्तन करना है और मनन करते हुए अपने में मननशील बन करके ऊर्ध्वा के मार्ग पर ले जाना चाहिए। परन्तु देखो, इस सन्दर्भ में मैंने बहुत पुरातन काल में अपना व्यक्तव्य दिया अथवा निर्णय भी दिया है, प्रत्येक मानव कहता है कि धर्म, धर्म को विचारता रहता है। अरे, मानव, यह जो धर्म है, मानवीयता का नाम ही धर्म कहलाता है। जो मानव, देखो, अपने में दूरिता में परणित नही हो रहा है, जो मानव, अपने में अहिंसा परमोधर्मी बना हुआ है। आहार, व्यवहार

जिसका पवित्र है, वही तो देव लोक का, मार्ग का पथिक होता है। ऋषितव को प्राप्त होता रहता है। परन्तु देखो, मैंने इस सम्बन्ध में बहुत सी चर्चाएं देनी है।

परन्तु आज भी मुझे स्मरण आ रहा है आज मुझे वह काल स्मरण है, जिस काल में बेटा! देखो, ऋषि मुनि विद्यमान हो करके धर्म और मानवता की चर्चा किया करते थे मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है एक समय कुछ जिज्ञासु देवर्षि नारद के समीप पंहुचे उन्होंने कहा क्या महाराज यह धर्म क्या है? तो देवर्षि नारद मुनि कुछ मौन हो करके बोले कि विराजो, मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दे सकूंगा। तो मेरे प्यारे! देखो, जब धर्म के विचार में विचार आने लगे कि यह धर्म क्या है? तो मेरे प्यारे! देखो, इसका वैसे ही उत्तर प्राप्त नही हो जाता। वेद के आचार्यों ने, धर्म को यह माना है धर्मं ब्रह्मा धारणां जो धारण किया जाता हो, उसी का नाम धर्म है, परन्तु धारयामि जब धारण किया जाता है, तो उसी का नाम जब धर्म स्वीकार किया, तो पुनः प्रश्न किया, कि महाराज! यह धर्म क्या है? उन्होंने कहा यह धर्म मानवीयता की अनुपम ज्योति है, उन्होंने पुनः यह प्रश्न किया कि महाराज! ये धर्म क्या है? उन्होंने कहा, यह जानना चाहते हो या तुम प्रश्न करना चाहते हो उन्होंने कहा की नही, हम तो जानना चाहते हैं। तो धर्म तो वह है जो मानव के प्रत्येक इन्द्रियों का अङ्ग बना हुआ है और वह प्रत्येक इन्द्रियों का अङ्ग बन करके वही अङ्ग एक राष्ट्र का अङ्ग बन जाता है वही मानो देखो, वही अङ्ग मोक्ष की पगडण्डी वाला बन जाता है तो इसीलिए हमे विचारना है हम विचारते हुए अपने मानवीय जीवन को कहाँ ले जाना चाहते हैं, इस सन्दर्भ में नाना प्रकार की विवेचना होती रहती हैं आज मैं इस विवेचना में तो जाना नही चाहूँगा परन्तु विचार केवल यह कि मानव को इस मानवीयता के रूपों में रहना चाहिए, क्योंकि

धर्म मानव की प्रत्येक इन्द्रिय का विषय है प्रत्येक मानो देखो, माला का प्रत्येक सूत्र का वह समन्वय कहलाता है। जैसा मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा था, क्या धर्मज्ञनं ब्रह्मे लोकां वेदां मानो देखो, वही धर्म है जो मानवता को ऊँचा बनाता है, और मानव दर्शन, उसके समीप होता है, तो वह अपने में महान और विचित्र बन जाता है। परन्तु रहा यह वाक आज हम कि अपने में बेटा! व्रती बनना चाहते हैं, वह व्रती कैसे बन पायेंगे? परन्तु व्रत्यां ब्रह्मा आचार्यों ने यह कहा कि धर्मज्ञं ब्रह्मे वह धर्म तो इन्द्रियों में समाहित हो रहा है, वही तो धर्म है, घ्राण का धर्म है, सुगन्धि को ग्रहण करना, दूरिता का धर्म है नाना प्रकार की त्रुटियों को त्याग करके ब्रह्मचारी! तू देव लोक में गमन कर, तू मानो देवताओं के लोक में तू चल, मेरे प्यारे! जब हम यह उच्चारण कर रहे हैं तो जीवनं ब्रह्मा अमृतां देवाः अमृत लोकां मेरे प्यारे! देखो, धर्म वह है, मानवीयता का दर्शन विचारने से, राष्ट्र और समाज दोनो ही ऊँचे बनते हैं, यदि राजा अपने राष्ट्र में, राजा के यहाँ धर्म और मानवता दोनो एक ही सूत्र में सूत्रित हो रही है, तो वह महान क्रियाकलाप है। परन्तु इसी प्रकार धर्म और मानवता मानो दोनो भिन्न नहीं हैं दोनो एक ही सूत्र के मनके हैं परन्तु उन मनकों विचारना है, तो विचार करके अपने जीवन की, प्रतिभा को महान बना करके, अपने में गतिशील बनना है।

तो मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा प्रगट नही करूंगा, विचार यह देने के लिए आया हूँ, कि हमारा देव लोक, पितर लोक और मुनिवरों! देखो, पति लोक, कन्या के लिए कन्या याग का वर्णन आता रहा है। इन वर्णन शैलियों में मानो देखो, बहुत से मानो देखो, ब्रह्माण्ड की माला की चर्चा की जाती है, क्योंकि प्रत्येक मानव, एक दूसरे से बन्धा, एक दूसरे से सना

हुआ है मानो देखो, एक दूसरें में पिरोया हुआ है।

आओ, मेरे पुत्रों! जब मैं विचारता हूँ क्या धर्मं ब्रह्मे धर्म में वे चार प्रकार की सृष्टि मुझे पुनः से स्मरण आती रहती है, मानो ये चतुर्थ प्रकार की जो विचारधारा है, इसके ऊपर मानव को मनन करने की आवश्यकता है, जब तक मनन नही होगा, विचारक विचार उत्पन्न नही हो सकता। तो इसीलिए मननशील रहना चाहिए। तो मेरे प्यारे! आज तुम्हें एक ऐसी आभा में ले जाना चाहता हूँ, बेटा! ऋषि मुनि परम्परागतों से ही, अपनी अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके, नाना प्रकार की वे चर्चाएं प्रायः करते रहते हैं। उन चर्चाओं में, मेरे प्यारे! देखो, मुझे देवर्षि नारद मुनि महाराज की, वह गाथाएं स्मरण आती रहती है। जिन गाथाओं को, उन्होंने अपने विशुद्ध रूप में परणित किया है। मेरे प्यारे! देखो, देवता बनने के लिए, मोक्ष में जाने के लिए मुनिवरों! देखो, मानव नाना प्रकार के विवेकों को उत्पन्न करता रहता है। आओ, मुनिवरों! देखो, मैं विशेष, विवेचना देने नही आया हूँ, विचार केवल यह कि आज हम, मुनिवरों! देखो, ऊर्ध्वा में गति करते चले जाएं। ऊर्ध्वा में गति करते हुए, जीवन की मौलिकता को ऊँचा बनाना है, जिससे गृह और समाज और राष्ट्र, मुनिवरों! देखो, ये सब ऊँचे बन जाएं। मैंने बहुत पुरातन काल में ये निर्णय दिया कि मानव का धर्म और मानव दर्शन दोनो एक ही सूत्र के मनके हैं, और वह मनके मानो कर्तव्यवाद के लिए, मानव को प्रेरित कर रहे हैं। कर्तव्यवाद में संलग्न होने जा रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के, जब यह प्रश्न किया गया क्या महाराज! ब्रह्मे वाचन्नमं ब्रह्मे यागाः तो मुनिवरों! देखो, उसने उत्तर नहीं प्राप्त होता। तो विचार केवल वेदों के वांगमय में, प्रवेश होने से कुछ विचार हमें प्राप्त होते रहते हैं। परन्तु देखो, वेद का वाक कहता है, हे मानव! तू अपनी मानवीयता को

ऊँचा बना, और अपने मानव दर्शन को विचार जिससे मानो तुम्हे यह प्रतीत हो क्या कौन? ऐसी धृष्टता कर रहा है, कौन ऐसे मार्ग की प्रेरणा दे रहा है मानो देखो, बेटा! जब हम इन वाक्यों पर जाते हैं, कि हमारा जीवन वास्तव में कन्या यागी बनें पूजा की आभा में रत्त होते रहें। तो मेरे प्यारे! विचार क्या तो यहाँ विचार आता है कि धर्म क्या है? विचार आता है कि कर्तव्यवाद क्या है? कर्तव्यवाद और मुनिवरों! देखो, ये दोनो एक ही सूत्र में पिरोएं जाते हैं, जब मैं विचारता हूँ यहाँ बेटा! एक एक प्राणी प्राणी से पिरोया हुआ है। एक एक मानो आभा आभा से पिरोई हुई है।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, एक दूसरें में पिरोया हुआ सा संसार दृष्टिपात आता है, बेटा! देखो, माता का पुत्र पुत्र माता में पिरोया हुआ है, माता पुत्र में पिरोई हुई है, राजा प्रजा में पिरोया हुआ है, और पत्नी मानो देखा पति में पिरोई हुई है, पति पत्नी में पिरोया हुआ है। यहाँ नाना पक्षीगण, पशु मेरे पुत्रों! देखो, एक दूसरे में पिरोएं हुए हैं। एक दूसरें में पिरोया हुआ सा यह अनुपम जगत हमें दृष्टिपात आता है। हम इसके लिए नाना रूपों में नाना विचार लाते रहें हैं, उन विचारों की आभा में रत्त हो करके मानव देखो, महानता की ज्योति में प्रवेश कर जाता है। तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, नाना देवता अपने में देवतव की उपासना कर रहे हैं। देवताओं को प्राप्त होने जा रहे हैं। तो आओ, मेरे प्यारे! विचार मैं क्या दे रहा हूँ, विचार क्या प्रारम्भ हो रहा है, विचार यह कहता है, मानवीय दर्शन यह कहा रहा है, क्या मानव को अपनी मानवीयता का प्रायः दर्शन करना चाहिए। जिन दर्शनों से मानवीयता राष्ट्रवाद कर्तव्यवाद की प्रतिभा का जन्म हो जाएं। तो क्योंकि यहाँ एक प्राणी प्राणी में पिरोया हुआ है, लोक लोकान्तरों में पिरोया हुआ है, यहाँ तो

यह पिरोया हुआ सा जगत मुझे दृष्टिपात आता है।

आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हे करने नहीं आया हूँ, विचार यह देने के लिए आया हूँ, क्या प्रत्येक मानव अपने में मानवीयता की आभा में निहित होता रहे, और वह मानवीयता क्या है? वह धर्म मानो देखो, धर्म से बिन्धा हुआ सर्वत्र जगत कहलाता है। तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ आज मैं बेटा! देखो, विशेष चर्चाओं में ले जाना नही चाहता हूँ, विचार यह देने के लिए है, क्या प्रत्येक को अपने जीवन का ऊँचा बनाना है। प्रत्येक मानव को अपनी मानवीयता को ऊँचा बनाते हुए एक दूसरें में पिरोया हुआ हम अपने को जब स्वीकार करेंगे तो मुनिवरों! देखो, हमारा जन कल्याण हो जाएगा। एक दूसरें में पिरोया हुआ जैसे जगत है, वनस्पति है, मानो वह मानव का जीवन भी बाल्यकाल युवा काल युवा से मानो देखो, मध्य से ही वृद्धपन कैसे प्राप्त होता है, एक यह माला बनी हुई है, एक मुनिवरों! देखो, अपने में अपने पन की धारा को लिए हुए उन वाक्यों की ऊर्ध्वा में रचना करनी चाहिए। तो मेरे प्यारे! विचार यह क्या कह रहा है? क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए उसी में हम रत्त हो जाएं, उसी की हम विचारधारा देखो, मानवीय कल्याण के लिए उदगीत गाने लगे तो मेरे प्यारे! आज का हमारा यह वाक क्या कह रहा है, वाक कहता है क्या मुनिवरों! देखो, यह कन्या देव लोक मानो पितर लोक पितर लोक से पति लोक और याग करने का अधिकार बेटा! प्राप्त होता है। वह अधिकार क्या है? मेरे प्यारे! यहाँ हमारे ऋषि मुनियों ने शतपथ ब्राह्मण में यह कहा है कि सन्तान को जन्म देना भी मुनिवरों! याग माना गया है। यागाम ब्रह्म लोकां यागाम व्रत्यं देवाः यागा मेरे प्यारे! देखो, संसार का जितना क्रियाकलाप है, वह यज्ञ के रूप में परणित हो रहा है, जैसे नाना प्रकार की वनस्पतियां

एक वनस्पति दूसरें में पिरोई हुई है, इसी प्रकार प्रत्येक मानव एक दूसरे में पिरोया हुआ है, मेरे प्यारे! जैसे नाना प्रकार के लोक लोकान्तर बेटा! एक दूसरे में पिरोएं हुए हैं, इसी प्रकार यह पिरोना ही तो मेरे प्यारे! देखो, एक मानव के मानव को याग में परणित करा रहा है। याग की प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित हो रहा है। तो यागां ब्रह्म लोकां देवं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, जितना भी संसार का यह क्रियाकलाप हो रहा है, मानो वह इस पृथ्वी से ले करके नाना लोक लोकान्तरों तक सर्वत्र यह याग में पिरोया हुआ सा दृष्टिपात आता है। और माला में भिन्न भिन्न प्रकार के मनके हैं, और वह मनके मुनिवरों! देखो, वह एक सूत्र में पिरोएं हुए हैं, वह माला बन गई है, माला को धारण किया जा रहा है, तो मेरे प्यारे! देखो, यह सब एक मानो पिरोया हुआ सा जगत है। इस जगत मे जगत को सिंचन और मनन करने से मेरे प्यारे! इससे हमें पार होना है, और परमपिता परमात्मा के मानो विवेक और ज्ञान की उपलब्धि करता हुआ मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचरिष्यामि बन करके जैसे ब्रह्मचारी कहता है, देवाः धर्मणं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी देखो, श्वांस को ले करके जब मुनिवरों! देखो, एक सूत्र में पिरो देता है। तो वह ब्रह्मचरिष्यामि बन करके देवताओं के लोक में चला जाता है। देवताओं की प्रतिभा में प्रतिभषित हो जाता है।

तो इसीलिए वेद का वाक कहता है हे मानव! तू अपने को नम्र और आभा में नियुक्त करता हुआ देव लोको को प्राप्त करता चल। यह है बेटा! आज का वाक मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। ओ३म् देवाः यम रथप्रा गतं मा नां त्वा गतं आभ्यां देवाः यम सर्वा ओ३म् दधि ब्रह्म आ पा रथं गा

याहाम् अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनांक १५ ०९ १९८६।